देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

Impact Factor
8.642

ISSN : 2395-7115
February 2025
Vol.-21, Issue-2(1)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा एवं भारतीय शिक्षा पद्धति : कल, आज और कल के सन्दर्भ में

Special Issue Editor :
Dr. Aruna Anchal,
Dr. Suman Rathi

Editor :
Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 21 ISSUE-2(1) (विशेषांक-फरवरी 2025) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादक :

डॉ. अरूणा अंचल,

डॉ. सुमन राठी

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर (रोहतक)

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

बोहल शोध मंजूषा परिवार*

मानद संरक्षक

प्रो. राधेमोहन राय
पूर्व उप प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,
अलवर, राजस्थान।

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
परीक्षा नियंत्रक,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
समुन्द्र सिंह
भिवानी, हरियाणा।

विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

माई मनीषा महंत
किन्नर अधिकार ट्रस्ट
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

डॉ. विनोद कुमार
हिन्दी विभाग, लवली प्रोफेशनल
यूनिवर्सिटी, पंजाब

डॉ. मो. रियाज़ खान
बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस
बेगलूरू

डॉ. वनिता कुमारी
च. दादरी (हरियाणा)

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. वर्षा रानी
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराम
अम्बेडकर, वि.वि., आगरा

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. किरण गिल
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. सविता घुड़केवार
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

डॉ. राजकुमारी शर्मा
नेपाल

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. पायल लिल्हारे
अमरशहीद चंद्रेशेखर आजाद
शा.स्ना.महा. निवाड़ी, मध्यप्रदेश

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

डॉ. उमा सैनी
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. मनमीत कौर
राधा गोविन्द वि.वि.,
रामगढ़, झारखण्ड।

डॉ. रीना उन्नीयाल तिवारी
शिक्षा संकाय, डी.ए.वी. पीजी
कालेज, देहरादून

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
डीन फिजिकल एजुकेशन
टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर,

डॉ. शबाना हबीब
त्रिवन्तपुरम, केरल

डॉ. शिवकरण निमल
राजस्थान

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन
वाराणसी

डॉ. मानसिंह दहिया
हरियाणा

डॉ. नीलम आर्या
उत्तर प्रदेश

डॉ. रवि सुण्डयाल
जम्मू कश्मीर

प्रो. नरेन्द्र सोनी
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. रोहतास
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. सत्यबीर कालोहिया
पूर्व प्राचार्य, कैलिफोर्निया।

डॉ. इस्पाक अली
प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

प्रो. रेखा रानी
गवर्नमेंट कॉलेज
संगरूर, पंजाब

डॉ. के.के. मल्हौत्रा
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा
शासकीय महाविद्यालय,
लवकुश नगर, मध्य प्रदेश

डॉ. परमानन्द त्रिपाठी
एचओडी एजुकेशन, एल.एन.डी.
कालेज, मोतिहारी, बिहार

डॉ. करमजीत कौर
प्राचार्या, दशमेश गर्ल्स कॉलेज
चक आला, मुकेरिया, पंजाब

*सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा
Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc,.)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	**Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals**	08 per paper	10 per paper
2.	**Publications (other than Research papers)**		
	(a) Books authored which are published by ;		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	**Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula**		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

अनुक्रमाणिका – फरवरी 2025 (सेमिनार विशेषांक)

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. अरूणा अंचल, सुमन राठी	9–9
2.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में हिन्दी भाषा : कैलाश बनवासी और सत्यनारायण पटेल	अभिलेख यादव	10–15
3.	आधुनिक हिंदी काव्य का विकास : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य	अमन कुमारी	16–20
4.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा	Dr. Anita Devi	21-24
5.	वर्तमान हिन्दी भाषा का वैश्विक परिदृश्य : एक दृष्टिकोण	अनीता रानी	25–29
6.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा	अविनाश कुमार	30–34
7.	हिंदी भाषा का भारतीय शिक्षा पद्धति पर प्रभाव	डॉ. बबीता	35–38
8.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा	डॉ. चौत्रा एस.	39–42
9.	हिंदी भाषा एवं भारतीय शिक्षा पद्धति के प्रचार-प्रसार में नाथ साहित्य का योगदान	दीपिका, डॉ० संजीव	43–47
10.	वैश्विक परिपेक्ष्य में हिंदी भाषा एवं भारतीय शिक्षा पद्धति : कल, आज और कल के संदर्भ में	दिलकुश झा	48–50
11.	वैश्विक परिदृश्य में हिंदी और प्रेम विज का साहित्य	गीता	51–55
12.	वैदिककालीन शिक्षा की विशेषताओं का वर्तमान कालीन शिक्षा में महत्त्व	जूली सोनी	56–59
13.	वैश्विक परिवेश में हिन्दी भाषा	डॉ. ज्योति पटेल	60–62
14.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी : संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ	किरण	63–66
15.	भारतीय शिक्षा प्रणाली में हिन्दी भाषा की भूमिका	Maloti Bangthai	67-71
16.	भारतीयशिक्षालोकस्य वैशाल्यम्	विद्वान् मञ्जेशः एम्	72–79
17.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा	मनोज कुमार, डॉ. मोल्लम डोलमा	80–82
18.	विश्व स्तर पर हिन्दी भाषा का योगदान	छवि सांगवान, डॉ. नरेश कुमारी	83–86
19.	वैश्विक परिप्रेक्ष में हिंदी भाषा	डॉ. नयना प्रशांत पाटिल	87–90
20.	हिंदी का इतिहास और विकास	डॉ. कमलेश कुमारी	91–94

21.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा और भारतीय शिक्षा पद्धति – कल, आज और कल : संत गरीबदास के संदर्भ में	पिंकी रानी	95–99
22.	वैदिक एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली : एक अध्ययन	पूनम कुमारी	100–103
23.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा एवं भारतीय शिक्षा पद्धति : प्राचीन नवीन के संदर्भ में	पूनम	104–106
24.	भारतीय शिक्षा पद्धति में स्वामी ब्रहमानन्द सरस्वती का योगदान	प्रवीन कुमारी	107–110
25.	हिन्दी भाषा ने आलोचना की उपादेयता	प्रियंका दहिया	111–113
26.	हिंदी को विश्व भाषा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका एवं भारतीय शिक्षा पद्धति	डॉ. राघवेंद्र वी. मिस्किन	114–119
27.	हिंदी भाषा एवं भारतीय शिक्षा पद्धति में हरियाणवी कवि रामफल सिंह 'खटकड़' का अवदान	रजनी, डॉ० प्रवेश कुमारी	120–124
28.	हिंदी के विकास में बुंदेली की भूमिका	रणधीर आठिया	125–128
29.	वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा एवं भारतीय शिक्षा पद्धति : कल, आज और कल के संदर्भ में	रिद्धी वधवा	129–131
30.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा एवं हिंदी साहित्य में बाल मनोवैज्ञानिक लक्ष्मी खन्ना 'सुमन' का योगदान	रितु रानी	132–134
31.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा साहित्य व शिक्षण में प्रवासी साहित्यकार अंजना संधीर का योगदान	श्रीमती सविता अधाना	135–138
32.	**Indian Languages, Hindi, and the New Education Policy : A Global Perspective**	**Dr. Shefali Mendiratta**	**139-143**
33.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा एवं भारतीय शिक्षा पद्धति : कल, आज और कल	शिवरानी	144–147
34.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा : कल आज और कल के सन्दर्भ	स्नेह	148–153
35.	भारतीय शिक्षा पद्धति और मानव के नैतिक उत्थान में संत गरीबदास के साहित्य का योगदान	सोमबीर सिंह, डॉ० बाबू राम	154–159

36.	**Hindi Language and Indian Commerce Education System in Global Perspective : In Context of Yesterday, Today and Tomorrow**	Prof. Dr. Sujata Chandrakant Patil	**160-166**
37.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा का योगदान	सुमन छोपाला	167–169
38.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा : कल, आज और कल	सुमेधा शर्मा	170–174
39.	हिन्दी का इतिहास और विकास	सुनैना	175–179
40.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा एवं भारतीय शिक्षा पद्धति : कल, आज और कल के संदर्भ	सुनीता	180–184
41.	वैश्विक परिपेक्ष्य में हिंदी	डॉ. सुनीता	185–189
42.	**The Role of Hindi in India's Education System : A Cultural and Educational Perspective**	**Tanu Manglani**	190–195
43.	भारतीय शिक्षा पद्धति : कल, आज और कल	डॉ० ऊषा रानी	196–200
44.	साहित्यकालीन शिक्षा पद्धति	विष्णु भगवान	201–204
45.	हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में सावित्री वशिष्ठ के साहित्य का योगदान	ज्योति, डॉ० राजेन्द्र सिंह	205–209

संपादकीय.....

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा और भारतीय शिक्षा पद्धति : अतीत, वर्तमान और भविष्य

हिंदी भाषा और भारतीय शिक्षा पद्धति का विकास एक लंबी ऐतिहासिक यात्रा का परिणाम है। भारत विविध भाषाओं, संस्कृतियों और परंपराओं का संगम है, जहाँ शिक्षा और भाषा का परस्पर संबंध समाज की संरचना को निर्धारित करता रहा है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा और भारतीय शिक्षा पद्धति का विश्लेषण करते हुए हमें इसके अतीत, वर्तमान और भविष्य की संभावनाओं पर विचार करना होगा।

हिंदी भाषा भारतीय सभ्यता की समृद्ध धरोहर का प्रतीक है। संस्कृत, पाली और प्राकृत से विकसित होकर हिंदी ने विभिन्न भाषाई परिवर्तनों को अपनाया है। यह भाषा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक सशक्त राष्ट्रीय पहचान के रूप में उभरी और संविधान में इसे राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ।

प्राचीन भारतीय समाज में संस्कृत शिक्षा का प्रमुख माध्यम थी, लेकिन आमजन की भाषा के रूप में हिंदी विकसित हो रही थी। भक्ति आंदोलन के दौरान तुलसीदास, सूरदास, कबीर और मीरा जैसी विभूतियों ने हिंदी को जनमानस की भाषा बनाया। मुगलकाल के दौरान हिंदी और फारसी के संपर्क से रेख्ता और उर्दू जैसी भाषाएँ विकसित हुईं।

ब्रिटिश शासन में अंग्रेजी शिक्षा पद्धति लागू होने से हिंदी को हाशिये पर धकेला गया। 19वीं शताब्दी में भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी और प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों ने हिंदी को पुनः जाग्रत किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी और अन्य नेताओं ने हिंदी को एकता की भाषा के रूप में प्रचारित किया।

1950 में भारतीय संविधान ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया। हिंदी सिनेमा, साहित्य, पत्रकारिता और तकनीक के माध्यम से लोकप्रिय होती रही। 21वीं सदी में इंटरनेट और सोशल मीडिया ने हिंदी को वैश्विक मंच पर पहुँचाया। भारत में शिक्षा का इतिहास गुरुकुल प्रणाली से लेकर आधुनिक विश्वविद्यालयों तक फैला हुआ है। शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के संरक्षण का भी साधन रही है। वेदों, उपनिषदों और महाकाव्यों में ज्ञानार्जन की परंपरा मिलती है। गुरुकुल प्रणाली में छात्र शिक्षक के संरक्षण में रहकर अध्ययन करते थे। नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय विश्वभर में ज्ञान के केंद्र थे।

1835 में मैकाले की शिक्षा नीति के तहत अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा लागू हुई। पारंपरिक भारतीय शिक्षा पद्धति कमजोर पड़ी और अंग्रेजी माध्यम का प्रभुत्व बढ़ा। स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर जैसे विचारकों ने भारतीयता आधारित शिक्षा की वकालत की।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968, 1986, 2020) के तहत शिक्षा में सुधार के प्रयास किए गए। प्राथमिक और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में संस्थानों की स्थापना हुई, जैसे IIT, IIM, JNU, BHU आदि। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में शिक्षा को बढ़ावा देने की पहल हुई।

हिंदी दुनिया की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, व्ज्ज् प्लेटफॉर्म और हिंदी पत्रकारिता के माध्यम से इसका वैश्विक प्रसार हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के प्रयास जारी हैं। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, अमेजन जैसी वैश्विक कंपनियाँ हिंदी को अपनाने लगी हैं। नई शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा में शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 10-15

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में हिन्दी भाषा : कैलाश बनवासी और सत्यनारायण पटेल

अभिलेख यादव

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा)

शोध आलेख सार :-

हिन्दी भारत की राजभाषा है। राजभाषा के साथ–साथ हिन्दी राष्ट्रभाषा की भी भूमिका निभा रही है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचने में हिन्दी को अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ा है। भारत में बोली जाने वाली लगभग 22 भाषाओं में से सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा हिन्दी है। 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है। हिन्दी एक विश्वभाषा है, क्योंकि वह एक देश की राष्ट्रभाषा होने के साथ–साथ अन्य देशों में भी पर्याप्त संख्या में लोगों द्वारा लिखी, बोली और समझी जाती है। हिन्दी इण्टरनेट पर भी एक लोकप्रिय भाषा बनकर उभरी है।

बीज शब्द :- विश्वभाषा, बाजारवाद, वैश्वीकरण, संकल्पना, अन्तर्राष्ट्रीय।

आज संचार साधनों की बदौलत स्थानों के बीच की दूरियां समाप्त हो गयी हैं। सम्पूर्ण विश्व एक गाँव की भाँति बन गया है जिसमें कभी भी कहीं भी किसी से भी सम्पर्क कर सकते हैं। वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के सन्दर्भ में हिन्दी का महत्व इसलिए बढ़ेगा क्योंकि भविष्य में भारत व्यावसायिक, व्यापारिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से एक विकसित देश होगा। वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी के प्रति सकारात्मक प्रवृत्तिया इस प्रकार हैं :–

– भारतीय मूल के लगभग 2 करोड़ लोग हिन्दी माध्यम से अपना कार्य निष्पादित करते हैं।
– हिन्दी भाषा को बोलने–समझने वाले सब महाद्वीपों में फैले हुए हैं।
– हिन्दी का किसी भी देशी या विदेशी भाषा से कोई विरोध नहीं है। यह अनेक भाषाओं से शब्द ग्रहण करती है। आज हिन्दी का शब्दकोश विश्व का सबसे बड़ा भाषिक शब्दकोश है।
– हिन्दी का साहित्येतर लेखन बढ़ा है तथा लेखन का स्तर भी ऊँचा होता जा रहा है।
– देश–विदेश में प्रकाशित होने वाले पत्र–पत्रिकाओं ने हिन्दी को विश्वभाषा बनाया है। इसके माध्यम से हिन्दी भाषा और साहित्य का प्रसार–प्रचार विदेशों में हुआ है।

हिन्दी भारत की सम्पर्क भाषा बनने के साथ ही विश्वभाषा बनने की दिशा में अग्रसर है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को प्रतिष्ठित करने के लिए भारतीय संस्कृति सम्बन्ध परिषद (आई0सी0सी0आर) महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसने अनेक विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा पीठ की स्थापना की है। इन विश्वविद्यालयों में यह भारत

से ही शिक्षक प्रतिनियुक्ति पर भेजती है, जो उस देश में हिन्दी के प्रचार–प्रसार, अध्यापन, शोधकार्य इत्यादि से सहयोग करते हैं।

हिन्दी को विश्वभाषा बनाने का कार्य हिन्दी भाषा के साहित्यकार भी बखूबी कर रहे हैं। इन साहित्यकारों में समकालीन साहित्यकार 'कैलाश बनवासी' और 'सत्यनारायण पटेल' का नाम भी सम्मिलित है। इन्होंने हिन्दी के आम बोल–चाल के शब्दों को भी अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। ये शब्द इनकी रचनाओं में अपना एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। ये साहित्यकार वैश्विक परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में हिन्दी में अपना विशिष्ट योगदान दे रहे हैं। इनकी साहित्यिक भाषा को आम जनमानस आसानी से समझ लेता है। इस आधार पर देखें तो हिन्दी के प्रचार–प्रसार में 'कैलाश बनवासी' और 'सत्यनारायण पटेल' अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

सत्यनारायण पटेल ग्रामीण जीवन को मध्यनजर रखते हुए उनके द्वारा बोली जाने वाली ग्रामीण हिन्दी भाषा का प्रयोग अपनी रचनाओं में करते हैं। इनकी कहानियों के पात्र हमारे समाज में रह रहे पात्र ही लगते हैं। इनकी कहानी 'नकारो' में सास–बहू के झगड़े को दिखाया गया है। सत्यनारायण पटेल लिखते हैं कि :–

''तू भी म्हारों मूँडो मत खोलावे, नी तो हूँ भी अभी सब उघाड़ी ने पटकी दूआँ। कावेरी ने इस अंदाज़ में चेताया कि जानती वह भी बहुत कुछ है, पर कह नहीं रही है।''[1]

इस प्रकार सत्यनारायण पटेल ग्रामीण भाषा से रूबरु कराते हैं।

'कैलाश बनवासी' के कथा–साहित्य में भी हमें ग्रामीण हिन्दी भाषा का प्रयोग देखने को मिलता है। 'कैलाश बनवासी' की हिन्दी भाषा में जबरदस्त पकड़ है। ये हिन्दी भाषा को विश्व भाषा बनाने के लिए प्रयासरत हैं। से साहित्यिक हिन्दी के साथ–साथ ग्रामीण भाषा का भी प्रयोग अपने कभा साहित्य में करते हैं।

'कैलाश बनवासी' लिखते हैं कि :–

''जब तैयार हो गई तो काकी ने कहा, 'जा बेटी, सबके पांव परके आ जा' गौरी फिर छिनमिनाई, 'छि वो! ये सब मेरे को अच्छा नहीं लगता।''[2]

'कैलाश बनवासी' वैश्विक स्तर पर हिन्दी के मूल रूप को तोड़ने के जो प्रयास हो रहे हैं उन पर चिन्ता जताते हैं। वे कहते हैं कि हिन्दी राष्ट्रीय नवजागरण एवं अधिकारिक भाषा है। यह इतनी समृद्ध होने के साथ सहज और सरल है, जो हमें सभी भाषा को एकता के सूत्र में पिरोती है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने हिन्दी भाषा को महत्व देते हुए कहा था कि :–

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।[3]

अपनी भाषा का अपना एक अलग ही वैशिष्ट्य होता है, जो जुड़ाव, स्नेह हम अपनी भाषा से व अपनी मिट्टी से पाते हैं, वह अन्य किसी से भी महसूस नहीं कर पाते हैं। हिन्दी अन्य भाषाओं के शब्दों का समावेशन भी कर लेती है। हिन्दी की यही विशिष्टता हिन्दी को अपने आप में अद्वितीय बनाती है। इसी के साथ ही इस बात की चिन्ता भी व्यक्त की जाती है कि हिन्दी में अन्य भाषाओं के शब्दों को समाहित करने का गुण हिन्दी के मूलरूप को ही कहीं खण्डित न कर दे। किसी भी भाषा का मूल स्वरूप ही उसकी धरोहर होती है।

हिन्दी भाषा का प्रश्न राजनीतिक नहीं है, बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक है। भारत को अपनी पहचान बनाए रखने के लिए हिन्दी का स्थान सर्वोपरि रखना होगा। हिन्दी को शिक्षा–दीक्षा के माध्यम में, अन्तर्राष्ट्रीय

कामकाज की भाषा के रूप में एवं रोजमर्रा के व्यवहार में प्राथमिकता देना हम सभी का कर्तव्य है।

डॉ. सिद्धेश्वर वर्मा के अनुसार :–

''जिस रोज भारत एक राष्ट्र के रूप में ऐसा करने का संकल्प ले लेगा उस रोज भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक विकास के मार्ग की सारी मानसिक बाधाएँ दूर हो जाऐंगी और भारत का नाम 'जगतगुरू' के रूप में मान्य होगा।''[4]

हिन्दी के प्रचार–प्रसार में आधुनिक काल के साहित्यकारों की बड़ी भूमिका रही है। हिन्दी के गौरव का बखान इन सभी साहित्यकारों ने किया है। अटल बिहारी वाजपेयी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में अपना भाषण हिन्दी में दिया था। आज समर्थ एवं समृद्ध भाषा के रूप में हिन्दी की मान्यता बढ़ती जा रही है। प्रथम व द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलनों में संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को मान्यता दिलाने के साथ–साथ विश्व हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना की गई।

डॉ. सिद्धेश्वर प्रसाद के अनुसार :–

''सांस्कृतिक दासता की जड़ राजनीतिक दासता की जड़ से भी अधिक गहरी होती है और इसके सूक्ष्म को पहचान पाना कठिन है। लेकिन जिस प्रकार से आर्थिक स्वतंत्रता के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता निरर्थक होती है, उसी प्रकार से सांस्कृतिक स्वतंत्रता के बिना राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रता भी प्राणहीन होती है। सांस्कृतिक मूल्य ही सामाजिक जीवन को यह आधार प्रदान करती है, जिस पर राजनीतिक और आर्थिक ढांचा खड़ा किया जाता है। यदि सांस्कृतिक नींव कमजोर रहे तो स्वभावतः सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक ढांचा भी कमजोर होगा।''[5]

अंग्रेजी भाषा की अपनी एक अलग महत्ता है, लेकिन किसी विदेशी भाषा का राष्ट्रभाषा व राजभाषा के रूप में प्रयोग होते रहना हमारी मानसिक दासता को दिखाता है और उसका यह रूप घातक है। आज इक्कीसवी सदी में बाजारवाद को अत्यधिक बढ़ावा मिला है। बाजार और इण्टरनेट ने हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं को लगभग हाशिए में ढकेलने की कोशिश की है। ये कहीं हद तक सफल भी हुए हैं। हिन्दी अपने ही घर में प्रवासिनी की तरह बन गई है। सबसे पहले आपसे आपकी भाषा को छीना जा रहा है ताकि परस्पर आत्मीय संवाद कायम न कर सके। आपको अपनी भाषा के बदले में जो परदेशी भाषा दी गयी है वह जोड़ने वाली नहीं बल्कि तोड़ने वाली भाषा है। अंग्रेजों के पास भारत को अपने अधीन रखने का इससे अच्छा तरीका नहीं था।

डॉ. श्रोत्रिय लिखते हैं कि :–

''सबसे पहले आपसे अपनी भाषा छीनी जा रही है, ताकि आप किसी भी मामले में परस्पर आत्मीय संवाद कायम न कर सके, जैसे आक्रामण सेनाएँ पुलों को उड़ा देती हैं। गूँगा और संवादहीन देश आपस में सिर्फ अपना माथा ही फोड़ सकता है। आपको अपनी भाषा के बदले जो परदेशी भाषा दी गयी है वह जोड़ने वाली नहीं है, क्योंकि वह भारत की जनता को परस्पर जोड़ने के लिए लायी भी नहीं गयी थी। गुलामों को अधिक गुलाम बनाने का इससे नायाब तरीका अंग्रेजो के पास दूसरा न था।''[6]

आज के इस तकनीकी युग में हिन्दी की दशा और दिशा में पर्याप्त सुदृढता आयी है। भूमण्डलीकरण, वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के इस दौर में हिन्दी का वर्चस्व बढ़ा है। विदेशों में भी हिन्दी के प्रचार–प्रसार पर बल दिया जा रहा है। भारत में स्थापित बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भी अपने कार्यकर्ताओं को हिन्दी सीखने पर बल दे रही

है। यूरोप के हिन्दी विद्वानों में प्रो0 गात्स्लाफ, प्रो0 लोठार लुत्से, इटली के प्रो0 तुर्वीयानी, फ्रांस के प्रो0 निकोल बलवीर आदि विद्वान हिन्दी के प्रचार–प्रसार में लगे हुए हैं। अमेरिका के कई विश्विद्यालयों में हिन्दी का पठन–पाठन होता है। फीजी, मॉरिशस और सूरीनाम जैसे देशों में हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। फीजी के संविधान में हिन्दी के प्रयोग का प्रावधान किया गया है। यहां के विद्वानों में विवेकानन्द शर्मा, जे0 एस0 कँवल, बलराम वशिष्ठ आदि का नाम शामिल है जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिन्दी के भण्डार को समृद्ध किया है।

भारत देश की महान विभूतियों ने हिन्दी के प्रचार–प्रसार पर बल दिया जिनमें प्रमुख हैं–स्वामी दयानन्द, लोकमान्य तिलक, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, श्री अरविन्द आदि। इन विभूतियों का मत यह है कि हम स्वराज्य के साथ–साथ उन मूल्यों से लड़ रहे हैं, जिन्हें अंग्रेजी राज्य ने करीब–करीब समाप्त कर दिया है। भारतीय लोगों की मानसिकता को हिन्दी के माध्यम से बदला जा सकता है।

के. वनजा के अनुसार :–

''अपनी मिट्टी, जनता, संस्कृति, भाषा आदि पर नये ढंग से सोचने की वजह से नयी 'राष्ट्र' संकल्पना रूपायित हुई। तब अन्धकार युग के समाप्त होने की सूचना मिली। अपनी भाषा की उन्नति कर जीवन के सारे क्षेत्रों में उन्नति लाने का प्रयत्न शुरू हुआ।''[7]

भारत से बाहर लगभग 100 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन–पाठन हो रहा है। वस्तुतः हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल दिखाई दे रहा है। कुछ ही वर्षों में हिन्दी विश्वव्यापी भाषा बन जायेगी। आज वैज्ञानिक अविष्कारों ने हमारी जीवन शैली को प्रभावित किया है। उनमें कम्प्यूटर भी सम्मिलित है। विश्व के प्रथम हिन्दी पोर्टल का विकास वेब दुनिया 'डॉटकॉम' (इण्डिया लिमिटेड) को है। इस पोर्टल के जनक श्री विजय छालजानी हैं। यह वेबसाइट अत्यन्त लोकप्रिय हुई और यहीं से देवनागरी लिपि की शक्ति और संभावनाएँ उजागर हुई। आज इसी के माध्यम से प्रवासी भारतीय वेब दुनिया समाचार, संस्कृति, ई–व्यवस्था, मनोरंजन आदि अनेक क्षेत्रों की सूचनाओं से लाभान्वित हो रहे हैं। हिन्दी और देवनागरी लिपि को विश्व के मानचित्र पर इण्टरनेट तथा वेबसाइट में देवनागरी लिपि के प्रयोग से नित नई संभावनाएँ उमड रही हैं।

भारतीय लेखक समाज सुधारक के साथ ही साथ भाषाविद भी थे और आज भी हमारे साहित्यकार उसी परम्परा पर चल रहे हैं। उनकी लेखन शैली में नैतिकता की प्रधानता आदि काल से ही रही है। भाषा और संस्कृति एक ही सिक्के के दो पहलू के समान हैं।

आज बच्चों पर अंग्रेजी भाषा को लादा जा रहा है। उनके मनोभावों का दबाया जा रहा है। उन्हें उन्हीं की मातृभाषा से दूर रखा जाता है। शिक्षकों पर भी पढ़ाने की बजाय अन्य कार्यों का दबाव होता है।

कैलाश बनवासी के अनुसार :–

''शिक्षकों पर कोर्स पूरा पढ़ाने का दबाव और उन पर तरह–तरह के कार्यों का दबाव, एक–एक विषय के 20–20 पाठ योजना तैयार करना, कार्यानुभव के अन्तर्गत विभिन्न चार्ट, मॉडल और सजावटी चीजें तैयार करना, ढेरों काम। इस भीड़ की कॉपियाँ जाँचना, चार्ट या मॉडल की जाँच करना। उन्हें भी फुरसत नहीं, हमें भी नहीं। गोया यही सब शिक्षकीय कार्य हो। वह नवीन के प्रति जिज्ञासा, बच्चों की मानसिकता को गहराई और आत्मीयता से समझने की कोशिश.....उन्हें और पूर्ण और सामाजिक बना पाने का प्रयास... कहीं नहीं।''[8]

निष्कर्षत हम देख सकते हैं कि भारतीय शिक्षा पद्धति में कुछ बदलाव हुए हैं। हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने के लिए विद्वानजन, हिन्दी चिन्तक व साहित्यकार पुरजोर कोशिश कर रहे हैं। हिन्दी भाषा प्राचीनकाल में भी समृद्ध थी, आज भी और आने वाले कल में भी समृद्ध होगी।

सन्दर्भ सूची :-

1. पटेल, सत्यनारायण; लाल छींट वाली लूगड़ी का सपना; अंतिका प्रकाशन (उ.प्र.); संस्करण : 2011; पृ0–50
2. बनवासी, कैलाश; लौटना नहीं है; सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली ; संस्करण : 2022; पृ0–30
3. सं. लालचन्द गुप्त 'मंगल', आठ श्रेष्ठ कवि; पृ0–05
4. प्रसाद, प्रो0 सिद्धेश्वर; अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ में हिन्दी; पृ0–203
5. प्रसाद, प्रो0 सिद्धेश्वर; अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ में हिन्दी; पृ0–202
6. श्रोत्रिय प्रभाकर; हिन्दी कल आज और कल; किताबघर प्रकाशन; संस्करण : 2006
7. के0 वनजा; राष्ट्र राष्ट्रीयता नवराष्ट्रीयता; वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली; संस्करण 2021; पृ0–159
8. बनवासी, कैलाश; पीले कागज़ की उजली इबारत; अंतिका प्रकाशन (उ.प्र.); संस्करण : 2008; पृ0–135

Email : yadavabhilekh0490@gmail.com

मो0 नं0 9468436129

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 16-20

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

आधुनिक हिंदी काव्य का विकास : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

अमन कुमारी

शोधार्थी (भाषा–विभाग), बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।

भूमिका :–

कविता को कवि की मानस पुत्री कहा जाता है। मानव जीवन में कविता का विशेष महत्व रहा है। आधुनिक हिंदी कविता का प्रारंभ 1900 से माना जाता है। हिंदी कविता ने समय–समय पर विभिन्न परिवर्तनों और प्रवृतियों को देखा है। इस काल में सामाजिक राजनीतिक और सांस्कृतिक कार्यो ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसे हिंदी काव्य में नई चेतना और विचारों ने जन्म लिया और साहित्य बहुआयामी क्षेत्र को स्पर्श करने लगा। इस काल में धर्म, दर्शन, कला एवं साहित्य आदि के नए–नए दृष्टिकोण का जन्म होने लगा। इस नवजागरण काल में नई चेतना उत्पन्न हो रही थी इस समय कविता का विकास कई चरणों में हुआ जैसे प्रारंभिक कविता, छायावादी कविता, प्रतिवादी कविता, प्रयोगवादी कविता, स्वातंर्त्योत्तर कविता। इस प्रकार आधुनिक काल का हिंदी काव्य साहित्य विकास की अनेक पडावों से गुजरा। काव्य कला के विभिन्न आयामों से परिचित होकर विद्यार्थियों को काव्य साहित्य की संप्रेषण और सौंदर्य को समझने में आसानी होती है। यह काल एक ऐसा काल है जिसमें जनसंचार के विभिन्न साधनों का विकास हुआ। शिक्षा हर व्यक्ति का मौलिक अधिकार बनी। इन सब परिस्थितियों का प्रभाव हिंदी साहित्य पर अनिवार्य रूप से पड़ा। आधुनिक काल का हिंदी पद्य साहित्य पिछली सदी में विकास की अनेक पदों से गुजर जिसमें अनेक विचारधाराओं का बहुत तेजी से विकास हुआ।

यह ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य हमें हिंदी कविता के विभिन्न युगों, शैलियों, और कवियों के योगदान को समझने का अवसर प्रदान करता है। इस आलेख में हम हिंदी कविता के विकास को प्रारंभिक काल से लेकर आधुनिकता तक, और उसमें आए बदलावों का विश्लेषण करेंगे।

काव्य का सामान्य परिचय :–

वास्तव में काव्य ऐसी पद्य रचना है जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी एक विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छंदता और सजगता के साथ किया जाता है। 19वीं सदी में आधुनिक काव्य का विकास हुआ। मनुष्य के जन्म के साथ ही साथ कविता का भी जन्म हो जाता है। कविता का लक्ष्य मात्र मनोरंजन करना नहीं अपितु मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं और संवेदनाओं को व्यक्त करना रहा है। काव्य वह वाक्य रचना है जिससे चित्त किसी रस से पूर्ण हो अर्थात वह जिसमें चुने हुए शब्दों के द्वारा कल्पना और

मनोवेगों का प्रभाव डाला जाता है।

काव्य का अर्थ एवं परिभाषाएँ :-

कविता में एक विशेष प्रकार की चेतना और जीवंतता होती है। इसमें भावना के साथ विचारों को एक साथ संकलित किया जाता है। कविता का शाब्दिक अर्थ है काव्यात्मक रचना या कवि की कृति जो छंदों की श्रृंखलाओं में विधिवत बांधी जाती है। काव्य वह रचना है जिसमें चित्त किसी रस से परिपूर्ण हो। कविता छंद और मुक्त छंद दोनों में होती है। छंदबद्ध कविता के लिए छंद के बारे में बुनियादी जानकारी आवश्यक है। मुक्त बंद में लिखने के लिए भी इसका ज्ञान आवश्यक है। कविता समय विशेष की उपज होती है जिसका स्वरूप समय के साथ–साथ बदलता रहता है। यदि कविता में शब्दों का महत्व ना होता तो कविता ही ना होती अर्थात कविता लेखन का पहला महत्वपूर्ण उपकरण शब्द है। शब्दों के मेल–जोल से कविता बनती है अर्थात् शब्दों का उचित चयन तथा प्रयोग ही कविता की आत्मा बन जाते हैं। कविता सदैव गद्य से अलग होती है। साहित्य रचना की दो विधाएँ हैं गद्य और पद्य। गद्य विधा के अंतर्गत कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, पत्र साहित्य, आत्मकथा आदि आते हैं। इसी तरह पद्य के अंतर्गत कविता, गीत, गाना, मुक्तक आदि लिखे जाते हैं। गद्य को हम सीधा और सपाट रूप में पढ़ सकते हैं क्योंकि इनमें लयात्मकता नहीं होती किंतु पद के साथ ऐसा नहीं होता है। जब किसी कवि के मन में कुछ कहने की लालसा होती है तो शब्दों के अभाव को पूरा करने के लिए कविता का अवतरण होता है। कविताएँ चुपचाप चली आती हैं। यह भाषा और व्याकरण की दीवारों को भी कई बार तोड़ देती है। काव्य जीवन को अपनी मौजूदगी से तरंगित कर देता है।

भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने काव्य की अलग–अलग परिभाषाएँ दी हैं। संस्कृत के काव्य शाखियों ने प्रायः कवि कर्म को काव्य कहा है। अतः 'कवि' शब्द से ही 'काव्य' की उत्पत्ति मानी जा सकती है। कवि शब्द 'कु' धातु में उच्च प्रत्यय लगने से बना है। 'कु' धातु का अर्थ है शब्द करना, बोलना, कलरव करना। इस धातु के अन्य अर्थ हैं व्याप्ति या आकाश। इस तरह यह कहा जा सकता है कि कवि वह व्यक्ति है जो शब्द करता है, बोलता है या कलरव करता है अथवा जो आकाश के समान सर्वत्र व्याप्त है।

संस्कृत के आचार्यों ने काव्य संबंधी परिभाषाएँ दी हैं। संस्कृत काव्यशास्त्र में सर्वप्रथम आचार्य भरत मुनि ने अपनी रचना 'नाट्यशास्त्र' में काव्य संबंधी विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि– 'कोमल एवं ललित पदों से युक्त, गूढ़ शब्दार्थ रहित, सर्वजन सुबोध, युक्तियुक्त, नृत्य योजना से युक्त, विभिन्न रसों को प्रवाहित करने वाली तथा अनुकूल संधि–योजना वाली रचना उत्तम काव्य कही जा सकती है।'

आचार्य भामह के अनुसार :– शब्दार्थौ सहितौ काव्यम अर्थात् शब्द और अर्थ के सहित भाव को काव्य कहते हैं।

आचार्य दंडी ने अपनी रचना काव्यादर्श में अभीष्ट अर्थ को प्रकट करने वाली शब्द योजना को काव्य–शरीर कहा है। इन्होंने केवल शब्द को ही काव्य माना है।

इसी तरह आचार्य वामन ने गुणों तथा अलंकारों से युक्त शब्दार्थ को काव्य माना है।

आचार्य भोजराज दोष रहित, गुण सहित, अलंकार युक्त तथा रस युक्त कृति को काव्य मानते हैं।

'कवेः कर्म काव्यम के आधार पर कह सकते हैं कि कवि का कर्म ही काव्य है। इसी संदर्भ में आचार्य विद्याधर ने कहा है कि जो वर्णन करता है, कविता करता है। उसके कर्म को काव्य कहते हैं।

आचार्य अभिनव गुप्त भी कुछ यहीं भाव व्यक्त करते हैं और कहते हैं कि–'जो वर्णनीय है वही काव्य है।'

रीतिकालीन आचार्य कवियों के काव्य संबंधी मत :-

रीतिकालीन आचार्य कवियों ने काव्य का कोई मौलिक लक्षण प्रस्तुत नहीं किया है। यह सभी किसी न किसी संस्कृत आचार्य से प्रभावित दिखाई देते हैं।

आचार्य केशवदास मानते हैं कि– 'अलंकार काव्य का सबसे महत्वपूर्ण लक्षण है।'

इसी प्रकार आचार्य चिंतामणि ने कहा है कि– 'गुण युक्त, अलंकार सहित, दोष रहित, शब्द–अर्थ से संपन्न ही कविता है।'

आचार्य देव ने 'काव्य रसायन' में यह कहा है कि शब्द जीव है, अर्थ मन है तथा रसयुक्त सुयश उसका शरीर है। दोनों प्रकार के छंद उसकी गति है तथा अलंकार गति की गंभीरता के व्यंजक हैं।

भिखारी दास के अनुसार, 'अलंकार, रस, ध्वनि, रीति तथा गुणों से युक्त शब्दार्थ ही काव्य है।'

आधुनिक विद्वानों के काव्य संबंधित मत या परिभाषा :-

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार– 'कविता प्रभावशाली रचना है जो पाठक के मन पर प्रभाव डालती है।'

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार– 'जिस प्रकार आत्मा की मुक्त अवस्था भाव दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्त अवस्था रस दशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं।'

बाबू श्यामसुंदर दास के अनुसार– 'हम किसी पुस्तक को साहित्य या काव्य की संज्ञा तभी दे सकते हैं अगर वह कला के उद्देश्यों को पूरा करती है।'

जयशंकर प्रसाद के अनुसार– 'काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है जिसका संबंध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं है। वह एक श्रेयमार्गी प्रेय रचना है।'

सुमित्रानंदन पंत के अनुसार– 'कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी हैं।'

महादेवी वर्मा के अनुसार– 'कविता कवि की विशेष भावनाओं का चित्रण है और वह चित्र इतना ठीक है कि उसमें वैसी ही भावनाएं किसी दूसरे के हृदय में आविर्भूत होती हैं।'

कविवर धूमिल के अनुसार– 'कविता शब्द की अदालत में मुजरिम के कटघरे में खड़े बेकसूर आदमी का हलफनामा है।'

1. प्रारंभिक हिंदी कविता और भक्ति आंदोलन (प्राचीन से मध्यकाल तक) :-

हिंदी कविता का इतिहास बहुत पुराना है और इसकी जड़ें संस्कृत साहित्य में पाई जाती हैं। भारतीय उपमहाद्वीप में जब संस्कृत का प्रचलन था, तब संस्कृत के काव्यशास्त्रों और ग्रंथों ने साहित्य और कविता को रूप दिया। लेकिन हिंदी कविता का वास्तविक रूप मध्यकाल में भक्ति आंदोलन के साथ विकसित हुआ। भक्ति आंदोलन, जिसे धार्मिक पुनर्जागरण भी कहा जा सकता है, ने कविता में आत्मा, भक्ति, और समाज के प्रति एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

भक्ति काल में हिंदी कविता का उद्देश्य ईश्वर से एकात्मता स्थापित करना था। संत कवियों जैसे सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, और कबीर ने अपनी कविता के माध्यम से सामाजिक असमानताओं, भेदभाव और धार्मिक

कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने सरल, लोकभाषा में कविता लिखी, जिससे आम जनता आसानी से जुड़ सकी।

कवि तुलसीदास ने अपने महाकाव्य रामचरितमानस के माध्यम से न केवल राम के चरित्र को प्रस्तुत किया, बल्कि समाज के लिए आदर्श प्रस्तुत किया। कबीर की कविता में मिश्रित भाषा और कठोर सत्य की बातें हैं, जो तत्कालीन समाज के लिए एक चुनौती थीं। कबीर के दोहों में समाज में व्याप्त धार्मिक आडंबर और पाखंड के खिलाफ तीव्र विरोध था।

भक्ति कविता ने न केवल धार्मिक साधना को काव्य रूप दिया, बल्कि यह समाज में व्याप्त असमानताओं और कुरीतियों को उजागर करने का कार्य भी करती है। इस समय की कविता ने समाज में जागरूकता लाने का कार्य किया और समाज के प्रत्येक वर्ग तक अपनी बात पहुँचाई।

2. उत्तरभक्ति काल और रहस्यवाद (16वीं से 18वीं शताबदी) :–

भक्ति आंदोलन के बाद उत्तरभक्ति काल में हिंदी कविता का स्वरूप और भी अधिक विविध हो गया। इस युग में सूफीवाद और रहस्यवाद के प्रभाव से कविता में न केवल धार्मिक भावनाएँ, बल्कि आंतरिक आत्मानुभूति, दर्शन और सूक्ष्म अनुभवों की गहरी अभिव्यक्ति देखने को मिली। इस काल में कविता में व्यक्तित्व की गहराई और व्यक्ति की मानसिक स्थिति को अधिक महत्व दिया गया।

कवि केशवदास और बिहारी जैसे साहित्यकारों ने काव्यशास्त्र के सिद्धांतों को विकसित किया, और कवि ने अपनी रचनाओं में प्रेम, श्रृंगार और भक्ति के विषयों को प्रमुखता से उठाया। इस समय के कवि साहित्य के शास्त्रीय रूपों से प्रेरित थे, लेकिन उन्होंने अपनी रचनाओं में व्यक्तिगत संवेदनाओं और अनुभवों का भी समावेश किया।

3. उन्नीसवीं शताबदी और हिंदी कविता का पुनर्निर्माण :–

उन्नीसवीं शताबदी के अंत में भारत में औपनिवेशिक प्रभाव, सामाजिक बदलाव और भारतीय पुनर्जागरण के साथ हिंदी कविता में नए विचारों और शैलियों का उदय हुआ। इस समय में कविता ने न केवल धार्मिक और नैतिक विचारों की अभिव्यक्ति की, बल्कि समाज में व्याप्त समस्याओं, जैसे जातिवाद, महिला शिक्षा और अस्पृश्यता, के खिलाफ भी आवाज उठाई।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी कविता में आधुनिकता की नींव रखी। उनका काव्य समाज में जागरूकता और सुधार के लिए था। उनके काव्य रचनाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थीं, बल्कि उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज की समस्याओं को उजागर किया। साथ ही, उन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और हिंदी कविता :–

बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के उभार ने हिंदी कविता को एक नया उद्देश्य और दिशा दी। कवियों ने स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक संघर्ष और भारतीय पहचान के मुद्दों को अपनी कविता का हिस्सा बनाया। प्रेमचंद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', और जयशंकर प्रसाद जैसे साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज की विकृतियों और राष्ट्रीय आंदोलन के महत्व को उजागर किया। इस काल में कविता ने जनचेतना का निर्माण किया और समाज में व्याप्त असमानताओं के खिलाफ आवाज उठाई।

5. छायावाद :–

1920 के दशक में हिंदी कविता में छायावाद का उदय हुआ, जिसने आधुनिक हिंदी कविता की दिशा

को नया आकार दिया। इस आंदोलन में कवियों ने अपनी भावनाओं, मानसिक स्थितियों और कल्पना की अधिकता को कविता में प्रमुखता दी। निराला, पंत, और महादेवी वर्मा जैसे कवियों ने छायावाद के माध्यम से जीवन की जटिलताओं और मनोभावनाओं को संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया। इस युग में कविता का रूप अधिक व्यक्तिवादी और भावुक हुआ, जिसमें कवि की आंतरिक दुनिया को बाहर लाने की कोशिश की गई।

6. प्रगतिवाद और समाजवादी विचारधारा :-

1930 और 1940 के दशकों में हिंदी कविता में प्रगतिवाद और समाजवाद के विचारधाराओं का प्रभाव बढ़ा। इस समय के कवि समाजवादी आंदोलन से प्रेरित थे और उन्होंने कविता को सामाजिक बदलाव के लिए एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में प्रयोग किया। उन्होंने कविता के माध्यम से समाज में व्याप्त असमानता, गरीबी, शोषण और अन्याय के खिलाफ संघर्ष किया।

फणीश्वरनाथ रेणु और बलदेव कुमार ने प्रगतिवाद के तहत कविता लिखी, जिसमें उन्होंने भारतीय समाज के निम्न वर्ग की समस्याओं को उजागर किया। इस समय की कविता ने समाज के अंदर बदलाव की आवश्यकता को महसूस किया और उसे जनसाधारण तक पहुँचाने का प्रयास किया।

7. आधुनिकता और प्रयोगवाद :-

समकालीन हिंदी कविता में न केवल विचारों और दृष्टिकोण में परिवर्तन आया, बल्कि कविता के रूप और भाषा में भी नए प्रयोग किए गए। मुक्त कविता और निराकार कविता जैसी शैलियों ने कविता के पारंपरिक रूप को चुनौती दी। कवियों ने भाषा, शैली, और रूप में प्रयोग किए और कविता को एक ऐसी शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया, जो समाज और समय की जटिलताओं को उजागर कर सके।

केदारनाथ सिंह, अरुण कमल, और विष्णु खरे जैसे कवियों ने आधुनिकता और प्रयोगवाद के अंतर्गत कविता के नए आयामों का अन्वेषण किया। इन कवियों ने अपने समय के मानसिक और सामाजिक संकटों को कविता के माध्यम से व्यक्त किया। उन्होंने कविता को केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे जीवन के एक गंभीर और गहरे चिंतन के रूप में प्रस्तुत किया।

निष्कर्ष :-

आधुनिक हिंदी कविता का विकास सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों का परिमाण है। प्रत्येक कालखंड में कविता ने न केवल समाज की समस्याओं को व्यक्त किया, बल्कि उसे सुधारने का भी प्रयास किया। भक्ति काल से लेकर छायावाद, प्रगतिवाद और समकालीन प्रयोगवाद तक, हिंदी कविता ने अपने समय की सामाजिक, राजनीतिक और मानसिक स्थितियों को व्यक्त किया और उन्हें साहित्यिक रूप में प्रस्तुत किया। हिंदी कविता का यह विकास एक सतत प्रक्रिया है, जिसमें हर युग ने साहित्य को न केवल समृद्ध किया, बल्कि उसे समाज के बदलावों के साथ जोड़ने का कार्य भी किया।

संदर्भ :-

1. हिंदी कविता का इतिहास, क. पु. कालिदास।
2. भारतीय साहित्य का इतिहास, राधाकृष्णन।
3. छायावाद और उसकी विशेषताएँ, कुमारसाम्भव।
4. समकालीन हिंदी कविता, रजनीश यादव।

Email-Aman298kumari@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 21-24

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा

Dr. Anita Devi

Assistant Professor Hindi, L. J. N. H. Govt. Girls Degree College, Kotla Khurd, Una (H.P.)

सारांश :-

भारत की राष्ट्रभाषा होने के साथ–साथ, हिन्दी एक विश्वभाषा है, यह दुनिया के कई देशों में बोली और समझी जाती है। 10 जनवरी को अंतरराष्ट्रीय हिन्दी दिवस मनाया जाता है। पिछले कुछ दशकों में वैश्विक पटल पर हिंदी भाषा ने अपनी वैश्विक उपस्थिति दर्ज कराई है। भारतेत्तर देशों में रह रहे प्रवासियों के लिए हिंदी उनकी जातीय अस्मिता की प्रतीक है। हिंदी बोलना ही उनके लिए भारत और भारतीय संस्कृति से जुड़े रहना है। इसलिए हिंदी इन प्रवासी भारतीयों के लिए भारतीयता तथा विश्व के लिए वैश्विक नागरिकता की भाषा के रूप में उभरकर सामने आ रही है।

बीज शब्द :-

हिन्दी, राष्ट्रभाषा, विश्वभाषा, वैश्विक पटल, भूमंडलीकरण, बाजार की भाषा, शिक्षा और साहित्य।

भारत की राष्ट्रभाषा होने के साथ–साथ, हिन्दी एक विश्वभाषा है, यह दुनिया के कई देशों में बोली और समझी जाती है। 10 जनवरी को अंतरराष्ट्रीय हिन्दी दिवस मनाया जाता है। हिन्दी, एशियाई संस्कृति की प्रतिनिधि भाषा है यह मैत्री और वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को दर्शाती है।

हिन्दी एक सरल, सहज, और सुगम भाषा है। यह दुनिया की सबसे वैज्ञानिक भाषाओं में से एक है क्योंकि इसकी लिपि देवनागरी है, देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है इसमें जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। दुनिया भर में हिन्दी बोलने वालों की संख्या करोड़ों में है।

हिन्दी को अपने इस मुकाम पर पहुंचने के लिए कंप्यूटर जगत, शिक्षा क्षेत्र, ज्ञान–विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र से गुजरना पड़ा है। आज वेबसाइट से लेकर इंटरनेट तक हिन्दी भाषा में उपलब्ध है। सोशल मीडिया के माध्यम से देवनागरी लिपि और भारतीय लिपियों में काम करने का प्रचलन तेजी से हुआ है। वर्तमान समय में हिंदी केवल शिक्षा एवं साहित्य की भाषा की परिधि तक सीमित नहीं रह गई है। भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी वैश्विक परिदृश्य में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना रही है। हिंदी भाषा के निरंतर होते विस्तारीकरण के पीछे कुछ प्रमुख बातें सामने आती हैं– यह विदेशी भाषाओं के शब्दों को स्वयं में आत्मसात करने की क्षमता रखती है अर्थात् हिंदी भाषा का लचीलापन उसके विकास में सहयोगी सिद्ध हुआ है। हिंदी भाषा को बोलने–समझने वाले व्यक्तियों का संख्या बल काफी अधिक है, जिस कारण यह संपर्क भाषा के तौर पर आसानी से स्थापित हो जाती है।

उपभोक्तावादी संस्कृति ने भी हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में काफी योगदान दिया है। बाजार के दृष्टिकोण

से बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ विज्ञापनों और बाजार की भाषा को समझने के लिए हिंदी की ओर बढ़ रही हैं, हालांकि यह एक लाभ केंद्रित दृष्टिकोण ही है परंतु इससे भाषायी प्रसार हो रहा है इसे नकारा नहीं जा सकता।

'वैश्विक फलक पर हिंदी तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा का स्थान प्राप्त कर चुकी है। कोई भी भाषा अभिव्यक्ति और संप्रेषण मौखिक रुप के साथ–साथ लिखित साहित्य के रूप में भी करती है। हिंदी के वैश्विक स्तर पर स्थापित होने के पीछे इसमें रचित उत्तम साहित्य का बड़ा योगदान रहा है। अनुवाद की बढ़ती गुणवत्ता से हिंदी की स्थिति और बेहतर होती जा रही है। हिंदी साहित्य को वैश्विक साहित्य की कोटि में पहुँचाने में बहुत बड़ा योगदान प्रवासी भारतीयों का भी रहा है। प्रवासी भारतीय अपने साथ अपनी भाषा, संस्कृति आचार–विचारों को भी लेकर गए और अपनी भाषा में ही साहित्य रचना कर इसे और समृद्ध बनाया है। थाईलैंड, हांगकांग, फिजी, सूरीनाम, मॉरिशस इत्यादि ऐसे देश हैं, जहाँ हिंदी भाषी प्रचुर मात्रा में उपस्थित हैं। विश्व के डेढ़ सौ से भी अधिक देशों में हिंदी के शिक्षण के लिए केंद्र खोले गए हैं जिस कारण हिंदी की व्यापकता दिन–प्रति–दिन बढ़ती जा रही है'।[1]

भूमण्डलीकरण का प्रभाव हिंदी पर भी पड़ा है। "भूमण्डलीकरण की उपभोक्तावादी संस्कृति ने हिंदी को भी प्रभावित किया है। अतः अब उसका बहुविध स्वरूप और प्रयोजनमूलक रूप उजागर हुआ है। अब हिंदी सृजन राजभाषा व संपर्क भाषा के समांतर, वह जनसंचार के साधनों में प्रचलित तकनीकी समृद्धि के अनुरूप आकाशवाणी दूरदर्शन कंप्यूटर इंटरनेट और पत्रकारिता से होते हुए सेटेलाइट एवं डिजिटल क्रांति से भी संपृक्त हो चुकी है। आज हिंदी में ऐसे अनेक अंतर्राष्ट्रीय शब्द प्रचलित हो गए हैं जिनकी विश्व स्तर पर उपयोगिता है। आज उपभोक्ताओं की रूचि को ध्यान में रखकर साहित्य लिखा जा रहा है। विश्व बाजार सूचना तंत्र से संचालित है जो विज्ञापनों से अटे पड़े हैं।"[2]

हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन द्वारा रोजगार के अनेक क्षेत्र हैं , जैसे– शिक्षा का क्षेत्र, मीडिया एवं पत्रकारिता का क्षेत्र, अनुवाद क्षेत्र, प्रशासनिक सेवा क्षेत्र, स्वतंत्र–लेखन एवं प्रकाशन का क्षेत्र आदि।

केवल मीडिया के क्षेत्र में ही रोजगार के अनेक विकल्प मौजूद हैं, जैसे पत्रकार, संपादक, प्रूफ–रीडर, लेखक, भाषातंरकार, अनुवादक, चित्र–संपादक, कार्टूनिस्ट, स्लोगन राइटर, विज्ञापन लेखक, फीचर–लेखक आदि। 'हिन्दी अब विश्व बाजार की भी भाषा बन रही है। जल्दी ही यह रोजगार की भाषा बनने जा रही है। दरअसल, बाजार के खिलाड़ी, बाजार का रुख भाँपकर व्यवहार करते है। इसीलिए मीडिया का बाजार हिन्दी के लिए खुल चुका है। हिन्दी के लिए यह स्थिति सुखद है। चाहे–अनचाहे वह इसी वजह से विश्व–बाजार की भाषा बन गई है।[4] तकनीकी रूप से हिन्दी को और ज्यादा उन्नत, समृद्ध तथा आसान बनाने के लिए अब कई सॉफ्टवेयर भी हिन्दी के लिए बन रहे हैं। यह हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी की ताकत ही कही जाएगी कि इसके इतने ज्यादा उपयोगकर्ताओं के कारण ही अब भारत में बहुत सारी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां हिन्दी का भी उपयोग करने लगी हैं। हिन्दी की बढ़ती ताकत को महसूस करते हुए भारत में ई–कॉमर्स साइटें भी ज्यादा से ज्यादा ग्राहकों तक अपनी पहुंच बनाने के लिए हिन्दी में ही अपनी 'एप' लेकर आ रही हैं।[5]

इस प्रकार वैश्विक परिदृश्य में हिंदी रोजगारपरक संभावनाएँ लगातार बढ़ती जा रही हैं, जरूरत है हिंदी के प्रति लोगों में लगाव, रुझान एवं आत्मविश्वास पैदा करने की, साथ ही हिंदी के प्रति कुंठा एवं हीन–भावना को दूर करके भी हिंदी से बहुत कुछ प्राप्त किया जा सकता है। वास्तव में हमें हिंदी की इस शक्ति को पहचानने

की आवश्यकता है, जिसे हम भूल बैठे तस–हैं।

विदेशी धरती पर हिंदी की सेवा करने वाले सितारों में रूस के पी.ए. वारान्निकोव और जर्मनी के लोठार लुत्से का नाम भी सम्मान के साथ लिया जाता है। लोठार लुत्से भारत में जर्मनी के सांस्कृतिक केंद्र मैक्समूलर केंद्र के निदेशक रहें हैं। उनकी पत्नी बारबरा लुत्से भी नब्बे के दशक के अखबारी दिनों में मैक्समूलर केंद्र की निदेशिका रही। लोठार लुत्से ने हिंदी के कई कवियों की कविताओं का अनुवाद जर्मन भाषा में किया जिनमें मुख्य रूप से विष्णु खरे और वाजपेयी की कविताओं की अनुदित कृतियाँ प्रमुख हैं। रूस के पी.ए. वारान्निकोव ने रामायण का रूसी भाषा में अनुवाद किया। मॉस्को विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाते समय वारान्निकोव हिंदी समाचार पत्रों के लिए समय–समय पर लेख भी लिखते रहे। बाजारवाद के इस दौर में अंग्रेजियत के खिलाफ खड़े होने के लिए हमें यही हिंदी सेवी हमेशा प्रेरित करते रहेंगे।[6]

एक अनुमान के मुताबिक लगभग 2 करोड़ प्रवासी भारतीय विश्व के अलग–अलग देशों में रह रहे हैं। भारतेतर देशों में रह रहे इन प्रवासियों के द्वारा अंग्रेजी उनके कामकाज की भाषा, हिंदी इनकी राष्ट्रीयता की भाषा एवं उनकी स्थानीय भाषा बोली उनके घर परिवार की भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है। इस तरह देखा जाए तो वैश्विक मंच पर भारतीयों के साथ उनकी भाषा, समाज एवं संस्कृति भी अपनी विशिष्ट पहचान निर्मित कर रहे हैं। भारतीय भाषाओं विशेषकर हिंदी की इस वैश्विक पहुँच के पीछे कई प्रकार के कारक कार्य कर रहे हैं। जिनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण कारण निम्नलिखित माने जा सकते हैं :–

1. भारतेत्तर देशों में रह रहे प्रवासियों के लिए हिंदी उनकी जातीय अस्मिता की प्रतीक है। यही कारण है कि विदेशों में बसे भारतीयों, चाहे वे हिंदी भाषी हो अथवा अहिंदी भाषीय सभी के लिए हिंदी भाषा उनकी सामूहिक पहचान भारतीयता का प्रतीक हैं। हिंदी बोलना ही उनके लिए भारत और भारतीय संस्कृति से जुड़े रहना है। इसलिए हिंदी इन प्रवासी भारतीयों के लिए भारतीयता तथा विश्व के लिए वैश्विक नागरिकता की भाषा के रूप में उभरकर सामने आ रही हैं।

2. विश्व में भारतीय भाषाओं के वैश्विक पहुँच के पीछे भारत सरकार के द्वारा स्थापित भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, दिल्ली के पिछले 70 वर्षों के योगदान की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद अपने विश्व भर में स्थापित 38 सांस्कृतिक केंद्रों तथा भारत के विभिन्न राज्यों में स्थापित 19 केंद्रों के माध्यम से भारतीय भाषाओं और संस्कृति के वैश्विक प्रचार–प्रसार में संलग्न हैं। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् द्वारा विश्व के विभिन्न देशों में हिंदी, संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं के अध्ययन, अध्यापन के लिए स्थापित चेयर स्वयं में अतिमहत्त्वपूर्ण एवं अनुपम उपक्रम है, जिसके द्वारा भारतीय भाषाओं का विश्व भर में छात्रों के द्वारा अध्ययन किया जा रहा है। अतः भारतीय भाषाओं को वैश्विक स्वरूप प्रदान करने में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के सराहनीय योगदान है।

3. भारतीय भाषा विशेषकर हिंदी की वैश्विक स्वीकार्यता के पीछे भारत में हिंदी भाषा के क्रियान्वयन एवं विकास के लिए स्थापित संस्थाओं, समितियों यथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय, आगरा, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा इत्यादि के द्वारा विदेशी छात्रों के लिए हिंदी भाषा के प्रशिक्षण के लिए संचालित पाठ्यक्रमों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। ये सभी संस्थान मिलकर प्रतिवर्ष सैकड़ों विदेशी छात्रों को हिंदी भाषा में पारंगत करके विश्व मंच पर हिंदी के वैश्विक दूत तैयार करते हैं। जो कि अपने–अपने देशों में हिंदी और

भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि के रूप में हिंदी भाषा की वैश्विक परिधि का निर्माण कर रहे हैं।

4. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा अब तक आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलनों ने भी हिंदी भाषा के वैश्विक परिदृश्य को बहुत विस्तार दिया है। सन् 1975 में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन से आरंभ हुआ यह कारवाँ जिन जिन देशों में गया अपने साथ–साथ भाषा एवं संस्कृति का एक पूरा का पूरा कारवाँ लेता गया। निःसंदेह हिंदी भाषा को अंतरराष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करने में इन सम्मेलनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

5. वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाओं के बढ़ते वर्चस्व के पीछे का एक बड़ा कारण भारतीय संस्कृति के प्रति विदेशियों का अनुराग भी है। वे भारतीय समाज एवं संस्कृति को और अधिक नजदीक से जानने एवं समझने के लिए यहाँ की भाषा को सीखना चाहते हैं। एक अनुमान के मुताबिक संपूर्ण विश्व में लगभग 150 से अधिक विश्वविद्यालयो में हिंदी तथा भारतीय भाषाओं का अध्ययन, अध्यापन किया जा रहा है। भारतीय भाषाओं के इस वैश्विक विस्तार एवं स्वीकार्यता के लिए यह अपने आप मे एक बड़ी उपलब्धि है।[7]

अंतत हम कह सकते है कि पिछले कुछ दशकों में वैश्विक पटल पर हिंदी भाषा ने अपनी वैश्विक उपस्थिति दर्ज कराई है। विदेशों में हिंदी भाषा की लोकप्रियता तथा भारत में नमस्ते ट्रंप जैसे चर्चित कार्यक्रमों का आयोजन होना। हिंदी भाषा एवं भारतीय संस्कृति के वैश्विक विस्तार का द्योतक है।

सन्दर्भ सूची :–

1. वर्षा चौधरी, दृष्टि आईएएस ब्लॉग, 20 श्रनद, 2023
2. नीरज कुमार चौधरी, भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी, भाषा विमर्श, अंक 19, दिसम्बर 2017, 27
3. करुणाशंकर उपाध्याय, हिंदी का वैश्विक परिदृश्य (लेख)
4. वैश्वीकरण, मीडिया और हिन्दी (लेख)– अजय कुमार गुप्ता–चेतना का आत्मसंघर्ष : हिन्दी की इक्कीसवीं सदी– सं० कन्हैया लाल नन्दन, पृ०– 78–79
5. योगेश कुमार गोयल, वैश्विक स्तर पर बढ़ रही है हिन्दी की ताकत, 10 श्रंद, 2022
6. डॉ. मंजु रानी, हिंदी का वैश्विक परिदृश्य, पृ० 28
7. योगेन्द्र सिंह, वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाएँ, हिंदी और नई शिक्षा नीति (लेख)
8. अय्यर, एन.ई. विश्वनाथ, अनुवाद भाषाएँ समस्याएँ, ज्ञान गंगा, दिल्ली, 2007
9. कपिलदेव, भाषा–विज्ञान एवं भाषा–शास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2005
10. गर्गेश, रवीन्द्र गोस्वामी, कृष्ण कुमार गुप्ता, नीता (सं.), अनुवाद एवं भाषांतरण, ओरिएंट लांगमैन, संस्करण 2007
11. डॉ. मंजु रानी, हिंदी का वैश्विक परिदृश्य, मानसरोवर प्रकाशन, नोएडा, उ.प्र., संस्करण 2017

Mob : 8894951308

Email id : anitahindi2011@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 25-29

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वर्तमान हिन्दी भाषा का वैश्विक परिदृश्य : एक दृष्टिकोण

अनीता रानी

शोधार्थी, केंद्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान, अजमेर।

शोध सार :-

वर्तमान दौर में हिन्दी भाषा का वैश्विक स्वरूप क्या है को जानने हेतु भाषा तथा वैश्वीकरण का स्वरूप समझना आवश्यक जान पड़ता है। भाषा मानव–सभ्यता के लिए अपने विचारों का आदान–प्रदान करने का एक सशक्त माध्यम है। भाषा मावन–समाज के लिए किसी वरदान से कम नहीं है क्योंकि मावन अपनी भावनाओं को भाषा के माध्यम से ही दूसरों के समकक्ष सरलता से अभिव्यक्त कर पाता है। भले ही वो मौखिक रूप हो अथवा लिखित रूप हो। "भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली–भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टतया समझ सकता है। मनुष्य के कार्य उसके विचारों से उत्त्पन्न होते हैं और इस कार्यों में दूसरों की सहायता अथवा सम्मति प्राप्त करने के लिए उसे वे विचार दूसरों पर प्रकट करने पड़ते हैं। जगत् का अधिकांश व्यवहार, बोलचाल अथवा लिखा पढ़ी से चलता है, इसलिए भाषा जगत् के व्यवहार का भूल है।"[1]

संसार में अनेकों राष्ट्र हैं जिनका अपना अलग रहन–सहन, समाज, सभ्यता, संस्कृति, भाषा, रस्मों–रिवाज हैं जिसके माध्यम से उनकी एक विलक्षण पहचान सम्पूर्ण विश्व में होती है। ऐसे ही भारत की विश्व में भाषिक पहचान का आधार हिन्दी है। सूचना व संचार के इस युग में हिन्दी विश्व भर में प्रसिद्धी हासिल करने वाली भाषाओं में गिनी जाने लगी है जो कि विश्व में हमारी राष्ट्रीय पहचान के लिए एक शुभ संकेत है। "आधुनिक वैश्वीकरण के दौर में हिंदी का चेहरा बदल गया है।"[2]

बीज शब्द :- हिन्दी, भाषा, वैश्विक, संचार, राष्ट्र, अंगरेजी, अवधारणा।

प्रस्तावना :-

'कोस कोस पर पानी बदले,चार कोस पर वाणी' वाली कहावत को चरितार्थ करता हमारा भारत देश अनेकताओं में एकता के सूत्र में हिन्दी के माध्यम से ही गुम्फित है। भारत विश्व में ऐसा राष्ट्र है जिसमें अनेक राज्य हैं और प्रत्येक राष्ट्र की अपनी अलग पहचान है। दूसरे शब्दों में कहें तो भारत की पहचान अनेकताओं में एकता दर्शाने वाले राष्ट्र के रूप में स्थापित है। यह एक ऐसा राष्ट्र है जिसमें विभिन्न राज्यों में विभिन्न रीति–रिवाज, संस्कृतियाँ, खान–पान तथा भाषाएँ, उपभाषाएँ तथा उनकी बोलियाँ अलग–अलग हैं, फिर भी यदि संयुक्त रूप में भारत की किसी एक भाषा का चयन करना हो तो हिन्दी को ही हमारे राष्ट्र की पहचान का प्रतीक माना जाता है। यदि हिन्दी को भारत की प्रतीक भाषा कहा जाए तो इस बात में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी,

चूँकि भारत के बड़े भू–भाग में हिन्दी भाषा बोली व समझी जाती है यदि कोई हिंदी बोलने में असमर्थ हो तो भी हिन्दी समझ तो लेता ही है। "हिन्दी भारतवर्ष के बहुत विशाल प्रदेश की साहित्य–भाषा है। राजस्थान और पंजाब राज्य की पश्चिमी सीमा से लेकर बिहार के पूर्वी सीमांत तक तथा उत्तर प्रदेश के उत्तरी सीमांत से लेकर मध्य प्रदेश तक के अनेक राज्यों की साहित्यक भाषा को हम हिन्दी कहते आए हैं।"[3] साहित्य को समाज का दर्पण स्वीकृत किया जाता है तो हिन्दी को आदिकाल से ही भारतीय साहित्य की प्रस्तोता माना जाता रहा है। हिंदी भाषा के विकास हेतु साहित्यकारों ने भरसक प्रयास किये हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तो निज भाषा की उन्नति और विकास के पक्ष में कहते भी हैं – 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा के, मिटत न हिय को सूल।'

सूचना व संचार प्रौद्योगिकी का वर्तमान युग जिसमें 21वीं सदी में संपूर्ण विश्व को 'वैश्विक गाँव' की संज्ञा दी जाती है। वैश्वीकरण में हिन्दी स्वरूप समझने के लिए वैश्वीकरण का स्वरूप क्या है जानना भी अनिवार्य हो जाता है। अनेकों विद्वानों द्वारा वैश्वीकरण की अवधारणा को परिभाषित किया जा रहा है, जो इस अवधारणा को समझने हेतु आवश्यक कड़ी है। "भूमंडलीकरण / विश्वायन / जगतीकरण / वैश्वीकरण (ग्लोबलाइजेशन) :– कंप्यूटर, इंटरनेट और संचार के अन्य आधुनिकतम साधनों के जरिये दुनिया में राष्ट्रों, समुदायों, संस्कृतियों और व्यक्तियों के बीच के फासलों का कम से कमतर होते चले जाना।"[4] हिन्दी का 21वीं सदी में वर्तमान स्वरूप 'वैश्विक परिदृश्य' में क्या है और क्या होता जा रहा है यह गहन चिंतन का विषय है। चूँकि वैश्वीकरण की इस अवधारणा के कारण हिन्दी भाषा में साकारात्मक तथा नाकारात्मक प्रभाव देखने को मिलते हैं। इस युग में सम्पूर्ण विश्व के राष्ट्रों की सभ्यता–संस्कृति, भाषा, शिक्षा, अर्थ, राजनीति प्रत्येक व्यवस्था एक–दूसरे को प्रभावित करते हुए आपस में समाहित होती जा रही हैं। इसलिए हिन्दी को वैश्विक भाषा समझा जा रहा है। जिसके लिए विद्वानों के अपने–अपने मत हैं। कोई इस बात के पक्ष में नजर आता है तो कोई विपक्ष में। "इन दिनों हिन्दी विश्व की भाषा बन गई है जिसका विश्व के 162 विश्वविद्यालयों में शिक्षण कार्य हो रहा है, तथा दो लाख से ज्यादा छात्र समूचे विश्व में हिन्दी का पठन–पाठन एवं शिक्षण से शीघ्र तौर पर जुड़े हुए हैं। विश्व की 70 से ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय बड़ी पूँजीपति औद्यौगिक कम्पनियाँ अपने यहाँ शीर्ष पदों के लिए हिन्दी भाषाई उच्चत्तर अधिकारियों को नियुक्त कर चुकी है।"[5]

हिन्दी का वर्तमान स्वरूप पूर्णतः वैश्विक होता नजर आ रहा है। आज पूरे विश्व में हिन्दी बोलने वालों की संख्या 50 करोड़ के ऊपर स्वीकृत की जा रही है, जो कि हिन्दी की वैश्विक स्थिति को प्रस्तुत करता है। हिन्दी का प्रयोग कंम्प्यूटर की भाषा में होना इसके विकास को और अधिक गतीशीलता प्रदान करता है। वैश्वीकरण की इस दौड़ में हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार में प्रयोग किए जा रहे टेक्नोलॉजी के उपकरणों जैसे कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाईल फोन, हिन्दी टाइपिंग आदि अपनी अहम् भूमिका अदा कर रहें हैं। हिन्दी शिक्षण हेतु भी टेक्नोलॉजी के उपकरणों का प्रयोग हिन्दी के विकास की दिशा को बढ़ा रहा है, जिससे हिन्दी भाषा विस्तृत हो रही है। "आज हिन्दी का फलक भी ग्लोबलाइजेशन के चलते वैश्विक हो गया है। नई हिन्दी अब वैश्विक हिन्दी है।"[6] हिन्दी भाषा का प्रयोग वैश्विक स्तर पर होना निश्चित रूप से शुभ संकेत माना जा रहा है, किंतु हिन्दी वर्तनी का तीव्रता से बदलता हुआ स्वरूप देखते हुए आने वाला समय हिन्दी भाषा के लिए कोई शुभ संकेत नहीं है। हिन्दी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्दों का प्रयोग जिसमें अंग्रेजी भाषा के शब्दों की बहुतायत है हिन्दी के

मानकीकरण के लिए नुकसानदायक साबित हो रहा है। इसी कारण हिन्दी को हिंगलिश तथा अन्य नामों से सम्बोधित किया जाने लगा है। "हिन्दी भाषा की इस बाजार वृद्धि में सबसे ज्यादा खतरा इसका टूटता हुआ भाषाई मानकीकरण है। आज हिन्दी के इस विस्तृत ग्लोबल बाजार में देखें तो कह सकते हैं कि आज हिन्दी की पहचान एक उस अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी भाषा की पहचान है, जिसमें विश्व के समस्त देशों की बोलियों के शब्द समाहित हुए देखे जा सकते हैं। आज इसी हिन्दी को खिचड़ी भाषा अथवा अंग्रेजी मिश्रित अंग्रेजी दां हिंदी का नाम दिया जा सकता है।"[7] हिन्दी के फलक का विस्तृत होने के पीछे का कारण भारत के नागरिकों का बड़ी संख्या में विदेशों की तरफ पलायन माना जा रहा कि भारत के नागरिक विदेशों में रोजी–रोटी कमाने हेतु जा रहे हैं तथा हिन्दी को थोड़ी–बहुत मात्रा में अपने साथ ले जाते हैं। वैश्वीकरण की इस दौड़ में हिन्दी भाषा का विस्तार होने के पीछे वर्तमान में हिन्दी शिक्षण हेतु प्रयोग की जाने वाली टेक्नोलॉजी के उपकरणों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। सूचना व संचार के विस्फोट में अनेकों डिजीटल माध्यमों का अन्वेषण हुआ है जो हिन्दी को वैश्वीकरण की इस दौड़ में बनाए रखने में कारगार सिद्ध हो रहे हैं। चूँकि अब जमाना केवल रेडियो तथा टेलीविजन तक सीमित न रहते हुए डिजीटल उपकरणों का हो गया है, इसलिए हिंदी भाषा के प्रचारण–प्रसारण हेतु इन उपकरणों का प्रयोग होने लगा है। "सूचना क्रांति के महाविस्फोट में हिन्दी आज विज्ञान, तकनीक, कंम्प्यूटर एवं प्रकाशन, प्रसारण की एक नई परिभाषा को परिलक्षित कर रही है।"[8]

वैश्विक–स्तर पर हिन्दी भाषा की दिशा व दशा क्या है यह देखने के लिए इस बात की तरफ भी विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता जान पड़ती है कि भारत में हिन्दी की वर्तमान स्थिति कैसी है। वैश्विक–स्तर की भाषाओं में अंगरेजी भाषा का जितना बोलबाला है, उतना अन्य किसी और किसी भाषा का नहीं है। तो हिन्दी को वैश्विक स्तर की भाषा के रूप में देखना जितना आसान लग रहा वास्तविकता इस से कोसों दूर है। चूँकि कि भारत में ही हिन्दी की अपेक्षा अंगरेजी को अधिक महत्त्वपूर्ण है जबकि भारत का बड़ा भू–भाग हिन्दी बोलता, पढ़ता और लिखता है। आज का कड़वा सच है कि हिन्दी की अपेक्षा भारत में पढ़ा–लिखा तबका अंगरेजी को अहमियत देना पसंद करता है। त्रासदी यह है कि वर्तमान भारत के प्रत्येक राज्य में पढ़े–लिखे होने का सही अर्थ अंगरेजी भाषा का ज्ञान होना ही स्वीकृत किया जा रहा है। आम–जन की नजर में भी वही व्यक्ति पढ़ा–लिखा है जो फर्राटेदार अंगरेजी बोलना जानता है। "शिक्षित होने का मतलब ही भारत में अंगरेजी पढ़ा–लिखा होना हो गया है।"[9] अंगरेजी बोलने वाले व्यक्ति को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है तथा हिन्दी को हेय दृष्टि से देखा जाना यह भारत के हालात हैं तो वैश्विक–स्तर पर हिन्दी की दशा का अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है।

हिन्दी भाषा की स्थिति अपने ही देश में दिन–ब–दिन दयनीय होती प्रतीत हो रही है। यदि इस बात की ओर गंभीरता से ध्यान नहीं दिया गया तथा हिन्दी की स्थिति को सुधारने हेतु सार्थक कदम नहीं उठाए गए तो हिन्दी की वैश्विक–स्थिति का तो पता नहीं, लेकिन देश के भीतर इसके भीषण नतीजे देखने को अवश्य मिलेंगे। यदि देश में ही भाषा की स्थिति डावांडोल होने लगे तो विश्व में इसे कैसे मजबूती मिल सकेगी। जैसे किसी व्यक्ति के पैर किसी कारणवश न रहें तो वो बैसाखियों के सहारे चलेगा किंतु स्वमं के पैरों पर चल सकना उसके के असम्भव है। ऐसी ही हालत हिन्दी की होगी यदि इसके दिशा व दशा को सुधारने की तरफ कदम ना उठाए गए तो।

यदि वैश्विक–स्तर पर हिन्दी की तुलना अंगरेजी से की जाए तो सत्य यही है कि अंगरेजी को दुनिया

भर के लोग बहुत तीव्रता से सीख रहें हैं। अंगरेजी भाषा का बोलबाला भारत में एक बाजार के रूप में देखा जा सकता है। आज प्रत्येक राज्य में जगह–जगह आईलेट्स शिक्षण संस्थाओं की भरमार देखी जा रही है। भारत के लोग अंगरेजी भाषा सीखते हैं ताकि वो विदेशों में जाकर बस सके। वैश्वीकरण न केवल हिन्दी भाषा का ही नहीं अपितु देश की सभ्यता–संस्कृति का भी हनन कर रहा है। विश्व में यदि किसी भाषा का वर्चस्व है तो निसंदेह रूप से अंगरेजी भाषा का ही कहा जा सकता है। वैश्वीकरण के बहाने से पश्चिमी राष्ट्रों ने न केवल अपने बाजार के उत्पादों को सम्पूर्ण संसार में ब्रांड के रूप में थोपना प्रारंभ किया है, अपितु उनकी मंशा तो अपनी सभ्यता–संस्कृति तथा भाषा को भी अन्य राष्ट्रों पर लादना नजर आ रहा है। वैश्वीकरण की अवधारणा का उद्देश्य ही पश्चिम के राष्ट्रों जिनमें भी अमेरिका के हितों की पैरवी करना है। अमेरिका जैसे राष्ट्र की संसार भर में वर्चस्वशीलता को स्थापित करने हेतु इस अवधारणा में अंगरेजी भाषा एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य कर रही है। किसी भी भाषा को सीखने में कोई बुराई नहीं है, किंतु अपना भुला कर कुछ नया सीखना भी तो समझदारी वाली बात नहीं है। बहरहाल वैश्वीकरण के बोलबाले में विश्व की भाषाओं में अंगरेजी का दबदबा ही दीख पड़ता है। जिससे हिन्दी को अपने देश में ही असुरक्षित महसूस हो रहा है। "वैश्वीकरण का अगर किसी भाषा को लाभ हुआ है तो वह अंगरेजी ही है। सारी दुनिया के लोग धड़ल्ले से अंगरेजी सीख रहे हैं? क्या यह मानसिक दासता है या कि मानसिक मुक्ति। मुक्ति अपनी परंपरागत थातियों से? आर्थिक लाभ के लिए! हिन्दी ही नहीं विश्व की दूसरी भाषाओँ को भी खतरा पैदा हो गया है।"[10]

वैश्वीकरण की अवधारणा के माध्यम से जितने भी आविष्कार हुए हैं यदि उन्हें वरदान माना जाए तो इस अवधारणा ने अनेकों श्राप भी मानवता को दिए हैं। 'वैश्विक गाँव' की लहर से अनेकों सभ्यताओं को नुकसान झेलना पड़ रहा है। जिसमें क्षेत्रीय बोलियों तक का क्षरण हो रहा है। तो राष्ट्रीय भाषाओं पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक बात है। हिन्दी भाषा को अपने देश में ही अपने अस्तित्त्व की रक्षा करने हेतु जूझना पड़ रहा है। वो भी किसी विदेशी भाषा के कारण जो कि देश के लिए एक त्रासदी है। वर्तमान भारत की नागरिकता में दोहरापन झलकता है। इसी दोहरेपन को अक्सर इंडिया बनाम भारत कहकर सम्बोधित किया जाता है और इस बात में कोई दौराय भी नहीं है। भारत की वास्तविकता भी यही है कि जहाँ के नागरिकों में दो प्रकार की श्रेणियाँ पायी जाती है। यह दोहरापन रहन–सहन के साथ–साथ भाषा में भी पर्याप्त मात्रा में देखा जा सकता है। यहाँ एक तरफ दौलत–शौहरत का जीवन बसर करने वाले लोग हैं इनके विपरीत मुश्किल से गुजारा करने वाले भी लोग हैं। वैसे ही दूसरी तरफ भाषा के आधार पर एक तरफ अंगरेजी पसंद करने वाला तबका और दूसरी तरफ वो तबका जो न ही अंगरेजी को अपना सकता है वो न ही अपनी मूल भाषा को छोड़ ही सकता है। दूसरा वर्ग पहले वर्ग की देखा–देखी अपनी दिनचर्या में अनेकों अंगरेजी के शब्दों का प्रयोग करने लगा है। जिस कारण हिन्दी के साथ–साथ और अन्य भारतीय क्षेत्रीय बोलीयों व भाषाओं के शब्द लोप हो रहे हैं।

निष्कर्ष :-

किसी भी राष्ट्र की धरोहर वहाँ की युवा पीढ़ी को स्वीकार किया जाता है। क्योंकि निकट भविष्य की बागडौर इसी युवा–पीढ़ी के हाथों में होती है। इसलिए वैश्विक–स्तर पर भी युवा पीढ़ी अपने राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है। समाज को किस दिशा में लेकर जाना है यह सारी बातें कहीं–न–कहीं युवा पीढ़ी के साथ सम्बन्ध रखती हैं। आज हिन्दी की जो वैश्विक स्थिति है उसमें साहित्यकार तथा हिन्दी को चाहने वाले अपना सार्थक

योगदान दे रहे हैं, किंतु भारत की युवा पीढ़ी इस बात की उपेक्षा करती नजर आती है। यदि कहा जाए कि हिन्दी भाषा अपने घर में अपने लोगों से उपेक्षित है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। "मूल बात यही है कि अपने ही घर में निरादृत होकर क्या हिन्दी विश्व में कोई सम्माननीय स्थान पा सकती है?"[11]

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. हिन्दी व्याकरण, कामता प्रसाद गुरु, प्रकाशन संस्थान : नयी दिल्ली–110002, पृष्ठ संख्या–19
2. मीडिया और हिन्दी वैश्वीकृत प्रयोजनमूलक प्रयोग, कृष्ण कुमार रत्तू, वाईकिंग बुक्स, पृष्ठ संख्या–15
3. हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास, हजारी प्रसाद दिवेदी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–17
4. भारत का भूमंडलीकरण, अभय कुमार दूबे, वाणी प्रकाशन–नयी दिल्ली–110002, पृष्ठ संख्या–439
5. मीडिया और हिन्दी वैश्वीकृत प्रयोजनमूलक प्रयोग, कृष्ण कुमार रत्तू, वाईकिंग बुक्स, पृष्ठ संख्या–14
6. वही, पृष्ठ संख्या– 9
7. वही, पृष्ठ संख्या–18
8. वही, पृष्ठ संख्या–16
9. हिन्दी भाषा का भूमंडलीकरण, सुषम बेदी, सामयिक बुक्स, पृष्ठ संख्या–156
10. वही, पृष्ठ संख्या–157
11. वही, पृष्ठ संख्या–159

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 30-34

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा

अविनाश कुमार

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला–05

सारांश :–

आधुनिकता की ओर तेजी से अग्रसर कुछ भारतीय आज भले ही अंग्रेजी बोलने में अपनी आन–बान और शान समझते हों किन्तु सच यही है कि हिन्दी ऐसी भाषा है जो प्रत्येक भारतवासी को वैश्विक स्तर पर मान–सम्मान दिलाती है। सही मायनों में हिन्दी विश्व की प्राचीन, समृद्ध एवं सरल भाषा है। भारत की राजभाषा हिन्दी जो न केवल भारत में बल्कि अब दुनिया के अनेक देशों में बोली जाती है। वैश्विक स्तर पर हिन्दी की बढ़ती ताकत का सबसे बड़ा सकारात्मक पक्ष यही है कि आज विश्वभर में करोड़ों लोग हिन्दी बोलते हैं और दुनियाभर के सैंकड़ों विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। हमारे देश में अनेक भाषाएं हैं जिनको कई विद्वान भाषा एवं बोलियों में भी बाँटते हैं। भाषा का प्रयोग–क्षेत्र जितना ही विस्तृत होता है वह उतनी ही सबल होती है।

जब भाषा के प्रयोग को समाज में सम्मान मिलता है तो उसकी स्वीकृति बढ़ती है। भाषा प्रयोग की औपचारिक और अनौपचारिक शैलियों में भी अंतर होता है और उनकी शब्दावली भी भिन्न हो जाती है। परंतु यह सर्वमान्य है कि कोई भाषा उतनी ही सीखी जाती है जितनी उसकी उपयोगिता होती है। भाषा के प्रयोग से ही उसका अस्तित्व होता है और प्रयोक्ताओं कि आवश्यकता से उसकी दक्षता निर्धारित होती है। जब समाज को भाषा की जरूरत होती है तो वह उसका संरक्षण करता है। यह भी गौरतलब है कि भाषाओं के विस्तार के लिए राजनीति बेहद महत्वपूर्ण है। यदि आज अंग्रेजी का बोलबाला है तो इसका कारण यही है कि दुनिया में अनेक देश उसके उपनिवेश रहे हैं। वही हाल फ्रेंच या स्पेनिश साम्राज्य का था। जहां भी उनके उपनिवेश बने थे वहां उनकी भाषा चली। भारत को स्वतंत्रता मिलने के सात दशक बाद भी अंग्रेजी के प्रति ज्यादातर भारतीयों का एक दुर्निवार आकर्षण आज भी बना हुआ है और उसे आसानी से देखा जा सकता है। जीवन के अनेक क्षेत्रों में प्रयोग के कारण अंग्रेजी का प्रभुत्व बना हुआ है। अंग्रेजी ज्ञान के आधार पर अच्छी नौकरी की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। साथ ही सरकारी दस्तावेज मूलतः अंग्रेजी में होते हैं और सरकारी कामकाज में अंग्रेजी का बोलबाला है। इसी तरह प्रौद्योगिकी तथा ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में भी अंग्रेजी की उपस्थिति प्रमुखता से देखी जा सकती है।

ऐसे में अंग्रेजी के जानकार व्यक्ति को समाज में अधिक आदर और सम्मान मिलता है। अनुमान है कि जीवन में महत्वपूर्ण लगभग 85 प्रतिशत कार्यों में अंग्रेजी की साख है और 15 प्रतिशत कार्यों में ही हिंदी का प्रयोग

होता है। स्वतंत्रता मिलने के बाद विदेशी भाषा की उपयोगिता और उससे जुड़ा सम्मान भाव कम नहीं हुआ है। यही कारण है कि आज गरीब तबके के लोग भी लाख मुसीबतें झेल कर महंगे अंग्रेजी स्कूल में ही अपने बच्चे को भर्ती करा कर उसे पढाने का बंदोबस्त करते हैं।

सरकार इन सबसे उदासीन है हालांकि मातृभाषा में ही बच्चों की शिक्षा का लाभ सर्वविदित है। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में अंग्रेजी की घुसपैठ बढ़ती जा रही है और 'हिंग्लिश' यानी हिंदी में अंग्रेजी के छिड़काव को लेकर लोग गर्व करते दिख रहे हैं। लोग अपनी बात को प्रभावी बनाने के लिए अनावश्यक रूप से अंग्रेजी शब्दों को ठूंसते रहते हैं। ऐसी लापरवाही अवांछित परिणाम भी होते हैं। विशेष रूप से हिंदी की वर्तनी या हिज्जा विकृत हो जाता है। दूसरी ओर अंग्रेजी भाषा का ज्ञान और उपलब्धि भी सामान्यतः साधारण स्तर की ही पाई जाती है। कोई भी भाषा वैश्विक भाषा का दर्जा कई कारणों से प्राप्त करती है, उसमें जो मुख्य कारण है वह उस भाषा का प्रयोग करने वाले लोगों की बहुलता है। इस रुप में आज हिंदी बोलने–लिखने एवं संपर्क करने वाले लोगों की संख्या भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के लगभग सभी देशों में मिलती है। एक तथ्य यह भी है कि चीनी भाषा के बाद हिंदी विश्व में सबसे अधिक प्रयुक्त होने वाली भाषा बन चुकी है।

टोक्यो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर होजुमि तनाका के अनुसार हिंदी बोलने वाले लोगों का स्थान दूसरा है जबकि चीनी का प्रथम और अंग्रेजी तीसरे स्थान पर पहुंच गई है। वैश्विक भाषा की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता है कि उस भाषा में रचे गए साहित्य की एक विस्तृत परंपरा हो तथा उसमें विधाएँ वैविध्यपूर्ण एवं समृद्ध हों उस भाषा के पास विपुल मात्रा में शब्द भण्डार हो, जिससे विश्व की अन्य भाषाओं से विचार–विनिमय सहज रूप से हो सके, साथ ही वह भाषा दूसरी भाषाओं को प्रभावित करने में सक्षम हो। इस दृष्टि से हिंदी भाषा के पास साहित्य सृजन की लगभग 1000 वर्ष सुदीर्घ परंपरा दिखाई देती है, जिसके पास शब्द का अकूत भंडार है। डॉ० करुणा शंकर उपाध्याय के अनुसार हिंदी में साहित्य सृजन की परंपरा भी बारह सौ साल पुरानी है, यह आठवीं शताब्दी से लेकर वर्तमान 21वीं शताब्दी तक गंगा की अनवरत अविरल धारा की भांति प्रवाहमान है। उसका काव्य साहित्य तो संस्कृत के बाद विश्व के श्रेष्ठतम साहित्य की क्षमता रखता है। उसमें लिखित उपन्यास एवं समालोचना भी विश्वस्तरीय है। उसकी शब्द संपदा विपुल है। उसके पास पच्चीस लाख से ज्यादा शब्दों की सेना है उसके पास विश्व की सबसे बड़ी कृषि विषयक शब्दावली है उसने अन्यान्य भाषाओं के बहु प्रयुक्त शब्दों को उदारतापूर्ण ग्रहण किया है। उसके साहित्य का उत्तमांश भी विश्व की दूसरी भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से जा रहा है। वैश्विक स्तर पर हिन्दी जिस तरह से आगे बढ़ रही है इस पर हिन्दी के प्रसिद्ध कथाकार हिमांशु जोशी जी का कथन अवलोकनीय है विश्व में ज्यों ज्यों हिन्दी का विस्तार हो रहा है, त्यों–त्यों उसके साहित्य का वैश्विक स्वरूप उभरता चला जा रहा है।

आज हिन्दी भारत तक ही सीमित नहीं, भारत की सीमाओं से बाहर दूर–दूर के देशों में भी उसकी अलग पहचान बन रही है। मॉरीशस, फीजी, गयाना, सूरीनाम आदि देशों में जहाँ भारतवंशीय प्रचुर संख्या में हैं, उनका साहित्य एक नए रूप में अपनी पहचान बना रहा है। आकार में छोटे–छोटे इन देशों में कितनी आस्था के साथ, समर्पित भाव से लेखक लिख रहे हैं, उसे देखकर सहज आश्चर्य होता है। वास्तव में भाषा बहता नीर की धारणा के रूप में देखें तो हिन्दी की अविरल धारा धीरे–धीरे पूरे विश्व में प्रवाहमान दिखाई देती है।

आज हिंदी के तमाम शब्द विश्व की अन्य भाषाओं में प्रवेश कर गए हैं. हिंदी ने भी शुद्धतावादी मानसिकता

को छोड़ते हुए विश्व की भाषाओं से हजारों शब्दों को अपने में आत्मसात कर लिया है जिस कारण हिन्दी अधिक शक्ति सम्पन्न, ग्राह्य एवं व्यापक बन गई है। यह प्रक्रिया भाषा के सशक्तिकरण के लिए अनिवार्य भी है। यही कारण है कि हिन्दी अंतर्राष्ट्रीय भाषा का रूप ले चुकी है। आज हिंदी के विद्वान नवीनतम तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दों का निर्माण कर रहे हैं जिससे ज्ञान–विज्ञान के नवीन अनुशासनों में भी हिंदी में कार्य सुलभ होने लगा है। यद्यपि इस ओर काफी कार्य करने की आवश्यकता है।

हिंदी आज जनसंचार माध्यमों के जरिए बड़े पैमाने पर देश–विदेश में प्रयुक्त हो रही है। हिंदी के टीवी चैनलों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। स्टार न्यूज चैनल जो पहले अंग्रेजी में प्रारम्भ हुआ था, किन्तु बाजार के दबाव के कारण इसे हिंदी में भी शुरू करना पड़ा। कई खेल चैनल भी अब हिंदी में शुरू हो चुके हैं, जैसे स्टार स्पोर्ट्स, ई.एस.पी.एन. आदि चैनल अब हिंदी में कमेंट्री देते हैं। इसी प्रकार हिंदी अखबारों की संख्या भी निरंतर बढ़ती जा रही है, उसका सबसे बड़ा उदाहरण है कि 'इकोनॉमिक्स टाइम' और 'बिजनेस स्टैंडर्ड' जैसे व्यवसाय–परक न्यूजपेपर हिंदी में प्रकाशित होकर व्यापार की नवीन संभावनाओं की तलाश करते दिखाई देते हैं। आज हिंदी भाषा के चैनल उपग्रह के द्वारा विश्व के सभी देशों जैसे दक्षिण पूर्व एशिया, जापान, चीन, कोरिया, खाड़ी देशों में, अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका, कनाडा तथा मध्य एशिया तक प्रचारित हो रहे हैं, जहाँ हिंदी भाषा के कार्यक्रमों को देखने वालों की संख्या बहुत अधिक है। मॉरीशस में तो हिंदी के सात से अधिक चैनल प्रसारित हो रहे है। इंटरनेट के जरिए हिंदी के समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं सभी देशों की विविध वेबसाइट पर सहज उपलब्ध होने के कारण काफी संख्या में पढ़ी जा रही है। आज मजबूरन गूगल, माइक्रोसॉफ्ट याहू एवं आईबीएम जैसी मल्टीनेशनल कंपनियाँ बाजार में मुनाफे को देखते हुए हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित कर रही हैं। इस प्रकार मीडिया और वेब पर हिंदी का प्रसार भी बड़ी तीव्रता से हो रहा है।

भाषाओं के समकालीन अध्येता भाषाओं के विस्तार और संकोच का जो मानचित्र दिखा रहे हैं उसमें निकट भविष्य में सहस्राधिक भाषाओं के लुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है परंतु संख्या बल की बदौलत हिंदी की स्थिति की सुदृढ़ता का संकेत देते हैं। आज भाषा के संरक्षण और सम्बर्धन के लिए बहुभाषिक कंप्यूटर और इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है। शब्दकोशों और विश्वकोशों की संख्या बढ़ रही है। हिंदी के व्याकरण पर कार्य हो रहा है, ई–पुस्तकालय और ई–बुक का भी निर्माण जोरों पर है। इससे हिंदी को गति और ऊर्जा मिल रही है। हिंदी के प्रयोग का क्षेत्र भी बढ़ा है और चार करोड़ प्रवासी भारतीय भी इससे जुड़े हैं। भारत के बाहर हिंदी का प्रयोग भाषा और संस्कृति की दृष्टि से दक्षेस, खाड़ी देश, यूरोप, अमेरिका, मारिशस, सूरीनाम, फीजी, गयाना, त्रिनीदाद, दक्षिण अफ्रीका आदि में हो रहा है। विश्व हिंदी सचिवालय मारीशस में स्थापित हुआ है। 11वां विश्व हिंदी सम्मेलन भी अगस्त 2018 में वहीं आयोजित हुआ था। प्रधानमंत्री मोदी की हिंदी के सम्बर्धन में विशेष रुचि रही है। भारत और विदेश में वे अपने भाषणों के लिए हिंदी माध्यम चुनते हैं। संयुक्त राष्ट्र में पहल हुई है और साप्ताहिक बुलेटिन हिंदी में जारी किया जा रहा है। साथ ही वहां पर विविध प्रकार की सामग्री भी हिंदी में उपलब्ध करने की व्यवस्था हो रही है।

आज भारतीय पेशेवर विश्व में हर कहीं दिखते हैं और भारत की राजनीतिक–आर्थिक सत्ता की व्यापक उपस्थिति में योगदान कर रहे हैं। इस कार्य में मीडिया की विशेष भूमिका है। आज फिल्म, विज्ञापन, प्रकाशन तथा सोशल मीडिया ने हिंदी के संबर्धन के लिए अवसर बढ़ाया है और भारत ज्ञान कोश, हिंदी विकी पीडिया,

हिंदी कविता कोश आदि ने हिंदी के लिए प्रचुर साहित्य सामग्री उपलब्ध कराई है। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के हिंदी समय डाटकाम पर 7 लाख पृष्ठ का हिंदी साहित्य उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त समाज विज्ञान कोश, अहिंसा शब्दकोश, वर्धा हिंदी कोश वर्धा विश्व विद्यालय के पोर्टल पर निःशुल्क उपलब्ध है। सोशल मीडिया में भी ब्लाग, ट्विटर आदि पर भी हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है। इन माध्यमों को देखें तो साहित्य की एक पूरी नई विधा ही आकार लेती दिख रही है।

समर्थ भाषा बनाने के लिए हिंदी का स्थिर वर्ण क्रम होना चाहिए और उसका मानकीकरण तथा अनुपालन जरूरी है। क्षेत्रीय भिन्नता के कारण लोक व्यवहार में विविधता तो होगी पर औपचारिक क्षेत्र में एकरूपता अपेक्षित है। लिखित रूप में लिपि चिह्नों का संयोजन, शब्द स्तर की वर्तनी और विराम चिह्न आदि का अनुशासन जरूरी है। एक ध्वन्यात्मक भाषा के रूप में हिंदी के परिनिष्ठित रूप को पाने के लिए यह जरूरी होगा। उदाहरण के लिए अर्ध चंद्र, बिन्दु, अनुस्वार, चंद्र बिन्दु और अनुनासिकता आदि को लेकर कई तरह के भ्रम बने हुए हैं और शैलियां प्रचलित हैं। मानकीकरण से स्पष्टता, प्रामाणिकता और संप्रेषणीयता आ सकेगी। देश विदेश के अनेक विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा के माध्यम से अनुसंधान किए जा रहे हैं। एक आँकड़े के अनुसार लगभग 140 देशों में हिंदी बोली जाती है, विश्व के लगभग डेढ़ सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में किसी न किसी स्तर पर एवं किसी न किसी रूप में हिंदी के अध्ययन–अध्यापन का कार्य हो रहा है। भारत से बाहर के देशों में 25 से ज्यादा पत्रिकाएँ हिंदी भाषा में प्रकाशित हो रही हैं. भारत की तेजी से बढ़ती अर्थ व्यवस्था, मीडिया के प्रसार तथा वैश्वीकरण ने हिंदी के विकास में अहम योगदान दिया है। उदारीकरण के चलते हिंदी भाषा बाजार की भाषा बनी है। 'पेप्सी', 'कोका कोला' जैसी कंपनियों हिंदी के विज्ञापनों द्वारा ही अपने उत्पाद को बेच पा रही हैं, इसी कारण ठंडा का मतलब कोकाकोला और पेप्सी यही है 'राइट चॉइस' कहकर यंगिस्तान को लुभाती है।

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी और संचार का युग है, ऐसे में वही भाषा अधिक आगे बढ़ सकती है जो समय के साथ परिवर्तित होते मुहावरों को समझ सके, नवीन प्रयोगों तथा अन्वेषण को आत्मसात कर सके। इसलिए हिंदी भाषा को भी विभिन्न ज्ञान–विज्ञान के अनुशासनों में दलना होगा, वैश्विक स्तर पर खड़े होने के लिए नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली एवं प्रयोगों के साथ हिंदी को समायोजित करने का सामर्थ्य उत्पन्न करना जरूरी है। वैश्विक धरातल पर वही भाषा मजबूती से टिकी रह सकती है जिस भाषा में निज–अभिव्यक्ति क्षमता अत्यंत सशक्त होगी। दूसरे, किसी भी भाषा के लिए उच्च संप्रेषणीयता होनी भी अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार भाषा का अभिव्यक्ति एवं संप्रेषण पक्ष मजबूत होना चाहिए, यद्यपि इस कसौटी पर हिंदी पूरी तरह खरी उतरती है। हिंदी संसार की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषाओं में से एक है यह लिखित एवं वाचिक स्तर पर वैज्ञानिक तो है ही इसके पास ध्वनियों एवं लिपि चिन्हों की पर्याप्त तार्किक एवं वैज्ञानिक व्यवस्था भी है। इस रूप में रोमन, फारसी आदि लिपियाँ इतनी समृद्धि नहीं है, जितनी हिंदी की देवनागरी लिपि है।

निष्कर्ष :–

राजभाषा के रूप में हिंदी प्रयोग के लिए विधि विधान तो संविधान में किए गए हैं परंतु कार्यान्वयन की दृष्टि से अभी भी हम बहुत पिछड़े हैं। कहना न होगा कि अपनी भाषा में सोचने, पढ़ने और लिखने से सर्जनात्मकता को भी बल मिलेगा। लोकतंत्र में जन भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए भी भाषा की केंद्रीय भूमिका है परंतु अभी तक भाषा, शिक्षा और लोकतंत्र के पारस्परिक रिश्ते की गम्भीरता को हम नजर–अंदाज करते

आ रहे हैं। सशक्त और समर्थ भारत का सपना देखते हुए इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। इस प्रकार भारत की निरतर मजबूत होती अंतर्राष्ट्रीय छवि से वैश्विक स्तर पर हिंदी की उपस्थिति ज्यादा प्रखरता के साथ उभरने की संभावना दिखाई देती है। जिस प्रकार हिमालय से निकली गंगा निरंतर आगे बढ़ते हुए गंगा सागर का रुप ले लेती है. उसी प्रकार आज भारत की सर्वप्रमुख भाषा हिंदी विश्व भाषा बनने की प्रक्रिया की ओर अग्रसर है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. सूर्यप्रसाद दीक्षित, विश्व पटल पर हिन्दी।
2. त्रिलोक चंद्र भट्ट, राजभाषा हिन्दी के बढ़ते कदम।
3. डॉ० रमा (सं०), वैश्विक पटल पर हिन्दी।
4. ज्योति कुमारी, राष्ट्रीय राजभाषा में हिन्दी का योगदान।
5. डॉ० सुरभि दत्त, हिन्दी राष्ट्रभाषा से विश्व भाषा।

ई–मेल– avikashyap1427@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 35-38

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी भाषा का भारतीय शिक्षा पद्धति पर प्रभाव

डॉ. बबीता

असिस्टेंट प्रोफेसर (बी0 एड0 विभाग), लक्ष्मण सिंह महर कैंपस, पिथौरागढ़।

हिंदी भाषा एक माध्यम ही नहीं बल्कि अपने आप में कई युगों के इतिहास को समेटे हुए विभिन्न प्रकार के भाषा, संस्कृति, साहित्य, सामाजिक प्रक्रिया और मनुष्य के चिंतन का आधार प्रस्तुत करती है। हिंदी भाषा किसी पहचान की मोहताज नहीं है। विश्व स्तर पर भी हिंदी भाषा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा घोषित किया गया हैं। साथ ही संविधान कि अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा से जुड़े विशेष प्रावधान है।

- हिंदी भाषा से जुड़े सम्मेलन अब तक कई देशों में आयोजित हो चुके हैं। दुनियाभर में हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए हर साल 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है।
- महाराष्ट्र के नागपुर में पहला हिंदी समारोह 10 जनवरी से 14 जनवरी 1975 को हुआ था। इस सम्मेलन में 30 देशों के 122 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया था।
- नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन 22 से 24 सितंबर, 2012 को जोहांसबर्म में आयोजित हुआ था।
- 12वां विश्व हिंदी सम्मेलन 15 से 17 फरवरी 2023 को फिजी के नांदि शहर में आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन का मुख्य विषय था ''हिंदी पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा तक''।

विश्व हिंदी दिवस सम्मेलन 2024 में विश्व हिंदी दिवस 2024 की थीम ''हिंदी–पारंपरिक ज्ञान और कृत्रिम बुद्धिमता को जोड़ना'' विषय पर केंद्रित है।

हिंदी भाषा की छवि धूमिर होते देख भारत सरकार द्वारा हिंदी दिवस 14 सितंबर को मनाया जाता है। यह दिन विशेष रूप से हिंदी भाषा की मान्यता और महत्व को प्रोत्साहित करने के लिए बेहद खास है।

हिंदी दिवस 14 सितंबर को मनाया जाता है जो हिंदी भाषा के महत्व और उसकी समृद्धि को उजागर करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है।

14 सितंबर 1949 को हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा का दर्जा मिला था। और इस दिन को याद करते हुए कई आयोजन किए जाते है।

यह दिन हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार और उसके उपयोग को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है।

इस दिन को याद करते हुए हर साल विभिन्न कार्यक्रम और समारोह आयोजित किए जाते है।

शिक्षाविदों को जुड़ने का अवसर प्रदान करता है।

हिंदी दिवस के अवसर पर सरकार हिंदी को बढावा देने के लिए कई योजनाएं और अभियान चलाती

है।

इनमें सरकारी दस्तावेजों का हिंदी में अनुवाद, हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम और हिंदी में तकनीकी सहायता शामिल है। इसके अतिरिक्त सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए निर्देश जारी किए जाते है। यह सब हिंदी भाषा की समृद्धि और उपयोगिता को सुनिश्चित कराने के लिए किया जाता है। सरकार का यह प्रयास हिंदी के महत्व को समाज में स्थापित करने में सहायक होता है।

अनुच्छेद 343 भारत के संविधान के भाग 17 में शामिल तीन सौ तैतालिस अनुच्छेद है जो संघ कि राजभाषा का वर्णन करता है। इसी अनुच्छेद के तहत हिंदी को राजभाषा और देवनागरी को लिपी के रूप में स्वीकार किया गया है।

देवनागरी लिपि, जिसका प्रयोग संस्कृत, प्राकृत, हिंदी, मराठी, कोंकणी और नेपाली भाषाओं को लिखने के लिए किया जाता है। गुप्त नामक उत्तर भारतीय स्मारकीय लिपि से विकसित हुई है और अंततः बाह्मी वर्णमाला से विकसित हुई है। जिससे सभी आधुनिक भारतीय लेखन प्रणालियां व्युत्पन्न हुई हैं।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा को बढ़ाने के लिए हिंदी सम्मेलन भी कई देशों में आयोजित हो चुके हैं। जैसे कि रायपुर, बैंकाक, मारीशस, पटाया, ताशकंद (उज्बेकिस्तान), संयुक्त अरब अमीरात, कंबोडिया, वियतनाम, श्रीलंका, चीन, नेपाल, बगैरट।

राजस्थान सरकार में राज्य के मेडिकल कॉलेजों में हिंदी भाषा में मेडिकल एजुकेशन देने की घोषणा की है। दो मेडिकल कॉलेज 2024–25 सत्र से इस बदलाव को अपनाएंगे। एम.बी.बी.एस. हिंदी में पढना छात्रों के लिए वैकल्पिक चुनाव होगा।

मध्य प्रदेश और छतीसगढ़ ने भी एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई हिंदी में शुरू करने की घोषणा की है। राजस्थान में यह बदलाव चरणबद्ध तरीके से लागू होगा। सबसे पहले जोधपुर का सम्पूर्णानंद मेडिकल कॉलेज और बाडमेर मेडिकल कॉलेज में शैक्षणिक सत्र–2024–25 से हिंदी में पढ़ाई शुरू होगी।

ऐतिहासिक परिपेक्ष में यदि अतीत में झांका जाए तो 'हिन्दू, हिन्दी, हिन्दुस्तान' का नारा भारत को गौरवान्वित करता है और उसकी महत्वता को प्रस्तुत करता है।

प्रताप नारायण मिश्र हिन्दी साहित्य के भारतेन्दु युग के प्रमुख साहित्यकारों से एक थे। उनका जन्म 24 सितंबर 1853 को उत्तर प्रदेश के उत्राव जिले के बेंजगांव बेथर गांव में हुआ था। वे एक भारतीय लेखक, कवि, पत्रकार, अनुवादक और समाज सुधारक थे। इनके द्वारा 'हिन्दू, हिन्दी, हिन्दुस्तान' का नारा दिया गया था।

हिन्दु, हिन्दी हिन्दुस्तान शब्दों के बारे में कई इतिहासकारों का मानना है कि हिन्दू शब्द को सबसे पहले 8वीं शताब्दी में अरबों ने इस्तेमाल किया था।

सिन्धु नदी का दूसरा नाम इंडस भी था, मध्यकाल में जब तुर्क और ईरानी यहां आए तो उन्होंने सिंधु घाटी से प्रवेश किया, वे 'स' का उच्चारण 'ह' करते थे और इस तरह से सिन्धु का अपभ्रंश हिन्दू हो गया।

दरिउस प्रथम ने जब सिन्धु घाटी पर अधिकार किया तो उसने सिंधु नदी के पीछे वाली भूमि को हिन्दुस्तान कहकर पुकारा।

भारत में रहने वाली सबसे ज्यादा आबादी हिन्दुओं की है, यही वजह है कि इस देश को हिन्दुस्तान भी कहा जाता है।

हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान का नारा भारतेंदु हरिश्चंद्र ने दिया था।

भारतेन्दु के लिए, भारतीय राष्ट्रवाद के हितों के लिए हिंदी, हिंदु, हिन्दुस्तान की उन्नति भी आवश्यक थी। जैसा कि उनके समकालीन और साहित्यिक शिष्य प्रताप नारायण मिश्र द्वारा गढ़े गए नारे (या मंत्र) के शब्दों में कहा जा सकता है।

हिन्दी भाषा का महत्व :–

C - Cultural heritage – सांस्कृतिक विरासत।

N - National Language – राष्ट्रीय भाषा।

E - Economically significature – आर्थिक महत्व।

G - Global region – वैश्विक क्षेत्र।

I - International language – हिंदी भाषा भारत के अलावा कई देशों में बोली जाती है : नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका, मालद्वीप, म्यामार, सिंगापुर, थाईलैंड, चीन, जापान, ब्रिटेन।

(जीवन में कोई भी भाषा सीखना कठिन नहीं है।)

इंग्लिश लैंग्वेज के साथ–साथ वर्तमान समय में निजी विद्यालयों में भी हिंदी भाषा को अनिवार्य कर दिया गया है। भाषा के महत्व को समझते हुए भी हमारे प्रधानमंत्री जी अपना भाषण हिंदी भाषा में ही देते हैं। क्योंकि भाषा व्यक्ति की भावनाओं का भाव समझाता है।

सामाजिक माध्यम बाजारीकरण में हिंदी भाषा में ही ज्यादा प्रसिद्धि प्राप्त की जाती है। जैसे– यूट्यूब, इंस्टाग्राम, फेसबुक, टेलीग्राम, ट्विटर आदि के द्वारा बाजारीकरण सरलता से समझा और समझाया जा सकता है।

यदि हम भारतीय विदेश में जाते हैं तो हमें अपनी हिंदी भाषा बोलने में शर्म नहीं करनी चाहिए बल्कि अपनी भाषा पर गर्व करते हुए भाषा को बढ़ावा देना चाहिए।

शिक्षा प्रणाली के विषय को लेकर चुनौतियां और बाधाओं को पार कर हमारे छात्रों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके मेरा मानना है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों के उम्मीदों पर खरा उतरने में विफल साबित हुई है क्योंकि उनकी शिक्षा पूरी होने के बावजूद भी उन्हें रोजगार नहीं मिल रहा है।

इसलिए हम कह सकते हैं कि हमारे विद्यार्थियों को दी जाने वाली शिक्षा का बाहरी दुनिया में मिलने वाले रोजगार के अवसरों से प्रत्यक्ष रूप से संबंध नहीं है। जिसके कारणवश विद्यार्थी इस स्थिति का सामना नहीं कर पाते और निराश हो जाते हैं।

हालांकि पिछले कुछ समय से केंद्र तथा राज्य दोनों स्तरों के सरकारों द्वारा इस मुद्दे को गंभीरता से लिया गया और शिक्षा तथा रोजगार के बीच की इस दूरी को कम करने का भरपूर प्रयास किया गया। शिक्षा के क्षेत्र में हमारा विकास काफी निराशाजनक है। निम्न चार्ट द्वारा प्रस्तुत किया गया है :–

इसका अंदाजा हम इसी बात से लगा सकते हैं कि सरकार द्वारा तीन साल पहले हमारे जीडीपी का मात्र 3.5 प्रतिशत ही शिक्षा के क्षेत्र में खर्च किया जाता था। इसके अलावा लाखों छात्र–छात्राओं को विद्यालय जाने का भी अवसर प्राप्त नहीं होता है। हालांकि फिर भी कुछ वर्षों में इस विषय में सुधार देखने को मिला है।

वर्तमान में आजादी के पश्चात् ऐसा माना जाता था कि भारत की शिक्षा प्रणाली में पूर्ण रूप से बदलाव की आवश्यकता है परंतु वर्तमान समय में इसे तेजी से बदलते शैक्षिक तकनीकों और प्रौद्योगिकियों की आवश्यकता है। जैसा कि पहले देखा गया है कि हमारे कक्षाओं में दी जाने वाली शिक्षा और बाह्य जगत के रोजगार अवसरों में कोई तालमेल नहीं है।

इस विषय में विशेषज्ञों द्वारा भारतीय शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम और ढांचे पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है ताकि इसे समय के अनुसार लोगों की बदलती जरूरतों के अनुरूप बनाया जा सके। जिसके परिणाम स्वरुप रोजगार की बेहतर संभावनाओं की उत्पत्ति होगी और हम अपने देश के प्रतिभा पलायन की समस्या पर भी काबू पाने में सफल होंगे।

शिक्षा के लिए 6 प्रतिशत जीडीपी आबंटन कोई नई अवधारणा नहीं है। इसकी पहली बार 1968 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) में अनुशंसा की गई थी, 1986 की NEP में इसे दोहराया गया और हाल ही में नई शिक्षा नीति में (5+3+3+4) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में इस पर जोर दिया गया है।

भारत में, साल 2015 से 2024 के बीच शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 4.1 प्रतिशत से 4. 6 प्रतिशत खर्च किया गया है, यह अंतरराष्ट्रीय मानदंडों के अनुरूप है। तथा कई पड़ोसी देशों से आगे है। निम्न जीडीपी ग्राफ में शिक्षा के व्यय का प्रतिशत यह प्रदर्शित करता है कि शिक्षा व्यवस्था पर मिलने वाला व्यय मूलभूत आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.इ.पी) 2020 में हिंदी भाषा को सीखने को प्राथमिकता दी गई है। एनइपी के मुताबिक स्कूलो में बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा देनी चाहिए। इसके अलावा एनइपी में त्रिभाषा सूत्र भी शामिल है, जिसके मुताबिक हर छात्र को तीन भाषाएं सीखनी चाहिए, इनमें से दो मूल भारतीय भाषाएं होने चाहिए और तीसरी अंग्रेजी होनी चाहिए। यह सूत्र सरकारी और निजी दोंनो स्कूलों पर लागू होता है। NEP में हिंदी भाषा के महत्व से जुड़ी कुछ और बातें :–

- NEP- 2020 के मुताबिक, कक्षा 5 तक शिक्षा के लिए मातृभाषा या स्थानीय भाषा का इस्तेमाल करना चाहिए।
- विज्ञान समेत उच्च गुणवत्ता वाली किताबें घरेलू भाषाओं में उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
- जिन छात्रों की मातृभाषा शिक्षा मे माध्यम से अलग हो सकती है उनके लिए शिक्षक द्विभाषी शिक्षण–शिक्षण सामग्री का इस्तेमाल करें।
- मातृभाषा में पढ़ाई से बच्चा स्कूल के वातावरण को जल्दी अपना लेता है।
- मातृभाषा में कहानियाँ प्रवचन सुनने से सहानुभूति, प्रेम, कर्तव्य–परायणता जैसे नैतिक मूल विकसित होते है।
- भाषा से ही हमारा बौद्धिक, मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक विकास होता है।

संदर्भ सूची :–

1. भारतीय अर्थव्यवस्था (KHAN GLOBAL STUDIES)
2. भारत का संविधान (PROFESSIONAL BOOK PUBLISHERS)
3. भारत का संविधान The Constitution of India (सेंट्रल लॉ पब्लिकेशन।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 39-42

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा

डॉ. चौत्रा एस.

सहायक प्राध्यापिका, जे.एस.एस. महिला महाविद्यालय, सरस्वतिपुरम्, मैसूर–570009

हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं है। बल्कि प्रत्येक हिंदुस्तानी का गर्व, हिंदी है। प्रत्येक हिंदुस्तानी की पहचान, हिंदी है हिंदुस्तान का ताज। हिंदी भाषा का इतना परिचय यद्यपि काफी है, परंतु हिंदी के ज्ञान, उसकी अभिव्यक्ति, उसका इतिहास, उसकी सरलता, उसकी सहजता, उसकी परिपक्वता, उसकी मिठास और गहराई और भी न जाने क्या–क्या जिन्हें शब्दों में वर्णित करना आसान कृत्य नहीं है। इन सबके बारे में हम विस्तार से जानने का प्रयत्न करेंगे क्योंकि 'पूर्णता' किसी भी विषय पर प्राप्त करना अपने आप में एक लक्ष्य है। हम केवल अपने सार्थक प्रयास करेंगे।

वास्तव में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति, भारतीय साहित्य जितना अधिक प्रचारित–प्रसारित है, वृहद है, अनूठा है, विविध है उतना किसी और देश का संभव हो ही नहीं सकता। हमारे भारतीय साहित्य में जितने वेद, पुराण, श्रुतियां, स्मृतियां, महाकाव्य आदि की उपलब्धता है वह किसी अन्य सभ्यता के पास हो, ऐसी कल्पना भी नहीं की जा सकती। अभी हमने सिर्फ साहित्य की बात की इसलिए की है क्योंकि साहित्य की वैश्विक स्तर पर उपलब्धता प्राप्त करने का एक महान हेतु बनी है 'हिंदी'। क्योंकि इसी साहित्य को आम पाठक वृंद की पहुंच एवं समझ तक सरलता से बनाए रखने के लिए हिंदी भाषा का अत्यधिक प्रयोग किया गया है। वैसे हिंदी साहित्य में भी ना तो ग्रंथों की कमी है और ना ही विविधता की। प्रत्येक विषय पर (जैसे राजनीति, अर्थ, काम आदि पर) प्रत्येक रस पर, प्रत्येक विधा पर प्रत्येक भाव पक्ष पर या भावना पर प्रचुर मात्रा में साहित्य, पूर्ण प्रामाणिकता के साथ उपलब्ध है। हिंदी साहित्य के इतिहास का वर्गीकरण ही इन्हीं भाव पक्षों की प्रधानता को लेकर आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा किया गया है जैसे वीरगाथाकाल, रीतिकाल, भक्तिकाल आदि।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिंदी भाषा में ज्ञान है, प्रेम है, करुणा है, मित्रता है, भावाभिव्यक्ति की चरम सीमा है, काव्य सौष्ठव है, छंद अलंकार के साथ सौंदर्यात्मकता है, और इन सब के साथ–साथ है हिंदी भाषा का जो सबसे महत्वपूर्ण गुण, और वह है इसकी सरलता और आसानी से उपलब्धता। क्योंकि भाषा संबंधी यह गुण तो अन्य भाषाओं में भी हैं परंतु और वे भाषाएँ भी सरल कही जा सकती है। परंतु हिंदी जितनी नहीं, क्योंकि भारत में प्रत्येक राज्य में हिंदी बोलने वालों की एक विशेष जनसंख्या उपलब्ध है। और उत्तर भारत जैसे हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश को लगभग पूर्णतया ही हिंदी भाषी क्षेत्र है। इसलिए हिंदी की महत्ता में और इजाफा हो जाता है। इसकी अखंडता और प्रगाढ़ हो जाती है जब हिंदी की सरलता के साथ–साथ हिंदी की आसान पहुंच, उपलब्धता भी जुड़ जाती है जो इसके वैश्विक रूप को आलंबन देती है।

हिंदी हमारी अपनी भाषा है, प्रत्येक हिंदुस्तानी की भाषा है, और प्रत्येक हिंदुस्तानी का फर्ज है कि वह हिंदी को अपने हृदय से अपनाए, उस का प्रचार–प्रसार करने का यथासंभव प्रयास करे। हिंदी के गौरव की रक्षा करे, तथा विश्व में उसका एक स्थान निश्चित करने में अपना सक्रिय योगदान दे।

हिंदी का साहित्य इतना अधिक विस्तृत है कि शायद एक जन्म में भी इसका अध्ययन संभव नहीं है। पूर्व में हमने हिंदी भाषा के विविध रूपों का वर्णन किया है। अब हम इसके गौरवपूर्ण इतिहास तथा हिंदी भाषा के आविर्भाव के बारे में जानने का प्रयत्न करते हैं।

हिंदी भाषा का प्राकट्य एवं क्रमिक विकास :-

संपूर्ण भारत में मिले शिलालेखों एवं ताम्रपत्रों के माध्यम से यह प्रमाणिक ऐतिहासिक तथ्य है कि 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व तक संस्कृत आर्यों की सामान्य बोलचाल की भाषा होने के साथ ही साहित्य की परिनिष्ठित भाषा थी। कालांतर में (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व) यह भाषा देश में 'पाली' भाषा तथा विदेश में 'अरबी' एवं 'फारसी' में परिवर्तित हो गई। भगवान् बुद्ध ने अपने उपदेश 'पाली' भाषा में ही दिए थे। तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक आते–आते पाली भाषा से एक अपभ्रंश भाषा 'प्राकृत' का जन्म हुआ। हिंदी साहित्य का प्रारंभ इसी 'प्राकृत' भाषा से हुआ है।

प्राकृत भाषा सिंधु नदी के उस पार फारस में 'हिंदवी' नाम से जानी जाने लगी। वस्तुतः 'हिंदवी' शब्द की उत्पत्ति सिंधी भाषा से हुई है, क्योंकि फारसी लोग 'स' को 'है' उच्चारित करते थे। यही 'हिंदवी' शब्द बाद में हिंदी हो गया।

अमिर खुसरो ने इसी भाषा में साहित्य की रचना की है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक भारत की समस्त भाषाओं का जन्म 'प्राकृत' अथवा 'हिंदवी' से ही हुआ है। यही कारण है कि हिंदी भाषा में सभी दक्षिण एशियाई भाषाओं के शब्द चाहे वे विदेशी, अरबी, फारसी, हो या मूल संस्कृत तत्सम शब्द हों, बहुतायत में मिलते हैं।

हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार :-

सब देशों में रहते हुए, भ्रमण करते हुए भी अपनी भाषा के द्वारा ही स्वयं का, अपनी भाषा का ही प्रचार –प्रसार करना चाहिए। इसका सबसे उत्तम उदाहरण हमारे इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। जब विवेकानंद जी 11 सितंबर 1893 में शिकागो में 'विश्व धर्म सम्मेलन' में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे थे तो उन्होंने अपनी ही भाषा में अपना व्यक्तव्य प्रस्तुत किया था। जिस के शुरूआती शब्द थे– 'अमेरिका में रहने वाले मेरे प्यारे भाई – बहनों'। उन्होंने विदेशी धरती पर जाकर भी अपनी हिंदी भाषा को, अपने स्वाभिमान को, अपने आत्म गौरव को, अपनी हिंदुत्व को, अपनी पहचान 'हिंदी' को नहीं छोड़ा। यह हम सब के लिए एक सबक है, हम सबके लिए अनुकरणीय है।

प्रस्तुत समय में लोग अंग्रेजी भाषा को बोलना, उसका प्रचार–प्रसार करना गौरव की बात समझते हैं। परंतु वे यह भूल जाते हैं कि "English is just a Language, not a measure of anyone's Intelligence" यानी अंग्रेजी सिर्फ एक भाषा है, यह किसी के ज्ञान, उसकी विद्वत्ता का परिचायक या पैमाना नहीं है।

यही हिंदी भाषा अखंड भारत में कैलाश मानसरोवर से लेकर सिंहल द्वीप तक प्रचलित थी जो बाद में अपभ्रंश होकर नवीन भाषाओं के रुप में विकसित हो गई। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि संस्कृत की प्रथम

मौलिक उत्तराधिकारी भाषा हिंदी ही है जो प्रमाणिक रुप से देश की समस्त आधुनिक भाषाओं की जननी है।

इसी कारण हम इसे भारत की 'सर्व व्यापी' भाषा का दर्जा देते हैं, और एक अन्य तथ्य एवं गौरवशाली बात यह भी है हिंदी विश्व की तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। भारत और अन्य देशों में 60 करोड़ से अधिक लोग हिंदी भाषा बोलते पढ़ते और लिखते हैं। फिजी, मॉरीशस, गयाना, सूरीनाम और नेपाल की अधिकतर जनसंख्या हिंदी भाषा का ही प्रयोग करती है। हिंदी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा, जनभाषा के विभिन्न सोपानों को पार कर 'विश्व भाषा' बनने की ओर निरंतर अग्रसर है।

हिंदी हम सबका गौरव :-

जब विश्व के अन्य देश अपनी मातृभाषा को अपनाना, अपनी पहचान बताना गौरव की बात मानते हैं तो हम हिंदुस्तानी हिंदी को अपनाने से क्यों कतराते हैं? राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी कार्य यथासंभव हिंदी में ही होने चाहिए। हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार विद्यार्थी जीवन से ही प्रारंभ हो जाना चाहिए ताकि हिंदी का धारा प्रवाह प्रसार हो सके। इस विषय पर जगदीश त्यागी का यह दोहा अनुकरणीय सिद्ध हो सकता है :–

'गूंज उठे भारत की धरती, हिंदी के जय गानों से,
पूजित, पोषित, परिवर्द्धित हो बालक, वृद्ध, जवानों से'।

राजभाषा के रूप में हिंदी का संवैधानिक महत्त्व तथा अन्य आधुनिक विषयों के साथ उसका संबंध और समन्वय भारतीय संविधान सभा ने विशद विचार मंथन के बाद 14 सितंबर 1949 को हिंदी को भारत संघ की राजभाषा घोषित किया। भारत का संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ और तभी से देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी विधिवत भारत संघ की राजभाषा है। हिंदी को राजभाषा तो घोषित कर दिया गया परंतु केंद्र सरकार के कार्यों में हिंदी को अंग्रेजी का स्थान देने के लिए गंभीरता से प्रयास, केंद्र सरकार द्वारा प्रारंभ किए गए। जिसके परिणामस्वरुप राजभाषा अधिनियम 1963 को पास किया गया। इस अधिनियम के तहत प्रशासन चलाने के लिए विभिन्न प्रकार के कार्य करने का प्रस्ताव किया गया जिनमें विभिन्न आधुनिक विषय जैसे तकनीकी, पत्रकारिता आदि भी सम्मिलित किए गए। इस अधिनियम के आधार पर जिन बिंदुओं पर कार्य किया कार्य हुआ वह हैं :–

- शब्दावली का निर्माण।
- प्रशासनिक साहित्य का अनुवाद।
- हिंदी शिक्षण योजना।
- यांत्रिक साधनों की व्यवस्था।
- कंप्यूटर।
- इलेक्ट्रॉनिक टेलीप्रिंटर।
- हिंदी की मुद्रण क्षमता में वृद्धि।
- राजभाषा के संबंध में कानूनी व्यवस्थाएं।

इसी क्रम में आगे राजभाषा अधिनियम 1976 का भी प्रावधान किया गया। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी भारत सरकार के सभी मंत्रालयों / विभागों पर है। यह विभाग समन्वय के लिए वार्षिक कार्यक्रमों को जारी करने के अलावा कई प्रकार की समितियों का गठन करके यह कार्य कर रहे हैं। जिनका विवरण इस

प्रकार है :–

– केंद्रीय हिंदी समिति।

– हिंदी सलाहकार समितियां।

– राजभाषा कार्यान्वयन समितियां।

यह सभी अपने–अपने कार्य क्षेत्रों में हिंदी के लिए, हिंदी के उत्थान के लिए आवश्यक कार्य कर रही हैं। और समय–समय पर विभिन्न स्तरों पर हिंदी की कार्यशालाओं का आयोजन भी कराया जाता है। तात्पर्य है कि हिंदी में काम करने का, हिंदी को विश्व स्तर की भाषा बनाने का कार्य प्रगति पर है। इसलिए केवल वैचारिकता ही उपयोगी नहीं है। उसके लिए हमारे देश का सर्वश्रेष्ठ कानून 'संविधान' में इसका क्या प्रावधान किया गया है, यह जानना भी अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि हमारा शोध जो एक विचार, एक सोच, एक भाव से आरंभ हुआ था, हमने उसे विस्तार प्रदान करते हुए प्रमाणिक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रदान की। तथा इसके साथ–साथ उसे आधुनिकता के विषयों के साथ समायोजित करते हुए संवैधानिकता का आलंबन प्रदान किया जो उसके अस्तित्व, उसकी प्रमाणिकता, उसकी विश्वसनीयता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. हिंदी साहित्य और सामासिक संस्कृति, डॉ. कर्ण राजशेखर गिरी राव।
2. हिंदी साहित्य में सामासिक संस्कृति की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति, प्रो. केसरी कुमार।
3. हिंदी साहित्य में संस्कृति के तत्व, डॉ. शिव नंदन प्रसा।
4. हिंदी का विकासशील स्वरूप, डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित।
5. प्रशासनिक हिंदी का विकास, डॉ. नारायण दत्त पालीवाल।

ईमेल – chaitrabhi@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 43-47

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी भाषा एवं भारतीय शिक्षा पद्धति के प्रचार-प्रसार में नाथ साहित्य का योगदान

दीपिका, शोधार्थी, पीएच.डी.
डॉ० संजीव, शोध निर्देशक, प्रोफेसर,
भाषा विभाग (हिंदी), बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा)– 124021

सारांश :-

नाथ साहित्य और सिद्ध परंपरा भारतीय साहित्य और शिक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण अंग हैं, जिन्होंने न केवल आध्यात्मिकता बल्कि सामाजिक सुधार और नैतिक मूल्यों को भी प्रोत्साहित किया। नाथ साहित्य का योगदान हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में भी उल्लेखनीय है। गोरखनाथ, चौरंगीनाथ, और भरथरी जैसे नाथपंथी संतों ने अपनी रचनाओं में जनभाषा का उपयोग कर शिक्षा और ज्ञान को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाया। नाथ साहित्य में योग, हठयोग, और आत्मज्ञान को विशेष महत्व दिया गया है। गोरखनाथ की रचनाएँ जैसे गोरखबोध और गोरखनाथ बानी ने शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास का साधन न मानकर, आत्मा और समाज की उन्नति का माध्यम बताया। उनकी वाणी में न केवल सामाजिक समानता, बल्कि जातिगत भेदभाव और धार्मिक आडंबरों का भी स्पष्ट विरोध मिलता है। नाथ साहित्य ने हिंदी भाषा को समृद्ध किया और इसे जनमानस के करीब लाया। नाथपंथी साधकों ने ब्रजभाषा, खड़ी बोली, और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का समन्वय कर हिंदी के प्रारंभिक स्वरूप को मजबूती दी। उनकी शिक्षाओं ने सामाजिक विषमता, छुआछूत, और सांप्रदायिकता जैसी बुराइयों के खिलाफ जागरूकता पैदा की और मानवता, नैतिकता, और आत्मज्ञान को प्राथमिकता दी। नाथ साहित्य और सिद्ध परंपरा का प्रभाव आज भी प्रासंगिक है। यह न केवल भाषा और साहित्य को समृद्ध करता है, बल्कि भारतीय शिक्षा पद्धति में नैतिकता और मानवता के पुनर्स्थापन के लिए एक आदर्श माध्यम है। उनकी शिक्षाएँ और वाणी समाज में सकारात्मक बदलाव लाने और शिक्षा को वास्तविक उद्देश्य तक पहुँचाने में सहायक हैं।

मुख्य शब्द :- नाथ साहित्य, गोरखनाथ, योग और आत्मज्ञान, जनभाषा, सामाजिक सुधार, मूर्ति पूजा का विरोध, शिक्षा में नैतिकता।

प्रस्तावना :-

नाथ साहित्य भारतीय शिक्षा पद्धति में एक विशिष्ट स्थान रखता है। इसका प्रभाव न केवल भाषा के विकास और प्रसार में देखा जा सकता है, बल्कि इसके माध्यम से नैतिकता, आत्मज्ञान, और सामाजिक समरसता

जैसे मूल उद्देश्यों को भी व्यापक रूप से बढ़ावा दिया गया। नाथ साहित्य केवल आध्यात्मिक संदेशों का वाहक नहीं रहा, बल्कि इसने समाज में सुधार और मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करने में भी भूमिका निभाई। नाथपंथ के संतों ने शिक्षा को ज्ञानार्जन और आत्मा के विकास का एक प्रभावी साधन माना। उनकी शिक्षाओं का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं, बल्कि समाज को एक सकारात्मक दिशा में ले जाना भी था।

नाथ साहित्य ने भाषा को एक सशक्त माध्यम बनाते हुए जनभाषा में रचनाएँ कीं, ताकि शिक्षा और ज्ञान समाज के हर वर्ग तक पहुँच सके। ब्रजभाषा, खड़ी बोली, और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग ने न केवल हिंदी भाषा को समृद्ध किया, बल्कि इसे जनमानस के करीब लाने का कार्य भी किया। नाथपंथ की वाणी में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं था, बल्कि यह मानवता और सामाजिक समरसता के आदर्शों को प्रोत्साहित करने का माध्यम भी था।

संतों की शिक्षाएँ आज के समय में भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, जितनी उनके समय में थीं। सामाजिक विषमता, नैतिकता का ह्रास, और धार्मिक आडंबर जैसे मुद्दे आज भी शिक्षा प्रणाली के सामने बड़ी चुनौतियाँ बने हुए हैं। ऐसे में नाथ साहित्य हमें इन समस्याओं का समाधान प्रदान करता है और शिक्षा को नैतिकता और मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए प्रेरित करता है।

सिद्ध और नाथ साहित्य का उद्भव :-

सिद्ध और नाथ साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा के दो महत्वपूर्ण चरण हैं, जो समाज में शिक्षा और नैतिक मूल्यों के प्रचार–प्रसार में सहायक रहे हैं। नाथ साहित्य से पूर्व सिद्ध साहित्य का विकास हुआ, जो बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा से प्रेरित था। सिद्ध साहित्य ने समाज में व्याप्त रूढ़िवादी परंपराओं और अंधविश्वासों का विरोध किया और एक नई वैचारिक धारा को जन्म दिया। सिद्धाचार्यों, जैसे सरहपा, शबरपा, और कण्हपा ने अपनी वाणी में स्पष्ट किया कि समाज को प्रचलित पाखंडों से बाहर निकलकर नैतिक मूल्यों और शिक्षा की सच्ची भावना की ओर बढ़ना चाहिए। इन संतों की रचनाएँ केवल आध्यात्मिक शिक्षा तक सीमित नहीं थीं, बल्कि समाज को समरसता, समानता, और नैतिकता के आदर्शों की दिशा में प्रेरित करती थीं।

नाथ साहित्य का उद्देश्य न केवल आत्मा और परमात्मा के संबंध को स्पष्ट करना था, बल्कि इसे सामाजिक सुधार का भी एक सशक्त माध्यम बनाया गया। इन संतों ने जातिगत भेदभाव, धार्मिक आडंबर, और अंधविश्वास के खिलाफ जागरूकता फैलाने का प्रयास किया। नाथ साहित्य में योग, हठयोग, और ध्यान के माध्यम से आत्मिक शुद्धि और सामाजिक समरसता की शिक्षा दी गई। गोरखनाथ की रचनाएँ, जैसे गोरखबोध और गोरखनाथ बानी, इस बात का प्रमाण हैं कि नाथपंथ ने शिक्षा को मानवता और नैतिकता की उन्नति का साधन माना।

नाथ साहित्य में भाषा का योगदान :-

नाथ साहित्य ने भारतीय भाषाओं के विकास में एक अभूतपूर्व भूमिका निभाई है। इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि इसने संस्कृत, प्राकृत, और अपभ्रंश जैसी विशिष्ट और उच्च भाषाओं से जनभाषा को जोड़ा। यह एक ऐसा प्रयास था, जिसने ज्ञान और शिक्षा को केवल अभिजात वर्ग तक सीमित रखने के बजाय समाज के हर वर्ग तक पहुँचाया। गोरखनाथ और अन्य नाथ साधकों ने अपनी वाणी और रचनाओं में जनभाषा का प्रयोग करके इसे सरल, सहज, और आम लोगों के लिए सुलभ बनाया।

नाथ साहित्य ने हिंदी भाषा के प्रारंभिक स्वरूप को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। ब्रजभाषा, खड़ी बोली, राजस्थानी, और पंजाबी जैसी भाषाओं का मिश्रण नाथ साहित्य में प्रचुर मात्रा में मिलता है, जिसने हिंदी को न केवल समृद्ध किया, बल्कि इसे एक व्यापक और प्रभावशाली भाषा के रूप में स्थापित किया। गोरखनाथ की रचनाएँ, विशेषकर गोरखबोध, शिक्षा और ज्ञान के प्रचार–प्रसार का एक अद्वितीय उदाहरण हैं।

नाथ साहित्य की यह भाषा केवल एक माध्यम नहीं थी, बल्कि यह समाज की संस्कृति, परंपरा, और मूल्य को अभिव्यक्त करने का भी एक साधन थी। गोरखनाथ, चौरंगीनाथ, और अन्य साधकों ने अपनी वाणी के माध्यम से समाज को यह संदेश दिया कि भाषा केवल अभिजात वर्ग की बपौती नहीं होनी चाहिए। उनकी भाषा शैली में जो सहजता, प्रवाह, और सरलता है, उसने हिंदी भाषा को एक जनप्रिय भाषा बनाने में मदद की।

शिक्षा में नैतिकता और आत्मज्ञान का महत्व :–

नाथ साहित्य में शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं माना गया, बल्कि इसे आत्मज्ञान और नैतिकता के विकास का एक सशक्त माध्यम समझा गया। यह दृष्टिकोण न केवल व्यक्तिगत उन्नति को महत्व देता है, बल्कि समाज में समरसता और संतुलन स्थापित करने का भी प्रयास करता है। नाथपंथ के प्रमुख संत गोरखनाथ ने शिक्षा को योग और हठयोग के साथ जोड़ा, जो आत्मशुद्धि और मन की स्थिरता का मार्ग प्रदान करता है। गोरखनाथ की वाणी में शिक्षा के नैतिक और आत्मिक पक्ष का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं है, बल्कि आत्मा और परमात्मा के बीच एक मजबूत संबंध स्थापित करना भी है। उनकी एक प्रसिद्ध पंक्ति :–

"जिनि मन ग्रसे देव दाण।
सो मन मारिलें गह, गुरु ज्ञांण वांण।"

यह पंक्ति आत्म–नियंत्रण, आत्म–जागरूकता और गुरु के ज्ञान से प्राप्त दिशा–निर्देश का महत्व रेखांकित करती है। यह बताती है कि शिक्षा का असली उद्देश्य मन को नियंत्रित कर आत्मा की शुद्धि करना और परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करना है।

नाथ साहित्य का यह दृष्टिकोण आज की शिक्षा प्रणाली में भी प्रासंगिक है। वर्तमान समय में जब शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगारोन्मुखी हो गया है, नाथपंथ का यह दृष्टिकोण याद दिलाता है कि शिक्षा केवल भौतिक लक्ष्यों तक सीमित नहीं होनी चाहिए। इसे व्यक्ति के नैतिक और आध्यात्मिक विकास में भी सहायक होना चाहिए।

नाथ साहित्य में शिक्षा को नैतिकता के प्रचार–प्रसार का साधन माना गया। गोरखनाथ और उनके समकालीन संतों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा का उद्देश्य समाज में मानवीय मूल्यों, सहिष्णुता और परस्पर सम्मान की भावना को बढ़ावा देना है। उन्होंने सामाजिक विषमता, जातिगत भेदभाव, और धार्मिक आडंबरों का विरोध किया और शिक्षा को इन कुरीतियों को समाप्त करने का एक माध्यम माना।

सामाजिक सुधार और शिक्षा :–

नाथ साहित्य भारतीय समाज में सामाजिक सुधार का सशक्त माध्यम रहा है। नाथपंथियों ने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे सामाजिक विषमताओं को समाप्त करने और समरसता

स्थापित करने के साधन के रूप में अपनाया। उनका उद्देश्य समाज में व्याप्त जाति प्रथा, छुआछूत, और धार्मिक मतभेद जैसी कुरीतियों को समाप्त करना था। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से समाज के हर वर्ग को समान अधिकार और अवसर प्रदान करने का संदेश दिया। नाथपंथ के प्रमुख संत गोरखनाथ ने अपनी वाणी में इन मुद्दों को गहराई से संबोधित किया। उनकी रचनाओं में सामाजिक सुधार का आह्वान स्पष्ट रूप से झलकता है। उदाहरण के लिए, उनकी यह पंक्ति :–

"जीव सीव संगे बासा।
बधि न पाइवा रूध्रं मासा।"

इसमें गोरखनाथ ने यह स्पष्ट किया है कि ईश्वर हर जीव में समान रूप से निवास करता है। इसलिए, किसी भी प्रकार का भेदभाव या हिंसा, चाहे वह जातिगत हो या धार्मिक, अनुचित और अमानवीय है। यह संदेश समाज में समानता और समरसता को बढ़ावा देने के लिए अत्यंत प्रभावी है।

नाथपंथियों का यह दृष्टिकोण केवल आध्यात्मिक नहीं था; यह एक सामाजिक क्रांति का आह्वान था। उन्होंने जातिगत भेदभाव और छुआछूत का कड़ा विरोध किया और इसे मानवता के विकास में बाधा माना। उनकी शिक्षा इस विचार पर आधारित थी कि सभी मनुष्य समान हैं और किसी भी प्रकार का भेदभाव समाज को कमजोर करता है।

नाथ साहित्य ने यह सिद्ध किया कि शिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज को सुधारने और एक आदर्श समाज की स्थापना करने का माध्यम भी है। गोरखनाथ और अन्य नाथ संतों की शिक्षाएँ आज भी सामाजिक सुधार और समरसता के लिए प्रासंगिक हैं।

योग और हठयोग का महत्व :-

नाथ साहित्य में योग और हठयोग को विशेष महत्व दिया गया है। यह केवल एक शारीरिक अभ्यास नहीं, बल्कि आत्मा और परमात्मा के मिलन का माध्यम है। गोरखनाथ ने योग को आत्मशुद्धि, मन की स्थिरता, और आत्मज्ञान के साधन के रूप में प्रस्तुत किया। उनके अनुसार, योग न केवल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने का उपाय है, बल्कि यह आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का भी माध्यम है। गोरखनाथ की वाणी में योग के महत्व को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। उनकी यह पंक्ति :–

"पवन थिरता मन थिर मन थिरता ब्यंद।
ब्यंद थिरंता कंध थ्यर यू भाषे गोपीचन्द।"

यह पंक्ति दर्शाती है कि योग के माध्यम से प्राणवायु (पवन) और मन को स्थिर किया जा सकता है। जब मन और वायु स्थिर हो जाते हैं, तो आत्मा और परमात्मा के बीच संबंध स्थापित होता है। योग और हठयोग की यह परंपरा शिक्षा में आत्म–नियंत्रण और अनुशासन के महत्व को रेखांकित करती है।

नारी सम्मान और नैतिकता :-

नाथ साहित्य में नारी को समाज की आधारशिला माना गया है। नाथपंथियों ने नारी के योगदान को सराहा और उसकी गरिमा को उच्च स्थान दिया। उन्होंने नारी को केवल भोग्या के रूप में देखने की मानसिकता का कड़ा विरोध किया और उसे शिक्षा, नैतिकता, और आत्मनिर्भरता के माध्यम से सशक्त बनाने का संदेश दिया। गोरखनाथ ने पतिव्रता नारी को आदर्श नारी के रूप में प्रस्तुत किया। उनकी वाणी में नारी के सम्मान और उसके

महत्व का उल्लेख मिलता है। उदाहरण के लिए, उनकी यह पंक्ति :–

"अठसठि तीरथ समदि समावै यू जोगी को गुरुमुखि जरना।"

यह पंक्ति नारी के सम्मान और उसके नैतिक मूल्यों को रेखांकित करती है। पतिव्रता नारी को समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत मानते हुए गोरखनाथ ने उसे परिवार और समाज में स्थिरता का प्रतीक बताया।

निष्कर्ष :–

नाथ साहित्य और सिद्ध परंपरा भारतीय शिक्षा पद्धति और हिंदी भाषा के विकास के लिए एक अभूतपूर्व योगदान के प्रतीक हैं। यह साहित्य न केवल आध्यात्मिक चेतना को जाग्रत करता है, बल्कि सामाजिक सुधार, नैतिकता, और शिक्षा को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाने का मार्ग प्रशस्त करता है। नाथपंथ के साधकों ने अपने समय की जटिल समस्याओं, जैसे जातिगत भेदभाव, धार्मिक आडंबर, और सामाजिक विषमता का विरोध करते हुए शिक्षा और साहित्य को एक माध्यम के रूप में अपनाया। नाथ साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसने जनभाषा को प्रोत्साहन दिया, जो हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। गोरखनाथ और अन्य नाथ संतों ने अपनी रचनाओं में ब्रजभाषा, खड़ी बोली, राजस्थानी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग करके हिंदी भाषा के प्रारंभिक स्वरूप का विकास किया। इसने न केवल भाषा को जन–जन तक पहुँचाया, बल्कि इसे सशक्त और समृद्ध भी बनाया।

सिद्ध और नाथ परंपरा ने शिक्षा के उद्देश्य को केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे आत्मज्ञान और नैतिकता के विकास का एक महत्वपूर्ण साधन बनाया। योग, हठयोग, और ध्यान के माध्यम से उन्होंने आत्मशुद्धि, मन की स्थिरता, और आत्मा और परमात्मा के मिलन का संदेश दिया। यह दृष्टिकोण आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है, जहाँ नैतिकता और आत्मज्ञान का ह्रास देखा जा रहा है। इस प्रकार, नाथ साहित्य और सिद्ध परंपरा केवल इतिहास का एक अध्याय नहीं हैं, बल्कि यह वर्तमान और भविष्य के लिए प्रेरणा का स्रोत भी हैं। यह साहित्य और शिक्षाएँ हमें यह सिखाती हैं कि शिक्षा केवल ज्ञान का संचय नहीं है, बल्कि यह आत्मा की शुद्धि, समाज की उन्नति, और मानवीय मूल्यों की स्थापना का एक सशक्त साधन है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. चतुर्वेदी, परशुराम, उत्तर भारत की संत परंपरा, प्रयागराज : साहित्य संगम प्रकाशन, 1956
2. द्विवेदी, भवानीशंकर, नाथ साहित्य और सामाजिक सुधार, वाराणसी : चौखंबा विद्या भवन, 1960
3. भारती, धर्मवीर, सिद्ध साहित्य प्रस्तावना, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1952
4. शास्त्री, हरप्रसाद, बौद्धगान ओ दोहा, कोलकाता : बंगाल एशियाटिक सोसाइटी, 1916
5. सांकृत्यायन, राहुल, पुरातत्व निबंधावली, इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 1944
6. सिंह, कमल, गोरखनाथ और उनकी हिंदी साहित्य, वाराणसी : चौखंबा ओरिएंटल प्रकाशन, 1975

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 48-50

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिपेक्ष्य में हिंदी भाषा एवं भारतीय शिक्षा पद्धति : कल, आज और कल के संदर्भ में

दिलकुश झा

शोधार्थी (हिन्दी विभाग), बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा)

भारतीय संविधान के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी गई हिन्दी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया। सरकारी प्रयोजनों के लिए भारतीय अंकों के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप से मान्यता प्रदान की गयी। वर्तमान में हिन्दी भाषा न केवल भारत में अपितु विदेशों में भी करोड़ो लोगों की सम्पर्क भाषा बनी हुई है। आज हिन्दी भारत के अलावा कई देशों में व्यवहृत हो रही है। दुनिया में अनेक देशों के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य में भारतीय मूल के नागरिकों और हिन्दी भाषा की उपस्थिति अब प्रभावी मानी जा रही है।

भारत की आबादी का तकरीबन आधा हिस्सा मूलतः हिन्दी भाशा है और वह आपसी विचार–विनिमय के लिये हिन्दी का ही प्रयोग करता है। दरअसल भाषा किसी देश के इतिहास का वह आईना होती है, जिसमें भविष्य भी देखा जा सकता है। हिन्दी भारतवर्ष का स्वाभिमान है और हिन्दी के विकास तथा प्रचार–प्रसार में वास्तविक रूप से भारत के भविश्य की झाँकी देखी जा सकती है।

आज वैश्वीकरण, ग्लोबलाइजेशन या भूमण्डीकरण का अर्थ है, विश्व में चारों ओर अर्थव्यवस्थाओं का बढ़ता हुआ एकीकरण। वैश्वीकरण आधुनिक विश्व का वह स्तम्भ है जिस पर खड़े होकर दुनिया के हर समाज को देखा, समझा और महसूस किया जा सकता है। वैश्वीकरण आधुनिकता का वह मापदण्ड है जो किसी भी व्यक्ति समाज राष्ट्र को उसकी भौगोलिक सीमाओं से परे हटाकर एक समान धरातल उपलब्ध कराता है जहाँ वह अपनी पहचान के साथ अपने स्थान को पुष्ट करता है। वैश्वीकरण के प्रवाह में आज कोई भी भाषा और साहित्य अछूता नहीं रह गया है, वह भी अपनी सरहदों को पारकर विश्वभर के पाठकों तक अपनी पहचान बना चुका है जिसमें दुनियाभर के प्रबुद्ध पाठक भी एक दूसरे से जुड़ सकते हैं और साहित्य का वैश्विक परिपेक्ष्य में मूल्यांकन संभव हो सका है।

हिन्दी भारतवर्ष की प्रमुख भाषा है। भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में बसने वाले लोगों की संपर्क भाषा हिन्दी है। हिन्दी के अतिरिक्त कोई और भाषा इस देश की संपर्क भाषा हो भी नहीं सकती है। इस संदर्भ में हम यह रंखांकित कर सकते हैं कि अंग्रेजी तो बिल्कुल भी देश की संपर्क नहीं बन सकती क्योंकि यह देश की जनसंख्या

की एक प्रतिशत से भी कम लोगों की मातृभाषा हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान गांधी जी ने इस स्थिति को पहुंचाते हुए ही कहा था कि– ''कांग्रेस अधिवेशन की कार्यवाही केवल हिन्दी में होगी, क्योंकि सम्पूर्ण राष्ट्र तक यदि हमें काग्रेस का संदेश पहुंचाना है तो यह केवल हिन्दी के माध्यम से ही संभव हो सकता है।''

भारत के स्वाधीनता आंदोलन में पूरे देश को जोड़ने में हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ''स्वाधीनता संग्राम'' में हिन्दी और लोकभाषाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं। भारत में साहित्य, संस्कृति और हिन्दी एक–दूसरे के पर्याय रहे है, ऐसा कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

हिन्दी के विकास का श्रेय जितना हिन्दी भाषा क्षेत्रों के विद्वानों का रहा है उससे कम अहिंदी भाषा विद्वानों का नहीं रहा है। इन विद्वानों में से कईयों ने तो हिन्दी को देश की प्रमुख भाषा के रूप में स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस संबंध में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का योगदान महत्वपूर्ण है। गुजराती भाषी महात्मा गांधी ने कहा था – ''हिन्दी ही देश को एक सूत्र में बांध सकती है। मुझे अंग्रेजी बोलने में शर्म आती है और मेरी दिली इच्छा है कि देश का हर नागरिक हिन्दी सीख ले व देश की हर भाषा देवनागरी में लिखी जाए।'' ठीक इसी तरह मराठी भाषी लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने एक अवसर पर कहा था – ''हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी।'' स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानंद सरस्वती, सुभाषचंद्र बोस, चक्रवर्ती राजगोपालचारी, केशवचन्द्र सेन आदि अनेक अहिंदी भाषी विद्वानों ने हिन्दी भाषा का प्रबल समर्थन किया और हिन्दी को भारतवर्ष का भविष्य माना।

14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को भारतीय संघ की राजभाषा घोषित किया। तब से लेकर अब तक हिन्दी के स्वरूप में उत्तरोत्तर विकास और परिवर्तन हुआ है। आज हिन्दी भी वैश्वीकरण की बयार से अछूती नहीं है। आज हिन्दी का स्वरूप ग्लोबल हो चला है। साथ ही आज हिन्दी का महत्व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बढ़ रहा है। आज दुनिया की कोई ऐसी जगह नहीं है जहाँ भारतीय न हों। अप्रवासी भारतीय पूरे विश्व में फैले हुए हैं। ''आज हिन्दी भाषा का अध्ययन विश्व के अनेक देशों में प्राथमिक स्तर पर, माध्यमिक स्तर पर, तो कहीं विश्वविद्यालय स्तर पर हो रहा है।

विश्व में हिन्दी शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए निजी संस्थाएँ, धार्मिक संस्थाएँ और सामाजिक संस्थाएँ तो आगे आ ही रही है, सरकारी स्तर पर विद्यालय एवं विश्वविद्यालयों द्वारा भी हिन्दी शिक्षण बखूबी संचालन किया जा रहा है। आज दुनिया के लगभग 45 से अधिक देशों के विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन–पाठन और शिक्षा जारी है। निश्चित रूप से आज हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी पहचान की मोहताज नहीं है वरन् उसने विश्व परिदृश्य में एक नया मुकाम हासिल किया है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने स्पष्टतया घोषणा की कि ''हिन्दी ऐसी विदेशी भाषा है, जिसे 21वीं सदी में राष्ट्रीय सुरक्षा और समृद्धि के लिए अमेरिका के नागरिकों को सीखना चाहिए।''

उपसंहार :–

निःसदेह भारत के साथ–साथ आज हिन्दी विश्व की भाषा बनने को तैयार है। आज हिन्दी में वह सामर्थ्य

है जो पूरे देश को एक सूत्र मे पिरोकर रख सकती है। आज हिन्दी बाजार और व्यापार की प्रमुख भाषा बनकर उभरी है। हिन्दी आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने पैर जमाने में कामयाब हुई है। अब वह संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनने के लिए प्रयत्नशील है। हिन्दी के प्रचार–प्रसार और विकास में सभी भाषा–भाषियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वैश्विक फलक पर हिन्दी को स्थापित करने के लिए जहाँ एक ओर साहित्यकारों, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं ने इसकी पृष्ठभूमि तैयार की तो वहीं दूसरी तरफ हिन्दी फिल्मों, गीतों, विज्ञापनों, बाजार, कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि ने इसे विस्तीर्ण किया है।

सन्दर्भ सूची :-

1. विमलेश कांति वर्मा, फीजी में हिन्दी स्वरूप और विकास।
2. बद्री नारायण जी की प्रकाशित रचनाएँ एंव काव्य–संग्रह।

दूरभाष – 8527077833

ईमेल – dilkushjha@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 51-55

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिदृश्य में हिंदी और प्रेम विज का साहित्य

गीता

शोधार्थी, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा)

शोध-सार :-

आज हिंदी भारत के अलावा संपूर्ण विश्व में जैसे – चीन, जापान, बांग्लादेश, भूटान, नेपाल, थाइलैंड, ब्रिटेन, श्रीलंका, मॉरीशस इत्यादि देशों में बोली और समझी जाने लगी है। विश्व स्तर पर हिंदी ने अपनी पहचान बना ली है। हिंदी का वैश्विक परिदृश्य व्यापक है।

हिंदी, भारत की पहचान है और हमारे जीवन मूल्यों संस्कृति और संस्कारों को दर्शाती है। हिंदी, दुनिया भर में बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है, दुनियाभर में 75 करोड़ से ज्यादा लोग हिंदी बोलते है। हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ–साथ फिजी का राजभाषा है। हिंदी सिनेमा की लोकप्रियता विदेशों में भी काफी है। हिंदी का कथा साहित्य, फ्रेंच, रूसी और अंग्रेजों के लगभग बराबर है। हिंदी वैज्ञानिक भाषा है और इसे दुनिया में समझा जाता है। हिंदी दुनिया भर में बोली जाने वाली तीसरी बड़ी भाषा है। दुनिया के 132 देशों में भारतीय मूल के करीब दो करोड़ लोग हिंदी बोलते है और काम करते है। हिंदी को पुरातन और आधुनिक दोनों माना जाता है।

भारतवर्ष सदैव से ही बहुभाषी है। किसी–न–किसी रूप में उसकी एक संपर्क भाषा या राष्ट्रभाषा रही है। भले ही हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा न मिला हो, परंतु वह राष्ट्रभाषा ही नहीं, विश्व भाषा से कम नहीं है। पूर्वकाल में यह कार्य संस्कृत, प्राकृत, पालि, अपभ्रंश आदि भाषाओं ने किया है। सात–आठ सौ वर्षों से यह कार्य हिंदी ने किसी–न–किसी रूप में सँभाला है। हिंदी ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी आदि रूपों में रँगी रही है। कहीं वह संतों, फकीरों की खिचड़ी या धुक्कड़ी रूप में तो कहीं रेख्ता या दक्खिनी के रूप में। महाराष्ट्र में भी मराठी के आदिकवि मुकंदराज, संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव, संत समर्थ गुरु रामदास, संत श्रेष्ठ तुकाराम की रचनाओं में इसे देख सकते हैं।

शिवाजी के दरबार में हिंदी कवि भूषण का सम्मान इस बात का द्योतक है। हिंदी और मराठी की लिपि देवनागरी ही है। महाराष्ट्र में वारकरी कीर्तन की लंबी परंपरा है। कीर्तनकार बीच–बीच में कबीर, मीरा, तुलसी आदि संत कवियों के पदों का गायन करते हैं। दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए गांधी जी ने 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' की स्थापना की। अखिल भारतीय हिंदी साहित्य का 25वाँ अधिवेशन 1936 में डॉ. राजेंद्र प्रसाद के सभापतित्व में नागपुर में हुआ था। गांधी जी की प्रेरणा से इसी सम्मेलन में देश के अहिंदी राज्यों में

हिंदी के प्रचार के लिए 21 व्यक्तियों को सदस्य के रूप में शामिल करके हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए समिति गठित की गई, जिसमें सदस्य थे – महात्मा गांधी, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, पं. जवाहर लाल नेहरू, पुरुषोत्तम दास टंडन, सेठ जमना लाल बजाज, ब्रिजलाल बियाणी, आचार्य नरेंद्रदेव, काका कालेलकर, पं. हरिहर शर्मा, वियोगी हरि, बाबा राघव दास, शंकरदेव राव, पं. माखनलाल चतुर्वेदी, सरदार नर्मदा प्रसाद सिंह, श्रीमती लोक सुंदरी राम, श्रीमती रमादेवी चौधरानी, श्रीमती पेरीन वेन, पीतांबर देव गोस्वामी, मन्नानारायण अग्रवाल, मोटूरी सत्यनारायण एवं श्रीनाथ सिंह।

आज पूर्वोत्तर में छोटे–बड़े लगभग 1500 राष्ट्रभाषा विद्यालय हिंदी के प्रचार–प्रसार में लगे हुए हैं। पूर्वोत्तर में हिंदी की महत्त्वपूर्ण संस्थाएँ इस प्रकार हैं– असम राज्य राष्ट्रभाषा समिति, जोहराट–1936, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी – 1948, उत्तर पूर्वांचल राष्ट्रभाषा प्रचार समिति – 1975, मेघालय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, शिलाँग–1972, मिजोरम हिंदी प्रचार सभा, आइजोल –1972, मिजोरम हिंदी विकास केंद्र – 2000, मणिपुर हिंदी परिषद्, इंफाल – 1958, मणिपुर हिंदी प्रचार सभा, इंफाल–1961, मणिपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, इंफाल – 1963, नागालैंड भाषा परिषद्, कोहिमा – 1971, नागालैंड भाषा अकादमी दीमापुर – 1993, राष्ट्रभाषा हिंदी प्रशिक्षण विद्यालय, उंगमा–1993, हिंदी साहित्य सम्मेलन परीक्षा केंद्र – 1993, त्रिपुरा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति– 1994, त्रिपुरा राज्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति – 2000। आज इन्ही संस्थाओं और प्रचारकों के कारण हिंदी पूर्वोत्तर में एक लोकप्रिय भाषा बन गई है। पूर्वोत्तर के सभी विश्वविद्यालयों में आज हिंदी विभाग की स्थापना हो चुकी है

जापान में कई विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण केवल प्राध्यापकीय व्याख्यानों तक सीमित नहीं हैं, कई सांस्कृतिक गतिविधियों से इसे जोड़ा गया है। इसमें नाट्य प्रस्तुति एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। विश्व के भाषाई परिदृश्य में दुनिया की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली चालीस भाषाओं में एक–चौथाई भाषाएँ भारतीय हैं।

इंग्लैंड और फ्रांस की संसदों द्वारा 19वीं शताब्दी के तीसरे दशक में गुलामी उन्मूलन विधेयक के पास हो जाने के बाद अंग्रेजों और फ्रांसीसियों द्वारा अधिकृत अफ्रीकी और दक्षिण अमेरिका के टापू देशों में मूलतः नीग्रो गुलामों का अकाल सा पड़ गया और उन टापुओं पर होने वाली गन्ने की खेती लगभग बंद हो गई, तब 1834 और 1884 के बीच पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार से लाखों की संख्या में हट्टे–कट्टे नवयुवक और नवयुवतियों को, जो मूलतः भूमिहीन खेतिहर मजदूर थे, 'एग्रीमेंट' पर पानी के जहाजों से विभिन्न टापू देशों में भेजा गया। चूँकि इनके साथ 'एग्रीमेंट' करके इन्हें ले जाया गया था, अतः अपभ्रंश भाषा में इन्हें 'गिरमिटिया' कहा गया और जिन टापू देशों में इन्हें ले जाया गया, उसे गिरमिटिया देशों के नाम से जाना जाने लगा। जो गिरमिटिया बंधु उन दिनों मॉरीशस, ब्रिटिश गुयाना, दक्षिणी अफ्रीका, युगांडा, त्रिनिदाद और टोबैगो, सूरीनाम, फिजी आदि देशों में गए, वे अपने साथ मात्र 'रामचरित मानस' और 'हनुमान चालीसा' लेकर गए थे। साथ में कुछ लोग राम दरबार, राधा –कृष्ण, बजरंगबली हनुमान, शिव–पार्वती तथा दुर्गा–काली आदि के चित्र भी साथ ले गए थे। सूरदास, रहीम, कबीर के भजन भी थे। बटोहिया के गीत थे और रामलीला तथा रासलीला के संवाद थे। गिरमिटिया भाइयों में पढ़े–लिखे कम थे, लेकिन श्रुति और स्मृति के माध्यम से ही उन्होंने न केवल हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार किया,

बल्कि पिछली ढाई शताब्दियों में उत्कृष्ट हिंदी साहित्य का निर्माण भी किया।

शुरू के वर्षों यानी 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में तो हमारे गिरमिटिया भाई पत्थर ही ढोते रहे और अपनी कड़ी मेहनत से पथरीले और बंजर टापुओं खेती योग्य भूमिका निर्माण करते रहे। आज भी जब आप मॉरीशस आदि टापू देशों में जाएँगे तो बड़े–बड़े ईख के खेतों के बीचो–बीच एक पहाड़नुमा आकृति के दर्शन होंगे, लेकिन नजदीक जाने पर आप आश्चर्यचकित रह जाएँगे कि वे स्वाभाविक पहाड़ नहीं हैं, बल्कि खेतों से खोदकर निकाली गई बड़ी–बड़ी चट्टानें हैं, जिनको खेत के बीच में लाकर और एक के ऊपर एक सजाकर पहाड़ की शक्ल देते है। इतनी बड़ी–बड़ी चट्टान को खिसकाने में पचासों नहीं, बल्कि सैकड़ों लोगों की आवश्यकता पड़ी होगी। इसी से यह बोध होता है कि हमारे पूर्वजों ने कितना कठोर श्रम करके टापू देशों को समृद्ध, सुखी और संपन्न बनाया।

प्रेम विज के कविता–संग्रह 'निहत्थी लड़ाई लड़ते हुए' की कविताएं समकालीन कविता परिदृश्य में अपनी उपस्थिति अलग से दर्ज करती हैं। यह हमें संवेदना के उन भू–खण्डों में ले जाती हैं जिन्हें अक्सर बंजर मान कर छोड़ दिया जाता है। यह आदमी की उस जिजीविषा को मूर्त करती हैं जो दमघोंटू परिस्थितियों के बावजूद आदमी को हालात के सामने घुटने नहीं टेकने देती और उसे दुनिया की मुश्किलों से घबरा कर समानान्तर दुनिया के धुंधलके में खोने से बचाती है। गौरतलब है कि निहत्थेपन का रूपक इन कविताओं में हालात की भयावहता के प्रतीकार्थ आया है न कि आदमी की निरीहता का वाचक बन कर। कविताओं में हड्डियों की हद तक नंगे हो गए आदमी की लड़ाई रात एवम् विषमतायों के खिलाफ आखिर तक जारी रहती है।

यह कविताएं किसी खामर ख्याली के रु–ब–रु हमें नहीं ले जातीं। वे अपने समय के आदमी की करुण नियति को जानती हैं, अतः अतिरिक्त भावुकता के बिना उसके हालात को प्रमाणिकता से दर्ज करती है।

इन में निजी रागात्मक संदर्भों से लेकर वस्तुगत परिस्थितियों तक की विस्तृत दुनिया शामिल है। उन्होंने जाने पहचाने संदर्भों और अपने आस–पास की चीजों से ही अक्सर अपनी कविताओं के कथ्य का चुनाव किया है। यही उनकी कविताओं की एक बड़ी ताकत भी है और विशेषता भी है जो इन दिनों बहुत कम कवियों में दिखाई देती है।

भाषा और विचार के संयम से संप्रेषित अर्थ पाठक के मन में गहरा उद्वेलन पैदा करते हुए आज के समय की क्रूर और कठोर सच्चाइयों को उजागर करती प्रेम विज की कविताएं निश्चित रूप से समकालीन कविता में कुछ नया और सार्थक जोड़ती हैं।

बहुआयामी प्रतिभा के धनी प्रेम विज का यह दूसरा हास्य व्यंग्य संग्रह है। उनके व्यंग्य जिंदगी की विसंगतियों से सीधे साक्षात्कार का नतीजा हैं। वे परदे के पीछे के सत्य को इस तरह से उजागर करते हैं कि व्यवस्था का पूरा विद्रूप हमारे सामने उजागर हो उठता है।

प्रेम विज के व्यंग्य सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, दोगलेपन की निशानदेही तो करते ही हैं, आधुनिकता और महानगरीय सभ्यता के अमानवीय स्वरूप को भी रेखांकित करते हैं।

प्रेम विज के हास्य–व्यंग्य के मार्फत आजादी के बाद जीवन के सभी क्षेत्रों के अधः पतन तथा सांस्कृतिक

दिवालिएपन के कारणों के रू–ब–रू सहजता से हुआ जा सकता है। उनके हास्य–व्यंग्य में आए ज्यादातर पात्र समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतीकीकृत चरित्र है, इसीलिए उनके लेख समाज के विद्रूप का गहरा क्लोजअप हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं।

प्रेम विज के हास्य–व्यंग्य की यह खासियत है कि वे तमाचा तो अपने मुंह पर मारते हैं लेकिन उंगलियों के निशान सामने वाले के चेहरे पर दिखाई देते हैं। प्रेम विज के व्यंग्य वास्तव में हमें अपने गिरेबान में झांकने का मौका देते हैं।

निस्संदेह अपने समय और समाज को आईना दिखाते प्रेम विज के इस हास्य–व्यंग्य संग्रह 'परदे के पीछे' के लेख समाकालीन हास्य व्यंग्य लेखन में उनके अलग मुकाम की ओर इशारा करते हैं।

'धारा के विरुद्ध' संग्रह में संकलित तेईस कहानियों की कथा–भूमि से गुजरते हुए हमारे समय के जटिल यथार्थ की अनेक अनछुई परतें एक–एक करते खुलती हैं, लेकिन मुख्य स्वर इन कहानियों का धारा के विरुद्ध जूझने का ही है। जीवन के प्रति गहरी प्रतिबद्धता को उजागर करते हुए यह कहानियाँ कोई हड़कंप नहीं मचातीं, केवल उन खतरों की ओर इशारा करती हैं जिन्होंने हमारी जड़ों को खोखला कर दिया है और हमारी निजी अस्मिता के लिए कई तरह के संकट पैदा कर दिए हैं। कहानियाँ यथासंभव बड़–बोलेपन से बचकर चली हैं जो इनकी एक बड़ी ताकत है। मिट्टी की गंध और पहचान इन कहानियों की एक अन्य विशेषता है जो इन कहानियों में रचनात्मक ऊर्जा और शक्ति बनकर सामने आई है।

इन कहानियों में साँस लेते पात्र वास्तविक जीवन से लिए गए स्त्री–पुरुष हैं, इसलिए उनका जीवन–संघर्ष जीवन के व्यापक घात–प्रतिघातों को समझने की एक व्यापक समझ भी प्रदान करता है।

कथाकारों के विरल सर्जनात्मक उत्कर्ष को उद्घाटित करती ये कहानियाँ निश्चित रूप से हमारी चेतना के द्वार पर दस्तक देकर मन में गहरा उद्वेलन पैदा करती हैं।

प्रेम विज हिन्दी के एक चर्चित कहानीकार हैं। उनकी कहानियों में रोजमर्रा की घटनाओं और प्रसंगों को गूंथने की कला अपनी ही है। बात से बात निकालने में और उसे किसी मार्मिक बिंदु तक ले जाने में वह माहिर हैं। हिन्दी की युवा कहानी पीढ़ी–खासतौर पर पंजाब की युवा कहानी पीढ़ी के वह एक सशक्त हस्ताक्षर हैं।

प्रेम विज की कहानियां आज के जीवन–यथार्थ के विभिन्न पक्षों पर केंद्रित हैं। इनमें कहीं पर व्यक्ति की मानसिक घुमड़न को पकड़ा गया है तो कहीं नये बदलते हुए संबंधों को रेखांकित किया गया है। उनकी कहानियां बदले हुए संदर्भों में जीवन–मूल्यों पर फिर से सोचने के लिए बाध्य करती हैं। विश्वास है कि सुधि पाठक इस संग्रह की कहानियों का भरपूर स्वागत करेंगे।

'भीड़ का भूगोल' प्रेम विज के व्यंग्यात्मक लेखों की पुस्तक है। इसमें उनके सत्ताईस लेख संकलित हैं। ये लेख कहीं राजनीतिक विसंगति के चित्र उभारते हैं, कहीं आर्थिक विडंबना के, कहीं हमारे समाज के सांस्कृतिक पतन की पहचान कराते हैं तो 'कहीं आधुनिकता और महानगरीय सभ्यता के अमानवीय स्वरूप को उभारते हैं। इसमें आज के समय और समाज का यथार्थ उजागर हुआ है।

हास्य और व्यंग्य परस्पर सम्बद्ध हैं, लेकिन वे एक–दूसरे का अतिक्रमण भी करते हैं। हास्य को व्यंग्य

में और व्यंग्य को हास्य में ढालने की रचनात्मक प्रक्रिया सरल नहीं है। प्रेम विज ने इसे साधने का प्रयास किया है। उसने जिन्दगी से सीधे साक्षात्कार के क्षणों में वस्तुगत और स्थितिगत विसंगतियों को इन लेखों में व्यंग्य के पैने औज़ार से जिस तरह निरूपित किया गया है, उसमें इसकी बानगी देखी जा सकती है।

संदर्भ पुस्तकें :–

1. निहत्थी लड़ाई लड़ते हुए।
2. धारा के विरुद्ध।
3. परदे के पीछे।
4. टंगे हुए प्रश्न।
5. भीड़ का भूगोल।
6. हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 56-59

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैदिककालीन शिक्षा की विशेषताओं का वर्तमान कालीन शिक्षा में महत्त्व

जूली सोनी

शोधार्थी, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ यूनिवर्सिटी, उदयपुर (राज.)

वैदिक काल शिक्षा का अथाह महासागर है। इस काल से ही वेदों का उद्भव हुआ। प्राचीन भारतीय शिक्षा का उद्भव वेदों से माना जाता है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली गुरूकुल शिक्षापद्धति पर आधारित थी। इसमें शिष्य 25 वर्ष तक की आयु तक गुरू के आश्रम में रहता हुआ ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ वैदिक, आध्यत्मिक और नैतिक शिक्षा का ज्ञान अर्जित करता था।

वेदों को भारतीय दर्शन का मुख्य स्त्रोत माना जाता है। इसमें मानवजीवन के लिए सांसारिक, व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक सभी तरह के आवश्यक ज्ञान जो उसे जीवन जीने की कला सीखा सके और सत्यता से परिचय करा सके ऐसे अद्भुत रोचक तथ्यों के ज्ञान को सम्यक रूप से संग्रहित किया है। इसके अतिरिक्त अनेक ज्ञान विज्ञान, धर्मदर्शन, सदाचार–सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन से सम्बद्ध विश्वकोष है। ये ही भारतीय शिक्षा के आदि स्त्रोत कहे जाते हैं। इसी के अनुसार भारतीयों का सम्पूर्ण जीवन दर्शन निर्धारित हुआ तथा वर्तमान में भी भारतीयों के जीवन दर्शन में विभिन्न रीतियों प्रथाओं तथा परम्पराओं में विद्यमान है।

वैदिक काल में दो प्रकार की विद्या परा और अपरा पर आधारित थी। परा में विद्या में ज्ञान कर्म तथा उपासना के द्वारा ब्रह्म को प्राप्त किया जाता है जिसके द्वारा मानव को मोक्ष की प्राप्ति के द्वार खुल जाते हैं। जबकि अपरा विद्या में संगठित और नियोजित सामाजिक व्यवस्था का संचालन करना होता है। पराविद्या के द्वारा ईश्वर को जानने सम्बन्धी विधाओं का ज्ञान कराया जाता है। ईश्वरीय ज्ञान के लिए परा विद्या का ज्ञान आवश्यक था किन्तु लौकिक अर्थात् सामाजिक ज्ञान के लिए अपरा विद्या का ज्ञान महत्त्वपूर्ण था। इन्हीं दोनों के ज्ञान के कारण ही वैदिक काल में परा तथा अपरा सम्बन्धी विद्याओं का ज्ञान मानव उपलब्ध कराया जाता है क्योंकि इस काल में शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य छात्रों की शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करना था। जिसके द्वारा मानव मोक्ष प्राप्ति के सर्वोच्च लक्ष्यको प्राप्त कर जन्म–मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो सके।

इस काल की शिक्षा के द्वारा मानव जीवन में सदाचरणों को विकसित करते हुए उसे सादा जीवन तथा उच्च विचारों को अपनाते हुए जीवन को व्यतीत करें। ऐसे विषयों को सम्मिलित किया जाता था इसमें छात्रों के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता था।

वैदिक काल में बालकों का प्रारम्भिक शिक्षा घर से ही प्राप्त हो जाती थी तथा उपनयन संस्कार के पश्चात् जीवन से सम्बन्धी शिक्षाओं के लिए गुरुकुलों में भेजा जाता था। शब्द उच्चारण, शब्द ज्ञान, भाषा, व्याकरण तथा गणित की प्रारम्भिक ज्ञान बालक घर पर ही सीख लेता है। गुरुकुल में रहता हुआ बालक घर पर ही सीख लेता है। गुरुकुल में रहता हुआ बालक वहाँ के नियमों का पालन करता था तथा कठोर अनुशासन में रहना होता था। इसमें प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान प्रदान किया जाता था, इस काल में मौखिक शिक्षा ही मुख्य रूप से प्रचलित थी। शिक्षा का माध्यम संस्कृत भाषा थी। इस काल में बालक की योग्यता और शिक्षा ग्रहण करने की क्षमता के अनुसार गुरु छात्रों को तीन भागों में विभाजित कर लेता था। उत्कृष्ट छात्र, मध्यम छात्र और अल्पज्ञ। इसी के आधार पर उन्हें शिक्षा प्रदान कराई जाती थी क्योंकि उस समय शिक्षा व्यक्तिगत भिन्नता पर आधारित थी। व्यक्गित भिन्नता के आधार पर ही छात्र श्रवण, मनन तथा चिन्तन करते थें। शिक्षा के लिए प्रश्नोत्तर प्रणाली, कहानी, व्याख्यान, वाद–विवाद तथा क्रिाकलाप आदि विभिन्न मौखिक शिक्षा विधियों का प्रयोग किया जाता था। इस काल में श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन (भाव–अनुभूति) ये तीन प्रकार की ही शिक्षा विधियाँ प्रचलित थी।

इस काल में शिक्षा में गुरु का सर्वोच्च स्थान था। छात्र गुरु की आज्ञा का अनुसरण करते हुए जीवन व्यतीत करते थें। इस काल में गुरुकुल में रहने वाले छात्रों के लिए वेशभूषा निश्चित थी तथा उन्हें गुरुकुल की परम्पराओं और नियमों का पालन करना अनिवार्य का जो बालक वहाँ के नियमों के प्रतिकूल आचरण करता उसे गुरुकुल से निष्कासित कर दिया जाता था।

वैदिक कालीन शिक्षा का उद्देश्य मानव का सर्वांगीण विकास करना था। छात्रों को शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक हर प्रकार से अपना विकास करने का पूरा अवसर प्रदान किया जाता था। वैदिक शिक्षा का उद्देश्य छात्रों के नैतिक चरित्र के साथ–साथ व्यक्तित्व का भी सर्वांगीण विकास करना था। जिससे वह अपने व्यक्तिगत जीवन के विकास के साथ सामाजिक कुशलता व्यवहारिक ज्ञान की कुशलता को प्राप्त कर अपने जीवन को व्यवस्थित तथा सुनियोजित कर सके।

वैदिक काल में गुरु–शिष्यों के बीच मधुर संबंध स्थापित करने पर बल दिया जाता था तथा शिक्षा के द्वारा मानव मूल्यों को विकसित किया जाता था। इसमें शिक्षा के आदर्शों जैसे श्रद्धा, भक्ति, सेवा, आदर, आत्मानुशासन, ब्रह्मचर्य आदि छात्रों को शिक्षा के साथ सिखाया जाता था। इस युग में निःशुल्क शिक्षा प्रदान कराई जाती थी।

वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली, आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली की नींव है किन्तु समय परिवर्तन के साथ–साथ आधुनिक शिक्षा प्रणाली वैदिक कालीन शिक्षा से पूर्णत भिन्न दिखाई देती है क्योंकि इसमें पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का प्रभाव व अंधानुकरण होने से प्राचीन आदर्श को भूलते जा रहे हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में वैदिक शिक्षा प्रणाली को समाहित करने अत्यावश्कता है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली के आदर्श तत्वों को वर्तमान शिक्षा में समाहित करके छात्र की असंतोषता, अनुशासन हीनता, बेरोजगारी, नैतिक तथा चारित्रिक पतन आदि समस्याओं का समाधान संभव है।

शिक्षा मनुष्य को संस्कारवान बनाती है बल्कि उसका सर्वांगीण विकास भी करती है। वर्तमान कालीन शिक्षा ज्ञान के क्षेत्र में विकसित है। आज की शिक्षा पद्धति के द्वारा ही आज जो हमारे आस–पास का वातावरण

तथा प्रौद्योगिकी एवं नवीन आविष्कारों से देश में प्रगति हुई है। आज हर क्षेत्र में शिक्षा से हमने ख्याति प्राप्त कर ली है। यह ज्ञान का नया स्वरूप है। आज भी प्राचीन विषयों को शिक्षा में सम्मिलित किया है जैसे ज्योतिष विज्ञान, खगोल विज्ञान, भूगोल विज्ञान आदि में होने वाली घटनाओं आदि सभी वेदों में निहित है किन्तु आज इन सभी शिक्षा को प्राप्त करने का तरीका आधुनिक हो गया है। नए–नए तकनीकी विकास के कारण शिक्षा को सीखने का रूप परिवर्तित हो गया है।

वैदिक कालीन शिक्षा गुरुकुल पद्धति पर आधारित थी। आज गुरुकुल के स्थान पर विद्यालय तथा विश्वविद्यालय हो गए है तथा इनके साथ आज कल तो शिक्षण संस्थानों के रूप में प्रशिक्षण कक्षाओं और स्मार्ट कक्षाओं का प्रचलन बढ़ गया है।

इसके लिए बड़ी मात्राओं में शुल्क देकर छात्र शिक्षा अर्जित करने जाते हैं। ये शिक्षा केवल वर्तमान समाज से रोजगार का आधार बन कर ही रह गई है। रोजगार को बढ़ावा देने के कारण वैदिक शिक्षा प्रणाली समाप्त हो गई है। वैदिक शिक्षा के द्वारा छात्रों में नैतिक विकास के द्वारा उसका सर्वांगीण विकास किया जाता था।

प्राचीन समय में गुरु–शिष्य के मधुर सम्बन्ध होते थें। गुरु के बात की अक्षरश पालना की जाती थी। गुरु के द्वारा बालक के चरित्र एवं व्यक्तित्व का निर्माण कर उसे आदर्श मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करना तथा उसे जीवन की वास्तविकता से परिचित कराकर मोक्ष प्राप्ति का मार्ग दिखाना था। बालक को ज्ञानवान तथा सुसंस्कृत बनाना भी था।

आधुनिकरण तथा बदलते परिवेश में औद्योगिकीकरण के कारण नैतिक शिक्षा का पतन हो गया है। आधुनिक शिक्षा के लिए एक बड़ी समस्या बन गई है कि छात्रों के साथ कैसा व्यवहार किया जाए उन्हें नैतिक मूल्य कैसे प्रदान करे। छात्रों में अनुशासन की भावना नहीं रही है। भौतिकवादी जीवन शैली को अपनाने के कारण आजकल जीवन पूरा दिखावा और फैशन से भरा हो गया और वो ही फैशन शिक्षा में भी दिखाई दे रहा है।

मनुष्य केवल आधुनिक दौड़–भाग में लगा पड़ा है। छात्र केवल पुस्तकीय ज्ञान पर ही आधारित रह गया है। उसे व्यवहारिक ज्ञान और सामाजिक कुशलता का अभाव दिखाई देता है।

भौतिकवादी जीवन शैली के प्रभाव के कारण छात्रों में नैतिक मूल्यों का हास दिखाई देता है उसका एक कारण माता–पिता की अनुचित देखभाल, पारिवारिक वातावरण तथा समाज के परिवर्तन का भी प्रभाव दिखाई देता है।

अतः आधुनिक शिक्षा में विद्यालय में वैदिक शिक्षा को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाए तो बहुत अच्छा होगा। इससे मनुष्य का नैतिक तथा चारित्रिक विकास तो होगा ही तथा आधुनिक विद्यार्थी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण करना सीखेंगे वह सत्यावदी, आदर्श व्यक्ति बना सकते हैं तथा उसे सभ्य सुसंस्कृत बनाने की आवश्यकता है। अगर हम बेहतर समाज व देश की सांस्कृतिक को बनाए रखना चाहते है तो हमे वैदिक शिक्षा प्रणाली को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित करना होगा।

वर्तमान काल में छात्र में धैर्य का स्तर कम होता जा रहा है। किताबी बोझ और आधुनिक युग की बढ़ती

प्रतिस्पर्दा के दबाव में वह स्वयं आत्म हन्ता बनता जा रहा है। इसलिए मनुष्य को सभ्य, धैर्यवान, सच्चिरित्र वाला बनाने के लिए वैदिक शिक्षा को वर्तमान शिक्षा में सम्मिलित करना होगा।

निष्कर्ष :–

कहा जा सकता है कि प्राचीन वैदिककालीन शिक्षा की अनेक विशेषताएं आधुनिक समय में पूर्णरूप से प्रासंगिक एवं उपयोगी है, आदर्शवादिता, गुरुशिष्य संबन्ध, शिक्षा व्यवस्था, शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम तथा सरल जीवन शैली आदि को वर्तमान शिक्षा में प्रणाली में समावेश करके अनेक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. रोमिला थापर : भारत का इतिहास।
2. डॉ. जगन्नारायण पाण्डेय : संस्कृत साहित्य का इतिहास।
3. पी.डी. पाठक : भारत में शिक्षा का विकास एवं समस्यायें।
4. https://www.linkedin.com
5. डी.डी कौशाम्बी : प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 60-62

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिवेश में हिन्दी भाषा

डॉ. ज्योति पटेल

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टीकमगढ़ (म.प्र.)

सार :-

भाषा विचारों के आदान–प्रदान का माध्यम होती है। भाषा जितनी सुबोध, सरल और सहज होगी, भाषा सम्प्रेरण उतना ही सफल और सशक्त होगा। भारतीय भाषाओं की परम्परा में हिन्दी को वही स्थान प्राप्त है जो पुरातन काल में संस्कृत का था। वर्तमान में हिन्दी भाषा न केवल भारत में अपितु विदेशो में भी करोडों लोगों की संपर्क भाषा बनी हुई है। हिन्दी भारत की राजभाषा है। मॉरिशस, त्रिनिदाद, गुयाना और सूरीनाम में हिन्दी को क्षेत्रीय भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। अमेरिका में 80 से ज्यादा विश्वविधालयों में हिन्दी शिक्षक की सुविधा उपलब्ध है। हिन्दी की व्यापकता के कारण दुनिया के 175 देशों में हिन्दी के शिक्षण एवं प्रशिक्षण के अनेक माध्यम केन्द्र बन गये है। हिन्दी का शिक्षण एवं प्रशिक्षण विश्व के लगभग 180 विश्वविद्यालयों, शैक्षिणिक संस्थाओं में चल रहा है। आज हिन्दी का स्वरूप वैश्विक या ग्लोबल हो चला है, वह अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पकड़ मजबूत कर रही है, साथ ही वह अपन स्वरूप को निरंतर मॉज भी रही है।

प्रस्तावना :-

भारतीय संविधान के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी गई हिन्दी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। सरकारी प्रयोजनों के लिए भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप को मान्यता प्रदान की गई, दुनिया के कई छोटे बडे देशों में प्रवासी भारतीयों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। दुनिया के अनेक देशों के सामाजिक, आर्थित एवं सास्ँकृतिक परिदृश्य में भारतीय मूल के नागरिकों और हिन्दी भाषा की उपस्थिति अब प्रभावी मानी जा रही है। इस बडे फलक पर चहुमुँखी चुनौतियों और प्रतियोगिताओं के बीच अभर–उभरकर अब भारतीय मूल के अनगिनत प्रवासी अपनी उपस्थिति को सार्थक सिद्ध करते हुये हिन्दी भाषा को सृजन और अभिव्यक्ति का माध्यम बना रहे है।

विवेचना :-

हिन्दी भारतवर्ष की प्रमुख भाषा है। आंकड़े बताते है कि देश में हिन्दी को मातृभाषा के रूप में प्रयोग करने वाले भारतीयों का प्रतिशत लगभग 43 है। यह मातृभाषा के रूप में बोलने वालों का आंकड़ा है। यदि हम संपर्क और द्वितीय भाषा के रूप में प्रयोग करने वाले भारतीयों की संख्या भी इसमें जोड़ दे तो इसका प्रतिशत बहुत अधिक बढ़ जाता है। भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में बसने वाले लोगों की संपर्क भाषा हिन्दी है। उत्तर से दक्षिण में बसने वाले लोगों और दक्षिण से उत्तर पूर्व में बसने वाले लोगों की संपर्क भाषा भी हिन्दी है। हिन्दी के

अतिरिक्त कोई और भाषा इस देश की संपर्क भाषा हो ही नहीं सकती है।

यदि हम वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी का प्रयोग करने वालों की स्थिति का अवलोकन करें तो पाते है कि वर्ष 1952 ई0 के आस–पास वह चीनी और अंग्रेजी के बाद तीसरे स्थान पर आ गयी है। हिन्दी के विकास और विस्तार की कहानी बड़ी रोचक और उतार चढ़ाव से भरपूर है। हिन्दी के विकास का श्रेय जितना हिन्दी भाषी क्षेत्रों के विद्वानों का रहा है उससे कम अहिन्दी भाषी विद्वानों का नहीं रहा है। इन विद्वानों में से कईयों ने तो हिन्दी को देश की प्रमुख भाषा के रूप में स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बहुत सारे अहिन्दी भाषी के विद्वानों ने न केवल हिन्दी को अपनाया वरन् उन्होंने हिन्दी को राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित भी कराना चाहा और सभी जगह घूम–घूमकर हिन्दी का बिगुल बजाया साथ ही विदेशों में भी जाकर हिन्दी की पुरजोर बकालत की और अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में हिन्दी का परचम लहराया। इस संबंध में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था –''हिन्दी ही देश को एक सूत्र में बाँध सकती है। मुझे अंग्रेजी बोलने में शर्म आती है मेरी दिली इच्छा है कि देश का हर नागरिक हिन्दी सीख ले व देश की हर भाषा देवनागरी में लिखी जाए।

गाँधी का मानना था कि हर भारतासी को हिन्दी सीखना चाहिए और उसका व्यवहार करना चाहिए। ठीक इसी तरह लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने एक अवसर पर कहा था ''हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी।'' स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, सुभाषचन्द बोस, चक्रवती राजगोपालाचारी, केशवचन्द्र सेन आदि अनेक अहिन्दी भाषी विद्वानों ने हिन्दी भाषा का प्रबल समर्थन किया और हिन्दी को भारतवर्ष का भविष्य माना।

14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को भारतीय संघ की राजभाषा घोषित किया। तब से लेकर अब तक हिन्दी के स्वरूप में उत्तरोत्तर विकास और परिवर्तन हुआ है। आज हिन्दी भी वैश्वीकरण की बयार से अछूती नहीं है। आज हम कह सकते है कि हिन्दी भाषा एक बार फिर नई चाल में ढल रही है। बीसवीं सदीं के अंतिम दशकों एवं इक्कीसवीं सदी के पहले दशक में हिन्दी भाषा में जो परिवर्तन हुए हैं। वे साधारण नहीं है। आज हिन्दी का स्वरूप ग्लोबल हो चला है। भाषा और व्याकरण में नये प्रयोग किये जा रहे हैं। साथ ही आज हिन्दी का महत्व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बढ़ रहा है। आज दुनिया की कोई ऐसी जगह नहीं है जहाँ भारतीय न हो। अप्रवासी भारतीय पूरे विश्व में फैले हुए हैं, यदि हम आंकड़ों पर गौर करें तो पाते है कि विश्व में फैले इन अप्रवासी भारतीयों की संख्या लगभग 2 करोड़ है जिनके महत्व हिन्दी का पर्याप्त प्रचार प्रसार है। आज हिन्दी भाषा का अध्ययन विश्व के अनेक देशों में प्राथमिक स्तर पर, माध्यमिक स्तर पर तो कहीं इसका उद्देश्य आधुनिक भारत के अंतर्मन को समझाना है। विश्व में हिन्दी शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए निजी संस्थाएँ ओर सामाजिक संस्थाएँ तो आगे आ रही है सरकारी स्तर पर विद्यालय एवं विश्व विद्यालयों द्वारा भी हिन्दी शिक्षण का बखूवी संचालन किया जा रहा है। उच्च अध्ययन संस्थानों में भी अध्ययन–अध्यापन एवं अनुसंधान की अच्छी व्यवस्था है।

इक्कीसवीं सदी विज्ञान एवं तकनीकी के वर्चस्व की सदी है। विज्ञान की प्रगति ने ऐसे अनेक कारक उत्पन्न किये है, जिनसे मनुष्य का एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर बसना आम धारणा बन गया है। आज का मनुष्य बेहतर अवसरों की चाह में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर बस रहा है। परिणामस्वरूप प्रवास की प्रकिया में तेजी आई है। भारत भी इससे अछूता नहीं रहा है। वैश्विक परिपेक्ष्य में भारतीय भाषा हिन्दी की इस वैश्विक पहुँच के पीछे कई प्रकार के कारक कार्य कर रहे हैं। जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण कारण निम्नलिखित माने जा सकते है।

(1) भारतेत्तर देशों में रह रहे प्रवासियों के लिए हिन्दी उनकी जातीय अस्मिता की प्रतीक है। यही कारण है कि विदेशों में बसे भारतीयों, चाहे वे हिन्दी भाषी हो अथवा अहिन्दी भाषा, सभी के लिए हिन्दी भाषा उनकी सामूहिक पहचान भारतीयता का प्रतीक है। हिन्दी बोलना ही उनके लिए भारत और भारतीय संस्कृति से जुड़े रहना है। इसलिए हिन्दी इन प्रवासी भारतीयों के लिए भारतीयता तथा विश्व के लिए वैश्विक नागरिकता की भाषा के रूप में उभरकर सामने आ रही है।

(2) विश्व में भारतीय भाषाओं के वैश्विक पहुँच के पीछे भारत सरकार के द्वारा स्थापित भारतीय साँस्कृतिक संबंध परिषद, दिल्ली के पिछले 70 वर्षों के योगदान की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय साँस्कृतिक संबंध परिषद अपने विश्व भर में स्थापित 38 साँस्कृतिक केन्द्रों तथा भारत के विभिन्न राज्यों में स्थापित 19 केन्द्रों के माध्यम से भारतीय भाषाओं और संस्कति के वैश्विक प्रचार–प्रसार में संलग्न है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा विश्व के विभिन्न देशों में हिन्दी, संस्कृत, एवं अन्य भारतीय भाषाओं के अध्ययन अध्यापन के लिए स्थापित चेयर स्वयं में अति महत्वपूर्ण एवं अनुपम उपक्रम है, जिसके द्वारा भारतीय भाषाओं का विश्वभर में छात्रों के द्वारा अध्ययन किया जा रहा है। अतः भारतीय भाषाओं को वैश्विक स्वरूप प्रदान करने में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के सराहनीय योगदान है।

निश्चित रूप से आज हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी पहचान की मोहताज नहीं है वरन् उसने विश्व परिदृश्य में एक नया मुकाम हासिल किया। अमेरिका जो कि आज उन्नत टेक्नोलाजी, बेहतर शिक्षा दूर संचार के क्षेत्र में दुनिया में अग्रणी है, वहाँ भी हिन्दी भाषा का प्रयोग बढ़ा है और इसके प्रचार–प्रसार की पुरजोर बकालत की जा रही है।

निष्कर्ष :–

इक्कीसवीं सदी भारत एवं भारतीयों की सदी है, वास्तव में यह वह दौर है जब भारतीयों में अपनी जातीय अस्मिता को वैश्विक स्तर पर परिभाषित एवं परिमार्जित किया है। ऐसे में भारत के साँस्कृतिक प्रतिमानों का वैश्विक स्वरूप ग्रहण करना एवं विश्व की श्रेष्ठतम सभ्यताओं में अपनी विशेष पहचान निर्मित करना आम धारणा बन गया है। निःसंदेह आज हिन्दी का फलक विस्तृत हुआ है। भारत के साथ–साथ आज हिन्दी विश्व भाषा बनने को तैयार है। आज हिन्दी में वह सामर्थ्य है जो पूरे देश को एक सूत्र में पिरोकर रख सकती है। आज हिन्दी बाजार और व्यापार की प्रमुख भाषा बनकर उभरी है। हिन्दी आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने पैर जमाने में कामयाब हुई है। अब वह संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनने के लिए प्रयत्नशील है। हिन्दी के प्रचार–प्रसार और विकास में सभी भाषा भाषियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वैश्विक फलक पर हिन्दी को स्थापित करने के लिए जहाँ एक ओर साहित्यकारों, विभिन्न पत्र पत्रिकाओं ने इसकी पृष्ठभूमि तैयार की तो वहीं दूसरी तरफ हिन्दी फिल्मों, गीतों, विज्ञापनों, बाजार कम्प्यूटर इंटरनेट आदि ने इसे विस्तीर्ण किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :–

1. हिन्दी स्वरूप और विकास, विमलेश कांति वर्मा।
2. भूमंडलीकरण की दौर में हिन्दी साहित्य, कृष्ण कुमार यादव।
3. विदेशों में हिन्दी का बढ़ता प्रभाव, राकेश शर्मा।
4. वैश्विक हिन्दी परिदृश्य, मिश्रा, कुमार गौरव व चौहान।

ईमेल– dr.jyotipatel@mp.gov.in

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 63-66

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी : संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ

किरण

पीएच.डी. हिन्दी, शोधार्थी, किशोरी रमण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश।

वर्तमान युग ज्ञान–विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का युग है। प्रत्येक देश प्रौद्योगिकी के माध्यम से एक–दूसरे से जुड़ा हुआ है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात संपूर्ण विश्व हमारा परिवार है इस अवधारणा को सत्यापित करता है। सभी देश ज्ञान–विज्ञान के माध्यम से सूचनाओं का आदान–प्रदान करके विश्व परिवार में अपनी महती भूमिका निभाते हैं। 'यह विश्वग्राम के सपनों को संजोये, विश्व प्रादर्श को सहेजती भुवन को भवन में बदलती और संसार को बाजार के रूप में परिवर्तित करके मनुष्य को यह केवल अर्थव्यवस्था को ही प्रभावित नहीं कर रहा है वरन् जीवन की पद्धति को भी परिवर्तित कर रहा है जिसमें संस्कृति, साहित्य और भाषा भी सम्मिलित है।'[1] इक्कीसवीं सदी में जब विश्व शक्ति बनने के लिए देशों में स्पर्धा जारी है ऐसी स्थिति में अपनी जड़ों को सुरक्षित रखना बहुत ही महत्वपूर्ण है। ये जड़ें हमारी सांस्कृतिक और भाषिक विरासत में निहित हैं। संस्कृति मनुष्य को उसके संस्कारों से जोड़े रखती है जिसके कारण वह मनुष्यता के चरम लक्ष्यों को प्राप्त करता है। इसके पश्चात् भाषा एक ऐसा माध्यम बनती है जिसके द्वारा मनुष्य अपने भावों और विचारों को दूसरों तक प्रेषित करने में सफलता प्राप्त करता है। प्रत्येक मनुष्य अपनी भाषा के प्रति संवेदनशील और आक्रामक दोनों ही होता है। संवेदनशील इसीलिए क्योंकि वह उसके भावों अर्थात् प्रेम, दया, करूणा, क्रोध और वात्सल्य आदि को अभिव्यक्त करता है। आक्रामक इसलिए क्योंकि इसमें उसके अस्तित्व गरिमा और संस्कार निहित हैं जिनकी अवहेलना और अपमान दोनों पर वह आक्रामक हो जाता है। जैसा कि स्वतंत्रता आंदोलन के समय संपूर्ण भारतवर्ष अपनी भाषिक जागरूकता के द्वारा स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ रहा था। सभी राज्य अपनी भाषा को सम्मान और गौरव से देखते थे। इसी कारण हिन्दी भाषा ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भाषिक दृष्टि से भारत बहुत ही समृद्ध एवं सम्पन्न देश है। प्रत्येक भाषा अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखती है। हिन्दी भाषा भारत के बृहत् क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा होने के कारण राष्ट्रभाषा का दर्जा रखती है। हिन्दी भाषा का साहित्य जगत भी बहुत विस्तृत है जिसके कारण वह साहित्य प्रेमियों के मानस पटल पर अमिट छाप छोड़ती है। आज का युग वैश्वीकरण का युग है। भारतीय अर्थव्यवस्था की समानता चीन के समकक्ष मानी जाती है। भारतीय अर्थव्यवस्था और संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण कहा जाने लगा है कि वर्तमान युग भारत का युग है। जिसके कारण भारत की संपूर्ण विश्व में एक अलग पहचान है। विश्व पटल पर अंग्रेजी और मंदारिन (चीनी) का प्रभाव सर्वज्ञ है। उसके बाद हिन्दी विश्व की तीसरी प्रमुख भाषा है जिसने भारत को विशेष ख्याति प्रदान की है। हिन्दी भारत के अतिरिक्त अनेक अन्य देशों में बोली, लिखी और समझी जाती है।

इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत भाषिक दृष्टि से एक मजबूत स्थान रखता है। डॉ. करुणा शंकर उपाध्याय के अनुसार, 'हिंदी में साहित्य सृजन की परंपरा भी बारह सौ साल पुरानी है, यह आठवीं शताब्दी से लेकर वर्तमान 21वीं शताब्दी तक गंगा की अनवरत अविरल धारा की भांति प्रवाहमान है। उसका काव्य साहित्य तो संस्कृत के बाद विश्व की श्रेष्ठतम साहित्य की क्षमता रखता है। उसमें लिखित उपन्यास एवं समालोचना भी विश्व स्तरीय है। उसकी शब्द संपदा विपुल है। उसके पास पच्चीस लाख से ज्यादा शब्दों की सेना है उसके पास विश्व की सबसे बड़ी कृषि विषयक शब्दावली है उसने अन्यान्य भाषाओं की बहु–प्रयुक्त शब्दों को उदारतापूर्ण ग्रहण किया है। उसके साहित्य का उत्तमांश भी विश्व की दूसरी भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से जा रहा है।'[2]

वर्तमान समय में हिन्दी भाषा के शब्दों में अन्य भाषाओं के अंदर अपना स्थान बनाया है। हिन्दी भाषा ने भी अन्य भाषाओं के शब्दों को शुद्ध अंतःकरण के साथ अपनाया है। इसी कारण हम हिन्दी भाषा में अरबी, फारसी, उर्दू, पंजाबी तथा अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं के शब्दों को देख पाते हैं। हिंदी भाषा का अन्य भाषाओं से समन्वय हिन्दी को समृद्ध, सम्पन्न और गौरवमयी बनाती है। यह हिन्दी भाषा की ग्राह्य प्रवृत्ति को भी उजागर करती है। इस ग्राह्य प्रवृत्ति के कारण हिन्दी विश्व भाषा में परिवर्तित होने की और अग्रसर हो रही है। हिन्दी के प्रसिद्ध कथाकार हिमांशु जोशी जी का कथन अवलोकनीय है, 'विश्व में ज्यों–ज्यों हिन्दी का विस्तार हो रहा है त्यों–त्यों उसके साहित्य का वैश्विक स्वरूप उभरता चला जा रहा है। आज हिन्दी भारत तक ही सीमित नहीं, भारत की सीमाओं से बाहर दूर–दूर के देशों में भी उसकी अलग पहचान बन रही है। मॉरीशस, फिजी, गयाना, सूरीनाम आदि देशों में जहाँ भारतवंशीय प्रचुर संख्या में है, उनका साहित्य एक नए रूप में अपनी पहचान बना रहा है। आकार में छोटे–छोटे इन देशों में कितनी आस्था के साथ, समर्पित भाव से लेखक लिख रहे हैं, उसे देखकर सहज आश्चर्य होता है।'[3]

हिन्दी भाषा के बढ़ते प्रभाव को तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दावली के प्रयोगों में देखा जा सकता है। अनेक अनुसंधानों में हिन्दी भाषा की तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली हिन्दी को वैज्ञानिकता के विस्तृत क्षेत्र में स्थापित करती है। वैज्ञानिक खोजों और ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग अनेक कार्यों को सहज और सरल बनता है। यह अनेक कार्यों को सरलता और सुलभता तक ले जाता है। हालांकि यह प्रयास अपनी आरंभिक अवस्था में है और उसमें अभी और प्रयास करने की आवश्यकता है जो हिन्दी को इस क्षेत्र में और अधिक समृद्ध और सर्वग्राह्य बना सके।

हिंदी के बृहद स्वरूप को जनसंचार माध्यमों के रूप में भी देखा जा सकता है। जनसंचार माध्यमों के द्वारा हिंदी का प्रचार और प्रसार देश–विदेश तक हो गया है। भारत में अनेक टीवी चैनलों ने हिन्दी भाषा को ग्रहण किया है जिसके कारण हिन्दी चैनल की संख्या बढ़ती जा रही है। हिन्दी के धारावाहिक चैनलों के निरंतर बढ़ती संख्या हिन्दी भाषी जनता के विस्तार को प्रदर्शित करती है। हिन्दी धारावाहिक भारतीय जनता के मनोरंजन का एक सशक्त माध्यम है। भारतीय जनता अपने ज्ञान को विस्तार देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समाचार चैनलों को हिन्दी भाषा में देखती–सुनती हैं। अनेक समाचार चैनलों को हिन्दी में प्रसारित किया जाता है क्योंकि हिंदी भाषी जनसंख्या बढ़ती जा रही है। उदाहरण के लिए 'स्टार स्पोर्ट्स' और 'ई.एस.पी.एन.' जैसे चैनल पहले केवल अंग्रेजी में उपलब्ध थे किंतु हिन्दी के बढ़ते दर्शकों को देखते हुए इन्हें हिन्दी में प्रदर्शित किया जाने लगा।

समाचार पत्रों में हिन्दी पाठकों की संख्या अधिक होने से समाचार पत्रों को भी भाषा के महत्व पर ध्यान देना पड़ा।

'इकोनॉमिक्स टाइम्स' और 'बिजनेस स्टैंडर्ड' जैसे व्यावसायिक समाचार पत्रों की भाषा अंग्रेजी होने के कारण वे केवल अंग्रेजी पाठक वर्ग तक सीमित थे किंतु हिन्दी पाठकों के बढ़ते रुझान को देखते हुए उसे हिंदी माध्यम में प्रसारित करना शुरू कर दिया। हिन्दी भाषा के एक चैनल 'उपग्रह' के द्वारा विश्व के विभिन्न देशों जैसे जापान, चीन, कोरिया, अफ्रीका और अमेरिका आदि में हिन्दी कार्यक्रमों का प्रसारण बहुत सहजता से होता है। तकनीकी ने हिन्दी के पाठकों और दर्शकों को इंटरनेट के माध्यम से बढ़ाया है। इंटरनेट पर अनेक वेबसाइटें ऐसी हैं जो हिंदी साहित्य, समाचार और अंतर्राष्ट्रीय सूचनाएँ हिन्दी भाषा में उपलब्ध करवाती हैं। ई–पत्रिकाएँ और ई–समाचार पत्रों की इंटरनेट पर भरमार लगी हुई है जो सटीक और सुलभ सूचनाएँ प्रदान करती हैं। ई–पुस्तकों के माध्यम से लेखकों और पाठकों के मध्य की दूरी कम हो गई है। लेखक अपने भाषा, लेखन और विचारों के माध्यम से एक बृहत् श्रोता वर्ग इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त करता है। फेसबुक के जरिए एक बड़ा पाठक वर्ग लेखकों और विद्वतजनों से जुड़कर अपने ज्ञान को विस्तारित करता है। यूट्यूब के माध्यम से जनता का मनोरंजन तो होता ही है साथ ही इसका लाभ रोजगार की तैयारी करने वाला युवा वर्ग ऑनलाइन लेक्चर लेकर उठा रहा है और अपनी परीक्षा संबंधी तैयारी को मजबूत करता है। हिन्दी अध्ययन और अध्यापन के क्षेत्र में भी रोजगार की संभावनाओं को उजागर करती है।

भूमंडलीकरण ने भौतिक जगत की दूरियों को मिटाया है। वैज्ञानिक उन्नति, औद्योगिक विकास, कंप्यूटर, फैक्स, इंटरनेट और ई–मेल के इस युग में हमारे सोच–विचार और विकास के सारे मानदंड बदल दिए हैं। आज पिछड़ा हुआ वह नहीं है जिसके पास ज्ञान और प्राकृतिक संसाधनों का अभाव है बल्कि पिछड़ा हुआ वह है जिसके पास भले ही ज्ञान व संसाधनों का भंडार है परंतु उनके आधुनिकतम ढंग से उपयोग करने का अभाव है।

वैश्वीकरण को लेकर भाषा की परिप्रेक्ष्य में भी यही बात है। आज वह भाषा सबसे समृद्ध भाषा नहीं है जिसका अपूर्व एवं उल्लेखनीय इतिहास है, साहित्य है और संस्कृति की उज्जवल परंपरा है बल्कि वह भाषा समृद्ध है जो वर्तमान परिवेश में अधिक अनुकूल और उपयोग में लायी जा रही है, भले ही इसके पीछे उसके विभिन्न राजनीतिक व अन्य समीकरण हों।

विश्व स्तर पर हिंदी के विस्तार में हिंदी साहित्य की उल्लेखनीय भूमिका है और अभी भी हिंदी साहित्य अपनी इस भूमिका को बखूबी निभा रहा है। समय के संग भूमिका के तरीके में बदलाव आता जा रहा हैं। हिंदी साहित्य अब तकनीकी से भी जुड़ रहा है तथा कंप्यूटर की विभिन्न विधाओं में हिंदी अपनी उपस्थिति को दर्ज कराते हुए बढ़ रही है। हिंदी गद्य विधा में अभिव्यक्ति, गर्भनाल आदि जैसी वेब पत्रिकाएँ हैं तथा काव्य में अनुभूति आदि जैसी वेब पत्रिकाएँ हिंदी साहित्य की बेहतर छवि को निरंतर निखार रही हैं तथा ऐसी कई पत्रिकाओं को विदेशों से एक बड़ा पाठक वर्ग मिला है। जालघर पर अनेकों हिंदी पत्रिकाएँ और ब्लॉग हिंदी के महत्व को दर्शाते हुए प्रभावशाली ढंग से प्रचार प्रसार में लगी है। भूमंडलीकरण के युग में सूचना और प्रौद्योगिकी के ताल–मेल के बिना हिंदी के विस्तार की कल्पना तक नहीं की जा सकती है। अपनी तमाम कठिनाइयों के बावजूद भी हिंदी में जिस तरह प्रौद्योगिकी जगत में अपना पैर जमाया है उसकी भूरि–भूरि प्रशंसा मुक्त कंठ से जितनी ज्यादा की जाए उतना ही कम है। कौन लोग हैं जो हिंदी और प्रौद्योगिकी के संगम के लिए उल्लेखनीय भूमिका निभा रहे

हैं? निःसंदेह भूमंडल के विभिन्न देशों में बसे भारतीय और हिंदी प्रेमी, भारत सरकार तथा देश में मुट्ठीभर प्रौद्योगिकी से नाता रखने वाले हिंदी प्रेमीजन। आज व्यक्ति का मोबाईल नंबर जितना जरूरी हो गया है उतना ही महत्वपूर्ण हो गया है इंटरनेट की उसकी आई.डी.। कंप्यूटर से जुड़े रहने से इंटरनेट की दुनिया में हिंदी के फैलते साम्राज्य की नवीनतम जानकारियाँ मिलती रहती हैं। प्रसिद्ध सर्च इंजन गूगल के प्रमुख एरिक श्मिट का मानना है कि अगले पाँच से दस सालों में हिंदी इंटरनेट पर छा जाएगी और अंग्रेजी और चीनी के साथ हिंदी इंटरनेट की दुनिया की प्रमुख भाषा होगी।

आज हिंदी भाषा का अध्ययन और अध्यापन विश्व के लगभग सभी प्रमुख देशों में हो रहा है। कहीं यह अध्ययन प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर हो रहा है तो कहीं विश्वविद्यालय के स्तर पर। कहीं है अपनी मातृभूमि भारत से जुड़े रहने का भावनात्मक माध्यम समझा जाता है तो कहीं इसके अध्ययन का उद्देश्य आधुनिक भारत के अंतर्तम को समझना है। विदेशों में हिंदी शिक्षण कहीं निजी प्रयासों द्वारा तो कहीं धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं द्वारा तो कहीं सरकारी स्तर पर विद्यालयों और विश्वविद्यालयों से संचालित हो रहा है। विश्व के विभिन्न उच्च अध्ययन संस्थानों में भी हिंदी के अध्ययन, अध्यापन तथा अनुसंधान की व्यवस्था है। अमेरिका की डॉ. शोमर का कहना है कि अमेरिका में ही 113 विश्वविद्यालयों और कॉलेज में हिंदी अध्ययन की सुविधाएँ उपलब्ध हैं जिसमें से 13 तो शोध स्तर के केंद्र बने हुए हैं। आँकड़े बताते हैं कि इस समय विश्व के 143 विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण की विविध स्तरों पर व्यवस्था है। हिंदी विश्व की उन महत्वपूर्ण भाषाओं में है जिनमें साहित्य सृजन न केवल भारत में वरन् विश्व के अनेक देशों में भारतीयों तथा विदेशियों द्वारा हो रहा है। निःसंदेह हिंदी की विशिष्ट भाषिक शैलियाँ तो विदेश में विकसित हुई ही है आज कितने ही विदेशी धारा प्रवाह हिंदी में लिख रहे हैं, उनकी हिंदी रचनाएँ उनके देश में तथा भारत में प्रकाशित होती हैं और सम्मान पाती है। कुछ रचनाएँ तो भारतीय विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में स्थान प्राप्त कर हिंदी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बना चुकी हैं।

भारत में हिन्दी भाषा से बाजार, साहित्य जगत, मीडिया, प्रकाशन, संपादक, अनुवादक, और प्रशासनिक सेवाओं में रोजगार के रास्ते खुले हैं। वही हिन्दी भाषा को अनेक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है क्योंकि आज भी हिंदी को रोजगारपरक विषय के रूप में नहीं देखा जाता है। अभिभावकों का रुझान अपने बच्चों को डॉक्टर और इंजीनियर बनने वाले विषयों की तरफ अधिक है जिसके कारण हिंदी भाषा आज भी चुनौतीपूर्ण स्थिति में संघर्षरत है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जितना मान–सम्मान प्राप्त हुआ है उतनी ही चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है। इसके लिए हिंदी के क्षेत्र में और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है जिससे यह भी रोजगार के क्षेत्र में पूर्णतः स्थापित हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. भारत का भूमंडलीकरण, (सं.) अभय कुमार दुबे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2007
2. हिंदी का वैश्विक परिदृश्य (लेख) – करूणा शंकर उपाध्याय।
3. विश्व पटल पर उभरता हिन्दी साहित्य–हिमांशु जोशी (लेख), चेतना का आत्मसंघर्ष : हिंदी की इक्कीसवीं सदी– सं. कन्हैया लाल नन्दन, पृष्ठ सं. 59

संपर्क सूत्र – 9990170467, ईमेल आईडी– mohitsngh30@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 67-71

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय शिक्षा प्रणाली में हिन्दी भाषा की भूमिका

Maloti Bangthai

Assistant Professor, Hindi Department, Golaghat Commerce College, Golaghat, Assam.

सारांश :-

मानव को समस्त प्राणियों में श्रेष्ट कहा गया है, कारण एकमात्र मानव मस्तिष्क ही है, जहाँ विचार उत्पन्न होते है। इन विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए भाषा की जरूरत पड़ती है, हालांकि मौन मुखर होता है, लेकिन भाषा पाकर विचार मूर्त रूप को धारण करता है। भाषा मुनुष्य के उल्लास और पीड़ा की संवेदनाओं का एकमात्र अनुवाद नहीं होता। भाषा वैचारिक और मानस पटल पर उद्वेलित होने वाली भावनाओं और मानसपटल पर उद्वेलित होने वाली विचारों का प्रतिबिंब होता है। भारत में, विश्व में, कोई भाषाएं बोली जाती है, परन्तु हिन्दी भाषा अपनी सहजता और लचीलेपन के कारण इस संवेदनशीलता की विशेषता के अत्यंत निकट है।

मुख्य शब्द :- शिक्षा प्रणाली, मानव, श्रेष्ठ, मस्तिष्क, विचार, अभिव्यक्ति, संवेदना, मानस पटल, प्रतिबिंब, लचीलेपन, सहजता, संवेदनशीलता।

प्रस्तावना :-

हिन्दी विश्व की एक प्रमुख भाषा है और भारत की एक राजभाषा है। हिन्दी, संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा हैं। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं बल्कि राजभाषा है क्योंकि भारत के संविधान में राष्ट्रभाषा का कही उल्लेख या चर्चा नहीं हैं। हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार यह विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक है। विविधता से परिपूर्ण देश में राष्ट्रतीय एकता की प्रतीक हिन्दी भाषा हमारी पहचान एवं शक्ति के रूप में कार्य करती है। यह एक आधिकारिक भाषा है और विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमि वाले लोगों के बीच संचार का एक सामान्य साधन है। हिन्दी भाषा का महत्व और प्रासंगिकता वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बहुत अधिक है। हिन्दी भाषा का उपयोग न केवल भारत में बल्कि विश्व के कोई देशों में किया जाता है।

सांस्कृतिक रूप से हिन्दी की विरासत बहुत समृद्ध है, क्योंकि यह शास्त्रीय, साहित्य, दर्शन और वेदों तथा उपनिषदों जैसे महत्वपूर्ण धार्मिक ग्रंथों की भाषा है। यह भारत की सांस्कृतिक और भाषाई विरासत को संरक्षित करने और प्रसारित करने, लोगों को उनकी जड़ों से जोड़ने और पहचान की भावना को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आधिकारिक भाषा के रूप में हिन्दी का उपयोग सरकारी संचार, संसदीय कार्यवाही और आधिकारिक दस्तावेजों में किया जाता है। यह प्रशासनिक और शासन प्रणालियों के कुशल संचालन में योगदान देता है।

हिन्दी का महत्व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी है, क्योंकि यह दुनिया भर में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। इसका बढ़ता महत्व अंतर्राष्ट्रीय संबंधों, ब्यापार और सांस्कृतिक आदान–प्रदान में भारत के प्रभाव में योगदान देता है।

मीडिया और मनोरंजन के क्षेत्र में, हिन्दी भारतीय उद्योग, खासकर बालीवुड में हावी है। यह न केवल भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार देता है, बल्कि वैश्विक रुझानों को भी प्रभावित करता है, जिससे हिन्दी फिल्म, संगीत और साहित्य की दुनिया में एक प्रभावशाली भाषा बन जाती है।

शैक्षिक दृष्टि से हिन्दी भारतीय शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है, जो जनसंख्या के बौद्धिक और शैक्षणिक विकास में योगदान देती है। हिन्दी में दक्षता से रोजगार के विभिन्न अवसर खुलते हैं, खासकर सरकार, प्रशासन, मीडिया और व्यापार जैसे क्षेत्रों में।

अपने उपयोगितवादी पहलुओं से परे, हिन्दी कलात्मक अभिवव्यक्ति की भाषा है। यह साहित्य, कविता, रंगमंच और कलात्मक अभिव्यक्ति के अन्य रूपों सहित रचनात्मक प्रयासों के लिए एक मंच प्रदान करती है, जिससे व्यक्तियों को विचारों, भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने की अनुमति मिलती है।

हिन्दी भाषा का महत्व बहुमुखी है, जिसमें सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, प्रशासनिक, आर्थिक और कलात्मक आयाम शामिल हैं, जो इसे भारतीय समाज के ताने बाने का एक अभिन्न अंग बनाते हैं और इसकी वैश्विक उपस्थिति में योगदान देते हैं।

लेख का उद्देश्य :–

यह लेख भारतीय शिक्षा प्रणाली में हिन्दी भाषा की भूमिका को विश्लेषण करने का प्रयास है। हिन्दी साहित्य विश्व के सबसे समृद्ध साहित्य में से एक है और इसमें महान् कवियों, लेखकों, और विचारकों की रचनाएं शामिल हैं। हिन्दी भाषा का उपयोग शैक्षणिक संस्थानों में किया जाता हैं और यह विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण विषय है। हिन्दी भारत की राजभाषा है और इसका उपयोग सरकारी कार्यालयों, न्यायालयों और शैक्षणिक संस्थाओं में किया जाता है। हिन्दी भाषा भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, त्योहारों, समारोहों और सांस्कृतिक आयोजनों में हिन्दी की भूमिका विशेष महत्वपूर्ण है। इस भाषा का उपयोग व्यापार, उद्योग और वाणिज्य में भी किया जाता है, और यह आर्थिक विकाश में एक मत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इन सभी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए भारतीय शिक्षा प्रणाली में हिन्दी भाषा की भूमिका का विवेचन–विश्लेषण करना ही इस लेख का मूल उद्देश्य है।

हिन्दी भाषा की भूमिका :–

देश के कोई राज्यों में हिन्दी आज भी कोई लोगों की मातृभाषा है और ज्ञान प्रदान करने के लिए माध्यम के रूप में इस्तेमाल की जाने वाली अंग्रेजी एक बड़ी बाधा बनी हुई है। यह भी कहा गया है कि संख्यात्मकता और साक्षरता में मजबूत आधारभूत कौशल सुनिश्चित करने के लिए पाठ्यक्रम को उस भाषा में पढ़ाया जाना चाहिए जिसे बच्चा समझता हो। नई शिक्षा नीति छात्रों को उनकी छेत्रीय भाषा में पढ़ाने का भी समर्थन करती है। इस नीति के अंशों में उल्लेख किया गया है कि छोटे बच्चे उनकी घरेलू भाषा मातृभाषा में गैर–तुच्छ अवधारणाओं को अधिक तेजी से सीखते और समझते हैं। नीति में आगे कहा गया है कि जहाँ भी संभव हो, कम से कम ग्रैड 5 तक, लेकिन अधिमानतः ग्रैड 8 और उससे आगे तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होगी।

यूनेस्को की महानिदेशक इरिना बोकोवा ने बच्चों को अपनी बोली जाने वाली भाषा सीखने के मूल सिद्धांत को रेखांकित किया। "एक नए वैश्विक शिक्षा एजेंड के साथ जो सभी के लिए गुणवत्ता, समानता और आजीवन सीखने को प्राथमिकता देता है, शिक्षण और सीखने में मातृभाषा के उपयोग के लिए पूर्ण सम्मान को प्रोत्साहित करना और भाषाई विविधता को बढ़ावा देना आवश्यक है। समावेशी भाषा शिक्षा नीतियाँ न केवल उच्च शिक्षण उपलब्धि की ओर ले जायेंगी, बल्कि सहिष्णुता, सामाजिकता, सामंजस्य और अंततः शांति में योगदान देंगी"।

2020 की त्रिभाषा नीति और उसमें हिन्दी की भूमिका :–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 ने भारत की शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण बदलाव किए है, जिसमें से एक है त्रि–भाषा नीति। यह नीति आधारभूत स्तर पर तीन भाषाओं को सीखने के महत्व पर जोर देती है – मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा, हिन्दी और अंग्रेजी।

त्रिभाषा नीति में हिन्दी कैसे फिट बैठती है?

इस नीति में हिन्दी की भूमिका महत्वपूर्ण हैं क्योंकि छात्रों को तीन भाषाओं को सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। भारत के कोई राज्यों में हिन्दी दूसरी भाषा के रूप में काम करती है, जो क्षेत्रीय भाषाओं और अंग्रेजी के बीच की खाई को पाटती है। इस नीति का उदेश्य छात्रों में बहूभाषावाद और सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ावा देना है, जिससे भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर समझ और संचार को बढ़ावा मिले।

पाठ्यक्रम में क्षेत्रीय भाषा और अंग्रेजी के साथ हिन्दी को शामिल करके, एनईपी 2020 और राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक आदान–प्रदान में हिन्दी के महत्व को मान्यता देता है। हिन्दी सीखने से भारत भर के छात्रों को न केवल व्यापक दर्शकों से जुडने में मदत मिलती है, बल्कि देश के विरासत, साहित्य और मूल्यों के बारे में गहरी जानकारी भी मिलती है।

हिन्दी क्यों महत्वपूर्ण है : सांस्कृतिक और शैक्षिक अंतर को पाटना :–

छात्रों में राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक गौरव की भावना को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी भाषा के महत्व को समझना महत्वपूर्ण है। यह न केवल भारत में बल्कि दुनियाभर के समुदायों में एक अरब से अधिक लोगों की भाषा हैं। हिन्दी सीखना छात्रों को अपनी विरासत से जुडने, भारत की विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझने और उस भाषा में प्रभावी दंग से संवाद करने में मदद करता है जिसे कई लोग अपनी मातृभाषा मानते हैं।

इसके अलावा बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ हिन्दी के महत्व को तेजी से पहचान रही है क्योंकि वे विशाल भारतीय बाजार में अपना दबदबा बना रही हैं। इसलिए स्कूलों की जिम्मेदारी है कि वे छात्रों को ऐसी दुनिया के लिए तैयार करें जहाँ हिन्दी की प्रासंगिकता बढ़ती ही जा रही है।

छात्रों को हिन्दी क्यों सीखना चाहिए : प्रमुख कारण :–

छात्रों के लिए हिन्दी क्यों महत्वपूर्ण है, यह समझना सिर्फ अकादमिक जरूरतों से कही बढ़कर हैं। यहाँ कुछ ऐसे कारण बताए गए हैं कि छात्रों को हिन्दी क्यों सिखनी चाहिए :–

सांस्कृतिक संबंध और पहचान :–

हिन्दी सिर्फ एक भाषा नहीं है, यह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रवेश द्वार है। हिन्दी सीखकर छात्र दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक ही परंपराओं, साहित्य, संगीत और इतिहास से जुड़ सकते हैं। यह जुड़ाव गर्व और पहचान की भावना को बढ़ावा देता है, जिससे छात्रों को अपनी जड़ों को समझने और

भारतीय संस्कृति की विविधता की सराहना करने में मदद मिलती है।

उन्नत संज्ञानात्मक कौशल :–

हिन्दी या कोई भी अन्य भाषा सीखने से संज्ञानात्मक क्षमताओं में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। द्विभाषी छात्र अक्सर बेहतर समस्या समाधान कौशल, बेहतर स्मृति और उन्नत आलोचनात्मक सोच प्रदर्शित करते है। हिन्दी अपनी अनूठी लिपि और भाषायी संरचना के साथ मस्तिष्क को ऐसे तरीकों से चुनौती देती है जो संज्ञानात्मक विकास और शैक्षणिक सफलता को बढ़ावा देती है।

पूरे भारत में बेहतर संचार :–

भारत की भाषाई विविधता का मतलब है कि हिन्दी विभिन्न क्षेत्रों में एक आम कड़ी के रूप में काम करती है। छात्रों के लिए हिन्दी में महारत हासिल करना आबादी के व्यापक हिस्से के साथ संवाद करने की उनकी क्षमता को बढ़ा सकता है, चाहे वह सामाजिक सेटिंग में हो या पेशेवर वातावरण में। यह कौशल ऐसे देश में विशेष रूप से मूल्यवान है जहाँ हिन्दी शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में व्यापक रूप से बोली जाती है।

शैक्षणिक और कैरियर के अवसर :–

हिन्दी में प्रवीणता से कई शैक्षणिक और करियर के अवसर खुलती हैं। चूंकि हिन्दी मीडिया, सरकार, शिक्षा और व्यवसाय सहित विभिन्न क्षेत्रों में मजबूत पकड़ वाले छात्र विविध और पुरस्कृत करियर पथ अपना सकते हैं। इसके अतिरिक्त, भारत में सिविल सेवाओं सहित कई प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी एक विषय के रूप में शामिल है, जो इसे शैक्षणिक सफलता का एक महत्वपूर्ण घटक बनाता है।

राष्ट्रीय साहित्य और मीडिया को समझना :–

हिन्दी साहित्य, सिनेमा और मीडिया भारतीय समाज के अभिन्न अंग है। हिन्दी सीखने से छात्रों को व्यापक पहुँच प्राप्त हो सकती है। साहित्यक कृतियों, फिल्मों और समाचारों की श्रृंखला उनकी मूल भाषा को और गहरा करना, भारतीय समाज और उसके बारे में समझ इस प्रदर्शन से यह भी मदद मिलती है एक समग्र विश्व दृष्टिकोंण विकसित करना।

शैक्षित नीतियों के साथ संरेखण :–

नई शिक्षा नीति (एनईपी) २०२० में मातृभाषा शिक्षा पर जोर दिया गया है, इसलिए हिन्दी सीखना राष्ट्रीय शैक्षिक लक्ष्यों के अनुरूप है। हिन्दी भाषा सीखने को प्राथमिकता देने वाले स्कूल न केवल इन दिशा निर्देशों का अनुपालन कर रहे हैं, बल्कि यह भी सुनश्चित कर रहे हैं की उनके छात्र ऐसी शिक्षा से लाभान्वित हों जो भाषाई विविधता का सम्मान करती हो और समावेशिता को बढ़ावा देती हो।

निष्कर्ष :–

भारत में हिन्दी माध्यम शिक्षा भाषाई विविधता को संरक्षित करने, छात्रों को उनकी जड़ों से जोड़ने और नगरीय–ग्रामीण भिन्न को निष्कर्ष करने के महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हालांकि, हिन्दी को भाषा और शिक्षा का माध्यम विकसित करने का काम भारत की भाषाई विविधता और अंग्रेजी की प्रमुखता के कारण चुनौतियों का सामना कर रहा है। हिन्दी को प्रोत्साहित करने और एक अधिक प्रगतिशील शिक्षा प्रणाली बनाने के लिए हमें अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में हिन्दी को समान महत्व देना चाहिए। हिन्दी पाठ्यक्रम को सुधारने, शिक्षक प्रशिक्षण में निवेश करने, और डिजिटल समावेशन को अपनाने का साहस करना होगा। इस तरह, हम सुनिश्चित कर सकते

है कि हिन्दी हमारी राष्ट्रीय पहचान और धरोहर का एक अभिन्न हिस्सा बनी रहती है, साथ ही हमारी युवा पीढ़ी को एक और अधिक समावेशी और उज्ज्वल भविष्य के लिए तैयार करते हैं। इस प्रकार हम अपनी संस्कृति और भाषा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने का संकल्प लें। और हमारे शिक्षा प्रणाली में हिन्दी की भूमिका का पुनर्मूल्यांकन करते हुए हम हिन्दी को एकता, समावेशन, और वैश्विक महत्व की भाषा बना सकते हैं।

संदर्भ सूची :-

1. नरूला, मधु, हिन्दी शिक्षण, टवेंटी फर्स्ट सेंचुरी पब्लिकेशन, पटियाला।
2. योगेंद्रजीत, हिन्दी भाषा शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. सिंह, निरंजन कुमार, माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
4. पचौरी, गिरीश, हिन्दी शिक्षण आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. चतुर्वेदी, शिखा, हिन्दी शिक्षण, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला।
6. कुमार, योगेश, आधुनिक हिन्दी शिक्षण, नई दिल्ली।

Email : bangthaimaloti18@gmai.com

Ph. : 7002899388

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 72-79

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीयशिक्षालोकस्य वैशाल्यम्

विद्वान् मञ्जेशः एम्
शोधच्छात्रः, वेदान्तविभागः
कर्नाटकसंस्कृतविश्वविद्यालयः बेङ्गलूरु

शोधसारः-

भारतदेशः प्राचीनकालादपि ज्ञानप्रधानः इति अस्माभिर्विज्ञायते। आप्रपञ्चं ज्ञानप्रभां भारतं प्रसारितवत्। जगति वर्तमानाः देशाः स्व अस्तित्वख्यापनात् पूर्वमेव भारतं सांस्कृतिकदृष्ट्या शैक्षणिकदृष्ट्या च नभस्पर्शि आसीत् । एतदर्थं कारणं भारतीयज्ञानसम्पत् । भारतम् इति शब्द एव सूचयति वयं भारतीयाः ज्ञानाराधकाः इति । ऋषिमुनयः धर्माधारितसमाजनिर्माणाय समाजः ज्ञानाधिष्ठित एव स्यादिति विचिन्त्य वर्षसहस्राणां तपसः फलत्वेन जीवनस्य प्रत्येकम् अंशाय अस्मभ्यं ज्ञानराशिं वेदादीनां मुखेन प्रादुः ।

ते च –

चतुर्वेदाः पुराणानि सर्वोपनिषदस्तथा।
रामायणं भारतञ्च गीता सद्दर्शनानि च ॥
जैनागमाः त्रिपिटकाः गुरुग्रन्थः सतां गिरः।
एषः ज्ञाननिधिः श्रेष्ठः श्रद्धेयो हृदि सर्वदा ॥

इति नित्यं भारतभक्तिस्तोत्रे ब्रूमः । एतादृशस्य ज्ञानसम्पदः रक्षणाय माध्यमत्वेन गुरुकुलशिक्षणपद्धतिमपि आविष्कृतवन्तः अस्मत्पूर्वजाः । समाजः स्वस्थः सुदृढश्च यदि भवेत् तर्हि पितृभ्यः प्राप्यमानः संस्कारः यावान् मुख्यः तावानेव गुरुकुलशिक्षणपद्धतिरपि मुख्या वर्तते । कुत इति चेत् विद्यार्जनवयसि यदि ज्ञाननिष्ठस्य गुरोः सान्निध्ये अन्तेवासी वर्धते तर्हि सहजरूपेण एव गुरौ वर्तमानाः नैके सद्गुणाः शिष्येऽपि अनुवर्तन्ते ।

अस्माकमात्मविस्मृतेः परिणामवशात् स्वातन्त्र्योत्तरकाले ईदृशानेकसम्पदः दूरङ्गताः । ब्रिटिष् चिन्तना प्रेरितं जीवनं, वामपन्थीयानां प्रभावः इत्यदि कारणैः भारतयानाम् अगाधज्ञानराशिः अत्यन्तं वेगेन क्षीणा जाता । प्रायः द्विसहस्त्रवर्षपूर्वं पतञ्जलिमहर्षेः काले तेषामेव उल्लेखानुसारं ११३१ वेदशाखाः आसन् । परमधुना परिपूर्णतया अध्ययनपरम्परायां समग्रभारते ११ शाखाः अपि न सन्ति । किं कारणम्? इति चिन्त्यमानायां भारतीयज्ञानरूपस्य जगतः महत्वस्य अनवधानत्वमेव इति ज्ञायते।

शिक्षणम् इत्येतत् मानवजीवनस्य निरन्तरयात्रायाः पाथेयम् । एवं च सति शिक्षणस्य किम् उद्देश्यम्? मानवः मानवत्वेन जीवननिर्वहणाय यदपेक्ष्यते तदेव हि शिक्षणम् । यथा स्वामिनिष्ठत्वेन कार्यनिर्वहणाय शुनकः प्रशिष्यते एवं मानवः स्वजीवनश्रेष्ठतां विज्ञाय कार्यप्रवृत्त्यर्थमपि प्रशिक्षणम् अवश्यमपेक्ष्यते । किं नाम प्रशिक्षणम्? इत्यस्य उत्तरत्वेन तदीय विशेषांशान् तस्मै एव आत्मसात्करणप्रकिया इति उच्यते । तदीय विशेषांशाः के इति चेत, अस्मत् पूर्वजाः विवेकबुध्या विचार्य अवोचन् यत् "धर्मो हि तेषाम् अधिको विशेषः" इति । अर्थात् धर्म एव मानवस्य विशेषः गुणः इति । ज्ञानपूर्वकं कर्तव्यानुष्ठानमेव तस्य धर्मः । तदुक्तं गीतायां "ज्ञात्वा कर्माणि कुर्वीत" इति । अर्थात् विज्ञाय सत्यं वदेत् । ज्ञात्वा उत्तमजीवनं कुर्यात्। ज्ञात्वा सेवां कुर्यात् । ज्ञात्वा जीवनस्य प्रथमावस्थायां विद्यार्जनं कुर्यात् । एतादृशज्ञानाय शिक्षणम् अवश्यम् प्राप्तव्यम् ।

किं नाम शिक्षणम् इति चेत् पञ्चकर्मेन्द्रियाणां, पञ्चज्ञानेन्द्रियाणां, मनसः, बुद्धेः, अहङ्कारस्य, चित्तस्य च संस्कारप्रक्रिया एव । एतादृशस्य संस्कारस्य आरम्भः गृहात् मातुः पदतले एव भवति । अतः प्रथमगुरुः माता इत्युच्यते । कन्नड भाषायामेका उक्तिः वर्तते, "मनेये मोदल पाठशाले तायि ताने मोदल गुरु" इति । अष्टवर्षपर्यन्तं मातुः वात्सल्ये एव प्रत्येकस्य मानवस्य शिक्षणं भवति। तदनु "अष्टवर्षे ब्राह्मणमुपनयीत, तमध्यापयीत" इति श्रुतिवचनानुसारेण उपनयनसंस्कारः, ततः गुरोः उपसर्पणम् । तत्र च गुरुं कथमुपसर्पणीयम् इत्यत्र विधिः "समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्" इति । एवम् उपसन्नाय शिष्याय गुरुः "शुभाशुभविचारज्ञः प्राज्ञः" शस्त्रशास्त्रादि सकलाः विद्याः पाठयेत् । एवं क्रमः अस्मकां भारतीयपरम्परायाम् आहिता वर्तते ।

"सा विद्या या विमुक्तये" इति उक्तिरपि ज्ञानस्य महत्वं द्योतयति । समाजस्य विविधक्षेत्रेष्वपि शिक्षणम् अत्यन्तं महत्तरं स्थानं भजते । तस्मात् एव सर्वोपि शिक्षणाय प्राशस्त्यं प्रददति । तत्रापि शिक्षणेषु संस्कारपूरितशिक्षणं अतितरं स्थानम् आवहति । अतः शिक्षणेन सह संस्कारोपि अवश्यं स्यात्। तच्च भारतीयशिक्षणक्रमे एव द्रष्टुं शक्यम, न तु आङ्ल शिक्षणक्रमे । अस्मिन् च सन्धिकाले भारतीयज्ञानलोकः एवं गुरुकुलशिक्षणपद्धतिः अतीव युक्ता, सर्वैः अभ्यसनीया च वर्तते । अत्र च भारतीयशिक्षा एव समग्रविश्वस्य दीक्षा स्यात् , तेनैव समग्रस्य जगतः कल्याणं भवेत् इति विज्ञाय इह केचन भारतीयशिक्षाक्रमे वर्तमानाः विशेषांशाः प्रदर्श्यन्ते ।

वेदाः –

वेदः कृत्स्नस्य ज्ञानराशेः आकरः । सुखशान्तिप्रबोधकः । भारतीयसंस्कृतेः आकारः । वेदः अपौरुषेयः। ऋतम्भरावस्थायां ऋषिभिः साक्षात्कृतज्ञानराशिः । तस्य च लक्षणं "विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभ्यन्ते एभिः धर्मादि पुरुषार्थाः" इति । धर्मार्थकाममोक्षाख्याः पुरुषार्थाः यतः ज्ञायन्ते सः वेदः इत्युच्यते ।

स च चतुर्धा विभक्तः - ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदः इति । एतेष्वपि संहिता, ब्राह्मणम्, आरण्यकम, उपनिषत् इति अवान्तरभेदाः वर्तन्ते ।

ऋग्वेदः – "एकविंशतिधा बाह्वृचम्" इति पतञ्जलिः महाभाष्ये अलिखत् । अर्थात् २१ शाखाः वर्तन्ते इति यावत् । सद्यः ५ शाखाः अवशिष्टाः । अत्र च प्राधान्येन देवस्तुतिपराः मन्त्राः विराजन्ते।

यजुर्वेदः – "एकशतमध्वर्युशाखाः" इति पतञ्जलिः महाभाष्ये अलिखत् । आहत्य १०० शाखाः यजुर्वेदे सन्ति इति । अत्र यज्ञयागादीनां क्रमः विवरणं च लभ्यते । प्राणतत्वम् एवं मनस्तत्वं वेदः बोधयति । अत्र द्वैविध्यम् । शुक्लयजुर्वेदः कृष्णयजुर्वेदः इति । केवलं मन्त्रस्वरूपः शुक्लः। अस्य च द्रष्टा याज्ञवल्क्यः । मन्त्रप्रयोगयुक्तश्च कृष्णः ।

सामवेदः – "सहस्रवर्त्मा सामवेदः" इति पतञ्जलिः महाभाष्ये अलिखत् । सामवेदे १००० शाखाः आसन् इति यावत् । प्रकृते ३ शाखाः अवशिष्टाः वर्तन्ते इति दुःखास्पदम् । गीतिप्रधानः वेदः अयम् । सामवेदं सङ्गीतसाहित्यस्य मौलिकशास्त्रमिति ब्रुवन्ति ।

अथर्ववेदः – "नवधाऽथर्वणो वेदः" इति पतञ्जलिः महाभाष्ये अलिखत् । आहत्य ९ शाखाः अथर्ववेदे आसन्निति ज्ञेयम् । अथर्ववेदे २० काण्डाः, ७३१ सूक्तानि, ५९८७ मन्त्राश्च वर्तन्ते ।

वेदे संज्ञानम्, आज्ञानं, विज्ञानं, प्रज्ञानम् इति विज्ञानानि वर्तन्ते । अस्य च वेदस्य उपवेदाः चत्वारः। ते च – आयुर्वेदः, धनुर्वेदः, गन्धर्ववेदः, स्थापत्यवेदः इति ।

आयुर्वेदः- ऋग्वेद इव एव अयमपि प्राचीनः । अयं सुश्रुतसंहितायाः शस्त्रचिकित्साविधानं तथा जीवनपद्धतिं च बोधयति । अत्र च चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता, वाग्भटसंहिता इति प्रधानाः त्रयः ग्रन्थाः विराजन्ते ।

धनुर्वेदः- अयं वेदः धनुर्विद्यां तथा च युद्धे तस्य आन्वयिकं विज्ञानं च बोधयति । अस्य वेदस्य कर्तृ भृगुमहर्षिः। देवेषु बृहस्पतिः, शिवः, इन्द्रः अस्य शास्त्रस्य विद्वांसः वर्तन्ते ।

गन्धर्ववेदः – अयं वेदः सङ्गीतं नाट्यकलां च बोधयति । अत्र ग्रन्थद्वयं प्रसिद्धम् । सङ्गीतरत्नाकरः, रागविबोधः इति ।

स्थापत्यवेदः- शिल्पविद्या इत्यनेन अयं वेदः प्रसिद्धः । अस्य कर्तृ विश्वकर्मा । महाभारतम् अधारीकृत्य मायासुरः पाण्डवेभ्यः मन्दिराणि प्रणिनाय । रामायणे सुन्दराणां नगराणां वर्णनं दृश्यते । इदं च स्थापत्यवेदस्य परिचायकत्वेन निर्दिष्टम् ।

वेदस्य अर्थज्ञानाय शिक्षादि षडङ्गाः प्रवृत्ताः ।

ते च - शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा ।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः ॥ इति ।

एतेषां अर्थविस्तृतिं मूलग्रन्थेषु ज्ञेयम् ।

ततः सूत्रप्रस्थानम् । सूत्रस्य लक्षणम्-

अल्पाक्षरमसंदिग्धं सारवद्विश्वतो मुखम् ।
अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः ॥ इति ।

ततः भाष्यम् । सूत्रेषु निहितार्थान्, सूत्रकाराभिप्रेतं च मतं विचार्य यत्र विव्रीयते तत् भाष्यमिति स्मृतम्।

तस्य च लक्षणम् –

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र पदैः सूत्रानुसारिभिः ।

स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः ॥ इति ।

ततः वार्तिकम् । भाष्योक्ते विषये, अनुक्ते च विषये, अस्पष्टविषये च यत्र विमर्शः क्रियते तत् वार्तिकमित्युच्यते ।

तस्य च लक्षणम् –

उक्तानुक्तदुरक्तानां चिन्ता यत्र प्रवर्तते ।

तं ग्रन्थं वार्तिकं प्राहुः वार्तिकज्ञा विचक्षणाः ॥ इति।

ततः पुराणानि । भारतीय संस्कृतौ वेदवाङ्मयं सूर्यमण्डलस्थानवर्ति । पुराणानि ग्रहनक्षत्रस्थानवर्तीनि। पुराणानि पञ्चमवेदत्वेन प्रसिद्धानि । तत्र च अष्टादश पुराणानि प्रसिद्धानि । अष्टादशसु पुराणेषु लक्षचतुष्टयं श्लोकाः वर्तन्ते ।

तानि च –

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।

अनापलिङ्गकूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते ॥इति।

ततः उपनिषदाम् उल्लेखः । वेदानाम् अन्ते ब्रह्मज्ञानस्य रहस्यतमा विद्या यत्र बोध्यते सा उपनिषत् । अतः उपनिषदां वेदान्ताः इत्यपि नामान्तरम् । आचार्यशङ्कराणां दिशा उपनिषदः एव ब्रह्मविद्या पदवाच्याः। अत्र ब्रह्म-आत्मा-परमात्मा-माया-जगत्-पुनर्जन्मनः उल्लेखः वर्तते । पाचीने काले १०८ उपनिषदः आसन् । तासु १० उपनिषदः प्रधानाः ।

ताः च –

ईशकेनकठप्रश्नः मुण्डमाण्डूक्यतित्तिरिः।

ऐतरेयञ्च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा।। इति।

ततः दर्शनानि समुद्भूतानि । आस्तिकनास्तिकभेदात् दर्शनं द्वैविध्यम् । तत्र च भारतीयपरम्परायां नास्तिकदर्शनं प्रधानं स्थानं भजते । वेदस्य अनङ्गीकारमनु परिदृष्यमानस्य प्रत्यक्षयोग्यस्य तत्वस्य

ज्ञानमेव एतेषां नैजं मतम्। जैनबौद्धचार्वाकाश्चेति मतत्रयम् अत्र विद्यते ।

न्यायवैशेषिकसांख्ययोगमीमांसा वेदान्तदर्शनं चेति आस्तिकदर्शनानि ।

ततः आगमस्य उपक्रमः । वेदोपनिषत्सु प्रोक्तानाम् आध्यात्मिकधार्मिकतत्वानां परिशीलने सहक्रियमाणः ग्रन्थभागः आगमः । एते आगमाः जनानाम् उपासना सौकर्याय देवेभ्यः गुणकल्पनां, तेषां च स्वरूपं, तेषां च विग्रहप्रतिष्ठापनम्, अर्चनोत्सवं, सामाजिकनीतिनियमान् , अनेकविधकर्माणि, आचारविचारान् च बोधयन्ति । आगमेषु द्वैविध्यम् । वैदिकावैदिकञ्चेति । वैदिके षड् प्रभेदाः, अवैदिके च विधद्वयम् अत्र विलसति । आगमेषु च ज्ञानयोगचर्यक्रियाश्चेति चत्वारः पादाः वर्तन्ते ।

ततः धर्मशास्त्रम् । इह परलोकेषु च सुखप्राप्तिसाधनो धर्मः । तादृश धर्माचाराः, अनुष्ठानपद्धतिः, प्रायश्चित्तादि विषयाः यत्र बोध्यते तत् धर्मशास्त्रम् । इमे सर्वेऽपि विषयाः वेदेभ्यः एव बोधिताः चेदपि कृत्स्नस्य वेदस्य अध्ययनम् अशक्यम् इति कृत्वा तेषां सारसंग्रहरूपेण धर्मशास्त्रे उल्लेखः वर्तते । यथा वेदः श्रुतिपदवाच्यः एवं धर्मशास्त्रं स्मृतिपदवाच्यम् । तच्च १४ विद्यास्थानेष्वन्यतमम् ।

तानि च विद्यास्थानानि यथा –

पुराणन्यायमीमांसा धर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः।

वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश ॥ इति ।

ततः नीतिशास्त्रम् । समाजः एवं वयक्तिकजीवनस्य उन्नतये देशकालपात्रानुयोग्यः व्यवहारः यत्र विधीयते तत् नीतिशास्त्रम् । इदं धर्मशास्त्रस्य, श्रुतेः, स्मृतीनां च आधारेण निर्मिता वर्तते । नीतिविहीनः धर्मः निरर्थकः । धर्मविहीनः नीतिः निष्प्रयोजकः । तस्मादेव अस्माकं भारतस्य नीतिशास्त्रे धर्मेणयुक्ता नीतिरेव विवृता वर्तते । अस्य नीतिशास्त्रस्य प्रधानाः ग्रन्थाः इत्थं वर्तन्ते । ते च - कौटिलीय अर्थशास्त्रम्, शुक्रनीतिः, विदुरनीतिः, कामन्दकनीतिसारः च इति ।

ततः चतुषष्टिकलाः । भगवान् श्री कृष्णः कम्सस्य वधोत्तरम् उपवीतधारी सन् ६४ दिनेषु ६४ कलाः सान्दीपनिमहर्षेः आश्रमे अध्ययनं चकार इति नेकेषु पुराणेषु उपलभ्यते । अस्माकं भारतीयज्ञानपरम्परायां १४ विद्यानां (४ वेदाः,४ उपवेदाः,६ वेदाङ्गाः) समं ६४ विद्याः अपि प्रधानाः

आसन्। एतासामुल्लेखः रामायणे, महाभारते, पुराणे, शैवतन्त्रे, शुक्रनीत्यां तथा यजुर्वेदस्य तृतीये अध्याये वर्तते। ताः च गीतवाद्यनृत्यालेख्यविशेषयकच्छेद्यम् इत्याद्याः।

ततः कोशाः। कोशपदस्य व्युत्पत्तिः इत्थं वर्तते। "कुश्यते संश्लिष्यते इति कोशः"। यस्मिन् ग्रन्थे पदम् अनु पदस्य संश्लेषणं कृतं भवति सः ग्रन्थः कोशग्रन्थः इति उच्यते। कोशः प्रायः ७००/८०० शताब्दात् पूर्वं जातः। वैदिकानां शब्दानाम् अर्थज्ञानाय कोशस्य रचना जाता। संस्कृते कोशो नाम वैदिकानां शब्दानां सङ्ग्रहः इत्यर्थः वर्तते। तदुक्तम् "अर्थाः निघट्यन्ते अस्मिन् इति निघन्टुः परिकीर्तितः" इति। नैके कोशाः संस्कृतवाङ्मये विराजन्ते। मूलं तु वैदिकः कोशः।अयं यास्केन प्रणीतः। अस्मिन् कालखण्डे प्राधान्येन ५ कोशाः प्रसिद्धाः।

ते च – अमरकोशः, वाचस्पत्यम्, शब्दकल्पद्रुमा, संस्कृतविश्वकोशः, संस्कृतवाङ्मयकोशः इति।

ततः साहित्यशास्त्रम्। संस्कृतसाहित्यलोकः तदीयमेव महत्तरं स्थानमावहति। कालिदासबाणभारविदण्डिमाघेत्यादयः महान्तः कवयो अत्र देदीप्यन्ते। दृश्यश्रव्यञ्चेति काव्यं द्विविधम्। रूपकम् उपरूपकमिति दृश्यकाव्ये द्वैविध्यम्। गद्यपद्यचम्पूरिति श्रव्यकाव्ये विधत्रयम्। कथा, आख्यायिका चेति गद्यकाव्ये विधद्वयम्। महाकाव्यं, खण्डकाव्यमिति पद्यकव्ये द्वैविध्यम्। चम्पूः विरुदकरम्बश्चेति गद्यपद्यात्मककाव्ये त्रैविध्यम्। एवं संस्कृतसाहित्यलोके काव्यस्य व्यवस्थां अकुर्वन् अस्मत् पूर्वजाः। रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, नैषधीयचरितम्, किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम् इति च ५ महाकाव्यानि लोकेस्मिन् विराजन्ते। गीताञ्जलिः, मेघधूतम्, श्रीहरिकथामृतम्, रामगीतगोविन्दमिति खण्डकाव्यत्रयम्। रामायणम्, महाभारतम्, भागवतम् इति उपजीवकाव्यत्रयम्। ६ चम्पूकाव्यानि, ६ नाटकानि च संस्कृतसाहित्यलोके प्रसिद्धानि। उपर्युक्त संस्कृतसाहित्यलोकम् आदृत्य आनन्दवर्धनस्य ध्वन्यालोकः, विश्वनाथस्य साहित्यदर्पणम्, राजचूडामणिदीक्षितस्य काव्यदर्पणम्, भरतमनेः नाट्यशास्त्रम् इति ग्रन्थाः विराजन्ते।

ततः कथासाहित्यं समुत्पन्नम्। तत्र च पञ्चतन्त्रकथा प्रसिद्धाः। विष्णुशर्मा अस्य कर्ता। अत्र पञ्च तन्त्राणि वर्तन्ते।

तानि च - मित्रभेदः, मित्रसम्प्राप्तिः, काकोलूकीयम्, लब्धप्रणाशः, अपरीक्षितकारकः इति।

ततः हितोपदेशः । अस्य रचयिता नारायणपण्डितः । अयं च ग्रन्थभागः छात्रेषु धर्माधर्मविवेकम् आवहति । अस्माभिः कथं नीतिमार्गे भवितव्यमिति अत्र बोध्यते ।

ततः स्तोत्रवाङ्मयम् । अत्र सकलाः देवाः कीर्त्यन्ते । चित्तशुद्धिः अस्य पलम् । येभ्यः मोक्षमार्गः न युक्तः तेभ्यः अयं मार्गः युक्ततरः इति भावः । स्तोत्रवाङ्मयाय अस्माकं पूर्वजानां योगदानं महत् वर्तते। तत्र ५ शङ्कराचार्याणां स्तोत्राणि प्रसिद्धानि । इतरे च आचार्याः तोटक-जयदेव-कालिदास-तुलसीदस-रावणेत्यादयः अत्र द्रष्टुं शक्यन्ते । इत्थं भारतीयज्ञानपरम्परा अत्यन्तं विस्तृता वर्तते । तस्यां परम्परायां वयमपि वर्तामहे इत्येतदेव अस्माकं पूर्वजन्मनः सुकृतम् इति भावयामहे । किञ्च अस्य च भरतीयज्ञानस्य परम्परायाः रक्षणं च अस्माकम् आद्यं कर्तव्यम् इति बृवन् अत्र अयं शोधलेखः परिसमाप्तिमेति । शम्।

ग्रन्थाधमर्ण्यम्

१. ईशादि नव उपनिषद्, सभाष्य, गीताप्रेस गोरखपुर ।

२. उपनिषद्भाष्यम, दक्षिणामूर्तिमठ प्रकाशन, वाराणसी ।

३. श्रीमद्भगवद्गीता,गीताप्रेस गोरखपुर ।

४. अमरकोशः संस्कृतभारती प्रकाशनम,बेङ्गलूरु ।

५. अष्टाध्यायी, संस्कृतभारती नवदेहली ।

६. याज्ञवल्क्यस्मृतिः ।

७. महाभाष्यम् ।

Email – manjeshacharyam@gmail.com

Mobile number – 7259345052

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 80-82

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा

मनोज कुमार
सहायक आचार्य, हिंदी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नाहन, सिरमौर, हि0प्र0
डॉ. मोल्लम डोलमा
सहायक आचार्य, हिंदी, राजकीय महाविद्यालय, सराहाँ, सिरमौर, हि0प्र0

सृष्टि का हर प्राणी अपने भावों को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है और दूसरे के भावों, विचारों को भाषा के माध्यम से ही ग्रहण करता है। हिंदी एक विशाल भूभाग की भाषा है। भूमंडलीकरण व आर्थिक उदारीकरण के दौर से इसका फलक और ज्यादा विस्तृत हुआ है। वर्तमान में हिंदी भाषा न केवल भारत में अपितु विदेशों में भी सम्पर्क की भाषा बनी है। हिंदी भारत की जनभाषा है, सम्पर्क भाषा है, राजभाषा है। यह एक अंतरराष्ट्रीय भाषा है, वैज्ञानिक भाषा है अर्थात् एक सम्पूर्ण भाषा है। व्यवहार के क्षेत्र में हिंदी की एक अपनी दुनिया है, जो अपने आत्म बल पर विकसित हो रही है। भाषा की असली शक्ति सरकार नहीं होती, उसकी बोलने वाली जनता होती है। आज हिंदी बोलने वालों की संख्या के आधार पर चीनी के बाद विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। लगभग पैंतालीस से भी अधिक देशों के विश्वविद्यालयों और प्राथमिक–माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी का अध्ययन–अध्यापन हो रहा है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी की मांग के अनुसार हिंदी ने अपना रास्ता बना लिया है। वैश्वीकरण के दौर में हिंदी भाषा ने सारी चुनौतियों को स्वीकार किया है। वर्ड प्रोसेसिंग, वेब दुनिया में इसका प्रयोग किया जा रहा है। इंटरनेट पर भी अंग्रेजी भाषा के बाद हिन्दी का ही वर्चस्व है। व्यवसाय, उद्योग, घर, शिक्षा एवं प्रशिक्षण, विज्ञान एवं इंजीनियरिंग, बैंकों आदि विभिन्न क्षेत्रों में इसका प्रयोग महत्वपूर्ण है। अंग्रेजी की तुलना में हिंदी चैनलों एवं पत्र–पत्रिकाओं की संख्या भी अधिक है। हिंदी की अपनी सरल सहज आत्मसाती प्रकृति को, हिंदी साहित्यकारों–विद्वानों एवं हिंदीसेवियों को, हिंदी की विभिन्न प्रचारक संस्थानों को, राजबल एवं सरकारी प्रयासों के साथ–साथ विश्व हिंदी सम्मेलन को हिंदी की प्रगति का सारा श्रेय जाता है।

आज हिंदी का क्षेत्रफल कश्मीर से कन्याकुमारी या राजस्थान से त्रिपुरा, मेद्यालय और अरूणाचल प्रदेश तक ही सीमित नहीं है बल्कि उसका प्रभाव क्षेत्र वैश्विक स्तर तक पहुंच चुका है। हिन्दीतर भाषी क्षेत्रों में भी हिन्दी बोली जाती है। राजकाज में भी प्रयोग में लायी जाती है। इसका साहित्य भी समृद्ध है। पारिभाषिक शब्दावली भी अपनी उन्नति की कगार पर है। अनुवाद, टंकन का कार्य काफी प्रगति पर है। हिन्दी में ई–मेल भी खोले जा रहे हैं। आज हिन्दी भौगोलिक सीमाओं को पार कर ''वसुदैव कुटुम्बकम्'' का संदेश वैश्विक परिदृश्य में मानव मात्र को दे रही है। ''आज विश्व में हिन्दी की बढती प्रतिष्ठा के कारण अनेक विदेशी भी हिंदी में रूचि ले रहे है। उन्होंने अपने परिश्रम और लगन से हिंदी पर अच्छा अधिकार प्राप्त किया है और वे हिंदी भाषा में मौलिक

साहित्य सृजन कर रहे है।''[1] मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिडाड आदि देशों में बड़ी संख्या में अप्रवासी भारतीय है जिनकी आबादी 40 प्रतिशत से ऊपर है वह हिंदी बोलते–समझते और पढ़ते–लिखते हैं। इतना ही नहीं बल्कि इंडोनेशिया, अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया जैसे देशों में भी हिन्दी लोकप्रिय है।

''हिन्दी भाषा आज भारत के बाहर करीब 150 विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है। दुनिया के तमाम विकसित तथा विकासशील देशों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। केवल ज्ञान के लिए ही हिन्दी का अध्ययन नहीं हो रहा, वरन् इसके पीछे वह आर्थिक पहलू भी है, जो इंसान की बुनियादी जरूरत है। इसलिए कोई भी बहुराष्ट्रीय कम्पनी अपने उत्पाद के लिए हिन्दी के इस विस्तृत बाजार की उपेक्षा नहीं कर सकती।'' पाकिस्तान, बांग्ला देश, श्रीलंका, नेपाल, भूटान एवं म्यांनमार आदि देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी के पाठ्यक्रम चलते हैं। इसी प्रकार संयुक्त राज्य अमेरिका के कुछ विश्वविद्यालयों तथा शिकागो, कैलिफोर्निया, कोलंबिया, वाशिंगटन आदि विश्वविद्यालय के 'दक्षिण एशिया अध्ययन विभाग' के अंतर्गत हिंदी के अध्ययन–अध्यापन की सुविधा है। ब्रिटेन के लंदन एवं कैंब्रिज विश्वविद्यालयों में उच्च स्तर पर हिंदी का पठन–पाठन संपन्न होता है। इस प्रकार विदेशों में बसे भारतीयों ने अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए प्रवासी देशों में हिंदी के पठन–पाठन एवं विकास के लिए अनेक संस्थाओं एवं समितियों का गठन किया है।

आज कई देशों में प्रवासी भारतीय हैं और वे भी साहित्य रचना हिन्दी में कर रहे हैं। उनकी वर्तमान पीढ़ी तो हिन्दी में पहचान बना रही है पर अगली पीढ़ी में वही हिन्दी बोलचाल और लेखन निरंतर रहेगा। ''भारत के साहित्य का वैश्वीकरण करने में भी प्रवासी साहित्यकारों की अहम भूमिका है। भारत और भारतीयों के द्वारा जो रचा जा रहा है। आज वह वैश्विक मंचों पर भी अपनी व्याख्या के साथ प्रस्तुत है।'' विश्वपटल पर हिंदी को स्थापित करने में अंतरराष्ट्रीय स्तर की गोष्ठियां एवं सम्मेलनों का भी सहयोग रहा है। देश–विदेशों में कई संस्थाएँ निष्काम भाव से हिंदी के वैश्विक प्रचार–प्रसार के लिए लगातार प्रयत्न कर रही है।

हिंदी के प्रचार–प्रसार में सबसे अधिक योगदान मीडिया यानी पत्र–पत्रिकाएँ और रेडियो–टेलीविजन का रहा है। 1980 की तकनीकी क्रांति के बाद इंटरनेट सूचनाओं के आदान–प्रदान का सबसे सुलभ साधन बन चुका है। विशेषज्ञों ने माना है कि, संस्कृत के बाद हिंदी कम्प्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त भाषा है। इसका कारण है इसका लिखित और बोलचाल का स्वरूप एक जैसा होना। हिंदी को जब से यूनिकोड और तकनीक का सहारा मिला है तब से हिंदी इंटरनेट पर सबसे तेज गति से प्रसारित होने वाली भाषा बन गई है। ज्ञान और विज्ञान का निरंतर प्रसार अब इस भाषा के माध्यम से नवाचारों को निरंतर बढावा देना चाहिए जिससे डिजिटल डिवाइस से बचाकर हम अपनी भाषा के समृद्ध ज्ञान भंडार को आने वाली पीढियों तक पहुँचा सके। आज की युवा पीढ़ी इंटरनेट पर सक्रिय है। हम उनके लिए ऐसे प्लेटफॉर्म तैयार करें जिससे वे वहाँ सहज होकर अपनी अभिव्यक्ति कर सकें।''[4]

आज हिन्दी भाषा का साहित्य भी विविध विधाओं के माध्यम से वैश्विक फलक पर अपना स्थान बना रहा है। उत्कृष्ट लेखन व हिन्दीतर श्रेष्ठ साहित्य का अनुवाद इस भाषा को मांज कर इसके वैश्विक स्वरूप को प्रभावी रूप से प्रस्तुत कर सकती है जो कि भूमण्डलीकरण के इस दौर में परम आवश्यक है। हिन्दी को वैश्विक स्तर पर सम्मान सिनेमा के माध्यम से भी प्राप्त हो रहा है। सिनेमा ने हिन्दी की लोकप्रियता और व्यावहारिकता दोनों ही बढ़ाई है। आज भारत के सभी भाषाओं में बनने वाली फिल्मों का अनुवाद हिन्दी भाषा में तो हो ही रहा

है, लेकिन हॉलीवुड की सिनेमा को हिन्दी भाषा में लाने की कोशिश हिन्दी भाषा के प्रति एक नई क्रांति लेकर आयी है।

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि भूमंडलीकरण के कारण आज हिंदी का महत्व बढ रहा है। जिसके कारण व्यापारी, कंपनियाँ चाहे देशी हो अथवा विदेशी अपना माल बेचने के लिए हिंदी को ही प्रथम स्थान दे रहे हैं। विश्व को उपभोक्ता बाजार मानने वाली विदेशी कंपनियों ने विज्ञान एवं सूचना के क्षेत्र में हिंदी को ही महत्व दिया है। किसी भी वैश्विक व्यवस्था में सामंजस्य स्थापित करने में भाषा का बहुत बड़ा योगदान होता है और इस संदर्भ में हिंदी भाषा में वह ताकत है जो विभिन्न भाषा–भाषियों के बीच संवाद करने में सक्षम है। आज विश्व स्तर पर हिंदी संवाद सेतु का कार्य कर रही है। आज हिंदी विश्व के 200 से अधिक देशों में प्रयुक्त हो रही है। जिस गति से हिंदी का अंतरराष्ट्रीय पटल पर प्रचार–प्रसार हो रहा है, उससे अनुमान है कि सन 2030 तक हिंदी विश्व की सबसे अधिक बोलने एवं समझी जाने वाली भाषा बन जायेगी। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रचार–प्रसार में अनगिनत व्यक्ति एवं संस्थाएँ कार्यरत हैं। पिछले कुछ वर्षों में वैश्विक पटल पर हिंदी भाषा का आशातीत विस्तार हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. भूमंडलीकरण और हिंदी कविता – सम्पादक डॉ0 बाबू जोसेफ – पृष्ठ 52
2. हिन्दी भाषा विविध आयाम – डॉ0 परमानंद पांचाल।
3. Edword Spair : Rifferences in language and culture, पृ0 3
4. राजभाषा विभाग, भारत सरकार का लेखा, 12 सितम्बर 2022

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 83-86

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

विश्व स्तर पर हिन्दी भाषा का योगदान

छवि सांगवान

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।

डॉ. नरेश कुमारी,

सहायक प्रोफेसर, राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, रोहतक।

हिन्दी विश्व स्तर पर सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। यह दुनिया में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, जिसे भारत में बोलने वालों की बड़ी संख्या है। हिन्दी भाषी आबादी का विशाल आकार इस भाषा को महत्वपूर्ण वैश्विक महत्व देता है। हिन्दी की समृद्ध सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत है। हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक महत्व प्राचीन इंडो–आर्यन भाषाओं में इसकी जड़ो से पता लगाया जा सकता है, जो मध्यकाल में विकसित हुई, भक्ति आन्दोलन से प्रभावित हुई और मुगलकाल के दौरान आकार ली गई। स्वतन्त्रता के बाद हिंदी को भारतीय संविधान में एक आधिकारिक भाषा के रूप में प्रमुखता मिली जिसने प्रशासन, शिक्षा और संस्कृति में इसके उपयोग में योगदान दिया।

वर्तमान में, हिन्दी का महत्व 600 मिलियन से अधिक बोलने वालों के साथ विश्व स्तर पर तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा की स्थिति में है। यह भारत सरकार की आधिकारिक भाषा के रूप में कार्य करती है। संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषाओं में से एक के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय कुटनीति में भूमिका निभाती है और भारत के आर्थिक विकास और सांस्कृतिक प्रभाव का अभिन्न अंग है। बॉलीवुड फिल्मों की वैश्विक लोकप्रियता भारतीय प्रवासियों की उपस्थिति और दुनियाभर के शैक्षणिक संस्थानों में हिन्दी भाषा पाठ्यक्रम इसको अंतर्राष्ट्रीय प्रासंगिकता की और बढ़ाते हैं। हिन्दी ऐतिहासिक गहराई और समकालिन वैश्विक महत्व दोनों के साथ एक भाषा के रूप में खड़ी है। बालीवुड भारत का जीवंत फिल्म उद्योग जिसकी प्राथमिक भाषा हिन्दी है। उसके कई वैश्विक दर्शक वर्ग है। बोलीवुड फिल्मों, संगीत और सांस्कृतिक निर्यात का प्रभाव हिन्दी भाषा को विश्व स्तर पर फैलाने और भारतीय संस्कृति में रुचि बढ़ाने में मदद करता है।

भारत एक सांस्कृतिक राष्ट्र है। संस्कृति की विविध घटाएं यहां विभिन्न रूपों में बिखरती है।

उन्नीसवी शताब्दी भारतवर्ष में धर्म एवं समाज–सुधार के लिए जाना जाता है। भारतीय नवजागरण का यह काल आधुनिकता के रूप में परिचालित हुआ। भाषायी दृष्टि से यह विकास का युग था। राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता की दृष्टि से यही वह समय था जहां हिन्दी खड़ी बोली के रूप में फलने–फूलने लगी। स्वतन्त्रता के बाद हिन्दी को संवैधानिक मान्यता मिलने के बाद हिन्दी हिन्दुस्तान की बिन्दी बन गई। राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा, अंतराष्ट्रीय भाषा आदि विभिन्न रूपों में हिंदी संवरने लगी। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, अरब सागर

से बंगाल की खाड़ी तक हर जगह हिन्दी की खुशबू बिखरी है। हमारे साहित्य दर्शन, धर्म और कला में भारतीयता की भावना ओत–प्रोत रही है और इसी आधार पर देश के विभिन्न भागों में बसने वाले एकता का अनुभव करते है।

एक राष्ट्र की अनेक भाषाएँ हो सकती है परन्तु राष्ट्रभाषा एक ही होती है। किसी भी देश की राष्ट्रीयता के विकास में राष्ट्रभाषा के साथ ही राष्ट्रीय झंडा, राष्ट्रगान आदि प्रतीक है जो हमें एक सूत्र में बाँधने का काम करती है। झारखण्ड, छतीसगढ़ उत्तरांचल, तेलांगना आदि के नवनिर्माण का आधार भाषायी एवं संस्कृति का है। किसी भी देश के लिए, राष्ट्रीय झण्डा केवल वस्त्र खंड नहीं है वह राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। इसी तरह राष्ट्रीयता का दूसरा प्रतीक राष्ट्रगान है। राष्ट्रगान दूसरे गानों की तरह केवल संगीत नहीं है बल्कि वह संगीत से बहुत कुछ बढ़कर है। वह समस्वर में बंधी हुई राष्ट्र की आत्मा की गूँज है, जिसे सुनते हो कोटी–कोटी हृदय एक ताल पर थिरकने लगते हैं।

मुहम्मद इकबाल जो ने क्या खूब कहा है– 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा, हम बुलबले हैं इसके ये गुलिस्तां हमारा।' सचमुच हिन्दुस्तान का विश्व पटल में एक अलग स्थान है। चाहे वह भाषा, संस्कृति, कला, साहित्य, दर्शन, खान–पान, रहन–सहन पर्व–त्यौहार आदि तमाम संस्कार भारतीयता के विविध संदर्भ को दर्शाते है। विभिन्न धर्मावलंबियों एवं जातियों के होने के बावजूद प्राचीनकाल से ही भारत में सांस्कृतिक एकता रही है। भारत सदियों से ही विदेशी आक्रमणकारियों का दशं झेलता आया है। फिर भी वह आज अपने स्थान पर स्थिर खड़ा है एवं विश्वगुरु के पद पर टिका हुआ है। हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है क्योंकि इस भाषा के जरिए हमारी संस्कृति सुरक्षित है। आदिकाल से ही हिन्दी किसी न किसी रूप में राजकाज की भाषा थी। आजादी के बाद हिन्दी को संवैधानिक मान्यता मिली। अनुच्छेद 343–351 के राजभाषा के रूप में हिन्दी ने नई भूमिका ग्रहण की। हम सभी जानते हैं 14 सितम्बर 1949 के दिन भारतीय संघ को राजभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार किये जाने का निर्णय संविधान सभा द्वारा किया गया था। अतः प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को भारत भर में 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है।

आज हिन्दी वैश्विक भाषा बन चुकी है। मॉरिशस, रूस, कनाडा, अमेरिका, जापान, नेपाल, फिजी, चीन आदि देशों में हिन्दी अपना परचम लहरा रही है। विश्व में हिन्दी के प्रचार–प्रसार का एक प्रमुख कारण यह भी है कि भारत विश्व का सबसे बड़ा बाजार है। अपनी आर्थिक सुलभ इच्छाओं के उद्देश्य से विदेशियों के लिए हिंदी सीखना जरूरी ही नहीं मजबूरी बन चुकी है। विश्व हिन्दी सम्मेलन के आयोजन से भी विश्व पटल पर हिन्दी अपनी छाप छोड़ रही है। भाषा के विकास में वाणिज्य और व्यवसाय की भूमिका अहम् है। आज की सभ्यता वणिक सभ्यता है।

हिंदी के विकास में गैर सरकारी संस्थानो का भी योगदान कम नहीं है। हिन्दी संस्थान, सिनेमा, समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन, पत्र–पत्रिकाएं, पुस्तक आदि हिन्दी के प्रचार एवं विकास में सिनेमा का बहुत बड़ा योगदान है। हिन्दी के लिए इतना बड़ा काम कोई और माध्यम नहीं कर सकता। कहा जाता है कि 'चंद्रकांता संतति' नामक हिन्दी उपन्यास इतना चर्चित हुआ कि इसको पढ़ने के लिए न सिर्फ लोगों ने हिन्दी सीखी बल्कि विदेशों में हिन्दी के प्रति झुकाव पैदा हुआ। जहां तक फिल्म सितारों की बात है, अमिताभ, रेखा, आमिर खान, शाहरूख खान, सलमान खान, मनोज कुमार आदि ने हिन्दुस्तान का नाम विश्व में रोशन किया। 'बजरंगी भाईजान',

'बाहुबली' जैसी फिल्म इसका ताजा उदाहरण है। किसी भी भाषा के प्रचार में रेडियो एवं दूरदर्शन का बहुत बड़ा हाथ होता है। समाचार पत्रों, पत्रिकाओ, रेडियो, दूरदर्शन में यह विशेषता है वह जीवित भाषा को सामने लाता है, जीवित भाषा या उच्चारित भाषा जिस रूप में बोली जाती है उसी रूप में प्रस्तुत करता है।

हिन्दी विश्वभाषा की ओर – सकारात्मक प्रवर्तियाँ :–

हिन्दी एक विश्व भाषा है क्योंकि वह एक देश की राष्ट्र भाषा होने के साथ–२ अन्य देशों में भी पर्याप्त संख्या में लोगों द्वारा लिखी बोली और समझी जाती है। वैश्वीकरण के परिप्रेष्य में हिन्दी के प्रति सकारात्मक प्रवृतियां इस प्रकार दिखाई दे रही हैं :–

– भौगोलिक आधार पर हिंदी विश्व भाषा है क्योंकि इसके बोलने–समझने वाले संसार के सब महाद्वीपों में फैले हैं।

– जनतान्त्रिक आधार पर हिन्दी विश्व भाषा है क्योकि उसके बोलने–समझने वालों की संख्या संसार में तीसरी है।

– विश्व के 132 देशों में जा बसे भारतीय मूल के लगभग 2 करोड़ लोग हिंदी माध्यम से ही अपना कार्य निष्पादित करते है।

– हिन्दी का किसी देशी या विदेशी भाषा से कोई विरोध नहीं है। अनेक भाषाओं के शब्द ग्रहीत होकर हिन्दीमय बन गए हैं। यही कारण है कि आज हिन्दी का शब्दकोश विश्व का सबसे बड़ा भाषिक शब्दकोश है।

हिन्दी स्वयं में अपने भीतर एक अन्तर्राष्ट्रीय जगत छिपाये हुए है। आर्य, द्रविड़, आदिवासी, स्पेन, पुर्तगाली, जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी, अरबी, फारसी, चीनी, जापानी सारे संसार की भाषाओं के शब्द इसकी अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री एवं वसुदैव कुटुम्बकम् वाली प्रवृति को उजागर करते है।

हिंदी का साहित्येतर लेखन बड़ा है तथा लेखन का स्तर भी ऊँचा होता जा रहा है।

गुणवता की दृष्टि से अनुवाद की स्थिती बेहतर होती जा रही है. देश–विदेश में प्रकाशित होने वाली पत्र–पत्रिकाओं ने हिन्दी को विश्व भाषा बना दिया है।

इंटरनेट पर हिन्दी भी स्वीकार्य है और लोकप्रिय हो रही है। हिंदी पत्रकारिता और हिन्दी साहित्य भी अब इंटरनेट के माध्यम से विश्वभर में प्रसारित होने लगा है।

भारत के आकाशवाणी और दूरदर्शन हिन्दी को विश्व स्तर पर स्थापित करने में निरंतर कार्यरत हैं। विश्व के टी. वी. चैनलों से हिन्दी के कार्यक्रमों के प्रसारण ने भी हिन्दी को विश्व भाषा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हिन्दी की व्यापकता के कारण दुनियां के 175 देशों में हिन्दी के शिक्षण एवं प्रशिक्षण के अनेक माध्यम केन्द्र बन गए हैं। हिन्दी का शिक्षण एवं प्रशिक्षण विश्व के लगभग 180 विश्वविद्यालयों, शैक्षणिक संस्थाओं में चल रहा है। सिर्फ अमेरिका में 100 से अधिक विश्वविद्यालय, कॉलेजो में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। इससे हिन्दी का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है।

'एनाकाटी एनसाइक्लोपीडिया' के अनुसार चीनी भाषा के बाद संसार में प्रयुक्त होने वाली सबसे बड़ी भाषा हिन्दी है। हिन्दी के बाद क्रमशः स्पेनिश, अंग्रेजी, अरबी, रूसी और फ्रांसिसी भाषाओं का स्थान आता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जी देने के साथ–साथ इसे संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं अधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकृति दिलाने के लिए कुछ ठोस पहल की जाए। हिन्दी में यह शक्ति कब आएगी कि वह विश्व के लिए एक ऐसी महत्वपूर्ण भाषा बन जाए, जिसकी उपेक्षा न हो सके। यह तभी होगा जब हमारी मानसिकता बदलेगी। हमें अपनी भाषा बोलते हुये गौरव का अनुभव होगा। हमारे पूर्व प्रधानमन्त्री अटल विहारी वाजपेयी जी की जितनी प्रशंसा की जाए उत्तनी कम है उन्होंने पहली बार संयुक्त राष्ट्र के अधिवेशन में हिंदी में भाषण देकर हमारे देश के गौरव को बढ़ाया था। आज वर्तमान प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी भी जहां भी विदेश यात्रा पर जाते है हिन्दी में ही भाषण देते है, यह हमारे और हमारी भाषा को गौरव प्रदान करते हैं।

जापान, जर्मनी, इंग्लैण्ड, रूस, फ्रांस, चीन आदि सभी शक्तिशाली देश अपनी भाषा में वक्तव्य देते है और अनुवादक के माध्यम से उनकी बात विदेशी श्रोताओं तक पहुंचती है। हिन्दी को लेकर भी ऐसे प्रयासों को आवश्यकता है। हिन्दी के सामने कई चुनौतियां है। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक है कि हम वास्तविक स्थिति और अपनी कमियां समझें, हमें लक्ष्य का स्पष्ट ज्ञान हो लक्ष्य प्राप्त की सार्थक योजनाएं बनें, ईमानदारी और दृढ़ता से योजनाओं को कार्यान्वित किया जाए तथा समय–2 पर प्रगति का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। हिन्दी को विश्व में अपना स्थान बनाये रखने के लिए मिलकर प्रयास करने की जरूरत है।

सन्दर्भ सूचि :–

1. श्रेष्ट्र भाषा हिन्दी समस्याएं और समाधान – देवेन्द्रनाथ शर्मा, पृ०–13
2. संस्कृति के चार अध्याय, रामधारी सिंह दिनकर, पृ० 635
3. हिन्दी भाषा– हरदेव बाहरी, पृ०–155
4. प्रयोजन मूलक हिन्दी : सिद्धान्त और प्रयोग – दंगल झाल्टे 1034
5. विश्व हिन्दी सम्मेलन मॉरीशस, 18–20 अगस्त 2018
6. विश्व हिन्दी सम्मेलन मौरीशस, 18–20 अगस्त 2018

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 87-90

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिप्रेक्ष में हिंदी भाषा

डॉ. नयना प्रशांत पाटिल

बी. पी. आर्ट्स, एस. एम. ए. सायन्स एंड के. के. सी. कॉमर्स कॉलेज, चालीसगाँव, जलगाँव, महाराष्ट्र।

आज का युग वैश्वीकरण का युग है। विश्व के सारे देश वैश्वीकरण के कारण अत्यधिक प्रभावित हो रहे हैं। दुनिया के सारे बाजार आपस में जुड़ रहे हैं और उनका पारस्परिक समन्वय हो रहा है। वैश्वीकरण के इस दौर में बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने दुनिया के प्रत्येक देश में अपने पैर फैलाए हैं। उन्होंने भारत में बहुत तेजी से प्रवेश किया है। पूरे विश्व में हिंदी जानने वाला बहुत बड़ा विशाल उपभोक्ता वर्ग है। अंतः बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अपने उत्पाद को बचाने के लिए हिंदी भाषा का सहारा लेने की आवश्यकता महसूस होने लगी। इसलिए उन्होंने अपने कर्मचारियों को हिंदी भाषा का प्रशिक्षण देना आरंभ कर दिया और अपने उत्पाद तथा सेवा के विज्ञापन के लिए भी हिंदी भाषा को माध्यम बनाया। उन्होंने देखते ही देखते हिंदी को राष्ट्रीय स्तर से उठाकर विश्व स्तर पर खड़ा कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि आज हिंदी भाषा विश्व की भाषा बनने की क्षमता रखती है और जल्द उसे विश्व भाषा का सम्मान मिलने की संभावना भी दिखाई दे रही है।

हिंदी भाषा :–

भाषा साहित्य का वह महत्वपूर्ण अंग है जिसके बिना साहित्य का अस्तित्व ही संभव नहीं है। समाज भाषा के बिना गूंगा है ज्ञान के दरवाजे तभी खुलते हैं जब भाषा अवगत होती है। वास्तव में अनुमति, अभिव्यक्ति तथा संप्रेषण की सारी क्रियाएं भाषा के बगैर संभव नहीं है। 'भाष' शब्द संस्कृत के भाषा धातु से बना है, जिसका अर्थ है 'बोलना' या कहना।

मनुष्य भाषा के द्वारा ही अपने भावो और विचारों को व्यक्त करता है। हिंदी के लिए समय–समय पर अनेक नामों का प्रचलन हुआ, यथा–भाषा, बाख, हिंदवी, हिंदी, रेखता, दखनी, खड़ी बोली, हिंदुस्तानी, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा आदि। कौरवी नामक मेरठी नाम से प्रचलित हिंदी की पश्चिमी हिंदी नामक शाखा की बोली से हमारा अभिप्राय खड़ी बोली से है। यही बोली देवनागरी में लिखे जाने पर राजभाषा के रूप में मानी जाती है। देश के अधिक से अधिक समुदायों की एक संपर्क भाषा हो, इस तथ्य के अंतर्गत संविधान निर्माताओं ने संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा हिंदी का निर्धारण किया। वस्तुतः हिंदी एक ऐसी सर्व सामान्य भाषा के रूप में उभरी जिसे समूचा राष्ट्र अपने दैनिक जीवन में बोलता और समझता है भाषा को सम्मान देश को सम्मान देने के समान है। गांधी जी का विचार था कि कोई भी स्वतंत्र राष्ट्र राष्ट्रभाषा के बिना गुंगा है। पिछले करीब हजार वर्षों से जब राष्ट्रभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में संस्कृत का प्रचलन कम हो गया हिंदी राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा दोनों रूपों में भारत तथा आसपास के कुछ देशों में बोली जा रही है। हिंदी भाषा का अंतरराष्ट्रीय संस्था संस्थानों

में भी स्थान मिलने का और अंतरराष्ट्रीय संपर्क की भाषा के रूप में से मान्यता प्राप्त होगी।

वैश्वीकरण संकल्पना :–

वैश्वीकरण को विश्ववाद भी कहा जाता है। कुछ लोग भारतीय संस्कृति के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' संकल्पना और वैश्वीकरण की अवधारणा को एक जैसा मानते हैं। परंतु दोनों में काफी अंतर है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को एक जीवना दर्श माना जाता है। इस संकल्पना के अनुसार सारा विश्व एक परिवार है। वैश्वीकरण का आधुनिकीकरण से घनिष्ठ संबंध है। सबके पहले पश्चिमी देशों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई। यह परिवर्तन समाज के प्रमुख अंग धर्म, संस्कृति, साहित्य एवं भाषा आदि के मूल्य परिवर्तन के रूप में दिखाई देने लगा। विश्व के सभी देश सभी क्षेत्रों में एक दूसरे से आदान–प्रदान की आवश्यकता महसूस करने लगे। सोलहवीं शताब्दी यूरोप के राष्ट्रों में औद्योगिक क्रांति की हलचल तेज हो गई और बाजार के रूप में साम्राज्य विस्तार की संकल्पना का उदय हुआ। इंग्लैंड, फ्रांस आदि देश साम्राज्य के लिए विश्व की ओर मुड गए। उन्होंने विक्रय व्यवस्था के लिए अनुकूल एशिया की ओर कुच किया। इससे वैश्वीकरण की पृष्ठभूमि तैयार हो गई। वैश्वीकरण का एक दौर ब्रिटिश साम्राज्य के साथ संपूर्ण विश्व में प्रसारित हो गया था। अब वैश्वीकरण का दूसरा दौर शुरू हो गया, जो अमेरिका, बहुराष्ट्रीय कंपनीयों तथा विश्व बैंक के नेतृत्व में प्रचारित और प्रसारित हो रहा है। दोनों स्थिति में यह दिखाई देता है कि वैश्वीकरण मूलतः पूंजीवाद का ही विस्तार है।

हिंदी भाषा का वैश्वीकरण :–

वैश्वीकरण के दौर में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। भाषा विश्व का सबसे बड़ा बाजार है। इस बाजार के माध्यम भाषा हिंदी है। आज हिंदी भाषा सारे विश्व में संपर्क भाषा की भूमिका निभा रही है। हिंदी विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा कही जाती है। लगभग 1 करोड़ 20 लाख भारतीय मूल के लोग विश्व के 132 देश में बिखरे हुए हैं। जिनमें आधे से ज्यादा अधिक हिंदी से परिचित ही, नहीं उसे व्यवहार में भी लाते हैं।

गत 25 वर्षों में हिंदी की शब्द संपदा का जितना विस्तार हुआ है। उतना विश्व की शायद ही किसी भाषा में हुआ हो। विदेश में हिंदी के पठन–पाठन और प्रचार प्रसार का कार्य हो रहा है। भारत के बाहर 165 विश्वविद्यालय में हिंदी की अध्ययन की व्यवस्था है। दूरसंचार माध्यमों में, फिल्मों, गीतों हिंदी पत्र पत्रिकाओं माध्यमों आदि ने हिंदी के प्रचार प्रसार में अपनी अहम् भूमिका अदा की है। मुक्त बाजार और वैश्वीकरण के दबावोंने हिंदी को जरूरत और मांग के अनुकूल ढालने में भूमिका निभाई है।

आज किसी भी वस्तु की पूर्ति वैश्वीकरण या बाजारीकारण के माध्यम से पूर्ण हो रही है और संपर्क के लिए हिंदी भाषा सेतु का काम कर रही है। बाजार में अपने उत्पाद का महत्व समझाने के लिए भाषा का माध्यम प्रभारी होता है और इसमें कोई संदेह नहीं की किसी राष्ट्र के उत्पादन का विक्रिय करने के लिए 'विश्व बाजार' में हिंदी भाषा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

संगणक और हिंदी :–

आज विश्व में व्यापक रूप में संगणक का उपयोग किया जा रहा है। संगणक के हिंदीकरण के लिए लगभग एक दर्जन भारतीय संगणक निर्माता प्रयत्न रत्न थे। उनके अथक परिश्रम से आज बाजार में हिंदी में कार्य करने के लिए लगभग डेढ़ दर्जन छोटे–बड़े द्विभाषिक प्रोग्राम, सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर, जिस्ट कार्ड के रूप में उपलब्ध है। इनका प्रयोग करके हिंदी भाषा और प्रकाशन उद्योग को विकसित किया गया है। कंप्यूटर में हिंदी

प्रयोग की बढ़ती संभावनाओं को ध्यान में रखकर इलेक्ट्रॉनिक विभाग ने भारतीय भाषाओं के लिए टेक्नोलॉजी विकास नामक परियोजना के अंतर्गत कई प्रोजेक्ट शुरू किए गए हैं।

कंप्यूटर एवं इंटरनेट के सहारे हिंदी शिक्षा का प्रसार तीव्र गति से होने की संभावना बढ़ गई है। वर्तमान स्थिति में वेबसाइट पर हिंदी इलेक्ट्रॉनिक शब्दकोश उपलब्ध है। इसी तरह अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं में पारस्परिक अनुवाद प्राप्त करने की सुविधा भी उपलब्ध है। बिल गेट्स ने भी स्वीकार किया है कि संगणक की भाषा हिंदी हो सकती है। क्योंकि रोमन लिपि की तुलना में देवनागरी लिपि अधिक वैज्ञानिक है। हिंदी ध्वनी विज्ञान की दृष्टि से आसान और सरल है, उसमें जैसा बोला जाता है वैसे ही लिखा जाता है।

संचार माध्यम और हिंदी :-

आज के वैश्वीकरण के दौर में संचार माध्यमों का प्रयोग बहुत हो रहा है। समाचार पत्र, आकाशवाणी, दूरदर्शन, विज्ञापन, संगणक आदि प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया वैश्वीकरण बाजारीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग करके विश्व बाजारीकरण का रूप धारण कर लिया है। आज समाचार पत्र पत्रिकाऐं घर–घर तक पहुंची है। उनके द्वारा भी हिंदी का प्रचार प्रसार हो रहा है क्योंकि अधिकतर समाचार पत्र–पत्रिकाएं हिंदी में ही निकलती है। अमेरिका कनाडा इंग्लैंड जैसे संपन्न देशों में भी हिंदी के रेडियो और टी.वी. चैनल है। साथ ही जापान के रेडियो, चाइना रेडियो, इंटरनेशनल रेडियो आदि अनेक विदेशी रेडियो स्टेशनों से नियमित रूप से हिंदी कार्यक्रम सुनाई देते हैं। इस प्रकार विश्व के कोने–कोने में हिंदी भाषा को पहुंचने में रेडियो का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

सिनेमा और सिनेमा कलाकार का संबंध वैश्विक बाजार में जुड़ा है। आज स्थिति यह है कि सारे विश्व के सामने जगत में हिंदी सिनेमा जगत का स्थान सर्वोपरि है। भारतीय वर्तमान हिंदी सिनेमा अनेक देशों में लोकप्रिय है। दूरदर्शन से प्रसारित होने वाले विज्ञापनों से लाखों लोग एक साथ श्रव्य और दृश्य का लाभ ले रहे हैं। दूरसंचार धारावाहिकों ने विदेशों में प्रचार–प्रसार में पर्याप्त योगदान दिया है। आज भी रामायण, महाभारत आदि अनेक धारावाहियों को विदेशी लोग बड़े चाव से देखते हैं और सुनते हैं।

दूरसंचार माध्यमों, फिल्मों, गीतों, हिंदी पत्र, पत्रिकाओं आदि में तथा मीडिया के कारण हिंदी विश्व भाषा बनती जा रही है। मुक्त बाजार और वैश्वीकरण के दबावों ने हिंदी को जरूर और मांग के अनुकूल ढालने में भूमिका निभाई है।

विश्व स्तर पर हिंदी :-

हिंदी संपूर्ण भारत की सर्वोत्कृष्ट व सर्वस्वीकृत भाषा है। आज हिंदी विश्व भाषा बन चुकी है। आज हम वैश्वीकरण के ओर बढ़ रहे हैं। विदेश मंत्री आनंद शर्मा के यह वाक्य हिंदी की उसे स्थिति को व्यक्त करते हैं। जो न केवल प्रशंसनीय है बल्कि सम्मानीय भी है। "विश्व हिंदी सम्मेलन में 32 साल का सफर पूरा कर लिया है। आज 10 करोड़ भारतीय की आवाज दुनियां सम्मान के साथ सुन रही है और वह दिन दूर नहीं है जब हिंदी यू एन ओ की भाषा सूची में अपनी गरिमायी उपस्थिति दर्ज कराएगी"।

चीन के बाद विश्व का सबसे बड़ा बाजार होने के कारण भारत में शहर संपर्क बनाने के लिए विदेशीकरण हिंदी सीखने के लिए उत्सुक है। 20वीं सदी विज्ञान की थी और 21वीं सदी सूचना प्रौद्योगिकी है इतना ही नहीं आज वाइस ऑफ अमेरिका चीन रेडियो, बीबीसी यूएनओ के अतिरिक्त नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश के

प्रतिष्ठित रेडियो से हिंदी कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं।

आज हिंदी राष्ट्रभाषा या राजभाषा से विश्व भाषा की ओर बढ़ती नजर आ रही है क्योंकि आज दुनिया के 176 विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ी और पढाई जा रही है। उसमें 45 विश्वविद्यालय तो अमेरिका में ही है। इस प्रकार अमेरिका के 51 कॉलेज में कोरिया के लगभग 100 कॉलेज में और चीन के 500 कॉलेज में किसी न किसी रूप में हिंदी पढ़ाई जा रही है। जापान के लगभग सारे 800 कॉलेज में हिंदी पढ़ाई जाती है और पूरे जापान में हजारों की संख्या में विद्यार्थी हिंदी पढ़ते हैं। इटली, ब्रिटेन, यूरोप, रोमानिया, यूनान में संत कवि कबीर दास को पढ़ाया जाता है।

निष्कर्ष :-

'वसुदैव कुटुंबकम्' की भारतीय संकल्पना एक जीवन आदर्श है। सारे विश्व को एक परिवार के रूप में देखने की संकल्पना को साकार करने के लिए हिंदी ही सशक्त अभिव्यक्ति माध्यम का काम कर सकती है। आज विश्व के अनेक देशों में अध्ययन, अध्यापन तथा सृजनात्मक लेखन के द्वारा हिंदी का विकास हो रहा है। विश्व सम्मेलनों के जरिए हिंदी का फैला व तीव्र गति से बढ़ रहा है। आज प्रयोक्ताओं की दृष्टि से हिंदी विश्व में प्रथम क्रमांक की भाषा बन चुकी है। संगणक में हिंदी शब्दावली के निर्माण में प्रयास किए जा रहा है। विश्व स्तर के कई सॉफ्टवेयर में अभी हिंदी का समावेश किया जा रहा है। संचार माध्यमों के कारण भी हिंदी विश्व भाषा बनने जा रही है। आज विश्व के अनेक देशों में अध्ययन, अध्यापन तथा सृजनात्मक लेखन के द्वारा हिंदी का विकास हो रहा है। आज हिंदी किसी गांव की भाषा न रहकर प्रदेश राज्य राष्ट्र विश्व संपर्क तथा विश्व व्यवसाय की भाषा के रूप में विश्व के सामने आई है।

संदर्भ :-

1. सुधा अरोड़ा के साहित्य में नारी चित्रण, डॉ. नंदा गुलाबराव बच्छाव, पेज नंबर 149
2. शोध दिशा, डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, पेज नंबर–96
3. शोध दिशा, डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, पेज नंबर–97
4. राष्ट्रवाणी, द्वैमासिक में जून 2013
5. हिंदी भाषा विकास और स्वरूप, कैलाश चंद्र भाटिया मोतीलाल, चतुर्वेदी, पेज नंबर–201
6. राष्ट्रवादी, द्वैमासिक, जुलाई–अगस्त 2014

Email - drnaynapatil@gmail.com

Contact – 7972874858

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 91-94

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी का इतिहास और विकास

डॉ. कमलेश कुमारी

सहायक प्राध्यापिका (हिंदी) कला एवं मानविकी विभाग, डी. पी. जी. डिग्री कॉलेज, गुरुग्राम, हरियाणा।

सारांश :-

हिंदी भाषा भारत की एक प्रमुख भाषा है, जो देश के विभिन्न हिस्सों में बोली जाती है। हिंदी भाषा का इतिहास बहुत पुराना और समृद्ध है, जो कई सदियों से विकसित होता आया है और यह एक राष्ट्रीय भाषा के रूप में उभरी है। हिंदी भाषा में साहित्य, संगीत, नृत्य और अन्य कलाओं का एक समृद्ध इतिहास है। यह भाषा भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसका महत्व बहुत अधिक है।

मुख्य शब्द :- भाषा, विकास, विश्लेषण, इतिहास।

शोध उद्देश्य :-

1. हिंदी के इतिहास का विश्लेषण करना।
2. हिंदी के विकास के विभिन्न चरणों को समझने का प्रयास करना।

प्रस्तावना :-

इतिहास मानव सभ्यता के अनुभव का अध्ययन है, जो हमें वर्तमान को समझने और भविष्य को आकार देने में मदद करता है। प्रमुख विद्वान हेरोडोटस (प्राचीन ग्रीक इतिहासकार) के अनुसार, 'इतिहास मानव सभ्यता की अनुभव का अध्ययन है।' दूसरा भाषा एक संचार का माध्यम है जिसमें शब्दों वाक्य और अर्थों का उपयोग करके प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं और जानकारी को व्यक्त करता है। यह एक मानवीय गति विधि है जो सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में विकसित होती है। संसार की भाषाएं और हिंदी दूसरे से जुड़े हुए हैं। हिंदी भारत के राष्ट्रीय भाषा है और विश्व में एक महत्वपूर्ण भाषा के रूप में उभरी है।

1.1 संसार की भाषाएं और हिंदी :-

वंश क्रम के अनुसार भाषा टी. वी. के संसार की भाषाओं को कुलों, उपकुलों, शाखाओं, उप–शाखाओं और समुदायों में विभक्त करते हैं। अब तक की खोज के आधार पर संसार की भाषाएं निम्नलिखित मुख्य कुलों में विभक्त की गई है :–

भारत-यूरोपीय कुल :-

कुछ विद्वान् इस कुल को आर्य, भारत जर्मनिक अथवा जफेटिक नामों से भी पुकारते हैं। इस कुल की

भाषाएं उत्तर भारत अफगानिस्तान, ईरान तथा प्रायः संपूर्ण यूरोप में बोली जाती हैं। धीरेंद्र वर्मा के अनुसार, इन्हें दो समूह में विभक्त किया जाता है जो 'केंटुम' और 'शतम्' समूह कहलाते हैं।

भारतीय यूरोपीय कुल की भाषाओं के दो समूह में विभक्त करने का आधार कुछ कंठ देशीय मूल वर्णों (क, ख, ग, घ) का इन समूहों की भाषाओं में भिन्न–भिन्न रूप ग्रहण करना है। एक समूह में स्पर्श व्यंजन ही रहते हैं किंतु दूसरे में यह उष्म (सिबिलैंट्स) हो जाते हैं। यह भेद इन भाषाओं में पाए जाने वाले 'सौ' शब्द के दो भिन्न रूपों से भली प्रकार प्रकट होता है। लैटिन में जो प्रथम समूह की भाषाओं में से एक है, 'सौ' के लिए केंटुम शब्द आया है। किंतु संस्कृत में, जो दूसरे समूह की है शतम् रूप मिलता है पहला समूह प्रधानतया यूरोपीय है, और केंटुम समूह के नाम से पुकारा जाता है। दूसरे समूह में पूर्व यूरोप, ईरान तथा भारत की आर्य भाषाएं सम्मिलित है यह शतम् समूह कहलाता है।[1]

सेमिटिक कुल :– प्राचीन हिब्र भाषा जिसमें मूल बाइबिल लिखी गई थी और प्राचीन अरबी भाषा जिसमें कुरान है इसी कल की है।

हैमिटिक :– इस कुल की भाषाएं उत्तर अफ्रीका में बोली जाती है जिनमें मिस्र देश की प्राचीन भाषा काप्टिक मुख्य है।

तिब्बती : चिनी कुल :– जापान को छोड़कर शेष समस्त बौद्ध धर्मावलंबी देश जैसे चीन, तिब्बत, बर्मा, हिमालय के अंदर के प्रदेश इसी कल की भाषाएं बोलने वालों से बसे हैं। संपूर्ण दक्षिण पूर्व एशिया में इसी कुल की भाषाएं प्रचलित हैं।

यूरल अलटाइक कुल :– इसको तुरानी या सीदियन कुल भी कहते है। इस कुल की भाषाएं चीन के उत्तर में मंगोलिया, मंचूरिया तथा साइबेरिया में बोली जाती है। तुर्की या तातारी भाषा इसी कुल की भाषा है। जापान और कोरिया की भाषाओं की गणना इसी कुल में करते हैं।

द्राविड़ कुल :– इस कुल की भाषाएं दक्षिण भारत में बोली जाती है, जिनमें मुख्य तमिल, तेलगु, मलयालम तथा कन्नड़ है।

मैले पालीनेशियन कुल :– मलाका प्रायद्वीप प्रशांत महासागर के सुमात्रा, जावा इत्यादि द्वीपों तथा अफ्रीका के निकटवर्ती द्वीप में इस कुल की भाषाएं बोली जाती हैं।

बंटु कुल :– इस कुल की भाषाएं दक्षिण अफ्रीका के आदिम निवासी बोलते हैं। जंजीबार की स्वाहिली भाषा इसी कुल में है।

मध्य अफ्रीका कुल :– उत्तर के हैमिटिक तथा दक्षिण के बंटू कुलों के बीच में शेष मध्य अफ्रीका में एक तीसरी कुल की बोलियां बोली जाती हैं। ब्रिटिश सूदान की भाषाएं इसी कुल की हैं।

भारतीय आर्य भाषाएं–भाषाओं का ऐतिहासिक विकास :–

भारतीय आर्य भाष्य जिन्हें हिंदू आर्य भाषाएं भी कहा जाता है, भारतीय उपमहाद्वीप की एक महत्वपूर्ण भाषाई शाखा है। इन भाषाओं का विकास प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक एक लंबी यात्रा को दर्शाता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :–

भारतीय आर्य भाषाओं का उद्‌भव संस्कृत से होता है जो वैदिक संस्कृत के रूप में प्राचीन भारत में प्रचलित थी। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद जैसे प्राचीन ग्रंथो में संस्कृत की प्रारंभिक विशेषताएं विद्यमान है। विशेषकर, वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत के बीच कई विकासात्मक प्रतिक्रियाएं घटी, जिसके फलस्वरुप प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं का उदय हुआ।

प्राकृत और अपभ्रंश भाषा :– प्राकृत भाषाएं जैसे कि मागधी, पहाड़ी और शौरसेनी भारतीय समाज में लोकप्रिय हो गई और संस्कृत के समानांतर लोग उन्हें बोलने लगे। अपभ्रंश भाषाएं जो प्राकृत से विकसित हुई, 6वीं शताब्दी तक व्यापक रूप में उपयोग में आने लगी। इनमें से कई भाषाएं बौद्ध और जैन साहित्य में भी देखने को मिलती है।

मध्यकालीन और आधुनिक विकास :–

12वीं से 18वीं शताब्दी के दौरान भारतीय आर्य भाषाओं ने एक नया मोड़ लिया। हिंदी, मराठी बांग्ला, गुजराती और उर्दू जैसी आधुनिक भाषाओं का विकास हुआ। इस समय के दौरान फारसी और अरबी का भी प्रभाव देखने को मिला जिससे इन भाषाओं में नए शब्दों और संवेदनाओं का समावेश हुआ। जैसे–जैसे सामाजिक परिवर्तन होते गए। वैसे–वैसे खड़ी बोली हिंदी भाषा एवं साहित्य के रूप में विकसित होती गई। इस संबंध में रामविलास शर्मा का स्पष्ट मत है कि, 'सामाजिक विकास से भाषा के विकास का घनिष्ठ संबंध है।'[2] खड़ी बोली हिंदी के विकास में भारतेंदु हरिश्चंद्र का योगदान अविस्मरणीय है। इस विषय में आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं कि, 'मुंशी सदा सुखलाल की भाषा साधु होते हुए भी पंडिताऊपन लिए हुई थी, लल्लू लाल में ब्रजभाषापन और सदल मिश्र में पूर्वीपन था राजा लक्ष्मण सिंह की भाषा में विशुद्ध और मधुर तो अवश्य थी, पर आगरा की बोलचाल का पुट उसमें कम न था। भाषा का निखरा और सामान्य रूप भारतेंदु की कला के साथ ही प्रकट हुआ।'[3]

हिंदी की भाषाई विशेषताएं :–

भारतीय आर्य भाषाओं की संरचना को मुख्य बिंदुओं द्वारा समझा जा सकता है :–

व्याकरणिक संरचना :– व्यक्तिगत, समय, संख्या और लिंग के आधार पर शब्दों का परिवर्तन।

संज्ञा और सर्वनाम :– विभिन्न रूपों में विभाजित, जो सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों को दर्शाते हैं।

शब्दावली :– संस्कृत, फारसी, अरबी और स्थानीय बोलियां से समृद्ध।

सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव :–

भारतीय आर्य भाषा हिंदी का विकास भाषा ही नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का भी परिचायक है। इन भाषाओं में साहित्य, संगीत, नृत्य और नाटक में महत्वपूर्ण योगदान दिया। हिंदी साहित्य जैसे संत कबीर, तुलसीदास और प्रेमचंद, भारतेंदु हरिश्चंद्र, मैथिलीशरण गुप्त, महावीर प्रसाद द्विवेदी ने समाज में एक नई चेतना का संचार किया।

आज की स्थिति :–

वर्तमान में, भारतीय आर्य भाषा हिंदी न केवल भारत में बल्कि विश्व के विभिन्न हिस्सों में भी बोली जाती है। विभिन्न भाषाओं के बीच संवाद और सह–अस्तित्व में इन भाषाओं के विकास को और गति दी है। हिंदी जो भारतीय आर्य भाषाओं में सबसे बड़ी है। आज विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है।

निष्कर्ष :–

हिंदी भाषा का विकास एक सामूहिक प्रयास का परिणाम है, जो हजारों वर्षों से विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिवर्तनों के साथ चला आया है। यह भाषाएं भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है और इनमें निहित ज्ञान एवं साहित्य का संरक्षण और संवर्धन आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. वर्मा, धीरेंद्र, हिंदी भाषा का इतिहास, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद 299009, पृ. 79
2. पाण्डेय, मैनेजर, 2005, साहित्य और इतिहास दृष्टि, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. 182
3. शुक्ल, रामचंद्र, 1997, हिंदी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृं. 304

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 95-99

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा और भारतीय शिक्षा पद्धति – कल, आज और कल : संत गरीबदास के संदर्भ में

पिंकी रानी

शोधार्थी, भाषा विभाग (हिंदी), बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा)

परिचय :–

हिंदी भाषा और भारतीय शिक्षा पद्धति भारत की प्राचीन परंपराओं, सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक धरोहर में गहराई से निहित हैं। हिंदी न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक और भावनात्मक पहचान का प्रतीक भी है। शिक्षा पद्धति, जो कभी गुरुकुलों और वैदिक ज्ञान केंद्रों के रूप में जानी जाती थी, समय के साथ एक अधिक समावेशी और तकनीकी प्रणाली में परिवर्तित हो गई है।

संत गरीबदास जैसे महान् संतों ने हिंदी भाषा और भारतीय शिक्षा पद्धति के बीच एक गहरा रिश्ता स्थापित किया। गरीबदास जी की शिक्षाओं और वाणी ने भारतीय समाज को न केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक सुधार की नींव भी रखी। उनके विचारों में हिंदी भाषा एक सशक्त माध्यम थी, जिसने उनके दार्शनिक और सामाजिक संदेशों को जनता तक पहुँचाया।

गरीबदास जी ने अपनी शिक्षाओं के माध्यम से हिंदी भाषा को केवल धार्मिक संवाद तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे समाज में जागरूकता और बदलाव का साधन बनाया। उनकी वाणी में ब्रह्म, जीव, माया और मोक्ष जैसे गहन दार्शनिक विचारों का उल्लेख है, जो हिंदी भाषा की अभिव्यक्तिपरक क्षमता को प्रकट करते हैं। उनकी वाणी से प्रेरित होकर हिंदी भाषा ने न केवल आध्यात्मिक बल्कि सामाजिक उन्नति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आज के वैश्वीकरण के दौर में, संत गरीबदास की शिक्षाएँ यह दर्शाती हैं कि कैसे हिंदी भाषा और भारतीय शिक्षा पद्धति आधुनिक तकनीकी युग में भी अपनी प्रासंगिकता बनाए रख सकती हैं। यह शिक्षा पद्धति समाज के उत्थान और मानवीय मूल्यों को संरक्षित रखने का एक महत्वपूर्ण साधन है। गरीबदास जी की वाणी, जो "श्री ग्रंथ साहिब" में संकलित है, न केवल आध्यात्मिक ज्ञान का स्रोत है, बल्कि यह एक सशक्त शैक्षिक माध्यम भी है, जिसने हिंदी को समृद्ध किया है और भारतीय शिक्षा पद्धति को नई दिशा दी है।

इस संदर्भ में, गरीबदास जी की शिक्षाओं और हिंदी भाषा का योगदान आज भी प्रासंगिक है और आने वाले समय में शिक्षा और समाज के विकास के लिए प्रेरणादायक बना रहेगा।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य :-

हिंदी भाषा का उद्‌गम वैदिक संस्कृत से हुआ, और यह भारत की लोक भाषाओं के साथ विकसित होती रही। इस भाषा ने प्राचीन काल में साहित्य, कला और संस्कृति को अभिव्यक्त करने का प्रमुख माध्यम प्रदान किया। तुलसीदास, कबीर और सूरदास जैसे संत कवियों की तरह संत गरीबदास जी ने भी हिंदी भाषा को अपने दार्शनिक विचारों और सामाजिक संदेशों को व्यक्त करने के लिए चुना। गरीबदास जी की वाणी, जो "श्री ग्रंथ साहिब" में संकलित है, हिंदी भाषा की शक्ति और इसकी अभिव्यक्तिपरक क्षमता को प्रमाणित करती है।

गरीबदास जी ने हिंदी भाषा का उपयोग न केवल आध्यात्मिक विचारों के प्रसार के लिए किया, बल्कि इसे समाज सुधार और जागरूकता का माध्यम भी बनाया। उनकी वाणी में "ब्रह्म", "माया", "मोक्ष" जैसे गहन दार्शनिक विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त होते हैं। वह हिंदी के माध्यम से समाज को जाति, वर्ग, और धार्मिक भेदभाव से ऊपर उठने का संदेश देते थे।

आधुनिक युग में, हिंदी भारत की राष्ट्रीय भाषा के रूप में उभरी है। यह स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्रीय चेतना को एकजुट करने का एक प्रभावशाली साधन बनी। संत गरीबदास जैसे संतों की शिक्षाओं ने हिंदी को वह आधार प्रदान किया, जिसने इसे केवल एक भाषा से अधिक, एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान के रूप में स्थापित किया।

आज, हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, जिसे लगभग 600 मिलियन लोग बोलते हैं। यह डिजिटल और सामाजिक माध्यमों में भी तेजी से अपनी जगह बना रही है। संत गरीबदास के समय की हिंदी, जो सरल और स्पष्ट थी, आज के तकनीकी युग में भी अपनी प्रभावशीलता को बनाए रखे हुए है। गरीबदास जी की वाणी यह दिखाती है कि हिंदी भाषा में समाज सुधार और आध्यात्मिक उत्थान की अपार क्षमता है।

उनकी वाणी ने यह भी प्रमाणित किया कि हिंदी न केवल आध्यात्मिक संवाद का माध्यम है, बल्कि यह समाज में एकता, जागरूकता और परिवर्तन लाने का भी साधन है। गरीबदास जी की शिक्षाओं के कारण हिंदी भाषा ने सामाजिक और आध्यात्मिक दिशा में जो योगदान दिया है, वह आज भी प्रासंगिक है। उनके विचारों ने हिंदी को एक सशक्त अभिव्यक्ति और जागरूकता का माध्यम बनाया, जिसने इसे वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण स्थान दिलाने में सहायता की।

वैश्विक संदर्भ में हिंदी और शिक्षा पद्धति :-

हिंदी भाषा ने संत गरीबदास जैसे आध्यात्मिक संतों के योगदान से अपनी गहराई और व्यापकता प्राप्त की है। गरीबदास जी ने अपनी वाणी के माध्यम से हिंदी को केवल धार्मिक विचारों के प्रसार का माध्यम नहीं बनाया, बल्कि इसे समाज सुधार, शिक्षा और सांस्कृतिक जागरूकता का एक सशक्त साधन भी बनाया। आज हिंदी भाषा वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, जो संतों की वाणी के प्रभाव का प्रमाण है।

संयुक्त राष्ट्र में हिंदी का बढ़ता उपयोग, वैश्विक मीडिया प्लेटफॉर्म पर हिंदी सामग्री का विस्तार, और प्रवासी भारतीय समुदायों द्वारा इसे संरक्षित करने के प्रयास इस भाषा की बढ़ती प्रासंगिकता को दर्शाते हैं। गरीबदास जी की शिक्षाओं में हिंदी भाषा का उपयोग सरल, स्पष्ट और भावनात्मक रूप से समृद्ध है, जो आज के डिजिटल और तकनीकी युग में भी प्रभावी है। उनकी शिक्षाएं यह प्रमाणित करती हैं कि हिंदी केवल एक

संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि यह एक वैश्विक सांस्कृतिक धरोहर भी है।

भारतीय शिक्षा पद्धति ने भी संतों की शिक्षाओं और विचारों से प्रेरणा लेते हुए वैश्विक स्तर पर पहचान बनाई है। आईआईटी, आईआईएम और अन्य भारतीय संस्थान शिक्षा के क्षेत्र में अपनी साख स्थापित कर चुके हैं। संत गरीबदास जैसे संतों ने शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे आध्यात्मिक और नैतिक उत्थान का माध्यम भी माना।

योग, आयुर्वेद और वेदांत जैसे विषय भारतीय शिक्षा प्रणाली की अंतरराष्ट्रीय लोकप्रियता को बढ़ा रहे हैं। गरीबदास जी की वाणी, जो "श्री ग्रंथ साहिब" में संकलित है, इन विषयों की प्रासंगिकता को स्पष्ट रूप से प्रकट करती है। वह शिक्षा को मानवता के उत्थान और समग्र विकास के साधन के रूप में देखते थे।

आज जब हिंदी और भारतीय शिक्षा पद्धति वैश्विक स्तर पर प्रभावी हो रही हैं, तो संत गरीबदास जी के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। उनकी शिक्षाएँ यह दर्शाती हैं कि हिंदी और भारतीय शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य केवल ज्ञान का आदान–प्रदान नहीं है, बल्कि समाज और मानवता को बेहतर बनाना भी है। उनका दृष्टिकोण हिंदी भाषा और भारतीय शिक्षा को वैश्विक संदर्भ में और अधिक प्रासंगिक बनाता है।

ब्रह्म विचार :–

भारतीय संस्कृति और साहित्य में संत परंपरा का प्रभाव अत्यंत गहन और व्यापक रहा है। संतों ने धर्म और दर्शन को नई दिशा प्रदान की है और सामाजिक सुधारों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हरियाणा के संत गरीबदास जी का योगदान इसी परंपरा में अद्वितीय है। उनके विचारों में ब्रह्म के स्वरूप और उसकी व्यापकता का विशेष रूप से उल्लेख मिलता है। गरीबदास जी के अनुसार, ब्रह्म एक ऐसा अद्वितीय तत्व है जो अनंत, सर्वव्यापी और प्रत्येक जीव के भीतर विद्यमान है। वह इसे "अविगत" (अज्ञेय), "निरगुण" (गुणातीत), और "सर्वव्यापी" (हर स्थान पर मौजूद) मानते हैं।

गरीबदास जी के विचार गहराई में अद्वैतवाद के दर्शन से मेल खाते हैं। उनके अनुसार, ब्रह्म वही परमतत्व है जो सृष्टि के निर्माण, संचालन और संहार के मूल में है। वह इसे एक चेतन तत्व मानते हैं, जो ज्ञान, प्रकाश और आनंद का स्रोत है। गरीबदास जी कहते हैं :–

"गरीब तेरी साहिबी, समझ न परही मोहि।
येता रूप जिहान जग, कैसे सिरज्या तोहि।।"

उनके विचारों में ब्रह्म केवल एक आध्यात्मिक तत्व नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संरचना का आधार भी है। ब्रह्म की यह परिभाषा उनके समाज सुधारक दृष्टिकोण को भी दर्शाती है। उन्होंने इसे न केवल व्यक्तिगत मोक्ष का साधन माना, बल्कि इसे सामाजिक उत्थान के लिए भी महत्वपूर्ण बताया।

शंकराचार्य के अद्वैतवाद में ब्रह्म को सत्य, चौतन्य और अनंत माना गया है। गरीबदास जी इस दृष्टिकोण को विस्तारित करते हुए ब्रह्म को सभी जीवों के भीतर निवास करने वाला और सभी गुणों से परे बताते हैं। वह इसे अनंत और असीमित मानते हैं। ब्रह्म की व्यापकता और उसकी सर्वसमावेशी प्रकृति को समझाते हुए गरीबदास जी कहते हैं कि यह तत्व प्रत्येक जीव के भीतर विद्यमान है और इसका अनुभव केवल आत्मज्ञान और साधना के माध्यम से किया जा सकता है।

गरीबदास जी का यह दर्शन आज भी समाज के लिए प्रासंगिक है। उनके विचार मानवता के एकत्व,

सामाजिक समरसता, और आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रेरणास्रोत हैं। यह विचार केवल धार्मिक नहीं, बल्कि एक सामाजिक संदेश भी है, जो समाज को एकजुट रखने और उसकी प्रगति सुनिश्चित करने में सहायक है।

जीव विचार :–

संत गरीबदास जी ने जीव और ब्रह्म के बीच के अंशांशी संबंध को बड़ी सटीकता और गहराई से समझाया। उनके अनुसार, जीव ब्रह्म का अंश है, जो एक विशिष्ट उद्देश्य से इस संसार में आता है, और उसका अंतिम लक्ष्य ब्रह्म में विलीन होना है। यह विचार न केवल आध्यात्मिक दृष्टिकोण को उजागर करता है, बल्कि शिक्षा और समाज के विकास के लिए एक व्यापक दृष्टि भी प्रस्तुत करता है।

गरीबदास जी कहते हैं :

"गरीब जीव पीव एक संग है, दमटी मांहि दयाल।
ज्यूं कमला मध्य गंध है, दीपिया रूप रसाल।"

इस पंक्ति में वह यह स्पष्ट करते हैं कि जिस प्रकार कमल के फूल में गंध निवास करती है, उसी प्रकार ब्रह्म का अंश जीव में व्याप्त होता है। यह दर्शन शिक्षा के क्षेत्र में आत्मबोध और आत्मनिर्भरता के महत्व को रेखांकित करता है।

गरीबदास जी के अनुसार, जीवन का सार भक्ति में निहित है। उन्होंने यह कहा कि जब जीव ब्रह्म से जुड़ता है, तब उसकी चेतना उच्चतम स्तर पर पहुँचती है। भक्ति, जो केवल बाहरी क्रियाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि आत्मा के भीतर गहराई से अनुभव किया जाने वाला भाव है, गरीबदास जी के विचारों का केंद्रीय तत्व है।

हिंदी भाषा के माध्यम से गरीबदास जी ने अपने इन विचारों को व्यापक समाज तक पहुँचाया। यह भाषा उनके दार्शनिक विचारों को सहजता और स्पष्टता के साथ व्यक्त करने का माध्यम बनी। उनकी शिक्षाएँ, जो सरल हिंदी में लिखी गई थीं, ने समाज के सभी वर्गों को समान रूप से प्रेरित किया और एकता का संदेश दिया।

आज, जब शिक्षा का उद्देश्य न केवल ज्ञान प्राप्ति है, बल्कि व्यक्तित्व का समग्र विकास है, गरीबदास जी के विचार अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। उनका दर्शन यह सिखाता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक प्रगति नहीं है, बल्कि आत्मा और ब्रह्म के बीच के संबंध को समझना और उसे स्वीकार करना भी है।

इस प्रकार, गरीबदास जी का जीव और ब्रह्म का यह विचार न केवल आध्यात्मिक महत्व रखता है, बल्कि यह हिंदी भाषा और भारतीय शिक्षा पद्धति के वैश्विक संदर्भ में भी एक नई दिशा प्रदान करता है।

माया विचार :–

संत गरीबदास जी ने माया को जीवन की सबसे बड़ी बाधा और आध्यात्मिक प्रगति का सबसे बड़ा शत्रु माना। उनके अनुसार, माया एक मोहिनी है, जो मनुष्य को सत्य और ब्रह्म से विमुख करती है। माया का स्वरूप इतना मोहक है कि यह मनुष्य को उसके वास्तविक उद्देश्य व प्राप्ति से भटका देती है। गरीबदास जी माया की ताकत को इन पंक्तियों में व्यक्त करते हैं :–

"गरीब ऐसी माया मोहिनी, ब्रह्म सरीखा राज।
और चढ़े नहीं पालड़े, कहत आवै लाज।"

उनके अनुसार, माया को समझना और उससे बचना सरल नहीं है। माया सत्व, रज और तम गुणों के

माध्यम से मनुष्य को बाँधती है और पंचतत्वों– जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, और आकाश के द्वारा व्यक्ति को भौतिक संसार में उलझाए रखती है। माया का यह जाल मनुष्य को आत्मिक चेतना से दूर कर देता है और उसे भौतिक सुखों और इच्छाओं के पीछे दौड़ने पर मजबूर करता है।

निष्कर्ष :–

हिंदी भाषा और भारतीय शिक्षा पद्धति ने सदियों से भारतीय समाज और संस्कृति को परिभाषित किया है। बदलते वैश्विक परिदृश्य में, हिंदी भाषा ने अपनी पहचान को न केवल संरक्षित किया है बल्कि इसे और अधिक मजबूत बनाया है। शिक्षा पद्धति, जो एक समय गुरुकुल प्रणाली तक सीमित थी, आज एक वैश्विक स्तर पर पहुँच चुकी है। यह आवश्यक है कि हम इन दोनों पहलुओं को संरक्षित और सुदृढ़ करें ताकि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मजबूत नींव प्रदान कर सके। संत गरीबदास जी ने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय दर्शन, भक्ति परंपरा, और समाज सुधार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने ब्रह्म, जीव, माया, और मोक्ष के बीच गहरे संबंधों को समझाया और माया के मोहजाल से बाहर निकलने के लिए भक्ति का मार्ग सुझाया। उनके विचार आज भी भारतीय शिक्षा और सामाजिक परंपरा को प्रभावित करते हैं। संत गरीबदास का दर्शन, हिंदी भाषा और भारतीय शिक्षा पद्धति को न केवल गहराई देता है बल्कि इसे वैश्विक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक भी बनाता है।

संदर्भ सूची :–

1. गरीबदास, संत, (संपादित संस्करण, 2023), श्री ग्रंथ साहिब।
2. सिंह, एस. (2010), भारतीय दर्शन और संत परंपरा।
3. यादव, आर. (2021), हरियाणा का संत साहित्य।
4. रामजीलाल, डॉ. (2005), भारतीय शिक्षा पद्धति में संतों का योगदान।
5. त्रिपाठी, र. (2018), हिंदी भाषा का विकास और आधुनिक युग, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
6. शर्मा, वी. (2020), भारतीय शिक्षा प्रणाली और वैश्विक संदर्भ, लखनऊ : साहित्य भारती।
7. सिंह, एस. (2017), "हिंदी का वैश्विक परिप्रेक्ष्य", भारतीय भाषा अध्ययन पत्रिका, 35(2), 45–52
8. भारतीय शिक्षा आयोग, (2020), नई शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार : शिक्षा मंत्रालय।
9. गरीबदास, संत, (2023), श्री ग्रंथ साहिब (पृ. 45–50), हरियाणा : संत साहित्य प्रकाशन।
10. यादव, आर. (2021), हरियाणा का संत साहित्य (पृ. 123–128), नई दिल्ली : साहित्य भारती।
11. सिंह, एस. (2010), "भारतीय दर्शन और संत परंपरा", दर्शनिक दृष्टि, 18(2), 34–38
12. रामजीलाल, डॉ. (2005), भारतीय शिक्षा पद्धति में संतों का योगदान (पृ. 89–93), लखनऊ : भारतीय विद्या भवन।
13. शंकराचार्य, आदि. (1998), विवेक चूड़ामणि (पृ. 15–20), वाराणसी : चौखंबा प्रकाशन।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 100-103

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैदिक एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली : एक अध्ययन

पूनम कुमारी, शोधार्थी
JRNRVU, Udiapur

शोध सार :-

हमारे देश में शिक्षा पुरातन है। भारत में शिक्षा की जड़े विदेशी नहीं है ऐसा कोई भी देश नहीं है। जहाँ ज्ञान के प्रति प्रेम इतने प्राचीन समय में उत्पन्न हुआ हो या जिसने इतना स्थायी और शक्तिशाली प्रभाव उत्पन्न किया हो। वैदिक युग के साधारण कवियों से लेकर आधुनिक युग के बंगाली दार्शनिकों तक शिक्षकों और विद्वानों का एक निर्विघ्न क्रम रहा है। 21वीं सदी की पीढ़ी की जरूरतों के अनुसार ज्ञान विवरण के तरीकों को आधुनिक बनाने के लिए स्कूल और विश्वविद्यालय विभिन्न अनूठी प्रथाओं को अपना रहे हैं। इन पद्धतियों और नवीन शिक्षाशास्त्रों ने शैक्षिक संस्थानों को शिक्षार्थियों के कौशल को इस तरह विकसित करने में सक्षम बनाया है कि वे आत्मनिर्भर और महत्वाकांक्षी उपलब्धि हासिल करने में सक्षम हैं।

प्रस्तावना :-

शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है। यह मानव जीवन के जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त तक निरन्तर चलती रहती है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा की 'शिक्ष' धातु से हुई जिसका सामान्य अर्थ सीखना है अर्थात् शिक्षा वह प्रक्रिया है जो ज्ञान प्राप्ति का साधन है। जिस प्रकार साध्य की प्राप्ति शिक्षा के बिना संभव नहीं है। इसी विषय पर आचार्य दण्डी लिखते हैं कि यदि शिक्षा रूपी ज्योति इस संसार में न होती तो चारों ओर अन्धकार ही होता। अर्थात् शिक्षा ज्ञान की वह ज्योति है जो मानव को ही नहीं सम्पूर्ण जगत को भी प्रकाशवान रखती है।

वैदिक शिक्षा प्रणाली :-

प्राचीनकाल में भारतीयों का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा से विकसित बुद्धि ही यथार्थ बल है। उन्होंने दृढ़ता से कहा था कि शिक्षा कल्पवृक्ष के समान हमारे समस्त मनोरथों को सिद्ध करती है। विद्या के बिना मनुष्य पशु समझा जाता था। प्राचीन काल में शिक्षा का तात्पर्य उस अर्न्तज्योति और शक्ति से था जिससे मानव के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मिक बलों का संतुलित विकास हो सकता था।

जो मनुष्य विद्या और अविद्या अर्थात् मौर्पासना से मृत्यु को तरके विद्या अर्थात् ज्ञान से मोक्ष प्राप्त होता है। विद्या के विषय से वेदों में बहुत कुछ कहा गया है। भारतीय दार्शनिकों ने कहा है कि सच्ची संस्कृति वह है जो परलोक और इहलोक, अध्यात्म और भौतिक जीवन, आत्मा और शरीर इन सबका समान रूप से हित और

कल्याण सम्पादित करती है। यही कारण है कि ऋषियों ने यह प्रतिपादित किया था कि संसार का जो प्रत्यक्ष जीवन है उसको जाने बिना मनुष्य सर्वदर्शी नहीं हो सकता। वैदिक संस्कृति के अनुसार मनुष्य जहाँ धर्म, अर्थ और काम को प्राप्त कर सकता है साथ ही साथ मोक्ष को अपना अंतिम उद्देश्य मानता है।

वैदिक शिक्षा अर्थात् वेदों के अनुसार शिक्षा का अर्थ ज्ञान अथवा विद्या की प्राप्ति है। वेदों के आधार पर शिक्षा, ज्ञान, आत्मा व ब्रह्म की खोज है। शिक्षा का उद्देश्य आत्मानुभूति व आत्मबोध है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली :-

वर्तमान शिक्षा प्रणाली कुछ सीखकर अपने में पूर्ण बनाती है। इसी दृष्टि से शिक्षा को मानव जीवन की आँख भी कहा जाता है। वह आँख जो मनुष्य को जीवन के प्रति सही दृष्टि प्रदान कर उसे इस योग्य बना देती है कि वह भला–बुरा सोचकर प्रगतिशील कार्य कर सकें।

वैदिक शिक्षा एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली के उद्देश्य :-

वैदिक शिक्षा प्रणाली	वर्तमान शिक्षा प्रणाली
• वैदिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति एवं मोक्ष के लिए वातावरण तैयार करना था।	• वर्तमान शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण करना है।
• वैदिक शिक्षा में चरित्र निर्माण करना भी मुख्य उद्देश्य था।	• वर्तमान शिक्षा में चरित्र निर्माण गौण उद्देश्य हो गया है।
• वैदिक शिक्षा के अंतर्गत जीविकोपार्जन शिक्षा का अन्य अन्य मुख्य उद्देश्य था।	• वर्तमान शिक्षा में निश्चित स्तर की शिक्षा दी जाती है, जो जीविकोपार्जन हेतु पूर्ण नहीं है।
• वैदिक शिक्षा का उद्देश्य वसुधैव कुटुम्बकम की भावना का विकास करना था।	• वर्तमान शिक्षा में वैश्वीकरण की भावना के अंतर्गत शिक्षा, तकनीकी और व्यापार के क्षेत्र में समावेश करना है।
• वैदिक शिक्षा का उद्देश्य वैदिक संस्कृति का संरक्षण और विकास करना था।	• वर्तमान शिक्षा का उद्देश्य बहु सांस्कृतिक संस्कृति को बनाए रखना इसका उद्देश्य है।
• वैदिक शिक्षा सह अस्तित्व पर आधारित थी।	• वर्तमान शिक्षा व्यक्तिगत विकास पर आधारित है।
• विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर गुरु द्वारा अपनी बात प्रस्तुत की जाती थी।	• शैक्षिक वातावरण को ध्यान में रखकर शिक्षक द्वारा अपनी बात किया जाना।
• वैदिक शिक्षा में आध्यात्मिक शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित थे जैसे– प्रातः सभाओं में प्रार्थना एवं योग इत्यादि।	• वर्तमान शिक्षा में आध्यात्मिक शिक्षा का कोई उद्देश्य निर्धारित ही नहीं है।
• वैदिक शिक्षा के उद्देश्य आदर्शवादी थे।	• वर्तमान शिक्षा के उद्देश्य व्यावहारिक है।
• वैदिक शिक्षा क्रिया केन्द्रित नहीं थी।	• वर्तमान शिक्षा क्रिया केन्द्रित है।

वैदिक एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली का पाठ्यक्रम :-

वैदिक शिक्षा प्रणाली का पाठ्यक्रम	वर्तमान शिक्षा प्रणाली का पाठ्यक्रम
• वैदिक शिक्षा प्रणाली का पाठ्यक्रम का निर्माण गुरु के द्वारा स्वयं ही किया जाता था और गुरु समय की मांग के अनुसार पाठ्यक्रम का निर्धारण कर लेते थे। इस काल में पाठ्यक्रम का आधार स्थानीय मांग होती थी।	• वर्तमान शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम का निर्माण राष्ट्रीय एवं प्रदेशीय शिक्षा के पाठ्यक्रम का निर्माण स्थानीय एवं राष्ट्रीय मांगों के अनुरूप किया जाता है, जिसमें लगभग 42 परिषद् संलग्न है।
• वैदिक शिक्षा प्रणाली का पाठ्यक्रम धार्मिक आध्यात्मिक एवं भौतिक था।	• वर्तमान शिक्षा प्रणाली का पाठ्यक्रम भौतिक मात्र है।
• वैदिक शिक्षा प्रणाली में विभिन्न वर्गों के लिए अलग–अलग शिक्षा का पाठ्यक्रम निर्धारण किया जाता था जैसे – ब्राह्मणों के लिए पुरोहिततीय शिक्षा, क्षत्रियों के लिए सैनिक शिक्षा एवं वैश्यों के लिए कृषि एवं व्यावसायिक शिक्षा देने का प्रावधान था।	• वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम किसी भी वर्ग विशेष के लिए निर्धारित न होकर विद्यार्थी की इच्छा एवं योग्यता पर निर्भर करता है। वह स्वेच्छा से अपनी विषयों का चयन कर सकता है।

वैदिक एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली की व्यवस्था :-

वैदिक शिक्षा प्रणाली	वर्तमान शिक्षा प्रणाली
• वैदिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का स्थान गुरुकुल होता था जहाँ शिक्षार्थी अपना समस्त शैक्षिक कार्य पूरा करता था।	• वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अन्दर गुरुकुल शिक्षा का स्थान समाप्त हो गया है।
• वैदिक काल में शिक्षा वर्ग विशेष के लिए थी और शिक्षार्थी की आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए गुरुकुल सक्षम थे।	• वर्तमान काल में शिक्षा सर्वजन के लिए है। इसी कारण विद्यालयों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है।
• वैदिक शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल सम्पूर्ण विकास के स्थान थे।	• वर्तमान शिक्षा प्रणाली में एक निश्चित स्तर की शिक्षा का ही प्रावधान है।

निष्कर्ष :-

वैदिक शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति था। मोक्ष की प्राप्ति के लिए जप–तप, व्रत, ध्यान एवं हवन आदि क्रियाओं का वातावरण तैयार करना था, जबकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है। वैदिक शिक्षा का पाठ्यक्रम धार्मिक, आध्यात्मिक एवं भौतिकता पर आधारित था जबकि वर्तमान में केवल मात्र भौतिकता ही है। पाठ्यक्रम में विद्यार्थी की रूचियों एवं इच्छा अनुरूप संगठित किया गया है। वैदिक शिक्षा प्रणाली में क्रियात्मक विकास के लिए व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक शिक्षा का अभाव था जबकि वर्तमान प्रयोगात्मक शिक्षण विधि जैसे प्रदर्शन, योजना विधि, कम्प्यूटर अनुदेशन, प्रयोगशाला आदि पर अत्यधिक सकेन्द्रण है। वैदिक शिक्षा में शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध पिता–पुत्र समान थे जबकि वर्तमान में यह सम्बन्ध व्यक्तिगत एवं जिम्मेदारी मुक्त तथा मात्र वेतनभोगी है। अतः कहा जा सकता है कि वैदिक काल में समाज का स्वरूप पारिवारिक था जबकि वर्तमान में यही सम्बन्ध भौतिकता पर आधारित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. अरविन्द 'शिक्षा के आयाम' पाण्डिचेरी।
2. अग्रवाल, एस. के. : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, मॉडर्न पब्लिकेशन, मेरठ।
3. चौबे, एस. पी. : भारतीय शिक्षा का इतिहास, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. हॉर्न एच. ए. : दी साइकोलॉजिकल प्रिंसीपल्स ऑफ एजूकेशन, मैकमिलन पब्लिकेशन, न्यूयॉर्क।
5. कबीर, हुमायूँ : इंडियन फिलॉसफी ऑफ एजूकेशन, बॉम्बे एशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
6. पाण्डेय, राजकली : हिन्दू धर्मकोश, हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।
7. पाण्डेय, रामशकल : शिक्षा की ऐतिहासिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 104-106

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा एवं भारतीय शिक्षा पद्धति : प्राचीन नवीन के संदर्भ में

पूनम

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक।

शोध सार :-

भाषा जो स्वयं में महान् होती है जिसके माध्य से हम अपने विचारों का आदान–प्रदान करते हैं, संप्रेषण का मूल रूप भाषा ही होती है, विश्व स्तर के संदर्भ में देंखें तो हिन्दी भाषा वर्तमान समय में अपने उच्च शिखर पर पहुँच गई है, हिन्दी भाषा का उच्च स्तर पर पहुँचना भारत के लिए गर्व का क्षण है।

जब हमारे प्रधानमंत्री जी विश्व सम्मेलनों में जाकर हिन्दी में अपना भाषण व्यक्त करते हैं तो भारतवासियों के लिए वह क्षण गौरवान्वित करने वाला होता है।

विश्व स्तर पर चाहे कितनी भी भाषाएँ बोली जाएं, परंतु हिन्दी भाषा आत्मा तक उतर जाती हैं, हमारी हिन्दी हृदय के भाव उजागर करती है जिसमें बनावटीपन नहीं होता।

शिक्षा पद्धति की बात करें तो उसकी शुरूआत ही हमारी मातृभाषा (हिन्दी) से होती है। प्राचीन समय में वैदिक संस्कृत, अपभ्रंश, शौरसेनी जैसी भाषाएं बोली जाती थी, इसी भाषा में गुरूकुलों में शिक्षा भी दी जाती थी। भगवान् श्रीकृष्ण, श्रीराम जी और भी अनेकों विद्वान् एवं महापुरूषों ने इन भाषाओं में अपना अध्ययन किया है और वहीं से आरंभ हुआ हमारी हृदयवासिनी हिन्दी भाषा का। हमारे ग्रंथ, वेद, पुराण आदि संस्कृत भाषा में लिखे गए 'रामायण' 'महाभारत' तो इसके प्रत्यक्ष उदाहरण है।

हिन्दी भाषा का विकास एक साधारण बिन्दु नहीं रहा इसका विकास बहुत व्यापक रूप में हुआ है। भारत की शिक्षा पद्धति तो हिन्दी के बिना अधूरी ही है। भारतीय शिक्षा पद्धति का विस्तार हिन्दी भाषा ही है।

भूमिका :-

हम सभी जानते हैं कि भाषा एक–दूसरे के विचारों का आदान–प्रदान का माध्यम होती है। भाषा जितनी स्पष्ट सरल तथा भावों से भरी होगी, हमारा संप्रेषण माध्यम उतना महत्वपूर्ण तथा सफल होगा। वर्तमान समय में हिन्दी भाषा का स्तर उच्च शिखर पर है। वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा संपर्क भाषा के रूप में प्रचलित हुई है।

हिन्दी भाषा भारतवर्ष की भाषा ही नहीं अपितु संस्कार एवं संस्कृति का आधार भी है। भारत के साथ–साथ विदेशों में भी हिन्दी भाषा का अपना वर्चस्व है। देश के प्रत्येक क्षेत्र में हिंदी को संस्कारों एवं संस्कृति से जोड़ा जाता है। यह मात्र एक भाषा नहीं अपितु हृदय की भावना भी है।

प्राचीन समय में हिन्दी का स्वरूप एवं शिक्षण पद्धतियाँ :-

हिन्दी का स्वरूप शौरसेनी और अर्धमागधी अपभ्रंशों से विकसित हुआ माना जाता है। लगभग एक हजार वर्ष पूर्व इस भाषा को पहचान मिलनी आरंभ हुई। बाद में और विकसित होकर आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के रूप में अभिहित हुई।

सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक 'डॉ. हरदेव बाहरी' के शब्दों में - 'हिन्दी' साहित्य का इतिहास' :-

''हिन्दी का आरंभ वैदिक काल से ही माना जाता है जब हमारी वैदिक भाषा हिन्दी न होकर संस्कृत थी। युग बदले और वर्तमान में हिन्दी की एक प्रमुख भूमिका बन गई।''

प्राचीन शिक्षण पद्धति की बात करें तो उस समय औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों ही प्रकार से शिक्षा ग्रहण की जाती थी।

विद्यार्थियों को अपने घर से दूर किसी शांत अरण्य के आश्रम या गुरूकुल में अपने गुरू के चरणों में बढ़कर शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती थी। गुरू का सानिध्य सर्वोपरि माना जाता था।

इस प्रकार की शिक्षण प्रणाली में गुरू अपने प्रत्येक विद्यार्थी पर पर्याप्त ध्यान देते थे।

मौखिक रूप से मंत्रोचारण श्लोकों का उच्चारण करते हुए विद्यार्थी औपचारिकता का भी पालन करते थे।

हमारी वैदिक संस्कृत भाषा में ही शिष्य मौखिक रूप में स्मरण करते हुए ज्ञान प्राप्त करते थे। प्राचीन सयम की शिक्षा पद्धति के नियम होते थे जिन पर सभी विद्यार्थियों को चलना पड़ता था। उस समय दिया जाने वाला ज्ञान दो प्रकार का होता था।

1. परा विद्या – आत्म साक्षात्कार।
2. अपना विद्या – वेदों का ज्ञान।

इस तरह से प्रारंभ से ही एक विद्यार्थी श्रवण, चिंतन, मनन एवं अभ्यास को ग्रहण कर लेता था। विद्यार्थियों को प्रारंभ में ही अपनी वैदिक भाषा में शिक्षा दी जाती थी ताकि जीवन के पथ पर आगे बढ़कर विद्यार्थी संपूर्ण ज्ञानी बन जाए।

प्राचीन समय में शिक्षा मात्र नौकरी पाने या परीक्षा देने हेतु नहीं दी जाती थी, उस समय तो शिक्षा सर्वांगीण थी, अर्थात् व्यक्तित्व का समग्र विकास– शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक आदि।

धीरे–धीरे समय में परिवर्तन आया और वैदिक संस्कृत, अपभ्रंश आदि से गुजरती हुई हमारी हिन्दी भाषा हमारे समक्ष आयी और इस तरह से ही शिक्षण पद्धतियाँ भी विकसित होती चली गई।

प्राचीन से लेकर वर्तमान तक भाषा ने अपना नवीन स्वरूप पाया और भाषा की नवीनता के साथ–साथ शिक्षण प्रणाली में भी नवीन रूप अपनाया। वर्तमान सयम में विद्यार्थियों को प्रारंभ से ही मातृभाषा में शिक्षा दी जाने लगी है जो आगे चलकर अपनी राष्ट्रीय भाषा हिन्दी का रूप ग्रहण कर लेती है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी का स्वरूप एवं नवीन शिक्षण पद्धतियां :-

विश्व स्तर पर हिन्दी भाषा एक संपर्क भाषा के रूप में विस्तृत हुई है। विदेशों में हिन्दी ना केवल भाषा है अपितु संस्कार भी है जब कोई व्यक्ति हाथ जोड़कर नमस्कार करता है तो वह मात्र भाषा नहीं संस्कारों को भी प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार के क्षण भारतीयों के लिए गौरवपूर्ण होते हैं, तथा भावों से भरे होते हैं।

वर्तमान में विश्व के लगभग 45 से अधिक देशों के विभिन्न विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा में पठन–पाठन होता है। विदेशों में हिन्दी भाषा को विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। हमारी भारतीय शिक्षा पद्धति में संस्कृत भाषा से जन्म लेने वाली हिन्दी भाषा का प्रमुख स्थान है। वर्तमान समय की शिक्षण पद्धति में विद्यार्थियों की प्राथमिक शिक्षा से ही भाषा पर ध्यान दिया जाने लगा है। प्रारंभ में विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा में शिक्षा दी जाने लगी है। धीरे–धीरे बालक हिन्दी भाषा के विस्तृत स्वरूप से परिचित होने लगता है। वर्तमान समय में हमारी हिन्दी भाषा भारतीय कक्षा कक्षों से निकलकर विश्व के अनेकों देशों के कक्षा कक्षों में अपनी भूमिका निभा रही है। जैसे :–

नेपाल, भूटान, म्यांमार, मलेशिया, थाईलैंड आदि।

उपरोक्त देशों के साथ–साथ और भी बहुत सारे ऐसे देश हैं जिनमें हिन्दी भाषा वहां के साहित्य से लेकर संस्कृति एवं संस्कारों में झलकती है। 'डॉ. भोलानाथ तिवारी' के शब्दों में – ''हिन्दी मात्र एक सामान्य भाषा ही नहीं अपितु भावों, संस्कारों, संस्कृति का स्वरूप है।''

यह हमारे लिए बहुत ही गर्व की बात है कि हिन्दी भाषा जो भावों की भाषा कहीं जाती है वो केवल भारत ही नहीं विदेशों के साहित्य में भी स्तंभित हो रही है।

विश्व का सबसे बड़ा देश अमेरिका भी इससे अलग नहीं है। वहां के विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा को एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। इस प्रकार दुनिया के अनेकों देशों में यह एक विषय बनकर उभरी है। अनेकों शोधकर्ताओं का शोध विषय बन रही है। विश्व स्तर पर विद्यार्थियों के लिए मातृभाषा से लेकर वैश्विक स्तर तक महत्वपूर्ण माध्यम बनी हुई है। वर्तमान समय में भाषा शिक्षण पद्धति तकनीकी का सहारा लेकर और भी नए रूप में विकसित हो रही है। कम्प्यूटिंग प्रणाली इसका मुख्य उदाहरण है जिसके कारण हिन्दी भाषा को नवीन पहचान मिली।

निष्कर्ष :–

अंततः कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा मातृभाषा के साथ–साथ विश्व की संपर्क भाषा भी है। देश ही नहीं विदेशों में भी हिन्दी भाषा का वर्चस्व स्पष्ट दिखाई देता है। जैसे– ''एक छोटी बच्ची माता संस्कृत की गोद से उतरकर विश्व में अपना परचम लहरा रही है। यह हमारी हिन्दी है। जो विश्व में नाम कमा रही है।''

संदर्भ सूची :–

1. श्रीमति विनीता पाण्डेय, डॉ. राम किंकर पाण्डेय ''वैश्विक परिदृश्य में हिंदी का स्वरूप'' (लेख)
2. डॉ. 'मंजु रानी' ''हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य'' (मानसरोवर प्रकाशन, नोएडा)
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' (नागरी प्रचारिणी सभा)
4. डॉ. भारती पाण्डेय ''हिन्दी व्याकरण'' (कॉरडोवा पब्लिकेशन)

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 107-110

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय शिक्षा पद्धति में स्वामी ब्रहमानन्द सरस्वती का योगदान

प्रवीन कुमारी

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा)

भारत एक बहु–भाषी देश है। जहाँ सबसे अधिक बोलियाँ, भाषाएँ, धर्मकला, विचार और जीवन–दर्शन इत्यादि इन्द्रधनुषी रंग बिखेरे हैं। इसलिए यहाँ एक कहावत प्रचलित है :–

''कोस–कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बाणी।''

विविधता में एकता के सूत्र में बंधा यह देश अनेक राज्यों, जातियों, भाषाओं और संस्कृतियों को अपने में समाहित किए हुए लगातार अपनी विकास यात्रा में गतिशील है। अपनी इस विकास यात्रा के दौरान भारत अनेक उतार–चढ़ाव के दौर से गुजरा है। इसमें एक दौर भारतीय संस्कृति की वैश्विक स्वीकार्यता एवं सार्वभौमिकता का, दूसरा दौर विश्व सभ्यताओं के भारतीय संस्कृति में सम्मिश्रण का तथा तीसरा और वर्तमान दौर भारतीय संस्कृति का वैश्विक संस्कृति के रूप में प्रतिस्थापित होने के लिए प्रयासरत होने को कहा जा सकता है।

भारत सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं के कारण प्राचीनकाल से ही विश्व में अपनी पहचान बनाए हुए है। इक्कीसवीं सदी में भारतीयों ने वैश्विक मंच पर अपनी पहुँच से भारत की इसी पुरानी पहचान में नए उपादान जोड़े है। आज संसार में सभी जगह भारत, भारतीयता एवं भारतीय संस्कृति की बढ़ती पहुँच भारत की वैश्विक स्वीकार्यता का प्रतीक है। विश्व में भारतीयता की इन्हीं बढ़ती पद्चापों को भारतीय भाषाओं ने प्रतिध्वनि एवं प्रतिमान दिए हैं, जिनके परस्पर सम्मिश्रण एवं संचरण ने भारतीय संस्कृति को और अधिक विस्तार दिया है। भारतीय संस्कृति के इस विस्तार में अन्य कारकों के साथ–साथ भारतीय भाषाओं का भी विस्तार हुआ है।[1] यदि हम वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी का प्रयोग करने वालों की स्थिति का अवलोकन करें तो पाते हैं कि वर्ष 1952 ई0 में हिन्दी विश्व में पांचवे स्थान पर थी जबकि 1980 ई0 के आस–पास वह चीनी और अंग्रेजी के बाद तीसरे स्थान पर आ गयी। वर्ष 1991 की जनगणना में हिन्दी को मातृभाषा घोषित करने वालों की संख्या के आधार पर पाया गया कि इसकी संख्या पूरे विश्व में अंग्रेजी भाषियों की संख्या से कहीं अधिक है। इसी संबंध में भाषाविद् जयंती प्रसाद नौटियाल, जिन्होंने लगातार 20 वर्ष तक भारत और विश्व में भाषाओं सम्बन्धी विभिन्न अध्ययन प्रस्तुत किये हैं, का कहना है :–

''विश्व में हिन्दी का प्रयोग करने वालों की संख्या चीन से भी अधिक है और हिन्दी अब प्रथम स्थान पर है। उसने अंग्रेजी समेत विश्व की अन्य सभी भाषाओं को पीछे छोड़ दिया है।[2]

भारतीय भाषा विशेषकर हिन्दी की वैश्विक स्वीकार्यता के पीछे भारत में हिन्दी भाषा के क्रियान्वयन एवं

विकास के लिए स्थापित संस्थाओं, समितियों यथा केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, आगरा महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा इत्यादि के द्वारा विदेशी छात्रों के लिए हिंदी भाषा के प्रशिक्षण के लिए संचालित पाठ्यक्रमों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। ये सभी संस्थान मिलकर प्रतिवर्ष सैंकड़ों विदेशी छात्रों को हिन्दी भाषा में पारंगत करके विश्व मंच पर हिंदी के वैश्विक दूत तैयार करते हैं। जो कि अपने–अपने देशों में हिंदी और भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि के रूप में हिन्दी भाषा की वैश्विक परिधि का निर्माण कर रहे हैं। वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाओं के बढ़ते वर्चस्व के पीछे का एक बड़ा कारण भारतीय संस्कृति के प्रति विदेशियों का अनुराग भी है। वे भारतीय समाज एवं संस्कृति को और अधिक नजदीक से जानने एवं समझने के लिए यहाँ की भाषा को सीखना चाहते हैं। एक अनुमान के मुताबिक सम्पूर्ण विश्व में लगभग 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी तथा भारतीय भाषाओं का अध्ययन, अध्यापन किया जा रहा है। भारतीय भाषाओं के इस वैश्विक विस्तार एवं स्वीकार्यता के लिए यह अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। वस्तुतः कहा जा सकता है कि 27 अध्यायों में विभाजित नई शिक्षा नीति बहुत व्यापक एवं बड़े विजन को स्वयं में समाहित किए हुए है। इसके व्यापक उद्देश्यों को ध्यान में रखकर कहा जा सकता है कि भारतीय स्वतन्त्रता के पश्चात् यह ऐसी पहली शिक्षा नीति है जिसका निर्माण भारतीय समाज एवं संस्कृति की आकांक्षाओं के अनुरूप किया गया। यद्यपि इससे पहले भी विश्व पटल पर भारत एवं भारतीयता की सकारात्मक छवि रही है किंतु समकालीन समय भारतीयों की वैश्विक उत्कृष्टता के लिए स्वर्णिम समय के रूप में उभरकर सामने आया है। भारतीयों भाषाओं की यह वैश्विक स्वीकार्यता भारत को विश्व से एवं विश्व को भारत से जोड़ने हेतु समन्वय सेतु का निर्माण कर रही है, जिसमें हिन्दी इन सभी भाषाओं की सिरमौर बनकर उभर रही है।[3]

हिन्दी के विकास और विस्तार की कहानी बड़ी रोचक और उतार–चढ़ाव से भरपूर है। मध्यकाल की शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित पश्चिमी हिन्दी से निःसृत खड़ी बोली का विकास आधुनिक काल में हुआ। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान हिन्दी ने देश को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य किया। भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में पूरे देश को जोड़ने में हिन्दी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। ''स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी और लोकभाषाओं की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वाधीनता की बलि वेदी पर न्यौछावर होने की लौ जो देशवासियों के भीतर जगाई गई, वह हिन्दी भाषा के माध्यम से भी जगाई गई थी। क्योंकि इस संग्राम में हर तबके, हर भाषा और विभिन्न संस्कृतियों के जानने वाले लोग थे, जिनके मध्य संचार और व्यवहार का कार्य हिन्दी ही करती थी। स्वाधीनता संग्राम में सामान्य जन की भागीदारी महत्वपूर्ण रही है विशिष्ट लोगों का कार्य दिशा–निर्देशन करना एवं उन्हें सही व गलत राह की पहचान कराना था। भारत में स्वाधीनता की जो लौ जलाई गयी, वह मात्र राजनैतिक स्वतन्त्रता के लिए ही नहीं थी वरन् सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा के लिए भी प्रमुख थी। भारत में साहित्य संस्कृति और हिन्दी एक–दूसरे के पर्याय रहे हैं। ऐसा कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।''[4] हिन्दी के विकास का श्रेय जितना हिन्दी भाषी क्षेत्रों के विद्वानों का रहा है उससे कम अहिंदी भाषी विद्वानों का नहीं रहा है। इनमें से कई विद्वानों ने तो हिन्दी को देश की प्रमुख भाषा के रूप में स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बहुत सारे अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के विद्वानों ने न केवल हिन्दी को अपनाया वरन् उन्होंने हिंदी को राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित भी कराना चाहा और सभी जगह घूम–घूमकर हिन्दी का बिगुल बजाया साथ ही विदेशों में भी जाकर हिन्दी की पुरजोर वकालत की और अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में हिन्दी का परचम लहराया। इस संबंध में

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने मातृभाषा हिन्दी के विशय में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा :–

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।''

नर–नारी एक–दूसरे के पूरक हैं। वैदिक काल में पुरूषों की तरह स्त्रियों को भी स्वतन्त्रता थी। जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवताओं का वास रहता है, जहाँ नारियों की पूजा नहीं होती, वहाँ सारी क्रियाएं निष्फल हो जाती हैं।[5] युग–युगान्तर से नारी जागरण को कभी सफलता मिली है कभी असफलता। दासता का युग नारी जाति के लिए अन्धकार का युग था। महर्षि दयानन्द और आर्य समाज, ब्रह्म समाज, देव समाज और थियोसोफिकल सोसायटी के प्रारम्भ के साथ भारत पुनः नारी जागरण का सूत्रपात हुआ। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नारी जाति की शिक्षा पर विशेष बल दिया। इसी परम्परा में सन्त ब्रह्मनन्द सरस्वती जी का आविर्भाव हुआ। स्वामी जी ने इस परम्परा का पालन तन–मन–धन से किया। वे कहते हैं :–

''माता–पिता गुरू, इन तीनों से विद्या शुरू।
इन तीनों को जो फटकारे, वे फिरते हैं मारे–मारे।।
ब्रह्मानन्द जी करें विचार, इनके बिना न नैया पार।
जो तुम चाहो भव से तरना, ले लो ओइम गुरु जी की शरणा।।''[6]

जिस प्रकार भगवान् गौतम बुद्ध सम्बोधित प्राप्त करके विश्व के कल्याण के लिए समाज में लौट पड़े उसी प्रकार सन्त ब्रह्मनन्द का भी तप करके, आत्म साक्षात्कार करके समाज में पुनरागमन हुआ। वे अत्यन्त करूणामय थे। समाज में व्याप्त कुरीतियों को देखकर समाज–सुधार के लिए पचरंगा झंडा लेकर मैदान में कूद पड़े। उनके समाज–सुधार के कार्यक्रम के कई रूप थे। सर्वप्रथम इन्होंने शिक्षा के प्रचार पर विशेष बल दिया। दूसरे पर्यावरण का सुधार, वृक्षारोपण एवं यज्ञों के द्वारा करने का प्रयत्न किया। स्वामी जी ने विचार किया कि आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा पद्धति, भारतीय समाज और परिस्थितियों के अनुकूल नहीं है। यह केवल नौकरी करना और उदरपूर्ति करना सिखाती है। आज बेरोजगारी की समस्या भयंकर रूप धारण कर रही है। उन्होंने अपने 'विश्व साम्यवाद दल' में रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और स्वास्थ्य पर बल दिया है। आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के द्वारा मानव के जीवन का सांस्कृतिक पक्ष अछूता रह जाता है। भारत का आदर्श यह रहा है– 'सा विद्या या विमुक्तये'[7] जो व्यक्ति और समाज में सभी प्रकार की सांसारिक चिन्ताओं से मुक्त रखकर, अन्त में मुक्ति प्रदान करे, वही विद्या है। सन्त जी ने यह विचार किया कि भारतीय प्राचीन ऋषि–मुनियों की सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक परम्परा को लोग भूलते जा रहे हैं।

उन्होंने इस तथ्य को दृष्टि में रखकर, इस प्राचीन भारतीय परम्परा को पुनर्जीवित करने के लिए अनेक व्याख्यान दिए। उन्होंने पाठशालाओं, गुरूकुलों और आश्रमों की स्थापना करके शिक्षा का प्रचार और प्रसार किया। विशेषकर वे नारी जाति की शिक्षा के प्रति बड़े चिन्तित रहते थे। उन्होंने नारी समाज शिक्षा के लिए, कुछ कन्याओं को प्रशिक्षित करके समाज–शिक्षा के प्रचार के लिए स्थान–स्थान पर भेजा। उन्होंने भर्तृहरि के 'नीतिशतक' के अनुसार विद्या के महत्त्व को बताया– विद्या गुरुणां गुरू[8], विद्या गुप्त धन है, जिसे चोर चुरा नहीं सकता, भाई बांट नहीं सकता। यह खर्च करने से अधिक बढ़ती है। विद्या धनं सर्वधनं प्रधानम। पंचतन्त्र में भी कहा गया है कि राजा का सम्मान तो अपने ही राज्य में होता है। 'विद्वान सर्वत्र पूज्यते' अर्थात् विद्वान की पूजा सर्वत्र

होती है। शिक्षा के अभाव में चेतन मनुष्य भी जड़–जन्तु के समान है। वह आंखें होते हुए भी अन्धा है। मनुष्य विद्या के द्वारा चार पुरूषार्थों चतुष्टय–धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। स्वामी जी के शिष्य शिवानन्द सरस्वती ने लेखक को बताया कि उन्होंने एक यज्ञ में सह–शिक्षा का समर्थन करते हुए कहा कि– बालक–बालिकाओं को इकट्ठा पढ़ाओ, क्योंकि गलियों, खेतों, रेलों–बसों और मेलों में भी वे इकट्ठा रहते हैं। कम से कम पांच जमात तो उन्हें अवश्य पढ़ाना चाहिए। सन्त ब्रह्मनन्द जी स्वाध्याय पर बल देते थे। इसलिए उन्होंने गुरूकुल ओइमपुरा और फतेहपुर–पुण्डरी के आश्रम में पुस्तकालय भी खोले थे। वीतरागी सन्त ब्रह्मनन्द जी गौपालक और गौवंशवर्धक थे। उन्होंने अनेक ऐसे गौवध निवारक नियमों का निर्माण किया था। सन् 1947 में गुरुकुल ओमपुरा में, उन्होंने सबसे पहली आदर्श गोशाला की स्थापना की।

आज उनके अनेक आश्रमों में गौशालाएँ विद्यमान हैं। यज्ञों की महिमा का प्रचार करते हुए सन्त जी बताते हैं कि यज्ञ आर्यधर्म की प्रमुख विशेषता है। प्राचीन काल से ही भारत में बड़े–बड़े यज्ञ होते आए हैं। यज्ञ सनातन धर्म और वैदिक संस्कृति के मूलाधार हैं, जिसके बिना विवाह आदि अनेक संस्कार सम्पन्न नहीं हो सकते। वीतरागी सन्त ब्रह्मनन्द का यज्ञों का आयोजन करना एक मिशन था। उनका विचार था, जब तक यज्ञ होते रहेंगे, पर्यावरण प्रदूषण कम होता रहेगा और धरती पर सुख–शांति रहेगी। जिस दिन यज्ञ करना बन्द हुआ, उस दिन इस धरती पर विनाश का ताण्डव–नृत्य होने लगेगा। इसीलिए कुरुक्षेत्र के महायोगी सन्त ब्रह्मनन्द ने वैदिक ऋषियों की इस परम्परा का निर्वाह करते हुए जनता में यज्ञों के प्रति अधिक से अधिक रुचि उत्पन्न करने के लिए, अपने जीवनकाल में लगभग 200 अखिल विश्व कल्याणकारी शान्ति महायज्ञ समस्त भारतवर्ष में विधिपूर्वक सम्पन्न किये। इस प्रकार स्वामी ब्रह्मानन्द जी का हिन्दी भाषा के प्रचार और प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान है।

सारांश रूप में कहा जाता है कि भारतीय भाषाओं की वैश्विक स्वीकार्यता भारत को विश्व से एवं विश्व को भारत से जोड़ने हेतु समन्वय सेतु का निर्माण कर रही है जिसमें हिन्दी इन सभी भाषाओं की सिरमौर बनकर उभरी है। निश्चित रूप से हिन्दी आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान की मोहताज नहीं है वरन् उसने विश्व परिदृश्य में एक नया मुकाम हासिल किया है।

संदर्भ सूची :–

1. नई शिक्षा नीति 2020 मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
2. साहित्य अमृत सितम्बर, 2010 पृ0–39
3. दीक्षित, सूर्यप्रकाश, विश्व पटल पर हिन्दी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. साहित्य अमृत सितम्बर 2010, पृ0–38
5. डॉ0 बाबूराम, संत ब्रह्मानन्द सरस्वती ग्रंथावली, पृ0–67
6. श्री सतगुरू ब्रह्मानन्द पचासा, पद–65, पृ0–13
7. कल्याण (उपनिशद् अंक), पृ0–54
8. भृर्तहरि, नीतिशतक, 20
9. आकाशवाणी कुरुक्षेत्र से 6–6–1993 विश्व पर्यावरण संरक्षण–दिवस के आधार पर।
10. डॉ0 बाबूराम, संत ब्रह्मानन्द सरस्वती ग्रंथावली, पृ0–31

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 111-113

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिन्दी भाषा ने आलोचना की उपादेयता

प्रियंका दहिया

शोधार्थी, भाषा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा)

शोध सार :-

हिंदी की विभिन्न विधाओं की तरह आलोचना का विकास भी प्रमुख रूप से आधुनिक काल की देन है लेकिन आज जो हिंदी आलोचना का स्वरूप है। उसका आरंभ आधुनिक हिंदी साहित्य के साथ–साथ हुआ है। हिंदी आलोचना आज एक स्वतंत्र और समृद्ध गद्य विधा के रूप में विकसित है। इक्कीसवीं सदी के अत्यंत महत्वपूर्ण आलोचक आचार्य करुणाशंकर उपाध्याय का आलोचना साहित्य अत्यंत गहन और व्यापक दृष्टि से पूर्ण है। आचार्य करुणाशंकर उपाध्याय के आलोचनात्मक कृतित्व से हिंदी जगत सुपरिचित है।

बीज शब्द :- हिंदी भाषा, आलोचना, उपादेयता, उपयोग, समृद, स्वतंत्र, कृतित्व।

मूल आलेख :-

आलोचना शब्द अंग्रेजी भाषा के क्रिटिसिज्म शब्द का पर्यायवाची है– जिसका अर्थ है किसी साहित्यिक या अन्य कृति की आलोचना करने वाला लेख या निबंध, विस्तृत मूल्यांकन, समीक्षा।

आलोचना की परिभाषाएं :-

आलोचना शब्द 'लोच' धातु से बना है, जिसका अर्थ है देखया। साहित्य के विश्व प्रसिद्ध आलोचक 'रोमन याकोक्सन' ने कहा था – "अगर मनुष्य ना होता, तब भी दुनिया होती। इसी तरह आलोचना के होने से ही दुनिया सुंदर और बेहतर बनी है। इसी प्रकार आलोचना के होने से ही साहित्य विकासशील बना है। वार्सफिल्ड के अनुसार, "आलोचना कला और साहित्य के क्षेत्र में निर्णय की स्थापना है।" आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार – "साहित्य जीवन की व्याख्या है और आलोचना साहित्य की व्याख्या है।

हिंदी आलोचना :-

हिंदी भाषा में आलोचना हिंदी साहित्य की एक व्यापक और महत्वपूर्ण विधा है। आलोचना का कर्तव्य साहित्यिक रचना के गुण और दोषों का निर्धारण करना है जीवन और अनुभव के जिन तत्वों के आधार पर रचनाकार साहित्य का संश्लेषण करता है, आलोचना उन्हीं तत्वों को आधार मानकर विश्लेषण करती है। किसी के व्यक्तिगत रूचि के आधार पर किसी रचना में गुण–दोष या प्रशंसा करना आलोचना का धर्म नहीं है। साहित्य में जहाँ हृदय की प्रमुखता होती है वहीं आलोचना में बुद्धि की प्रमुखता होती है।

आचार्य करूणाशंकर उपाध्याय के साहित्य में आलोचना :–

करुणाशंकर उपाध्याय हिंदी आलोचना के महत्वपूर्ण शिखर है। यह सुप्रसिद्ध आलोचक, सुचिंतित संपादक, बहुचर्चित युग द्रष्टा प्राध्यापक है। करुणाशंकर उपाध्याय अब आलोचको के भी प्रतिमान बन गए है। जिस तरह पहले आचार्य शुक्ल और उनके बाद डॉ0 नामवर सिंह की ओर देखा जाता था उसी प्रकार आज के समय हिंदी साहित्य करुणाशंकर उपाध्याय की ओर देखता है। ये आज के सबसे बड़े आलोचक है।

इनके साहित्य में आज के आधुनिकतावादी आलोचना पद्धति को बनाकर मध्यकाल से जोड़ने की कोशिश की है। आलोचक भी रचनाकार की तरह अपने समय और समाज को प्रस्तुत करते है। इन्होंने हमारे हिंदी साहित्य को अनेक कृतियों समर्पित की है जिसमें प्रमुख है सर्जना की परख, मध्यकालीन काव्य–चिंतन और संवेदना, हिंदी का विश्व संदर्भ, मध्यकालीन कविता का पुर्नपाठ आदि। उपाध्याय का आलोचनात्मक लेखन विषयगत व्याप्ति, सहृदय पाठक की सहजता, गंभीरता तथा कुछ नया देने की तीव्र लालसा से परिपूर्ण है। वे इक्कीसवी सदी की चुनौतियों, बदलती तकनीक, अभिव्यक्ति के बदलते रूपों के प्रति सजग है। अपने चिंतन, अध्ययन, व्यापक दृष्टिकोण, मानवीय सरोकार के बल पर करुणाशंकर उपाध्याय हिंदी और भारतीय भाषा–साहित्य के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। आलोचना के क्षेत्र में उपाध्याय जी मूलतः काव्य आलोचक है लेकिन कथा–साहित्य, भारतीय समाज और संस्कृति, हिंदी विश्व संदर्भ आदि के गहन विश्लेषण में भी उनकी आलोचनीय सामर्थ्य रेखांकित है। करुणा शंकर उपाध्याय के आलोचना कर्म की विशेषता यह है कि चाहे मध्यकालीन साहित्य हो, चाहे कहानी या कथा साहित्य हो या फिर आधुनिक काव्य इन्होंने इन सब के पुनर्पाठ में अपनी आलोचकीय प्रतिभा और दृष्टि का परिचय दिया है। अपनी आलोचना दृष्टि से उन्होंने हिंदी साहित्य के प्रत्येक हिस्से पर प्रकाश डाला है। इनके संपूर्ण आलोचना साहित्य में अनेकों ऐसी सूक्तियाँ प्रस्तुत है जो समकालीन साहित्य और जीवन के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि हिंदी भाषा और साहित्य में आलोचना का महत्वपूर्ण स्थान है। आलोचना आज एक स्वतंत्र विधा के रूप में विकसित है। हम यह भी कहना चाहेंगे कि करुणाशंकर उपाध्याय अपनी लेखनी और आलोचनात्मक दृष्टि के आधार पर आचार्य शुक्ल के नये रूप में देख सकते है। हिंदी आलोचना के सुप्रसिद्ध आचार्य करुणाशंकर उपाध्याय का आलोचनात्मक साहित्य तथा उनकी दृष्टि नई सदी की आलोचना का व्यापक रूप है। निश्चित रूप से उपाध्याय जी की आलोचना–दृष्टि और उनका साहित्य आने वाली पीढ़ी के अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी। समकालीन आलोचको और समकालीन हिंदी आलोचना के करुणाशंकर उपाध्याय जी गौरव पुरुष है जिन्होंने इक्कीसवी सदी की हिंदी आलोचना को नया रूप और स्थान प्रदान किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. हिंदी आलोचना – विश्वनाथ त्रिपाठी – राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0 नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली –

दसवीं आवृत्ति।
2. भाषा, रचना और आलोचना– रविनंदन सिंह – हिंदुस्तानी एकेडमी।
3. आधुनिक हिंदी आलोचना बदलता हुआ वैचारिक परिदृश्य – अरविंद यादव – नोशन प्रेस।
4. www.vikipedia.com
5. हिंदी का विश्व संदर्भ – डॉ0 करुणाशंकर उपाध्याय – राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड दरियागंज, नई दिल्ली।

E-mail : priyankadhiya474@gmail.com
Mob. : 9711522434

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 114-119

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी को विश्व भाषा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका एवं भारतीय शिक्षा पद्धति

डॉ. राघवेंद्र वी. मिस्किन

सहायक प्रोफेसर, एस. के. कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय तालिकोटी।

भारत की सांस्कृतिक धरोहर, जिसमें हिन्दी भाषा और शिक्षा पद्धति का महत्वपूर्ण स्थान है, वैश्विक मंच पर हमेशा से प्रभावशाली रही है। आइए इसे अतीत (कल), वर्तमान (आज) और भविष्य (कल) के संदर्भ में विस्तार से समझते हैं। हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है और जितना अधिक हम हिंदी और प्रांतीय भाषाओं का प्रयोग शिक्षा, ज्ञान विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि में करेंगे, उतनी ही तेज गति से भारत का विकास होगा। हिंदी पुरातन भी है और आधुनिक भी। इसी विशेषता विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर होने की संभावनाएं हैं :–

विश्व भाषा का अर्थ है ऐसी भाषा जो भौगोलिक दृष्टि से व्यापक हो तथा जिसमें अनेक भाषा समुदायों के लोग संवाद कर सकें। हिंदी एक ऐसी भाषा है जो न केवल भारत की राजभाषा है बल्कि विश्व के अनेक देशों में बोली और समझी जाती है। इस प्रकार हिंदी के विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर होने की संभावनाएं हैं :– हिंदी विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है। विश्व के लगभग 132 देशों में भारतीय मूल के लोग हिंदी बोलते हैं। हिंदी फिजी में राजभाषा है तथा मॉरीशस, त्रिनिदाद, गुयाना और सूरीनाम में इसे क्षेत्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त है। विदेशों में अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है।

हिंदी साहित्य का अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। हिंदी साहित्य में विभिन्न देशों की संस्कृति और जीवनशैली की खूबसूरती देखने को मिलती है। हिंदी को अंतरराष्ट्रीय रूप देने में सिनेमा ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भाषा विज्ञान में अंग्रेजी को सबसे प्रमुख विश्व भाषा माना जाता है। हालांकि, अरबी, फ्रेंच, रूसी और स्पेनिश भी संभावित विश्व भाषाएं हैं।

आज संचार के साधनों की बदौलत स्थानों के बीच की दूरियां बेमानी हो गई हैं या यह भी कहा जा सकता है कि एक तरह से समाप्त हो गई हैं। पूरा विश्व एक गांव बन गया है, जिसमें आप किसी से भी, कभी भी, कहीं से भी तुरंत संपर्क स्थापित कर सकते हैं, बशर्ते आपके पास इसके लिए आवश्यक साधन हों।

विश्व भाषा से अपेक्षाएँ यही होती हैं कि उसे बोलने और समझने वालों का भौगोलिक विस्तार व्यापक हो। आज भारत के बाहर हिन्दी बोलने वाले नेपाल, भूटान, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड, हांगकांग, फिजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद, गुयाना, सूरीनाम, इंग्लैंड, कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका में बड़ी संख्या में पाए जाते हैं।

दूसरी अपेक्षा यह है कि भाषा लचीली हो, उसमें विभिन्न संदर्भों को व्यक्त करने की क्षमता हो, उसका सर्वमान्य मानक रूप हो, कुछ सीमा तक उपमानकों की स्वीकृति के बावजूद किसी स्वीकृत मानक के माध्यम से संप्रेषण की क्षमता बनी रहे और हिंदी में भी ये गुण विद्यमान हैं।

हिंदी में ब्रज, अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी, पहाड़ी, बुंदेली, बघेली, मगधी, छत्तीसगढ़ी और कई अन्य बोलियों की शब्दावली, मुहावरे और कहावतें शामिल हैं। इसके अलावा, हिंदी ने सदियों से अन्य भारतीय भाषाओं के साथ घनिष्ठ संपर्क बनाए रखा है। वैश्विक भाषा से तीसरी अपेक्षा यह है कि उसमें विश्वव्यापी दृष्टिकोण होना चाहिए। चूँकि हिंदी बोलने वाले हमारे देश के कई राज्यों में रहते हैं, इसलिए उन्होंने प्रांतीयता को पार कर लिया है और एक समृद्ध साहित्यिक परंपरा विकसित की है जो दुनिया भर के पाठकों को आकर्षित करती है।

संयुक्त राष्ट्र प्रक्रिया नियम, विशेष रूप से अनुच्छेद 51 से 57, संयुक्त राष्ट्र महासभा की आधिकारिक और कार्यकारी भाषाओं के साथ–साथ इसकी विभिन्न समितियों और उप–समितियों की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं। संयुक्त राष्ट्र महासभा के उद्घाटन सत्र के दौरान, अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के अपवाद के साथ, अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी, चीनी और स्पेनिश को सभी संयुक्त राष्ट्र संगठनों के लिए आधिकारिक भाषाओं के रूप में नामित किया गया था। वर्तमान में, संयुक्त राष्ट्र छह आधिकारिक भाषाओं को मान्यता देता है।

1973 में, अरबी को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया गया। भारत संयुक्त राष्ट्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता देने का अभियान 10 जनवरी, 1975 को भारत के नागपुर में आयोजित पहले विश्व हिंदी सम्मेलन के साथ शुरू हुआ था। श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 1977 में विदेश मंत्री के रूप में और फिर 2002 में प्रधान मंत्री के रूप में संयुक्त राष्ट्र में हिंदी में भाषण दिए। सुषमा स्वराज ने कहा कि इसे हासिल करने के लिए दो तिहाई बहुमत या 193 सदस्य देशों में से कम से कम 129 देशों का समर्थन आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, भारत को हिंदी को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिलाने से जुड़े खर्चों को भी वहन करना होगा, जो कि शुरूआती तौर पर करीब एक अरब रुपये होने का अनुमान है।

विश्व भाषा के रूप में हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता के कुछ कारण इस प्रकार हैं :–

हिंदी एक विश्व भाषा है, क्योंकि यह किसी देश की राष्ट्रीय भाषा होने के साथ–साथ अन्य देशों में भी काफी संख्या में लोगों द्वारा लिखी, बोली और समझी जाती है। वैश्वीकरण के संदर्भ में हिंदी के प्रति सकारात्मक कारण इस प्रकार दिखाई देते हैं।

1. हिंदी दुनिया में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। दुनियाभर में लगभग 500 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं। हिंदी को एशियाई संस्कृति की प्रतिनिधि भाषा माना जाता है। हिंदी को फिजी की आधिकारिक भाषा माना जाता है और मॉरीशस, त्रिनिदाद, गुयाना और सूरीनाम में इसे क्षेत्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त है। दुनिया के 132 देशों में बसे भारतीय मूल के लगभग 2 करोड़ लोग हिंदी माध्यम से अपना कामकाज करते हैं। एशियाई संस्कृति में अपनी विशेष भूमिका के कारण हिंदी किसी भी एशियाई भाषा से अधिक एशिया की प्रतिनिधि भाषा है।

2. हिंदी का किसी देशी या विदेशी भाषा से कोई विरोध नहीं है। अनेक भाषाओं के शब्दों को अपनाया गया

है और उनका हिंदीकरण किया गया है। यही कारण है कि आज हिंदी शब्दकोष दुनिया का सबसे बड़ा भाषाई शब्दकोष है।

3. हिंदी अपने आप में एक अंतरराष्ट्रीय दुनिया को छिपाए हुए है। आर्यन, द्रविड़, आदिवासी, स्पेनिश, पुर्तगाली, जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी, अरबी, फारसी, चीनी, जापानी और दुनिया की अन्य भाषाओं के शब्द इसकी अंतरराष्ट्रीय मैत्री और वसुधैव कुटुम्बकम की प्रवृत्ति को उजागर करते हैं।

4. हिंदी में साहित्येतर लेखन बढ़ा है और लेखन का स्तर भी ऊपर उठ रहा है।

5. गुणवत्ता की दृष्टि से अनुवाद की स्थिति में सुधार हो रहा है। लघु पत्रिकाओं में मौलिक और अनूदित प्रकाशनों की स्वीकार्यता और स्वागत बढ़ रहा है।

6. अनिवासी भारतीय (एनआरआई) वैश्वीकरण के सबसे प्रत्यक्ष वाहक प्रतीत होते हैं और हिंदी ऑडियो–वीडियो और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से उनके बीच एक जीवंत कड़ी बन रही है।

7. इंटरनेट पर भी हिंदी स्वीकार्य और लोकप्रिय हो रही है। हिंदी पत्रकारिता और हिंदी साहित्य भी अब इंटरनेट के माध्यम से दुनिया भर में फैल रहा है।

8. देश–विदेश में प्रकाशित समाचार–पत्रों और पत्रिकाओं ने हिंदी को विश्व भाषा बना दिया है। इसके माध्यम से हिंदी भाषा और साहित्य विदेशों में फैल गया है।

9. भारत के आकाशवाणी और दूरदर्शन हिंदी को विश्व स्तर पर स्थापित करने के लिए निरंतर काम कर रहे हैं। दुनिया के टीवी चैनलों पर हिंदी कार्यक्रमों के प्रसारण ने भी हिंदी को विश्व भाषा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

10. हिंदी के प्रचलन के कारण ही दुनिया के 175 देशों में हिंदी के शिक्षण और प्रशिक्षण के लिए कई माध्यम केंद्र स्थापित किए गए हैं। दुनिया के लगभग 180 विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों में हिंदी का शिक्षण और प्रशिक्षण चल रहा है। अकेले अमेरिका में ही 100 से अधिक विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। इसके कारण हिंदी का वर्चस्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

हिन्दी को विश्व भाषा बनाने में कई चुनौतियां हैं :–

1. हिन्दी लिखने के साधनों का सही तरह से प्रचार नहीं हो पाता।
2. हिन्दी को देश और विदेश दोनों जगह प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है।
3. प्रशासन की उपेक्षा भी हिन्दी के सामने एक बड़ी चुनौती है।
4. हिन्दी को विश्व भाषा बनाने के लिए, रूढ़िवादिता और परंपराओं को छोड़ना होगा।
5. संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा निश्चित रूप से हिन्दी को होना चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार दस्तावेजी करण में उपयोग किए जाने वाले मानक प्रपत्र काफी हद तक औपचारिक हो गए हैं और उनका उपयोग बहुत कम किया जाता है। इन परिस्थितियों को देखते हुए, वैश्विक बाजार से संबंधित कानूनी मामलों में, विश्व व्यापार संगठन के समझौतों में, या संबंधित दस्तावेजीकरण और प्रक्रियाओं में हिंदी के उपयोग की कल्पना करना कठिन है।

विज्ञापन एजेंसियों में, अभियान शुरू में अंग्रेजी में बनाए जाते हैं और फिर उनका हिंदी में अनुवाद किया जाता है, अक्सर अजीब तरीके से। सरकारी कार्यालयों ने हिंदी अनुवाद का एक जटिल और अप्राकृतिक रूप विकसित किया है जो औसत व्यक्ति के लिए अंग्रेजी जितना ही चुनौतीपूर्ण है। इसने हिंदी और अंग्रेजी के एक अजीब संकर को जन्म दिया है। यह स्थिति समकालीन वैश्विक बाजार में हिंदी भाषा के लिए एक महत्वपूर्ण विडंबना का प्रतिनिधित्व करती है, जहां इसे तेजी से वस्तुओं के विपणन के लिए एक उपकरण के रूप में रखा जाता है।

एक महत्वपूर्ण मुद्दा पश्चिमी उपभोक्ता संस्कृति के बढ़ने के कारण भारतीय और हिंदू संस्कृति की घटती प्रमुखता है, जिसके परिणामस्वरूप हिंदी का प्रचलन कम हुआ है। इस भाषा की जीवंतता भारत से पलायन करने वाले युवा बुद्धिजीवियों और श्रमिकों पर बहुत अधिक निर्भर करती हैय हालाँकि, ये व्यक्ति अंग्रेजी से बहुत अधिक प्रभावित हो रहे हैं, जिसके परिणाम स्वरूप उनकी अगली पीढ़ियाँ हिंदी से अपरिचित हो रही हैं। जब संविधान में हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में नामित किया गया था, तो यह अनुमान लगाया गया था कि अंततः इसे संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों में वैश्विक संचार की भाषा के रूप में मान्यता मिलेगी, लेकिन यह अपेक्षा पूरी नहीं हुई।

अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को व्यापक स्तर पर बढ़ावा देने के लिए की गई थी, और जबकि कुछ अनुदान प्रदान किए गए हैं, संस्था के मूल उद्देश्य अभी भी पूरे होने बाकी हैं। भारत मुख्य रूप से अंग्रेजी के माध्यम से वैश्विक बाजार में एकीकृत हो रहा है, और आधुनिक संचार प्लेटफार्मों में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का प्रतिनिधित्व न्यूनतम है।

हिन्दी को विश्व भाषा बनाने के लिए कुछ सुझाव :–

हिन्दी अपनाने वालों को विशेष सम्मान, सुविधाएं, और प्रोत्साहन देना चाहिए। हिन्दी साहित्य की इंटरनेट पर बेहतरीन प्रस्तुति करनी चाहिए। देश–विदेश के सभी शिक्षण संस्थानों में हिन्दी की पहुंच बढ़ानी चाहिए। विदेशों में हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए संगठन बनाना चाहिए। विदेशों में हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए विदेश मंत्रालय में 'हिन्दी एवं संस्कृत प्रभाग' का गठन करना चाहिए। विदेशों में अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन करना चाहिए।

हिन्दी का अतीत (कल) :–

जड़ों की गहराई : हिन्दी भाषा संस्कृत, पाली और प्राकृत से विकसित हुई है। प्राचीन काल में हिन्दी साहित्य और कवियों (जैसे तुलसीदास, कबीर, सूरदास) ने इसे जन–जन तक पहुँचाया।

संस्कृति और शिक्षा का माध्यम : हिन्दी भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न हिस्सा रही है। भक्ति आंदोलन और संत साहित्य ने हिन्दी को धार्मिक और नैतिक शिक्षा का माध्यम बनाया।

वैश्विक प्रसार का प्रारंभ : प्रवासी भारतीयों के माध्यम से हिन्दी मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम और ट्रिनिडाड जैसे देशों में पहुँची।

हिन्दी का वर्तमान (आज) :–

अंतरराष्ट्रीय मंच पर हिन्दी : संयुक्त राष्ट्र और UNESCO जैसे मंचों पर हिन्दी की बढ़ती स्वीकृति। विश्व

हिंदी सम्मेलन जैसे आयोजन। 50 से अधिक देशों में हिन्दी बोलने और समझने वाले लोग।

डिजिटल युग में हिन्दी : इंटरनेट पर हिन्दी सामग्री तेजी से बढ़ रही है। गूगल, फेसबुक, और यूट्यूब जैसे प्लेटफार्म हिन्दी में सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। हिन्दी में डिजिटल मार्केटिंग और ई–कॉमर्स का उभार।

शिक्षा और रोजगार में हिन्दी : हिन्दी भाषा का उपयोग भारतीय शिक्षा पद्धति में क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ा है। हिन्दी साहित्य, पत्रकारिता और अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के अवसर।

हिन्दी का भविष्य (कल) :–

वैश्विक संपर्क का माध्यम : हिन्दी का उपयोग अंतरराष्ट्रीय व्यापार, पर्यटन और सांस्कृतिक आदान–प्रदान में बढ़ेगा। हिंदी AI, NLP और वॉयस असिस्टेंट तकनीकों में प्रमुख भूमिका निभाएगी।

शैक्षिक और वैज्ञानिक उपयोग : हिन्दी को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के शिक्षण माध्यम के रूप में विकसित करना। हिन्दी में तकनीकी शब्दावली और शोध सामग्री का विकास।

वैश्विक पहचान का विस्तार : हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषाओं में शामिल करने का प्रयास। प्रवासी भारतीयों और अंतरराष्ट्रीय समुदायों में हिन्दी का और व्यापक प्रसार।

भारतीय वर्तमान शिक्षा पद्धति :–

1. **नई शिक्षा नीति (2020) :** प्री–प्राइमरी से उच्च शिक्षा तक व्यापक सुधार। स्थानीय भाषाओं में प्रारंभिक शिक्षा। 5+3+3+4 की नई संरचना। कौशल विकास, डिजिटल शिक्षा, और बहु–विषयक दृष्टिकोण को बढ़ावा।
2. **तकनीकी शिक्षा और डिजिटल युग :** ऑनलाइन शिक्षा और ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म का विस्तार ASTEM (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, गणित) पर जोर।
3. **समस्याएँ और चुनौतियाँ :** ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का अभाव। शिक्षकों की कमी और शिक्षा की गुणवत्ता। सामाजिक असमानता और लैंगिक भेदभाव।
4. **समाधान और सुधार के प्रयास :** सरकारी योजनाएँ जैसे सर्व शिक्षा अभियान और शिक्षा के अधिकार अधिनियम। निजी क्षेत्र और एनजीओ का योगदान।

भारतीय शिक्षा पद्धति की विशेषताएँ :–

व्यापकता : भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों पर जोर।

समावेशिता : सभी वर्गों और धर्मों के लिए शिक्षा।

प्राचीनता और आधुनिकता का समन्वय।

गुणवत्ता और व्यावहारिकता।

भारतीय शिक्षा पद्धति एक सशक्त माध्यम है जो व्यक्तित्व विकास, सामाजिक समरसता, और राष्ट्रीय प्रगति में योगदान देती है। इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सतत सुधार आवश्यक है।

निष्कर्ष :–

हिन्दी भाषा और भारतीय शिक्षा पद्धति, दोनों ही भारत की सांस्कृतिक धरोहर और वैश्विक पहचान के प्रमुख स्तंभ हैं। अतीत में, उन्होंने ज्ञान और संस्कृति के प्रसार में योगदान दिया। वर्तमान में, ये डिजिटल युग

और वैश्विक परिदृश्य में नई चुनौतियों और अवसरों का सामना कर रहे हैं। भविष्य में, ये अपनी जड़ों को संरक्षित रखते हुए नवाचार और वैश्विक नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ेंगे। इनकी शक्ति और प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के लिए सतत प्रयास और सुधार आवश्यक हैं।

आधार ग्रंथ :–

1. भाषा की इकाई– डॉ. अंजु सेठ।
2. हिंदी भाषा का व्यावहारिक व्याकरण हार्डबाउंड– सहना अग्रवाल।
3. हिन्दी भाषा और तकनीक– उमा चौधरी।
4. https://chatgpt.com/c/6772dd17&a83c&8012&af94&3289c66d88a5

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 120-124

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी भाषा एवं भारतीय शिक्षा पद्धति में हरियाणवी कवि रामफल सिंह 'खटकड़' का अवदान

रजनी, शोधार्थी, पीएच.डी.
डॉ० प्रवेश कुमारी, शोध निर्देशक, सहायक प्रोफेसर,
भाषा विभाग (हिंदी), बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा) – 124021

सारांश :-

रामफल सिंह खटकड़ का साहित्य हिंदी भाषा और भारतीय शिक्षा पद्धति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनके प्रबंध काव्य जैसे "पन्नाधाय का मौन बलिदान," "वीरांगना दुर्गा देवी वोहरा का मौन बलिदान," और "सतनामी साधो का शांति युद्ध" न केवल साहित्यिक दृष्टि से अद्वितीय हैं, बल्कि सामाजिक सुधार और शिक्षा के प्रचार–प्रसार में भी अहम भूमिका निभाते हैं। उनकी रचनाएँ राष्ट्रीय चेतना, नारी सशक्तिकरण, और सामाजिक न्याय जैसे विषयों पर आधारित हैं, जो समाज को जागरूक और प्रेरित करती हैं। खटकड़ जी ने हिंदी भाषा को जनमानस से जोड़ते हुए उसे सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। उनकी रचनाओं में खड़ी बोली, ब्रजभाषा, और हरियाणवी भाषा का सुंदर समन्वय मिलता है, जो हिंदी साहित्य को नई ऊंचाइयों पर ले जाता है। शिक्षा को समाज सुधार का सबसे प्रभावी साधन मानते हुए उन्होंने इसे अपने काव्य का प्रमुख विषय बनाया। उनके साहित्य में नारी की शक्ति और उसकी गरिमा का प्रभावी चित्रण मिलता है। खटकड़ जी का मानना था कि नारी केवल परिवार की धुरी नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की आधारशिला है। उनके काव्य में सामाजिक विषमताओं, जातिगत भेदभाव, और धार्मिक असहिष्णुता का विरोध स्पष्ट रूप से झलकता है।

मुख्य शब्द :- रामफल सिंह 'खटकड़', हिंदी साहित्य, हरियाणवी कवि, हरियाणवी साहित्य।

भूमिका :-

भारतीय साहित्य में प्रबंध काव्य और मुक्तक काव्य का अपना अद्वितीय स्थान है। प्रबंध काव्य की संरचना, जिसमें कथानक और घटनाओं का क्रमबद्ध वर्णन होता है, साहित्यिक और सामाजिक दोनों दृष्टिकोणों से अत्यधिक प्रभावशाली है। हरियाणवी कवि रामफल सिंह 'खटकड़' ने इस विधा के माध्यम से हिंदी साहित्य को न केवल समृद्ध किया, बल्कि सामाजिक जागरूकता और शिक्षा के क्षेत्र में भी अमूल्य योगदान दिया। उनके काव्य में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक सुधार, और नारी सशक्तिकरण जैसे विषयों का प्रभावी चित्रण मिलता है। उनकी कृतियों में परंपरा और आधुनिकता का सुंदर समन्वय है, जो उन्हें समकालीन हिंदी साहित्य में विशेष स्थान प्रदान करता है।

रामफल सिंह 'खटकड़' की रचनाएँ, जैसे "वीरांगना दुर्गा देवी वोहरा का मौन बलिदान", "पन्नाधाय का मौन बलिदान", और "सतनामी साधो का शांति युद्ध", न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से उत्कृष्ट हैं, बल्कि सामाजिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भी गहन प्रासंगिकता रखती हैं। उनकी कृतियों में ऐतिहासिक घटनाओं और चरित्रों का चित्रण इतनी गहराई और सजीवता से किया गया है कि वे केवल पढ़ने मात्र से पाठक को प्रेरित करते हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ :-

रामफल सिंह 'खटकड़' की रचनाएँ साहित्यिक दृष्टिकोण से अनेक विशेषताओं से भरपूर हैं। उनके काव्य में भाषा की सरलता और प्रवाहमयी शैली है, जो पाठकों को बाँधकर रखती है। उनकी कविताओं में गेयता और भावप्रवणता इतनी गहन है कि वे पाठकों के हृदय को छू जाती हैं। उनकी भाषा में हिंदी की विभिन्न बोलियों, जैसे ब्रजभाषा, खड़ी बोली, और हरियाणवी का समावेश है, जो उनकी रचनाओं को जनमानस के और करीब लाती है। "पन्नाधाय का मौन बलिदान" में उन्होंने लिखा :–

"त्याग की यह भूमि, बलिदान का यह शृंगार।
मातृत्व का अर्थ यही, जहाँ कर्तव्य हो महान।"

यह पंक्तियाँ त्याग, मातृत्व, और कर्तव्य जैसे गुणों को अद्‌भुत ढंग से प्रस्तुत करती हैं।

राष्ट्रीय चेतना का उद्‌बोधन :-

रामफल सिंह 'खटकड़' का काव्य राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम के वीरों और सामाजिक सुधारकों के बलिदानों को उकेरा है। "सतनामी साधो का शांति युद्ध" में उन्होंने हरियाणा की उस वीर गाथा को वर्णित किया है, जहाँ साधुओं ने शांति और सहिष्णुता का मार्ग अपनाया, परंतु अन्याय और अत्याचार के खिलाफ भी खड़े हुए। उनकी एक कविता इस संदर्भ में उल्लेखनीय है :–

"सत्य की राह पर चलो, अन्याय को ललकार दो।
सत्य वही, जो मन का दीपक, अंधकार से पार हो।"

यह पंक्तियाँ सत्य और न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

सामाजिक सुधार :-

रामफल सिंह 'खटकड़' ने सामाजिक सुधार को अपने साहित्य का केंद्र बिंदु बनाया। उनके काव्य में जातिगत भेदभाव, छुआछूत, और भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों पर तीखा प्रहार किया गया है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज को जागरूक किया और इसे समरसता और समानता की ओर अग्रसर करने का प्रयास किया। "सतनामी साधो का शांति युद्ध" में वे लिखते हैं :–

"समरसता हो समाज में, यही सच्चा धर्म।
बैर–भाव को त्याग कर, अपनाओ कर्म।"

यह पंक्तियाँ उनकी सामाजिक दृष्टि और आदर्शवाद को व्यक्त करती हैं।

रामफल सिंह 'खटकड़' का साहित्य हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में एक मील का पत्थर है। उनकी कृतियाँ न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से उत्कृष्ट हैं, बल्कि सामाजिक, राष्ट्रीय, और नैतिक मूल्यों को भी अभिव्यक्त करती हैं। उनके काव्य में भाषा की गहराई, विषयों की विविधता, और मानवीय मूल्यों की प्रबलता

है, जो उन्हें अन्य साहित्यकारों से अलग बनाती है। उनका साहित्य आज भी समाज और शिक्षा के क्षेत्र में प्रेरणा का स्रोत है और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता रहेगा।

सामाजिक सुधार में भूमिका :-

खटकड़ का साहित्य केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है। उन्होंने अपने लेखन को समाज सुधार का एक प्रभावी माध्यम बनाया। उनके साहित्य का उद्देश्य समाज में व्याप्त असमानताओं, भ्रष्टाचार, और जातिगत भेदभाव को दूर करना रहा है। "सतनामी साधो का शांति युद्ध" में वे समाज में समानता और समरसता का संदेश देते हुए लिखते हैं :–

"समरसता हो समाज में, यही है सच्चा धर्म।
बैर–भाव को त्याग कर, अपनाओ सच्चा कर्म।"

रामफल सिंह खटकड़ का जीवन और साहित्य न केवल हरियाणा, बल्कि पूरे हिंदी साहित्य के लिए प्रेरणा स्रोत है। उनके लेखन में सामाजिक समस्याओं का वास्तविक चित्रण, नारी सशक्तिकरण का अद्‌भुत समर्थन, और शिक्षा के माध्यम से सुधार का विचार स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उनका जीवन और कार्य यह संदेश देते हैं कि साहित्य केवल सृजन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज सुधार और मानवता के उत्थान का उपकरण भी हो सकता है। उनकी रचनाएँ आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मार्गदर्शक बनी रहेंगी।

प्रबंध काव्यों का विश्लेषण :-

1. वीरांगना दुर्गा देवी वोहरा का मौन बलिदान :

रामफल सिंह खटकड़ का यह प्रबंध काव्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक महान वीरांगना दुर्गा देवी वोहरा के जीवन पर आधारित है। इस काव्य में दुर्गा देवी के साहस, त्याग, और बलिदान को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ उकेरा गया है। उनकी भूमिका केवल स्वतंत्रता संग्राम में एक क्रांतिकारी के रूप में नहीं, बल्कि एक प्रेरणा स्त्रोत के रूप में भी प्रस्तुत की गई है। खटकड़ लिखते हैं :–

"मौन था उसका बलिदान, पर शोर मचा गया।
हर नारी के हृदय में, साहस जगा गया।"

यह पंक्तियाँ न केवल उनके बलिदान की गहराई को व्यक्त करती हैं, बल्कि नारी सशक्तिकरण के संदेश को भी स्पष्ट करती हैं। यह काव्य उन नारियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है, जो समाज में अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत हैं। दुर्गा देवी के माध्यम से कवि ने यह संदेश दिया है कि एक नारी अपने त्याग और साहस से इतिहास को बदल सकती है।

2. पन्नाधाय का मौन बलिदान :

पन्नाधाय का नाम भारतीय इतिहास में नारी के अद्वितीय बलिदान और कर्तव्य परायणता के लिए अमर है। रामफल सिंह खटकड़ ने इस प्रबंध काव्य के माध्यम से पन्नाधाय के चरित्र को साहित्यिक और ऐतिहासिक दृष्टि से प्रस्तुत किया है। उनका बलिदान, जिसमें उन्होंने अपने पुत्र का जीवन बलिदान कर राजधर्म का पालन किया, समाज में कर्तव्य और त्याग की महत्ता को दर्शाता है। इस काव्य में कवि लिखते हैं :–

"पुत्र गया, पर धर्म बचा, ये पन्ना की गाथा।
कर्तव्य की ज्योत जलाई, इतिहास में जो रखी।"

यह रचना पाठकों को यह समझाने का प्रयास करती है कि व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर समाज और राष्ट्र के लिए त्याग करने वाला व्यक्ति ही सच्चा नायक होता है। पन्नाधाय के चरित्र के माध्यम से कवि ने नारी के कर्तव्य, साहस और नैतिकता को प्रदर्शित किया है।

3. सतनामी साधो का शांति युद्ध :

रामफल सिंह खटकड़ के इस प्रबंध काव्य में हरियाणा के सतनामी समुदाय की संघर्षशीलता और उनकी शांतिपूर्ण प्रतिरोध की भावना को दर्शाया गया है। सतनामियों के संघर्ष और उनके शांतिपूर्ण तरीकों से किए गए आंदोलन का चित्रण इस काव्य की विशेषता है। कवि ने लिखा है :–

"शांति से जीते युद्ध, सतनामियों ने सिखाया।
न हिंसा, न प्रतिशोध, मानवता का पाठ पढ़ाया।"

यह काव्य धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक समानता का संदेश देता है। कवि ने सतनामियों की अहिंसा पर आधारित जीवन शैली को मानवीयता और नैतिकता का प्रतीक बताया है। यह रचना समाज में व्याप्त धार्मिक भेदभाव और असमानता के प्रति एक तीखा सवाल उठाती है और सामाजिक सद्भाव की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

हिंदी भाषा के विकास में योगदान :–

रामफल सिंह खटकड़ ने हिंदी भाषा के विकास और इसे जनमानस तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी रचनाएँ हिंदी भाषा की समृद्धि का एक सशक्त प्रमाण हैं। उन्होंने अपनी कृतियों में हरियाणवी भाषा के शब्दों और भावों का ऐसा सम्मिलन किया, जिसने हिंदी भाषा को एक नई जीवंतता प्रदान की। खटकड़ जी ने खड़ी बोली और ब्रजभाषा का मिश्रण करते हुए एक अनूठी साहित्यिक शैली विकसित की, जो पाठकों को आसानी से समझ में आती है और उनके साहित्य को जनसामान्य तक पहुँचाने में सहायक बनती है। उनकी कृति "पन्नाधाय का मौन बलिदान" इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। इस रचना में खटकड़ ने न केवल ऐतिहासिक संदर्भों को जिंदा किया, बल्कि भाषा की सहजता और सरलता के माध्यम से गहरे भाव भी व्यक्त किए। वे लिखते हैं:

"सजीव कर दिए वो शब्द, जिनमें जीवन की धारा है,
भाषा बन गई वह कड़ी, जो सबको एक साथ बांधे।"

उनकी इस शैली ने हिंदी भाषा को क्षेत्रीयता के दायरे से बाहर निकालकर राष्ट्रीय और सार्वभौमिक स्तर पर स्थान दिलाने में मदद की।

शिक्षा और समाज सुधार :–

रामफल सिंह खटकड़ का साहित्य समाज सुधार और शिक्षा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उनका मानना था कि शिक्षा न केवल ज्ञान का साधन है, बल्कि यह समाज में नैतिकता और समरसता को स्थापित करने का माध्यम भी है। उनकी रचनाएँ बार–बार इस बात पर जोर देती हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि समाज के नैतिक उत्थान के लिए भी आवश्यक है। वे लिखते हैं :–

"शिक्षा वह दीप है, जो अज्ञान के अंधकार को मिटाता है।
यह वह माध्यम है, जो समाज को नई दिशा देता है।"

उनकी रचनाओं में शिक्षा के महत्व को नारी शिक्षा, बालिका शिक्षा, और समाज के वंचित वर्गों तक पहुँचाने

के लिए आह्वान किया गया है। उनकी रचना "सतनामी साधो का शांति युद्ध" में शिक्षा को सामाजिक जागरूकता और धार्मिक सहिष्णुता के साथ जोड़ा गया है। इस काव्य में शिक्षा को समाज सुधार का सबसे सशक्त माध्यम बताया गया है।

नारीवाद और उनका दृष्टिकोण :-

रामफल सिंह खटकड़ ने नारीवाद को अपने साहित्य में विशेष स्थान दिया है। उनका मानना था कि नारी केवल परिवार की धुरी नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की आधारशिला है। उनकी रचनाओं में नारी के संघर्ष, उसके त्याग, और उसकी शक्ति को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। उनकी कृति "वीरांगना दुर्गा देवी वोहरा का मौन बलिदान" नारी शक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें दुर्गा देवी के साहस और त्याग को जिस संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया गया है, खटकड़ जी ने नारी को न केवल समाज का आधार माना, बल्कि उसके अधिकारों और सम्मान के लिए भी अपनी रचनाओं में आवाज उठाई। उनकी रचनाएँ पाठकों को नारी शक्ति के महत्व को समझने और उसके प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए प्रेरित करती हैं। उनकी यह दृष्टि न केवल साहित्य में, बल्कि समाज में भी गहरी छाप छोड़ती है। उनकी रचनाओं ने समाज में नारी सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और यह आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी उनके समय में थीं।

निष्कर्ष :-

रामफल सिंह खटकड़ का साहित्य हिंदी भाषा और भारतीय शिक्षा पद्धति के विकास में एक अमूल्य धरोहर है। उनके प्रबंध काव्य न केवल साहित्यिक उत्कृष्टता का उदाहरण हैं, बल्कि सामाजिक सुधार, नारी सशक्तिकरण, और शिक्षा के महत्व को भी गहराई से उजागर करते हैं। उनके साहित्य में समाज की समकालीन समस्याओं, ऐतिहासिक घटनाओं, और मानवीय मूल्यों का समावेश है, जो इसे अत्यधिक प्रभावशाली और प्रासंगिक बनाता है। खटकड़ जी का लेखन समाज में व्याप्त असमानता, अन्याय, और अज्ञानता के विरुद्ध एक सशक्त आवाज है। उनकी रचनाएँ पाठकों को आत्म निरीक्षण के लिए प्रेरित करती हैं और एक बेहतर समाज की ओर अग्रसर होने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। उनके द्वारा प्रस्तुत नारी सशक्तिकरण, शिक्षा का नैतिक पक्ष, और राष्ट्रीय चेतना का संदेश साहित्य और समाज के लिए अत्यंत मूल्यवान है। रामफल सिंह खटकड़ की रचनाएँ आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेंगी। उनके साहित्य ने हिंदी भाषा को समृद्ध किया और इसे जनमानस के करीब लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी कृतियों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि साहित्य केवल एक कला नहीं, बल्कि समाज को जागरूक और समृद्ध बनाने का एक माध्यम है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. खटकड़, रामफल सिंह. पन्नाधाय का महाबलिदान. टैगोर प्रकाशन, नारनौंद जिला हिसार, 2016.
2. खटकड़, रामफल सिंह. वीरांगना दुर्गा देवी वोहरा का मौन बलिदान. टैगोर प्रकाशन, नारनौंद जिला हिसार, 2020.
3. खटकड़, रामफल सिंह. सतनामी साधो का शांति युद्ध. टैगोर समिति, नारनौंद, जिला हिसार, 2023.
4. त्रिपाठी, छविनाथ. धरा की यात्रा. कादम्बरी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1980.
5. त्रिपाठी, संत. गुरु गोबिन्द सिंह फाऊंडेशन. चण्डीगढ़, 1967.
6. मदान, अमृतलाल. संत महात्मा. पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1972.
7. शर्मा, रत्नचंद्र. अश्वत्थामा. नटराज पब्लिशिंग हाऊस, करनाल, 1981.
8. शर्मा, रत्नचंद्र. हरियाणा गौरवगाथा. शिक्षा समिति, हिसार, 1981.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 125-128

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी के विकास में बुंदेली की भूमिका

रणधीर आठिया

शोधार्थी, हिंदी अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

भारत बहुभाषी एवं सांस्कृतिक रूप से सम्पन्न राष्ट्र है। यहाँ के लोग बसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा को मानने वाले हैं। वे सदैव से सबके हित में सोचते आ रहे हैं। यही कारण है कि बाह्य आक्रांता यहाँ आये और यहीं के होकर रह गये जिससे यह देश सांस्कृतिक संगम का केन्द्र बन गया। विश्व में लगभग तीन हजार भाषाएँ बोली जाती हैं। उनमें से हिंदी अपना अलग स्थान रखती है क्योंकि वह वैश्विक परिप्रेक्ष्य में संस्कृति की संवाहक है। आज जब विश्व में हिंदी की बात होती है तो वह विश्व की पाँचवी सबसे ज्यादा बोली एवं समझी जाने वाली भाषा के रूप में रेखांकित होती है। हिंदी न केवल भाषा है बल्कि यह एक भाषा समूह है जिसमें अनेक बोलियों एवं विभाषाओं को सम्मिलित किया गया है। इन्हीं बोली एवं विभाषाओं में एक बुंदेली भी है। बुंदेली अत्यंत प्राचीन भाषा है। आज से लगभग एक हजार वर्ष पूर्व यह अस्तित्व में आई जब बनाफरों पर आल्हा नामक छंद में 'बाउनगढ़' की लड़ाघ्यों को जगनिक द्वारा लिखा गया। डॉ. ग्रियर्सन ने भारतीय भाषा सर्वेक्षण में इसे महत्वपूर्ण स्थान दिया।

बुंदेली विश्व की प्राचीनतम भाषा है। इसमें लगभग 13 बोलियों को सम्मिलित किया गया है। इसे संस्कृत की बहन भी माना गया है। यह उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के एक विस्तृत भू–भाग में बोली जाती है। इसके क्षेत्रीय रूप भी हैं : यथा शुद्ध बुंदेली, खटोला, परवारी, लोधान्ती, भदावरी, निभट्टा, तिरहारी, बनाफरी आदि। यह हिंदी की एक बोली के रूप में मान ली गई है क्योंकि हिंदी का विस्तार अत्यंत व्यापक है। इसमें बुंदेली भी आ जाती है। बाबू गुलाब राय के अनुसार "भौगोलिक दृष्टि से देखें तो हिंदी का क्षेत्र हिमालय से लेकर दक्षिण में नर्मदा तक है। डॉ. ग्रियर्सन ने इस सारे भू–भाग को पश्चिमी और पूर्वी–दो हिंदी क्षेत्रों में बाँटा है। पश्चिमी हिंदी को हम आज की व्यवहृत होने वाली हिंदी का वास्तविक रूप मान सकते हैं। इस पश्चिमी हिंदी की पांच उप–भाषाएँ हैं– खड़ी बोली, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बांगरू और बुंदेली।' यहाँ मैं स्पष्ट उल्लेख कर देना चाहता हूँ कि जो बुंदेली है सर्वमान्य रूप से हिंदी की ही एक बोली है परन्तु इसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व है। हाँ, यह भी एक समृद्ध भाषा है परन्तु इसने हिंदी को भी समृद्ध किया है। इसके देशज शब्द ज्यों के त्यों हिंदी में स्वीकार कर लिए गए हैं।

समय–समय पर विद्वानों ने अंग्रेजी के प्रयोग एवं उसको राज–काज की भाषा के रूप में प्रयोग का विरोध किया है। हमारे संविधान में भी राजभाषा के रूप में 22 क्षेत्रीय भाषाओं को मान्यता दे दी है और समय–समय पर इनके व्यापक प्रचार एवं प्रसार के लिए संस्थाओं का भी निर्माण होता रहा है। बुन्देली भाषा भी

एक दिन राज्य भाषा बनेगी यदि बुंदेलखंड में अस्तित्व आया तो क्योंकि सांस्कृतिक एकता के लिए यह महत्त्व रखती है। हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं "भारतवर्ष की अपनी समृद्ध संस्कृति को उजागर करने के लिए देशी भाषाओं को प्रोत्साहन देना बहुत जरूरी है। विदेशी भाषा में शिक्षा पाने से हमारा स्वतंत्र चिंतन कुण्ठित हो गया है। समूचे राष्ट्र के सांस्कृतिक अभ्युत्थान के लिए भी हमें अपनी भाषाओं को समृद्ध करना आवश्यक है।" एक राष्ट्र की अस्मिता उसकी सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने में है। तब यह निश्चित है कि एक समृद्ध राष्ट्र वहाँ की स्थानीय भाषाओं से बनेगा। क्षेत्रीय भाषाओं में यदि शिक्षा, संस्कार एवं व्यवहार होगा तो हम एक सम्पन्न राष्ट्र को मूर्त रूप प्रदान कर सकेंगे क्योंकि जो बात हम अपनी मातृभ्भाषा में करते हैं वह हम कम समय में समझ और समझा सकते हैं।

एक व्यक्ति जब किसी शब्द को लिखता या बोलता है तब वह उसे हर बार वैसा ही बोल या लिख नहीं पाता क्योंकि हर व्यक्ति अपने आप में अद्वितीय है। वह बोलने एवं लिखने की विविधता को जन्म देती है। भारत में प्राचीन काल से कबीलाई समाज विद्यमान थे इनके कारण ही भाषिक विविधता हमें दृष्टिगोचर होती है। धीरे–धीरे वह प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ और यह विविधता काम होती गई। डॉ० भोलानाथ तिवारी ने भी भारतीय भाषाओं की विविधता पर लिखा– "चार कोस पर पानी बदले, आठ कोष पर बानी।" अर्थात् यहाँ पानी एवं वाणी का ही संतुलन दिखाई देता है। ये छोटी–छोटी दूरियाँ मनुष्य को पास लाने का कार्य करती रही हैं क्योंकि लोक में रमे मनुष्यों का यह देश विस्तृत है। यह महामानव समुद्र सदियों से अथाह रहा है जो भी इसमें धँसता गया वह पुनः वैसा ही नहीं लौट पाया।

बुंदेली भाषा तब से है जब मानव इस धरा पर पर्दापण करता है। महाभारत काल से लेकर आज तक यह भाषा अपनी अस्मिता बनाये हुए है क्योंकि इसका साहित्य अत्यंत प्राचीन एवं समृद्ध है। इस पावन धरा पर अनेक राजे–रजवाणों ने राज किया। परंतु इसका नामकरण बुंदेला राजवंश के कारण बुंदेली पड़ा क्योंकि इन्होंने इसको राज्य कार्य में महत्वपूर्ण स्थान दिया। इसे बुंदेला शासकों ने एक जीवित भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया। ऐसा नहीं है कि यह भाषा प्राचीन काल से विद्यमान नहीं थी। हाँ, उसका नाम जो भी रहा हो पर वह विद्यमान थी। परन्तु कोई भी भाषा किसी दूसरी भाषा से प्रभावित होकर ही अपना अस्तित्व बना सकती है। सामान्यतः यह शौरसेनी प्राकृत या मध्यदेशीय प्राकृत से प्रभावित रही है। श्री कृष्णानंद गुप्त के अनुसार "बुंदेली भाषा शौरसेनी प्राकृत और मध्यदेशीय अपभ्रंश से विकसित हुई ब्रज और कन्नौजी भाषाओं की सहोदरा है।" अर्थात् सर्वमान रूप से यह सौरसेनी अपभ्रंश से विकसित भाषा है। हर पल के लिए, हर भाव के लिए एवं हर फन के लिए यहाँ अनेकानेक शब्द एवं उन शब्दों के बीसों पर्याय हैं जो हमें इसकी भाषिक विविधता की पुष्टि कराता है।

संसार की कोई भी भाषा शुद्ध नहीं होती क्योंकि यह संभव ही नहीं कि कोई बोली या भाषा अपने वर्तमान स्वरूप में शुद्ध रूप में विद्यमान रह सके। अर्थात् हर भाषा या बोली जिस ओर शक्ति संचय होता है उस ओर अपने आप ही मुड़ जाती है। भारत के संदर्भ में यह और ही स्पष्ट है कि यहाँ भाषा अपने स्वरूप में शुद्ध नहीं रह पायी है। इससे भाषा कमजोर नहीं अपितु समृद्ध होती है, कितने ही शब्द ज्यों के त्यों हिंदी में समा गए। डॉ. आरती दुबे इस संदर्भ में कहती हैं– "संपूर्ण विश्व में प्रचलित भाषाओं में कोई भी भाषा अथवा बोली पूर्णतया

शुध्द नहीं कही जा सकती क्योंकि वह न्यूनाधिक मात्रा में आसपास की भाषा अथवा बोलियों से प्रभावित होती है। लेकिन यह थोड़ा बहुत प्रभाव उसके शुद्ध रूप से पूर्णतया अलग नहीं करता।" इससे यह कहा जा सकता है कि कोई भी भाषा एक दूसरी भाषा से कुछ हद तक समानता रखती है। भाषा हमेशा परिवर्तनशील होती है तो उसका एकदम शुद्ध रूप हमेशा विद्मान नहीं रह सकता। तब यह निश्चित है कि भाषा का अपना वर्तमान रूप आगे वैसा नहीं रहेगा जैसा हम सुन या पढ़ रहे हैं।

यदि बुन्देली को शासकों का संरक्षण मिला होता तो उसका भी अपना व्याकरण होता किन्तु यह भाषा जितनी प्राचीन है उतना प्राचीन इसका व्याकरण नहीं है। हाँ, समय–समय पर इसके व्याकरण को लिखा गया किन्तु यह भाषा एक लोक भाषा तक ही सिमट कर रह गयी। इसके व्याकरण एवं हिंदी के व्याकरण में बहुत समानता है। इसमें स्वर एवं व्यंजन सामान्यतः समान ही हैं। बुन्देली कि व्याकरणिक विशेषताएं निम्नलिखित हैं– 1. इसमें विसर्ग का प्रयोग नहीं होता। 2. हिंदी के श, स, ष, के स्थान पर केवल एक ही 'स' का प्रयोग होता है। 3. संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग भी भिन्न है, 'ऋ' का 'रि', 'क्ष' का 'छ', 'त्र' का 'तर' एवं 'ज्ञ' का 'ग्य' हो जाता है। 4. इसमें 'व' का उच्चारण 'ब' हो जाता है। 5. अनुनासिक के बदले अनुस्वर लिखा जाता है। 6. व्यंजनों में 'न' के स्थान पर कहीं कहीं ल का प्रयोग होता है जैसे : जनम–जलम, नीम–लीम, लकड़ी–नकड़ी। 7. हकार का लोप भी बुंदेली की एक प्रमुख विशेषता है। उक्त तथ्यों में दिखाया गया है कि बुन्देली व्याकरणिक रूप से भी हिंदी के निकट है क्योंकि इसमें ज्यादातर व्याकरणिक एवं ध्वनिगत समानता है।

बुन्देली का व्यापक शब्द भंडार है यह हिंदी के एक क्षेत्रीय रूप का प्रतिनिधित्व करती है। इसमें साहित्य एवं लोक साहित्य की विस्तृत परंपरा रही है। क्योंकि भाषा को सहेजने का एक रूप लोक साहित्य भी है। यहाँ के लोकगीतों, कथाओं, गाथाओं आदि मे राम, कृष्ण एवं लोकदेवता हर जगह विद्यमान रहते हैं, फिर चाहे कोई भी कार्य क्यों न हो। इस भाषा के माध्यम से समय ने हर फन को अपने रंग मे रंग लिया है। कहा भी गया है कि 'देवता लौ ललचाने अपनी बुन्देली के लाने।' अर्थात् देवता भी इस भाषा के रस में रम जाते हैं। हिंदी में इसके शब्दों को कुछ हद तक ज्यों का त्यों ले लिया गया है। देशज शब्दों की कोटि में इन्ही लोकभाषाओं के शब्दों को हिंदी में ले लिया गया है। यथा– लोटा, बेटा, बड़ा, छोटा, दादा, धोबी, बसीट, बिचौलिया, ऊटपटाँग, लफंगा, थप्पड़, दंगा, धुरंदर, सत्यानास, अकल, तितली, कौआ, अजगर, पसीना, अंजन, तिलक, पतीला, करैया, तवा, कुल्हाड़ी, तिली, पकड़, धूप, थाल, अकाज, अखंड, अगम, पक्की आदि अनेक ऐसे शब्द हैं जिनके द्वारा हिंदी समृद्ध हुई है।

भारतीय भाषाओं की आदि जननी संस्कृत में 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ' कहा गया है अर्थात शब्द और अर्थ एक दूसरे से अभिन्न हैं। अवधी भाषा में भी तुलसी ने उसे "गिरा अरथ जल बीचि समकहिअत भिन्त्र न भिन्न। बंदउँ सीता राम पदजिन्हहि परम प्रिय खिन्न।।" कहकर सम्बोधित किया है। किसी भी भाषा को व्यक्त करने हेतु शब्दों की ही आवश्यकता होती है। क्योंकि इस महामानव समुद्र में शब्द ज्ञान के बिना कुछ भी संभव नहीं है। 'वाक्य पदीयम्' के रचयिता भर्तृहरि भी कहते हैं 'ज्ञान शब्देन असम्भवे।' शब्द के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि हिंदी के विकास में क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों ने इसको समृद्ध किया है। फिर चाहे वह बुंदेली हो या अन्य कोई भी भाषा हो क्योंकि भाषा परिवर्तनशील, प्रभावशील एवं सामाजिक संपत्ति है।

संदर्भ :-

1. गुलाबराय, बाबू, हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास, साहित्य सरोवर, आगरा (उत्तर प्रदेश), पृ.–9
2. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, भाषा साहित्य और देश, भारतीय ज्ञानपीठ, चतुर्थ संस्करण, 2010, नई दिल्ली, पृ. 44
3. तिवारी, डॉ. भोलानाथ, भाषा विज्ञान, सत्तावनवाँ संस्करण 2013, किताब महल, नई दिल्ली, पृ. 93
4. सांकृत्यायन, महापंडित राहुल, संपा. हिंदी साहित्य का वृहद इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्रथम संस्करण 2000, पृ. 312
5. दुबे, डॉ. आरती, बुन्देली साहित्य का इतिहास, साहित्य अकादमी, म. प्र. संस्कृति परिषद, भोपाल, 2011, पृ. 45
6. टीका, हनुमान प्रसाद पौउद्दार, तुलसीदास, रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर, संसकरण 104, संवत 2070, पृ. 23

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 129-131

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा एवं भारतीय शिक्षा पद्धति : कल, आज और कल के संदर्भ में

रिद्धी वधवा

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक।

सारांश :-

'भाषा' जो 'भाष' धातु से बनी है जिसका माध्यम है। संप्रेषण हमारे विचारों का आदान–प्रदान अर्थात् विचारों की अभिव्यक्ति जब हम बोलकर या लिखकर करते हैं तो वह भाषा कहलाती है। भाषा जो भावों का सागर भी कहीं जा सकती है। भाव हमारी भाषा को सुगम बनाते हैं। वैसे ही हमारी हिन्दी भाषा है जो भावों से भरी हुई है। संस्कृत जिसकी माता है और साहित्यकार जिसकी संतान वही हमारी मातृभाषा हिन्दी है जो वर्तमान में विश्व के परिदृश्य में चमक रही है। जड़ से चेतन तक पहुँचना इतना सरल नहीं था इसके बीच हिन्दी भाषा ने बहुत सी चुनौतियाँ देखी हैं तब कहीं जाकर विश्व में अपनी पहचान बनाई है। इस बीच जितनी भी चुनौतियाँ आई उन सब चुनौतियों को स्वीकारा है। हमारे हिन्दी प्रेमी साहित्यकारों एवं इतिहासकारों ने और भाषा का शोध किया जिसमें अनेकों भाषाओं का परिचय भी हुआ। अपभ्रंश, शौरसेनी, पालि, प्राकृत आदि भाषाएं देखने को मिली परंतु सबसे प्राचीन भाषा हमारी वैदिक संस्कृत को ही माना गया। हमारी भारतीय शिक्षा पद्धतियाँ भी वैदिक संस्कृत से ही प्रारंभ हुई तो वर्तमान में वैश्विकता के शिखर पर है। विश्व में अनेकों भाषाएं बोली जाती है परंतु हिन्दी भाषा का अपना स्थान है। यह भाषा विचार–विनिमय का भावुकतापूर्ण साधन है। इसलिए ही इसको भावों की भाषा भी कहते हैं।

भूमिका :-

जब से हमारी सृजना हुई है तभी से भाषा भी हमारे साथ है फिर चाहे वह सांकेतिक ही क्यों न हो जैसे ही वर्ण बने शब्द बने, वाक्य और पद बने वैसे ही संकेतों के भावों ने शब्दों का रूप धारण करके भाषा को विकसित कर दिया हमारी हिन्दी भाषा हमें हमारी संस्कृति, संस्कार, आदर्श एवं मूल्यों से जोड़ती है।

विश्व में आज हिन्दी भाषा का स्थान प्रथम है। इतनी भाषाओं को पीछे छोड़कर वर्तमान में हिन्दी ने प्रथम स्थान बनाकर विश्व में परचम लहरा दिया है यह मात्र बोलने तक ही सीमित नहीं है। वर्तमान में शिक्षा प्रणालियों का प्रमुख अंश रही है।

शिक्षण की अनेकों पद्धतियाँ है जिनके माध्यम से विद्यार्थियों को प्राथमिक स्तर से ही भाषा का ज्ञान करवाया जाता है। जिसे मातृभाषा भी कहते हैं।

संस्कृत भाषा की पुत्री के रूप में विकसित होने वाली हमारी हिन्दी आज (वर्तमान) में विश्व की प्रथम भाषा के रूप में उभरी है। वर्तमान समय में शिक्षण पद्धतियों में विश्व के अनेकों देशों ने अपनी शिक्षा प्रणाली में हिन्दी को प्रमुख स्थान दिया है। प्राचीन शिक्षण पद्धतियों में भी (कल के संदर्भ में) हिन्दी भाषा थी : परंतु वैदिक संस्कृत के रूप में गुरूकुल प्रणाली के माध्यम से विद्यार्थी गुरू के सानिध्य में बैठकर मौखिक रूप में पाठों, श्लोकों, मंत्रो का उच्चारण करते थे। वर्तमान में भारत के सभी प्रांतों से लेकर विदेशों के कक्षा कक्षों तक यह पहुंची हुई है।

'कल' अर्थात प्राचीन संदर्भ में हिन्दी एवं शिक्षण पद्धतियाँ :-

पुराने समय में भाषा सीखने एक माध्यम मौखिकी था। मौखिक रूप में उच्चारण करते हुए भाषा को सीखाया जाता था।

गुरूकुल प्रणाली हमारी प्रांरभिक शिक्षा पद्धति है जिसमें विद्यार्थी को नियमों का पालन करते हुए शिक्षा ग्रहण करनी होती थी।

विद्यार्थी, वेदों, पुराणों, उपनिषदों आदि को मौखिक रूप में ग्रहण करते थे। धीरे–धीरे पाण्डुलिपियों का विकास हुआ और भाषा एक लिखित रूप भी प्रस्तुत हुआ। वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, अपभ्रंश, शौरसेनी आदि जैसी भाषाओं से गुजरती हुई हमारी हिन्दी अपने नवीन अवतार में हमारे समक्ष प्रस्तुत हुई जो सरल, स्पष्ट तथा भावों की प्रधानता लिए हुए हैं।

प्राचीन शिक्षा पद्धति परंपरागत प्रणाली थी जिसमें हमारे ऋषि–मुनियों द्वारा अपने शिष्यों को ध्यान, चिंतन, मनन इत्यादि के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करवाई जाती थी। शांत वातावरण, शुद्ध आचरण, शुद्ध विचरण के बीच में गुरू के चरणों का सानिध्य पाकर विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे।

प्रारंभ में शिक्षा के कुछ मानदंड भी थे :-

– योग्यता के आधार पर। – जाति वर्ण के आधार पर।

इस प्रकार से धीरे–धीरे शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन हुए और वर्तमान में शिक्षा सभी के लिए बन गई अर्थात शिक्षा पर सबका समान अधिकार बन गया जैसे भाषा 'सर्वजन की है वैसी ही शिक्षा भी सर्वजनाय बन गई। प्राचीन भाषा प्रणाली को विकसित करके वर्तमान में ''सुन, पढ़, बोल, लिख' पर आधार बनाया गया है। इस प्रकार से प्राचीन (कल के संदर्भ की हिन्दी शिक्षण पद्धति) को वर्तमान में नवीन विधियों से प्रस्तुत किया गया।

आज (वर्तमान) और कल (भविष्य) के संदर्भ में हिन्दी :-

वर्तमान समय में हिन्दी भाषा वैश्विक रूप में उभर कर सामने आई है।

'जयंती प्रसाद नौटियाल' का कथन :-

''विश्व में हिन्दी प्रयोग करने वालों की संख्या चीन से भी अधिक है। हिन्दी भाषा वर्तमान में प्रथम स्थान पर है। हमारी हिन्दी भाषा ने विश्व की अन्य भाषाओं के साथ–साथ अंग्रेजी को भी पीछे छोड़ दिया है।

हमारे 'राष्ट्रपिता महात्मा गांधी' जी ने भी कहा है :-

''हिन्दी ही देश को एक सूत्र में बाँध सकती है। इसलिए देश के प्रत्येक नागरिक को हिन्दी भाषा में बोलना चाहिए।''

– हिन्दी भाषा हृदय की भाषा है जो भावों को शब्दों के माध्यम से समझा देती है।

– आंकड़ों की माने तो वर्तमान समय में विश्व के 143 विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षा का पठन–पाठन हो

रहा है। 113 ऐसे विश्वविद्यालय है जिनमें हिन्दी का अध्ययन हो रहा है।

– अमेरिका में भी 13 शोध केंद्र ऐसे हैं जिनमें हिन्दी भाषा शोध का विषय बनी हुई है। यह हमारे लिए गर्व की बात है।

वर्तमान में हिन्दी भाषा अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया तथा यूरोप जैसे देशों में विषय बनी हुई है। भविष्य में इसका और भी प्रचार–प्रसार होगा। विश्व स्तर पर अनेकों शिक्षण संस्थाएं, गैर संस्थाएं है, जो हिन्दी भाषा के प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके माध्यम से शिक्षण पद्धति को भी नए–नए आयाम मिल रहे हैं और मिलते रहेंगें, भाषा प्रयोगशाला इसका एक मुख्य उदाहरण है जिसके माध्यम से प्रत्येक विद्यार्थी तकनीकी को सीख रहा है जिसके कारण विद्यार्थियों की रूचि भी भाषा के प्रति बढ़ रही है।

आने वाला समय नई शिक्षा नीति 2020 का होगा जिसमें भाषा पर प्राथमिक स्तर से ध्यान दिया गया है विद्यार्थी भाषा का बोध कर सकेंगें मातृभाषा के रूप में। आने वाला कल हमारी हिन्दी भाषा स्वर्ण कलश लिए खड़ा है। बस हम सभी का प्रयास इस स्वर्ण कलश के जल को पीना और पिलाना होना चाहिए।

निष्कर्ष :–

अंत में कह सकते हैं कि हिन्दी भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का भाव से भरा साधन है। विश्व स्तर पर हिन्दी भाषा प्रथम स्थान पर है। आने वाले समय में और आगे बढ़ेगी।

संदर्भ सूची :–

1. राकेश शर्मा 'निशीथ' – ''विश्व भाषा की ओर हिन्दी भाषा के बढ़ते कदम'' (लेख)
2. डॉ. रामनिंकर, श्रीमती विनीता पाण्डेय' – ''वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी का स्वरूप (लेख)
3. श्री कालराज मिश्र – ''नई शिक्षा नीति का भाषिक संदर्भ और हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य'' (बंसंत महाविद्यालय वाराणसी)
4. नई शिक्षा नीति (2020), ''मानव संसाधन विकास मंत्रालय''।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 132-134

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा एवं हिंदी साहित्य में बाल मनोवैज्ञानिक लक्ष्मी खन्ना 'सुमन' का योगदान

रितु रानी (UGC. NET)

पीएच०डी० शोधार्थी, हिंदी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा)

शोध सार :–

हिंदी भाषा सबसे प्राचीन एवं सर्वभाषाजननी संस्कृत की पुत्री एवं उत्तराधिकारिणी मानी जाती है। वैश्विक स्तर पर हिंदी का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है। हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली एवं विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है। भारत के साथ–साथ फिजी, नेपाल मॉरीशस और अन्य कई देशों में हिंदी काफी ज्यादा लोकप्रिय हो रही है। हिंदी शैक्षिक स्तर पर विस्तृत हो रही है, नई शिक्षा पद्धति के माध्यम से अपनी भाषाओं को ओर अधिक समृद्ध किया जा रहा है एवं रोजगार और व्यापार के लिए भी हिंदी भाषा उपयोग में ली जा रही है। यह हमारी मातृभाषा होने के साथ विश्व की चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिंदी ने सिर्फ भाषिक स्तर पर ही नहीं साहित्यिक स्तर पर भी अपनी एक अहम पहचान बनाई है। साहित्य, बाल साहित्य, कला, कहानी, उपन्यास और फिल्मी जगत आदि अनेक विधाओं में अपना वर्चस्व स्थापित किया है। यह सिर्फ एक भाषा ही नहीं है बल्कि भारतवासियों के दिलों की धड़कन है और अपने आप को हिंदुस्तानी कहना पसंद करते हैं।

विश्व पटल पर हिंदी नए रूप में उभरकर सामने आई है। हिंदी में इतनी शक्ति है कि वह विभिन्न भारतीय और विदेशी भाषाओं के शब्दों को अपने में समाहित किए हुए है और वह शब्द अब अपनी भाषा के जान पड़ते हैं। हिंदी में अनेक विधाओं के रूप में साहित्य उभरकर सामने आया है, जिनमें से बाल साहित्य का विशेष स्थान है और बाल साहित्य के अंर्तगत लक्ष्मी खन्ना सुमन जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है जिन्होंने बाल साहित्य के माध्यम से बालकों की मनोवैज्ञानिकता को दर्शाने व समझाने का प्रयास किया है और उनमें उच्च मूल्य स्थापित करने की सफल कोशिश की है।

बीज शब्द (मूल–शब्द) :– वैश्वीकरण, सृजनात्मकता, सुदीर्घ, मनोविज्ञान, परिदृश्य, प्रासांगिकता।

प्रस्तावना :–

हिंदी भाषा हमें आपस में जोड़ने का सबसे अच्छा व उचित माध्यम है, इसके बिना हम शायद अपने आप को अच्छे से अभिव्यक्त भी न कर पाए। इसी कारण यह धर्म, जाति, क्षेत्र और पंथ के दायरों को तोड़कर विश्व स्तर पर अपनी एक अमिट छाप छोड़ती है। इसमें सरलता व स्पष्टता है अर्थात् जैसा बोलते हैं, वैसा ही लिखते भी हैं। अन्य भाषाओं में ऐसा नहीं होता है। यह केवल भाषा ही नहीं है। बल्कि एक सांस्कृतिक विरासत भी है

जो हमें जीवंत रखे हुए है। अन्यथा आधुनिक चकाचौंध में तो हमें अंग्रेजी ने जकड़ ही लिया है। लेकिन हमारी बढ़ती हुई आर्थिक शक्ति और वैश्वीकरण के साथ हिंदी का प्रभाव भी अधिक बढ़ रहा है। हिंदी को भारत के साथ अन्य देश भी अब सम्मान की नजर से देखते हैं। साहित्य समाज का दर्पण होता है। हिंदी में अलग–अलग विधाओं को माध्यम बनाकर साहित्य रचा गया है जिनमें से बाल साहित्य का भी अपना एक अलग स्थान है। कविता, उपन्यास, कहानी, बाल–गीत, बाल–गजले समेत अनेक विधाओं में निरंतर लिखे जा रहे बाल साहित्य की एक सुदीर्घ और गरिमामयी परंपरा रही है। बाल साहित्य की चर्चा आते ही मन छलाँगे लगाकर बचपन की यादों में पहुंच जाता है और यह होना स्वाभाविक भी है। वह लेखक ही क्या जो अपनी लेखनी से पाठकों को बांध न सके।

ऐसे ही एक बाल साहित्यकार लक्ष्मी खन्ना सुमन जी ने भी बालकों के मनोवैज्ञानिक सोच को ध्यान में रखकर साहित्य लिखा है। उन्होंने अलग–अलग विधाओं में अपनी लेखनी चलाई हैं। बालकों की कल्पना शक्ति को साहित्य के द्वारा बढ़ाने का उन्होंने हमेशा से प्रयास किया है। उनकी रचना 'कविताओं में पंचतंत्र' में कहानियों को इतने रोचक ढ़ंग से प्रस्तुत किया है जिसका जवाब ही नहीं है। इनको यदि व्यस्क या किशोर भी पढ़े तो वह उनके दिलोदिमाग पर भी एक गहरा प्रभाव छोड़ती है जो उन्हें उनके बचपन में ले जाती है। इसके साथ नैतिक मूल्यों को भी बढ़ाती है। बाल मनोविज्ञान केवल एक साहित्य ही नहीं है बल्कि यह बालकों के मन का विज्ञान है। बाल साहित्य के आधुनिक परिदृश्य से जुड़े ऐसे विविध आयाम हैं। सुमन जी ने आज के परिप्रेक्ष्य के साथ जोड़कर कथाओं, कहानियों, भुत–प्रेत, परी–कथा, रहस्य जैसी प्रासंगिक विवादनीय विषयों से जुड़े आलेख तैयार किए हैं। आज के युग में बच्चों के सम्मुख कौन–कौन सी चुनौतियाँ है। इस पर भी विवेचना की है। सुमन जी ने बाल साहित्य को भिन्न–भिन्न विधाओं में लिखा है। जैसे उनका कहानी संग्रह– शेर की सवारी, उपन्यास– ईनी–मीनी की मजेदार दुनिया, बालगीत संग्रह–नन्हे–मुन्ने गीत इसके अलावा भी बहुत कुछ है। बाल साहित्य का संबंध हृदय की अंतर्गत अनुभूति से है। अपने साहित्य के द्वारा वह बच्चों में सृजनात्मकता के गुण विकसित कर पाए हैं जो एक अच्छे समाज के निर्माण के लिए होना अतिआवश्यक है।

उनकी बाल कहानी 'ऐसा कैसे हुआ' में उन्होंने बालकों में सोचने की क्षमता विकसित करने का सराहनीय प्रयास किया है, ऐसी–ऐसी बाल कहानियाँ है कि बालक पढ़कर यह सोच–विचार करने पर मजबूर हो जाते हैं कि ऐसा किस तरह हुआ होगा। जिससे उनका मानसिक विकास होता है और कल्पना, यथार्थ मिलकर एक नई सोच का निर्माण करते हैं। आज के डिजिटल युग में किशोर बहुत प्रबुद्ध है, यह डिजिटल दुनिया उनमें अच्छे गुणों के साथ दुष्परिणाम भी विकसित कर सकती है इससे बचाव के लिए उन्हें उत्तम व सुव्यवस्थित साहित्य से जोड़ना जरूरी है। जिससे नैतिक मूल्य स्थापित किए जा सकते हैं जो कार्य लक्ष्मी खन्ना सुमन जी ने बखूबी किया है। उनका साहित्य बालकों को बांधकर रखता है जिससे उनकी हिंदी साहित्य में रूचि और अधिक बढ़ती है। इसी के साथ–साथ सुमन जी ने अपनी विभिन्न रचनाओं के द्वारा हिंदी साहित्य जगत को एक नई उड़ान दी है, जो साहित्यिक जगत में बेहद सराहनीय कदम है।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचना में हिंदी भाषा के अंतर्गत बाल साहित्य को सुमन जी ने नई ऊंचाईया प्रदान की है। हिंदी भाषा का भविष्य उज्ज्वल है। भारत की बढ़ती हुई वैश्विक भूमिका और डिजिटल क्रांति के साथ हिंदी भाषा

दुनिया में अपनी प्रमुख जगह बना रही है जिसे नकारा नहीं जा सकता है। बाल साहित्य बालकों के मानसिक व व्यवहारिक स्तर को समृद्ध करता है जिससे उनके स्वांगीण विकास में सहायता मिलती है और नैतिक मूल्य स्थापित होते हैं जो एक बेहतर समाज व उज्ज्वल भविष्य के लिए अति आवश्यक है। यह सब हिंदी भाषा की ही देन है।

सन्दर्भ सूची :-

1. डॉ० डी० एन० श्रीवास्तव, आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. लक्ष्मी खन्ना सुमन, ऐसा कैसे हुआ, गीतिका प्रकाशन, बिजनौर।
3. डॉ० विमल अग्रवाल, मनोविज्ञान, SBPD पब्लिकेशन्स।
4. डॉ० शकुन्तला कालरा, हिंदी बालसाहित्य आधुनिक परिदृश्य, नमन प्रकाशन (नई दिल्ली) – 110002
5. प्रकाश मनु, हिंदी बाल साहित्य का इतिहास, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
6. लक्ष्मी खन्ना सुमन, ईनी–मीनी की मजेदार दुनिया, तूलिक प्रकाशन, 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ० प्र०)
7. संजय सिंह बघेल, हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास, पेपरबैक्स।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 135-138

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा साहित्य व शिक्षण में प्रवासी साहित्यकार अंजना संधीर का योगदान

श्रीमती सविता अधाना

पी–एच डी0 शोधार्थी, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा।

भूमिका :–

21वीं शताब्दी का 'भारत' आज विश्व में अपनी युवा शक्ति और प्रतिभा के कारण शीर्ष शक्तिशाली देशों की अग्रिम पंक्ति में स्थान रखता है। "भारत गणराज्य को दुनिया के उभरती हुई महाशक्तियों में से एक माना जाता है।"[1]

("NIC Global Trend" मूल से 16 जून 2012 को पुरालेखित अभिगम तिथि 22 दिसम्बर 2019)। भारत को महाशक्ति बनाने के पीछे के प्रमुख कारणों में हम हमारी जनसांख्यिकी रूझान और तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था को मान सकते हैं। दुनिया में भारत के बढ़ते प्रभाव के पीछे के प्रमुख कारणों में से एक प्रभावशाली कारण भारत का भाषाई और सांस्कृतिक प्रभाव है। भूमंडलीकरण के इस युग में मनुष्य अपनी सफलता के चर्मोत्कर्ष पर पहुँचने के लिए निरंतर प्रयासरत है। एक देश से दूसरे देशों में आना–जाना व अपने मूल देश को छोड़कर विदेश में बस जाने की यह प्रक्रिया आज बदस्तूर जारी है। "प्रवास में लोग अपनी जन्म भूमि छोड़कर विदेशों में जाकर वास करते हैं।"[2]

भारत भूमि से भी करोड़ों की संख्या में भारतीय मूल के लोग विदेशों में प्रवासी के रूप में रह रहे हैं। यह भारतीय प्रवासी लोग भारतीय भूमि से दूर होने के दर्द को सहते हुए अपने देश की भाषा और संस्कृति का प्रसार–प्रचार कर भारतीय भाषा और संस्कृति को वैश्विक रूप से प्रसारित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। इन्हीं प्रमुख साहित्यकारों में से एक अंजना संधीर प्रवासी हिन्दी साहित्य व शिक्षण के माध्यम से हिन्दी भाषा के विकास और संवर्द्धन के कार्य को बड़ी लगन व निष्ठा से कर रही है। इनके योगदान को हम निम्न बिन्दुओं के रूप में समझ सकते हैं :–

हिन्दी साहित्य लेखन व संपादन के कार्य :–

विदेशी भूमि पर हिन्दी भाषा के विकास और प्रसिद्धि के लिए अंजना संधीर ने अथक प्रयासों व कठिन परिश्रम से कार्य किया है। अंजना जी ने अपने प्रवास काल के समय अनेक हिन्दी साहित्यिक गतिविधियों, सम्मेलनों, कार्यक्रमों का आयोजन, मंचन और क्रियान्वन से संबंधित कार्य तो किए ही साथ–ही–साथ उत्कृष्ठ कोटी का हिन्दी साहित्य लेखन भी किया। अंजना जी ने काव्य संग्रहों, गज़ल संग्रहों, लेखों, संस्मरण इत्यादि

से हिंदी के प्रति अपना प्रेम व्यक्त किया। अंजना जी ने अपने अमरीका प्रवास काल में हिन्दी में अपने भावों की अभिव्यक्ति कर इस भाषा के प्रति अपनी संवेदनशीलता व आदर प्रकट करने का एक माध्यम बना लिया। वहीं अमरीका जैसे देश में बसे अन्य भारतीय साहित्यकारों को भी आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने उन्हें प्रकाश में लाने के लिए संपादन कार्य का बीड़ा भी उठाया। इस विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ० कमल किशोर गोयनका जी लिखते हैं, "डॉ० अंजना संधीर दो स्तरों पर कार्यरत हैं, एक वे अपनी सर्जनात्मक अनुभूतियों को कविता, गज़लों आदि में अभिव्यक्त करती है तथा दूसरे, अमेरिका के प्रवासी हिन्दी कवियों तथा कवयित्रियों की कविताओं के संकलन संपादित एवं प्रकाशित कराकर उन्हें हिन्दी संसार तक पहुँचाती है। एक हिंदी प्रेमी प्रवासी भारतीय का यह कर्त्तव्य है कि वह निजी सर्जननात्मकता के साथ अपने साथी रचनाकारों की रचनात्मकता का भी विकास करें।"[3]

अंजना जी के हिन्दी भाषा लगाव व उत्तरदायित्व की भावना के कारण "वे प्रवासी भारतीय समाज के साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की अनिवार्य अंग बनी और उनकी अमेरीका में रहते हुए निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई।

1. तुम मेरे पापा जैसे नहीं हो (1997)
2. प्रवासी हस्ताक्षर (22 अमेरिका के प्रवासी हिंदी कवियों/कवयित्रियों की 133 कविताओं का संकलन, 1997)
3. धूप, छाँव और आँगन (गज़ल संग्रह 1999)
4. ये कश्मीर हैं (23 अमेरीका के प्रवासी हिन्दी कवियों/कवयित्रियों की कश्मीर पर लिखी 70 कविताएँ, 2001)
5. अमेरिका एक अनोखा देश (2003)
6. अमेरिका हड्डियों में जम जाता है (2003)"[4]

भारतीय होने का गर्व कैसा होता है। हम यह सारांश अंजना जी व्यक्तिगत जीवन व साहित्य अनुशीलन से महसूस कर सकते हैं। भारतभूमि से दूर रहकर भी अंजना जी ने अपनी मातृभूमि व भाषा से कभी मोह नहीं त्यागा और अमरीका जैसे वैभवशाली देश में रहकर भी अपने भारतीय होने के गर्व से प्रेरणा पाकर आगे ही बढ़ती गई। इस विषय पर कमल किशोर गोयनका जी लिखते हैं, "डॉ० अंजना संधीर ऐसी विकट परिस्थितियों तथा जीवन शैली वाले देश अमरीका में पहुँची तो एक बार हतप्रभ तो हुई, लेकिन अपने भारतीयपन को उन्होंने जीवित रखा अपने कवि मन को अमेरिकन जीवन तथा वहाँ के भारतीय प्रवासी समाज से जोड़ने का पूरा प्रयास किया।"[5]

अंजना जी ने हिन्दी भाषा में लिखी अपनी कविताओं में भारतीय प्रवासी समाज की विभिन्न समस्याओं व उलझनों से तो हमें परिचित कराया ही है। साथ ही साथ विदेशों में जाकर बसने के लिए बैचेन युवाओं को अपनी इन कविताओं के माध्यम से सावधान भी किया है कि पाश्चात्य देश और संस्कृति हमारी भाषा संस्कृति से बिल्कुल विपरीत है और यहाँ आकर तुम अपना सब कुछ मिटाकर भी कभी विदेशी नहीं बन पाओगे और यहाँ की वैभवशीलता और चकाचौंध तुम्हारा सब कुछ छीनकर तुम्हें सुविधा भोगी बनाकर सदैव के लिए तुम्हें अपना गुलाम बना लेगी।

अपने हिंदी काव्य संग्रह 'अमरीका हड्डियों में जम जाता हैं' में वह यहीं दर्शाती हुई कहती है, यथा–

"अमरीका जब साँसों में बसने लगा,
तो अच्छा लगा क्योंकि साँसों को पंखों,
की उड़ान का अंदाजा हुआ।
जब स्वाद में बसने लगा अमरीका,
तो सोचा खाओ इतना सस्ता कहाँ मिलेगा?
लेकिन हड्डियों में बसने लगा अमरीका तो,
परेशान हूँ,
बच्चे हाथ से निकल गये... वतन छूट गया,
संस्कृति का मिश्रण हो गया,
जवानी बुढ़ा गई, सुविधाएँ हड्डियों में समा गई,
अमरीका सुविधाएँ देकर हड्डियों में समा,
जाता है,
व्यक्ति वतन को भूल जाता हैं,
और सोचता रहता हैं,
मगर इन सुखों की गुलामी मेरी हड्डियों,
में बस गई है।"[6]

इस प्रकार अपनी कविताओं, साहित्य और संपादन आदि से अंजना जी ने केवल हिन्दी भाषा को विदेशी भूमि पर प्रसारित–प्रचारित करने का कार्य किया है साथ ही भारतीय संस्कृति व सभ्यता को बचाने व प्रवासी लोगों को इसे अपनाएँ रखने के लिए भी प्रेरित किया है।

हिन्दी भाषा शिक्षण :–

डॉ० अंजना संधीर ने मनोविज्ञान में पीएच०डी० की है। अंग्रेजी, हिंदी, पंजाबी, गुजराती, उर्दू आदि भाषाओं में अच्छी पकड़ के कारण उत्कृष्ट साहित्य को जनसाधारण की पहुँच में लाने के लिए अनुवाद कार्य भी किया है। अमरीका जैसे देश के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में अंजना जी ने देशी–विदेशी छात्रों को हिन्दी भाषा का ज्ञान भी दिया है। अंजना जी का हिन्दी भाषा शिक्षण अपने अनूठे प्रयोगों और भाषा के व्याकरण को सिखाने के लिए भारतीय गीतों का प्रयोग अत्यंत नवीन, प्रसिद्ध व रुचिकर प्रयोग सिद्ध हुआ। भारतीय फिल्मी गीतों के माध्यम से एक तरफ तो अंजना जी छात्रों को व्याकरण सिखाती तो वहीं भारतीय गीतों से भारतीय संस्कृति, मेलें, त्यौहार, आदि का ज्ञान भी छात्रों को देने का महत्ती कार्य किया। अंजना जी ने अमरीका के आर० बी० सी० रेडियो चैनल पर, 'आओं' हम हिन्दी फिल्मी गीतों के माध्यम से हिन्दी सीखें' कार्यक्रम का सुन्दर प्रसारण किया।

इसी से आधार प्राप्त कर इन्होंने Learn Hindi & Hindi Film Songs' सन् 2003 में इसका प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ। सन् 2004 में इनका दूसरा संस्करण निकला। इस पुस्तक की उपयोगिता के बारे में पेन्सिलेनिया यूनिवर्सिटी, फिलाडेल्फिया के प्रोफेसर सुरेन्द्र गंभीर का मंतव्य है– "फिल्मी संगीत आज विशेष रूप से युवा संस्कृति का अभिन्न अंग हैं और उनके दिलो–दिमाग में एक झंकार–सी पैदा कर देता हैं। डॉ० अंजना संधीर ने विदेशों में बसे युवाजनों की इस मानसिक स्थिति को पहचाना हैं और फलस्वरूप यह संचयन हमारे

सामने प्रस्तुत किया हैं। भाषा सीखने की आवश्यकताओं को दृष्टि में रखते हुए उन्होंने अपने चयन में गानों की भाषा और शब्दा–सम्पदा पर विशेष ध्यान रखा है। वास्तव में अपने मौलिक शिक्षण से हिन्दी भाषा को सीखने व जानने के लिए विदेशी छात्रों को प्रेरित कर हिन्दी भाषा के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया है।

निष्कर्ष :–

वास्तव में अंजना संधीर जी ने अमरीका में हिंदी भाषा की जो वर्तिका जलाई है वह सारे जग को सदैव आलोकित करती रहेगी। इस प्रकार हम कह सकते हैं अजंना जी का साहित्य लेखन व भाषा शिक्षण आदि द्वारा किए गए कार्य हिन्दी भाषा प्रसार व प्रचार के कार्य में अत्यंत महत्वपूर्ण व उल्लेखनीय हैं।

संदर्भ :–

1. NIC Global Trend मूल से 16 जून 2012 को पुरालेखित अभिगम तिथि 22 दिसम्बर 2019
2. रामचन्द्र वर्मा (संपा०) मानक हिन्दी कोश, पृष्ठ–636
3. कमल किशोर गोयनका, हिन्दी प्रवासी साहित्य, पृष्ठ–416
4. वहीं, पृष्ठ–416
5. वहीं, पृष्ठ–415
6. डॉ० अंजना संधीर, अमरीका हड्डियों में जम जाता हैं, पृष्ठ–55

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 139-143

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Indian Languages, Hindi, and the New Education Policy : A Global Perspective

Dr. Shefali Mendiratta

Assistant Professor, Suresh Gyan Vihar University, Jaipur (Rajasthan)

Abstract :

India boasts one of the most linguistically diverse landscapes in the world, with a vast array of languages contributing to its cultural richness. Hindi, as one of the country's official languages, plays a vital role in fostering national cohesion and cultural expression. The New Education Policy (NEP) 2020 underscores the importance of multilingualism and the preservation of linguistic diversity. This paper explores the role of Indian languages, particularly Hindi, within the framework of NEP 2020 and evaluates its implications in the globalized era. It highlights the policy's alignment with international educational trends and addresses the challenges of balancing local, national, and global linguistic aspirations.

Keywords : Indian Languages, Hindi Language, New Education Policy, Global Perspective.

Introduction :

India's linguistic diversity is both a cornerstone of its cultural identity and a challenge in shaping cohesive educational and cultural policies. With 22 scheduled languages and numerous dialects, the nation's multilingualism has deeply influenced its societal and policy frameworks. Hindi, as the official language, has gained prominence not only within the country but also on the international stage. In a globalized world, Hindi serves as a bridge language alongside English, enriching communication, literature, cinema, and education. The NEP 2020 represents a paradigm shift in Indian education, emphasizing the significance of language as a medium for cognitive and cultural growth. This paper examines the NEP's vision for Indian languages, particularly Hindi, in the context of globalization and its influence on education, identity, and culture.

The Hindi language holds great significance for a variety of reasons :

Cultural Heritage :

Hindi serves as a custodian of India's rich culture, traditions, and customs. It connects

individuals to their roots and plays a vital role in preserving the nation's heritage.

National Identity :

As the official language of India, Hindi represents a cornerstone of national identity. Predominantly spoken in northern India, it fosters a sense of unity and cultural pride across the country.

Communication :

Hindi is a powerful medium of communication, connecting over a billion speakers worldwide. Its growing recognition by multinational corporations highlights its importance in bridging cultures and facilitating global interactions.

Literary Heritage :

Hindi boasts a profound literary tradition, encompassing ancient epics, devotional poetry, and modern works. Renowned poets such as Kabir, Tulsidas, and Surdas have left an indelible mark on Indian culture through their timeless creations.

Social Integration :

Acting as a unifying force, Hindi bridges India's diverse cultures and promotes social cohesion. It is widely used on social media platforms, enhancing communication and fostering community building.

Hindi in Global Forums :

Efforts by the Indian government and its diaspora has significantly elevated Hindi's presence in international arenas. Key developments include :

- **Hindi in the United Nations :**
  - Indian leaders have delivered landmark speeches in Hindi at the United Nations General Assembly.
  - Persistent lobbying by India aims to make Hindi an official UN language, supported by global Hindi conferences.
- **Use of Hindi in Other Organizations :**
  - Global platforms like SAARC, UNESCO, and the G20 are increasingly incorporating Hindi.
  - International Hindi conventions further amplify its reach.

Cultural Promotion through Cinema, Music, and Literature :

The global popularity of Hindi has been fueled by its cultural exports in cinema, music, and literature :

Cinema : Bollywood films like *3 Idiots*, *Dangal*, and *PK* have introduced Hindi to global

audiences through subtitles and dubbing.

Music : Hindi songs, especially from Bollywood, are widely appreciated internationally, while devotional tracks have found global resonance through yoga and meditation.

Literature : Works by authors like Munshi Premchand and Mahadevi Verma have reached wider audiences through translations, showcasing Hindi's literary richness.

Promoting Hindi through Education :

Education has been a powerful tool for spreading Hindi worldwide. Initiatives include :

Foreign Universities : Prestigious institutions like Oxford and Harvard offer Hindi courses. The ICCR also supports Hindi education abroad.

Digital Learning : Platforms like Duolingo and Coursera provide accessible Hindi courses online.

Community Schools : Diaspora-led initiatives have established Hindi schools to teach the language and foster cultural ties.

Hindi in the Digital Era :

The digital age has given Hindi a dynamic role in communication and knowledge dissemination :

Online Content : Platforms such as Google, YouTube, and government websites are rich with Hindi content, including blogs, e-books, and video tutorials.

E-Learning : Byju's, Khan Academy, and other platforms have embraced Hindi, enabling inclusive education.

Social Media : Platforms like Twitter and Instagram witness vibrant Hindi content, promoting regional identity and offering business opportunities.

Linguistic Diversity and NEP 2020 :

The National Education Policy (NEP) 2020 underscores the significance of promoting Indian languages, including Hindi, to foster cultural preservation, linguistic diversity, and improved access to education. Key highlights of the policy include :

Multilingual Education : NEP 2020 emphasizes teaching in the mother tongue or regional language, particularly at the primary level, to bolster comprehension, cognitive development, and inclusivity in education. (Index Copernicus Journals)

Three-Language Formula : The policy introduces a flexible three-language approach, encouraging students to study a combination of regional languages, Hindi, and English. This aims to ensure linguistic balance while respecting local preferences without imposing any specific language combinations. (News Laundry)

Promotion of Classical and Regional Languages : NEP 2020 outlines initiatives to preserve

and promote classical languages such as Prakrit, Pali, Marathi, Bangla, and Assamese. These measures aim to sustain India's rich linguistic and literary heritage. (Times of India)

Hindi Language Teaching : The policy highlights the role of Hindi in education to strengthen connections with India's cultural legacy, enhance communication across the country, and expand career opportunities. Hindi is promoted as a key component of the linguistic and cultural framework in schools. (Lead School)

India's languages belong to four families—Indo-Aryan, Dravidian, Austroasiatic, and Tibeto-Burman—reflecting the nation's cultural complexity. The NEP 2020 underscores this diversity with its linguistic reforms:

Multilingual Education : The three-language formula emphasizes using the mother tongue or regional languages as a medium of instruction up to Grade 5 or beyond.

Preservation of Indigenous Languages : Focus on classical languages like Sanskrit and regional dialects ensure cultural preservation.

Global Integration : The NEP aims to equip students with multilingual skills to meet international standards.

Through these initiatives, NEP 2020 reflects a holistic commitment to preserving India's linguistic diversity, reinforcing cultural identity, and advancing equitable educational outcomes across the nation.

Hindi's Role in NEP 2020 :

As a widely spoken language, Hindi bridges cultural and linguistic divides in India. However, its promotion within the NEP has sparked debates about linguistic equity and regional representation. The policy seeks to balance Hindi's prominence with inclusivity for all Indian languages.

Global Implications of NEP's Linguistic Policies :

- **Cultural Diplomacy** : Promoting Hindi enhances India's soft power and cultural diplomacy.
- **Economic Opportunities** : Multilingual proficiency increases employability in global markets, aligning with NEP goals.
- **Technological Advancements** : AI and NLP tools can standardize Indian languages, supported by the NEP's focus on technology integration.

Challenges and Criticisms :

- **Regional Sensitivities** : Concerns arise over linguistic hegemony and marginalization of non-Hindi languages.
- **Resource Gaps** : Multilingual education requires substantial investment in materials and teacher training.

- **Global Competitiveness** : While promoting Indian languages, balancing English proficiency remains critical.

Conclusion and Recommendations :

Hindi is a cultural cornerstone for India, gaining global recognition through education, cinema, and diplomacy. The NEP 2020 represents a transformative vision, promoting linguistic diversity while preparing students for a globalized world. Effective implementation requires :

- Equitable support for all Indian languages.
- Investments in technology and educational resources.
- Collaboration with global institutions to expand Indian language studies.

As Hindi continues to thrive in the digital era, its role as a medium of cultural preservation and communication grows. The NEP's success will hinge on harmonizing linguistic diversity with global educational and economic demands.

References :

1. Agnihotri, R.K. 1988. 'Errors as learning strategies'. Indian Journal of Applied Linguistics 14.1: 1-14.
2. Agrawal, P. and Sanjay Kumar 2000. (eds.). Hindi Nai Cal Men Dhali, New Delhi: Deshkal.
3. Dougill, P. and Knott, R. 1988. The Primary Language Book. Oxford: Oxford University Press.
4. Dua, H.R. 1985. Language Planning in India. Delhi: Harnam Publishers.
5. Itagi, N.H. and Singh, S.K. (eds.), 2002. Linguistic Landscaping in India. Mysore: Central Institute of Indian Languages and Mahatma Gandhi International Hindi University.
6. Kumar, K. 2001. Skul Ki Hindi. Patna: Rajkamal.
7. Pattanayak, D.P. 1981. Multilingualism and Mother–tongue Education. Oxford University Press.
8. West, R. 1999. Assessment in Language Learning. University of Manchester Distance Learning Programme–MED in ELT.

shefalihtg@gmail.com

+91 99284 99000

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 144-147

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा एवं भारतीय शिक्षा पद्धति : कल, आज और कल

शिवरानी

शोधार्थी, हिंदी विभाग, मस्तनाथ विश्वविद्यालय, बोहर, रोहतक।

सार :–

भारतीय शिक्षा पद्धति का इतिहास प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक बहुत ही समृद्ध और विस्तृत है। इस पद्धति में समय–समय पर कई परिवर्तन आए हैं, जो शिक्षा के उद्देश्य, सिद्धांत और दृष्टिकोण में बदलाव के कारण हुए हैं। भारतीय शिक्षा का गहरा और व्यापक प्रभाव समाज के विभिन्न पहलुओं पर पड़ा है। इस संदर्भ में हिंदी भाषा का महत्व और भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। हिंदी, जो आज भारत की प्रमुख संपर्क भाषा के रूप में जानी जाती है, केवल देश में ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुकी है। इस लेख में हम भारतीय शिक्षा पद्धति, हिंदी के बढ़ते प्रभाव, और इसके वैश्विक विस्तार पर विस्तृत चर्चा करेंगे, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि हिंदी न केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा है, बल्कि वैश्विक संवाद की एक महत्वपूर्ण भाषा भी बन चुकी है।

भारत में हिंदी की स्थिति :–

भारत में हिंदी का महत्व बहुत गहरा है, क्योंकि यह न केवल देश की एक प्रमुख भाषा है, बल्कि इसे भारतीय संविधान के तहत राजभाषा का दर्जा भी प्राप्त है। हिंदी देश के विभिन्न हिस्सों में बोली जाती है, और यह भारत के राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में कार्य करती है। हालांकि, यह एक विडंबना है कि हिंदी को वह महत्व नहीं मिला है, जो इसे मिलना चाहिए था। विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्र में, जहाँ हिंदी का स्थान अपेक्षाकृत कमजोर है। उच्च शिक्षा के अधिकांश पाठ्यक्रम अंग्रेजी में होते हैं, और यह परिप्रेक्ष्य हिंदी के लिए चुनौतीपूर्ण बन जाता है। हिंदी को अक्सर केवल एक संपर्क भाषा के रूप में देखा जाता है, जबकि इसकी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक भूमिका को नकारा जाता है।

अंग्रेजी का प्रभाव इतना अधिक है कि अधिकांश लोग इसे उच्च दर्जे की भाषा मानते हैं और अपने बच्चों को हिंदी की बजाय अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दिलवाना पसंद करते हैं। यह स्थिति केवल शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि ग्रामीण और कस्बों में भी यह मानसिकता प्रचलित है। इसके कारण, हिंदी का वास्तविक स्थान धीरे–धीरे संकुचित हो गया है। हालांकि, हिंदी के क्षेत्रीय प्रसार और इसके महत्व में लगातार वृद्धि हो रही है, विशेष रूप से हिन्दी सिनेमा, साहित्य और मीडिया के माध्यम से।

भाषा का संकट और संस्कृति का संकट :-

जब किसी राष्ट्र की भाषा संकट में होती है, तो यह केवल भाषा का संकट नहीं होता, बल्कि उस राष्ट्र की संस्कृति और परंपराओं का संकट भी होता है। भारत में जब हिंदी के अस्तित्व पर संकट आया, तो यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक पहचान के लिए भी एक बड़ी चुनौती बन गई। भारत में अंग्रेजी का बढ़ता हुआ प्रभाव और हिंदी को उपेक्षित करने की प्रवृत्ति ने भारतीय समाज को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से दूर किया। विशेष रूप से ब्रिटिश काल के दौरान, जब अंग्रेजी को शिक्षा, प्रशासन और न्याय व्यवस्था की भाषा के रूप में स्थापित किया गया, तब हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को गौण कर दिया गया। इस संकट ने भारतीय समाज के मानसिकता पर गहरा प्रभाव डाला। भारतीयों ने अपनी मातृभाषा के बजाय अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम और उच्च दर्जे की भाषा मानना शुरू कर दिया। इसके परिणामस्वरूप, हिंदी का प्रयोग विशेष रूप से शिक्षा और प्रशासनिक कार्यों में घटने लगा। यह केवल भाषा का संकट नहीं था, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और पहचान के लिए भी एक गंभीर चुनौती बन गया था।

हिंदी का वैश्विक विस्तार :-

हिंदी का प्रभाव केवल भारत तक ही सीमित नहीं रहा है। आज हिंदी विश्व के कई हिस्सों में बोली जाती है और इसका अध्ययन किया जाता है। 1952 में हिंदी को वैश्विक स्तर पर एक सामान्य भाषा के रूप में गिना जाता था, और उस समय यह विश्व की पाँचवीं सबसे बोली जाने वाली भाषा थी। लेकिन 1980 के दशक तक यह तीसरे स्थान पर पहुँच गई, और अब हिंदी की वैश्विक स्थिति पहले स्थान पर है। वर्तमान में, हिंदी के प्रयोगकर्ताओं की संख्या विश्व में चीन से भी अधिक है, और यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक समृद्धि और इसके भाषाई प्रभाव को दर्शाता है।

हिंदी ने अपने विस्तार में जो सफलता प्राप्त की है, वह न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी इस भाषा के प्रति बढ़ती रुचि को प्रमाणित करती है। अमेरिका, कनाडा, और यूरोपीय देशों में हिंदी के अध्ययन के लिए कई विश्वविद्यालयों में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इस प्रकार, हिंदी ने न केवल भारतीय समाज, बल्कि वैश्विक मंच पर भी अपनी महत्ता साबित की है।

भारतीय शिक्षा पद्धति का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य :-

भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति में ज्ञान की प्राप्ति का उद्देश्य केवल शैक्षिक नहीं था, बल्कि यह एक व्यक्ति के मानसिक, शारीरिक और आत्मिक विकास से संबंधित था। प्राचीन भारत में शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग को ज्ञान देना था, जिससे व्यक्ति का सर्वांगीण विकास हो सके। इस पद्धति में गुरुकुल प्रणाली का अत्यधिक महत्व था, जिसमें छात्र अपने गुरु से ज्ञान प्राप्त करते थे। संस्कृत में शिक्षित होने के कारण भारतीय समाज का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन प्रगति कर रहा था।

मध्यकाल में, विशेष रूप से मुस्लिम शासकों के प्रभाव के कारण, फारसी और अरबी भाषाओं का प्रयोग बढ़ा। वहीं, ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी हो गया, और भारतीय भाषाओं, विशेष रूप से हिंदी, को हाशिए पर डाल दिया गया। यह परिवर्तन भारतीय शिक्षा के संरचना में एक महत्वपूर्ण बदलाव था। अंग्रेजी का प्रभाव बढ़ने से हिंदी के महत्व में भी कमी आई, और इसका प्रयोग केवल रोजमर्रा की बातचीत तक ही सीमित रह गया।

ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली और उसका प्रभाव :-

ब्रिटिश साम्राज्य ने भारतीय शिक्षा में कई बड़े बदलाव किए। लॉर्ड मैकाले की शिक्षा नीति ने भारतीय शिक्षा पद्धति में अंग्रेजी को एक प्रमुख माध्यम के रूप में स्थापित किया। अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य था भारतीयों को यूरोपीय संस्कृति और विचारधारा से परिचित कराना। इसके परिणामस्वरूप, भारतीय समाज में अंग्रेजी के प्रति एक सम्मान और उच्च दर्जे की भावना विकसित हुई, और इसके साथ ही हिंदी जैसी भारतीय भाषाएँ उपेक्षित हो गईं।

ब्रिटिश काल के दौरान, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य भारतीयों को अंग्रेजी भाषा और यूरोपीय संस्कृति से परिचित कराना था, जिससे वे प्रशासन और न्याय प्रणाली में काम करने के योग्य बन सकें। यह नीति भारतीय भाषाओं के लिए एक बड़ा आघात थी। परिणामस्वरूप, हिंदी, जो पहले संस्कृत के बाद एक प्रमुख भाषा थी, अब केवल क्षेत्रीय संवाद तक सीमित हो गई।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति और हिंदी :-

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में भारतीय शिक्षा पद्धति को एक नया दिशा देने की कोशिश की गई है। इस नीति में भारतीय भाषाओं, विशेष रूप से हिंदी, को शिक्षा का माध्यम बनाने पर जोर दिया गया है। नीति का उद्देश्य यह है कि शिक्षा प्रणाली को भारतीय भाषाओं के आधार पर मजबूत किया जाए, और बच्चों को अपनी मातृभाषा में ही शिक्षा प्राप्त हो।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह निर्देश दिया गया है कि भारतीय भाषाओं का प्रयोग शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर किया जाए, और इसे केवल अंग्रेजी के माध्यम से न किया जाए। यह नीति भारत की बहुभाषावादी संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए बनाई गई है, जिसमें हिंदी को एक प्रमुख भूमिका दी जा रही है। इसके अंतर्गत, हिंदी को शिक्षा के माध्यम के रूप में बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं, जैसे कि हिंदी में पुस्तकें, सामग्री, और पाठ्यक्रम विकसित करना।

हिंदी की भूमिका :-

हिंदी न केवल भारत में, बल्कि विश्व स्तर पर भी एक प्रमुख संपर्क भाषा के रूप में काम करती है। यह भारत के विभिन्न हिस्सों को जोड़ने का कार्य करती है, जहाँ लोग अलग–अलग भाषाएँ बोलते हैं। हिंदी ने भारतीय समाज को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अतिरिक्त, हिंदी भारतीय संविधान में 22 भाषाओं के बीच एक सेतु का कार्य करती है।

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, साहित्य, और इतिहास का अभिन्न हिस्सा है। इसके माध्यम से भारतीय समाज अपनी सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने और प्रसारित करने का कार्य करता है। हिंदी का विकास और इसका वैश्विक प्रभाव इसके सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व को प्रमाणित करते हैं।

विदेशों में हिंदी का प्रभाव :-

हिंदी का प्रभाव आज न केवल भारत में, बल्कि पूरी दुनिया में महसूस किया जा रहा है। अमेरिका, कनाडा, और यूरोपीय देशों में हिंदी का अध्ययन बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। अमेरिका में, 113 विश्वविद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई की जाती है, और 13 शोध केंद्र हिंदी भाषा पर शोध कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, 143 विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षा दी जा रही है।

विदेशों में हिंदी के अध्ययन के बढ़ते आंकड़े यह दर्शाते हैं कि हिंदी केवल भारत की ही भाषा नहीं, बल्कि यह एक अंतरराष्ट्रीय भाषा बनती जा रही है। इसका अध्ययन और अनुसंधान अब केवल भारतीय समुदायों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विश्वभर में शिक्षा और शोध के एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में विकसित हो रहा है।

भारत और हिंदी का भविष्य :-

आज हिंदी केवल भारत की प्रमुख भाषा नहीं रह गई है, बल्कि यह विश्वभर में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारतीय सरकार की योजनाओं के माध्यम से हिंदी को प्रोत्साहित किया जा रहा है और इसे शिक्षा का मुख्य माध्यम बनाने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं। इसके साथ ही, यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि हिंदी को वैश्विक स्तर पर भी सम्मान प्राप्त हो और यह अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराए।

निष्कर्ष :-

हिंदी न केवल भारत की प्रमुख भाषा है, बल्कि यह देश की सांस्कृतिक धरोहर और ऐतिहासिक पहचान का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारतीय शिक्षा पद्धति में हिंदी की भूमिका अनिवार्य है, और इसे वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बनाने के लिए सक्रिय कदम उठाने की आवश्यकता है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हिंदी को एक प्रमुख भूमिका दी गई है, और इसे शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि हिंदी की प्रासंगिकता को बढ़ावा दिया जाए, ताकि यह न केवल भारत में, बल्कि पूरी दुनिया में अपनी जगह बना सके।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :-

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी, 'भाषा साहित्य और देश', पृष्ठ 9–13, 42–43, 143–144, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 2009
2. डॉक्टर हरिवंश तरुण, 'भारतीय शिक्षा–उसकी समस्याएं तथा विश्व की शिक्षा प्रणाली', पृष्ठ 2012–202, 204–205
3. डॉ. अंजू अग्रवाल, 'हिंदी भाषा नीतियों का शिक्षा पर प्रभाव', जुलाई–अगस्त 2021, पृष्ठ 201–202
4. आंचल सक्सेना, 'भारतीय शिक्षा पद्धति आदि से वर्तमान तक', वॉल्यूम 3, दिसंबर 2021, पृष्ठ 126–128
5. विमलेश कांति वर्मा, 'फिजी में हिंदी का स्वरूप और विकास', पृष्ठ 1–2
6. राकेश शर्मा, 'विदेश में हिंदी का बढ़ता प्रभाव', अक्टूबर 2006, सृजन गाथा
7. श्रीमती विनीता पांडे, 'वैश्विक परिदृश्य में हिंदी का स्वरूप', ISSN–2320–2882

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 148-153

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा : कल आज और कल के सन्दर्भ

स्नेह

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक।

हिन्दी : एकता और सांस्कृतिक गौरव की वैश्विक आवाज।

यह नारा है वर्ष 2025 में 'विश्व हिन्दी दिवस' जो 10 जनवरी को वैश्विक स्तर पर बड़े जोर–शोर से मनाया जाता है। इसका उद्देश्य हिंदी भाषा को अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में बढावा देना तथा हिंदी के सांस्कृतिक महत्व को स्वीकार करना है। इस नारे से डिजिटल युग में हिंदी के प्रचार–प्रसार पर जोर देना तथा इसका उपयोग करने पर बल है। इससे विदित होता है कि हमारी राजभाषा हिन्दी आज विश्व पटल तक पहुंच चुकी है।

हिन्दी हमारी राजभाषा, जनभाषा तथा संपर्क भाषा है और राष्ट्रभाषा होने का दर्जा रखती है। हिन्दी भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है। चूंकि भारत विविध भाषाओं और बोलियों का देश है और सभी मुख्य भाषाओं के पास अपनी कला, साहित्य, दर्शन तथा ज्ञान विज्ञान परंपराओं की अनूठी विरासत है तभी तो यहाँ एक कहावत प्रसिद्ध है– "कोस–कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी।"

इसके बावजूद हिंदी का भारत में एक अद्वितीय स्थान है। चूँकि हिंदी सरल, सुगम और बोधगम्य है और इसमें लचीलेपन की प्रकृति है। इसलिए यह सभी भाषाओं की सिरमौर है और दुनिया की सबसे बड़ी आबादी के द्वारा बोली व समझी जाती है। किसी भी देश की भाषा शिक्षा और संस्कृति की उद्‌बोधक होती है। इनका नाता बहुत गहरा है इसलिए यदि भाषा बोधगम्य हो तो देश की संस्कृति और शिक्षा उन्नत होती है।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति के मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल।। (भारतेंदु)

हिंदी हमारी संस्कृति, समृद्धि, संस्कार और जीवन मूल्यों की संपोषिता व संवाहक है। प्रस्तुत लेख में वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा का इतिहास और विकास कल (ऐतिहासिक संदर्भ), आज (वर्तमान संदर्भ) और कल (भविष्य) के संदर्भ में समझने का प्रयास करेंगे।

हिंदी भाषा की ऐतिहासिकता : प्राचीन हिंदी इस विकास क्रम का अनुसरण करते हुए विकसित हुई।

संस्कृत / पाली / प्राकृत / अपभ्रंश / अवहट्ट / हिंदी

2000 ई. पू.– 1000 ई. पू. – प्राचीन संस्कृत या वैदिक संस्कृति के रूप में वेद, वेदांगों, उपनिषदों, ब्राह्मण

ग्रंथों, तथा संहिताओं की रचना हुई।

1000 ई. पू.– 500 ई. पू. – लोक भाषा के रूप में लौकिक संस्कृत में परिवर्तित हो गयी जिसे पाणिनी ने अपने भाषिक विवेचन से क्लासिकल संस्कृत कह कर शोभित किया।

वैदिक संस्कृत के सरलीकरण स्वरूप जन्मी लौकिक संस्कृत का साहित्य महान था। महान ग्रंथ रामायण (बालमीकि), महाभारत (व्यास), अभिज्ञानशकुंतलम (कालीदास), अर्थशास्त्र, नाट्यशास्त्र व कादम्बरी की रचना हुई।

500 ई. पू.– 1 ई. – मध्यकालीन आर्य भाषा ने पाली और पुरानी प्रकृत का स्वरूप ग्रहण किया जिसने बौद्ध साहित्य को पोषा – पा रक्खतीति बुद्धवचन इति पाली।

1 ई. – 500 ई. तक भाषा ने प्राकृत का स्वरूप ग्रहण किया जो असंस्कृत, सहज भावा मीठी भाषा थी और पाली के सामान ही ध्वनि संरचना लिए थी जिसने अर्धमागधी साहित्य को जन्म दिया। जैन आगमों, पऊमचरिऊ (स्वयंभू) तथा कुवलयमाला जैसे महान ग्रंथों की रचना हुई।

500 ई.– 1000 ई. अब भाषा ने अपभ्रंश का स्वरूप ग्रहण किया। मानक शब्दों से भ्रष्ट शब्द अपभ्रंश कहलाये। हेमचन्द्र ने 'शब्दानुशासन' तथा धनपाल ने 'भविष्यत कहा' ग्रंथ की रचना की। भाषा अब अवहट्ट में प्रवेश हुई जिससे हिंदी व अन्य भाषाओं का जन्म हुआ।

डॉक्टर हरदेव बाहरी 7वीं से 11वीं सदी को अपभ्रंश का स्वर्णकाल कहते हैं। अवहट्ट अपभ्रंश का ही रूप है। लगभग 14वीं सदी तक अवहट्ट का प्रयोग होता रहा। संदेशरासक, वर्णरत्नाकर, कीर्तिलता आदि ग्रंथों की रचना हुई। फिर खड़ी बोली हिंदी का जन्म हुआ जिसके आदिजनक अमीर खुसरो (तोता–ए–हिंद) को माना जाता है। खड़ी बोली में उनकी शायरी के कुछ अंश :–

सजन सकारे जाएंगे नैन मरेंगे रोय।
विधना ऐसी रैन कर भोर कधौं न होए।।

13वीं से 18वीं सदी के मध्यकाल में हिंदी का विकास बहुत तेजी से होने लगा। यह भक्ति आंदोलन का समय था या यूं कहें कि भाषिक आन्दोलन का समय था। इस समय ब्रज और अवधि भाषा का वर्चस्व होने की वजह से कृष्ण भक्त अष्टछाप के कवियों ने ब्रज भाषा में तथा राम भक्त कवियों ने अवधि भाषा में विपुल साहित्य रचा। सूरदास ने सूरसागर (ब्रज भाषा में) और तुलसीदास ने रामचरित मानस (अवधि में) रचकर दोनों ही भाषाओं को साहित्य के सर्वोच्च पद पर आसीन किया। रीतिकाल में बिहारी, घनानन्द, पदमाकर आदि ने उत्कृष्ट साहित्य रचा। रीतिकाल का साहित्य तीन श्रेणियों में विभक्त था– रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त तथा रीतिबद्ध। इसमें लक्षण ग्रंथों व सूक्तियों की रचना भी हुई। बिहारी एकमात्र ऐसे कवि थे जो अपनी एक ही रचना 'बिहारी सतसई' के कारण कालजयी कवियों की श्रेणी में आ गए।

1800 में छापे खाने के आविष्कार के साथ कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना करते हुए गिल क्राइस्ट ने लल्लूलाल जी और सदलमिश्र को भाखामुंशी नियुक्त किया। खड़ी बोली हिंदी के विकास के लिए– लल्लूलाल जी ने 'प्रेमसागर' तथा सदलमिश्र ने 'नासिकेतोपख्यान' की रचना की।

1826 में प्रथम हिंदी समाचार पत्र उदन्त मार्तंड पंडित जुगल किशोर द्वारा हिंदी के विकास के लिए प्रकाशित किया गया।

हरिऔध जी ने खड़ी बोली को काव्यात्मक रूप देते हुए 'प्रियप्रवास' जैसा महान ग्रंथ रचा।

हिंदी का आधुनिक काल :-

19वी सदी में भारतेंदु युग आरंभ होता है। उन्होंने हिंदी साहित्य को नई दिशा दी और इसे सामाजिक सुधार और राष्ट्रवाद का माध्यम बनाया। 1873 में भारतेंदु ने 'हरीशचंद्र मैगजीन' निकाली और तभी से हिंदी पत्र–पत्रिकाओं का सिलसिला शुरू हो गया। स्वाधीनता आंदोलन में इन पत्रिकाओं ने अहम भूमिका निभाई। हिंदी में ही क्रांतिकारियों के संदेश भेजे जाते थे ताकि भाषा के द्वारा भी सबको एकजुट किया जा सके। हमारे महान साहित्यकारों ने गद्य व पद्य लेखन द्वारा हिंदी का विकास तो किया ही देशवासियों में देशभक्ति का बिगुल भी बजाया। भारतेंदु ने 'भारत–दुर्दशा', मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत–भारती' के जरिए देश के भूत, भविष्य व वर्तमान से अवगत कराते हुए जागरूक किया।

माखनलाल चतुर्वेदी 'पुष्प की अभिलाषा' में युवाओं में जोश भरते हुए कहते है :–

उस पथ पर देना तुम फेंक मातृभूमि पर शीर्ष चढाने, जिस पथ जाए वीर अनेक सुभद्राकुमारी चौहान, शिवमंगल सिंह चौहान, दिनकर, गयाप्रसाद शुक्ल आदि अन्यान्य कवियों ने आजादी की अलख जगाई। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, निराला व महादेवी जी ने भी स्वाधीनता आन्दोलन में अपनी रचनाओं रूपी समिधाएं डाली। निराला जी ने हिंदी के क्लिष्ट स्वरूप को छंदोबद्ध से मुक्त कर हिंदी काव्य को और सरल रूप दे दिया और हिंदी में मुक्त छंद की परंपरा आरंभ हो गयी।

द्विवेदी योग के महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका के संपादक के रूप में हिंदी भाषा, साहित्य और उस युग की सांस्कृतिक चेतना को दिशा और दृष्टि प्रदान की।

स्वतंत्रता के बाद हिंदी का विकास :-

1947 में स्वतंत्रता के पश्चात् देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को 14 सितंबर 1949 को आधिकारिक राजभाषा का दर्जा दिया गया। संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत यह सरकारी कामकाज की भाषा बनी। इसलिए 14 सितंबर को राष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाते हैं। किंतु अहिन्दीभाषी राज्यों कि असहमति के कारण राष्ट्रभाषा घोषित न हो सकी। तब से अब तक हिंदी ने शिक्षा, मीडिया, साहित्य, कला, धर्म–दर्शन व प्रशासन के क्षेत्र में अपना व्यापक प्रसार किया है। हिंदी साहित्य ने अपनी अलग–अलग विधा व प्रवृतियों के रूप में हिंदी को जन–जन की भाषा बना दिया है।

वर्तमान में वैश्विक स्तर पर हिंदी का विकास :-

हिंदी के राजभाषा घोषित होने के बाद इसके विकास के लिए कई अधिनियम पारित किए गए। 1967 में त्रिभाषा फार्मूला लागू करने का प्रयास किया गया जिसमें एक भाषा हिंदी, दूसरी क्षेत्रीय तथा तीसरी अंतरराष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी को रखा गया। किंतु यह मतान्तर के कारण लागू न हो सका। इसलिए 1976 में राजभाषा अधिनियम पारित हुआ तथा राजभाषा आयोग की स्थापना की गई। यह आयोग निरंतर हिंदी के विकासकार्य में रत है। हिंदी संबंधी विभिन्न नीतियां, कार्य, समारोह, गोष्ठियाँ, प्रतियोगिताएं, सम्मान व पुरस्कार इसी के तत्वाधान में आयोजित होती है। हर वर्ष राष्ट्रीय हिंदी दिवस अलग अलग थीम से राजभाषा आयोग द्वारा आयोजित किया जाता है। वर्ष 2024 में हिंदी दिवस 'राजभाषा हीरक जयंती' नाम से इस थीम के साथ मनाया गया था – हिंदी : पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा तक। इसका अर्थ है कि हजारों वर्षों की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक

और सामाजिक ज्ञान परम्परा को यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) अर्थात तकनीक व नवाचार के साथ जोड़ दिया जाए तो इससे विभिन्न क्षेत्रों में समग्र विकास होगा और यह भाषा के आधुनिकीकरण से संभव है। जैसे अनुवाद टूल कंठस्थ 1.0, अनुवाद टूल कंठस्थ 2.0 तथा कंठस्थ टूल 2.0 के मोबाइल एप का लोकार्पण किया गया जिसने हिंदी की वैश्विकता को बढ़ाया। देश विदेश में राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया। आज हिंदी निरंतर विश्व पटल पर अपने पंख फैला रही है।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग संबंधित नियम पुस्तक का संकलन तथा राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना लागू की गई है। अब संसद में भी अधिक से अधिक हिंदी के शब्दों का प्रयोग किया जाता है तथा टी.वी. चैनलों पर भी राजनेताओं की वार्ताएँ हिंदी में प्रसारित होती है।

– हिंदी को विश्व स्तर का दर्जा दिलाने में हमारे राजनेताओं का बड़ा योगदान है। अटल बिहारी वाजपेयी से लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संयुक्त राष्ट्र सभा तथा देश विदेश के कार्यक्रमों में हिंदी में संबोधन से आज हिंदी और भारतीय मूल के प्रवासी वैश्विक मंच पर स्वयं को गौरान्वित अनुभव करते हैं। कृत्रिम मेघा की सहायता से कानून के क्षेत्र में भी कई उच्च न्यायालयों में कहीं कहीं हिंदी का प्रयोग आरंभ हो गया है।

हिंदी यूनिकोड फॉन्ट के विकास ने कंप्यूटर पर हिंदी में टाइपिंग करना बेहद सुगम बना दिया है। आज विश्व की सबसे बड़ी सॉफ्टवेयर कंपनी माइक्रोसॉफ्ट ने अपने उत्पादों को हिंदी में बनाना आरंभ कर दिया है। अतः डिजिटल माध्यमों से भी हिंदी की पहुँच बढ़ गई है।

हिंदी के वैश्वीकरण में मीडिया का भी बड़ा हाथ है जैसे अखबार, मैगजीन, हिंदी पत्र–पत्रिकाएं, टेलीविजन, ऑनलाइन माध्यम आदि।

आज वैश्विक परिदृश्य में हिंदी इंटरनेट की लोकप्रिय भाषा बनकर उभर रही है। ब्लॉग्स और यूट्यूब वीडियो अन्यान्य विषयों पर ज्ञानवर्धक जानकारी हिंदी में देते हैं।

गूगल और विकिपीडिया किसी भी जानकारी को जो अन्य भाषा में है वांछित भाषा व हिंदी में अनुवादित कर देते हैं। फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप, टेलीग्राम जैसे लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफार्म हिंदी को वैश्विक बनाने में मदद करते हैं।

हिंदी का स्वरूप अब ग्लोबल हो गया है। भाषा व्याकरण में नित नए प्रयोग किए जा रहे हैं।

देश की आर्थिक व्यवस्था मजबूत होने से विदेशी कंपनियां भारत की तरफ आकर्षित हो रही है और बाजारवाद को बढ़ावा देने के लिए भाषायी आदान प्रदान हो रहा है। भाषा देश की समृद्धि की परिचायक होती है।

आज विश्व के लोग हमारे धर्म दर्शन के प्रति आकर्षित होकर हिंदी का अध्ययन करने आते हैं जिसका प्रमाण है। भारत की पहल से 21 जून को 147 देशों की मान्यता के साथ विश्वभर में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाना।

40 देशों के 600 से अधिक विश्वविद्यालयों और स्कूलों में हिंदी पढ़ाई जाती है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी का आने वाला कल (भविष्य) :–

वैश्वीकरण के इस वेग में हिंदी को आबूधाबी में भी तीसरी आधिकारिक भाषा की मान्यता मिली है।

वर्ष 2018 में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त राष्ट्र और भारत सरकार के बीच एक करार पास हुआ

जिसके अनुसार संयुक्त राष्ट्र ने फेसबुक, ट्विटर, और इंस्टाग्राम के साथ–साथ संयुक्त राष्ट्र समाचार की एक हिंदी वेबसाइट पर हिंदी सोशल मीडिया अकाउंट आरंभ किया। इसके तहत संयुक्त राष्ट्र अपने बहुत से मीडिया हिंदी में प्रकाशित करता है जैसे अपने कार्यक्रम को यूएन रेडियो वेबसाइट पर हिंदी में प्रसारित करना, साउंडक्लाउड पर साप्ताहिक हिंदी समाचार बुलेटिन जारी करना, यूएन ब्लॉग को हिंद में प्रकाशित करना और यूएन न्यूज रीडर मोबाइल ऐप्लिकेशन को हिंदी में उपलब्ध कराना। हिंदी आज यूनेस्को के कामकाज की नौ भाषाओं में से एक है। इससे भविष्य में संभव है कि संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को भी आधिकारिक भाषा का दर्जा मिल जाए।

राजभाषा आयोग ने 'हिंदी शब्द सिंधु' नामक एक डिजिटल बृहत–शब्दकोष का निर्माण किया है जिसमें तकनीक, चिकित्सा, स्वास्थ्य, विधि, मीडिया, प्रौद्योगिकी आदि के विभिन्न क्षेत्रों के शब्द तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल किया गया है। भविष्य में हिंदी विकास की ओर यह एक श्रेष्ठ प्रयास है।

कृत्रिम मेधा की सहायता से अनुवाद टूल्स का प्रयोग करके मेडिकल और इंजीनियरिंग की शिक्षा अब हिंदी में हो सकती है। एनईपी 2020 में यह प्रावधान उच्च शिक्षा में रखा गया है। डुओलिंगो जैसी एप्स हिंदी और अन्य भाषाएँ सीखने में मदद करती है।

हालांकि हिन्दी भाषा निरंतर विकसित हो रही है, फिर भी कुछ चुनौतियां हैं :– जैसे अंग्रेजी भाषा का बढ़ता प्रभाव, हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा न मिलना, आज भी नवयुवक हिन्दी को रोजगारपरक न मानकर इसमे कम रुचि रखते हैं।

उपसंहार :–

हिंदी भारत की आत्मा, स्वदेशी भाषा, जनभाषा, संपर्क भाषा तथा राजभाषा है और भारत के बड़े भूभाग में बोली जाने के कारण राष्ट्रभाषा बनने की ओर अग्रसर है। देवनागरी में लिखी जाने वाली यह एक वैज्ञानिक भाषा है और इसकी यह विशेषता है कि यह जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी जाती है। यह फिजी की भी राजभाषा है। दुनिया भर में हिंदी की लोकप्रियता का आलम यह है कि प्रतिवर्ष केंद्रीय हिंदी शिक्षण संस्थानों में विदेशी छात्रों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। हिंदी का इतिहास और विकास न केवल उसके संघर्ष का बल्कि समृद्धि का भी प्रमाण है। हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए न केवल देश के विविध भाषायी शब्दों को आत्मसात करना होगा बल्कि विदेशी शब्दों का भी भारतीयकरण करना होगा। स्मृति एवं कृत्रिम मेधा आदि नवाचारों का प्रयोग करते हुए हमें निरंतर इसकी प्रगति का प्रयास करना चाहिए।

''नई तकनीक को अपनाना है हिंदी को आगे बढ़ाना है।
सर्वभाषा सम्मान कर हिंदी का परचम लहराना है।।''

संदर्भ ग्रंथ :–

1. हिंदी साहित्य का इतिहास (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल)
2. हिंदी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास (गोविंद पांडे एवं सरस्वती पांडे)
3. हिंदी भाषा का इतिहास (डॉक्टर भोलानाथ तिवारी)
4. हिंदी साहित्य (दृष्टि पब्लिकेशन्स)

5. हिंदी का वैश्विक परिदृश्य (डॉक्टर मंजूरानी, मानसरोवर प्रकाशन)
6. न्यू मीडिया में हिंदी की वर्तमान स्थिति (शैलेश शुक्ल)
7. भारतेन्दु के निबंध (केसरी नारायण शुक्ल)
8. विकिपीडिया।
9. ए. आई. (ऑनलाइन)
10. https://rajbhasha.gov.in

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 154-159

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय शिक्षा पद्धति और मानव के नैतिक उत्थान में संत गरीबदास के साहित्य का योगदान

सोमबीर सिंह, शोधार्थी, पीएच.डी. (हिन्दी),
डॉ० बाबू राम, शोध निर्देशक, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
हिंदी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा) – 124021

सारांश :-

संत गरीबदास की वाणी भारतीय शिक्षा पद्धति में नैतिकता और मानवता के उत्थान के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत है। उनकी शिक्षाओं का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, समाज सुधार, और मानवीय मूल्यों के संवर्धन को प्रोत्साहित करना है। उन्होंने अपनी वाणी के माध्यम से जाति, वर्ग भेदभाव, धार्मिक आडंबर, और अंधविश्वासों का कड़ा विरोध किया और समानता, सहिष्णुता और परस्पर सम्मान का संदेश दिया। उनके विचार आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए भी प्रासंगिक हैं, जहाँ नैतिकता का ह्रास और शिक्षा का व्यावसायीकरण तेजी से बढ़ रहा है। संत गरीबदास की शिक्षाएँ हमें यह सिखाती हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि आत्मा और समाज के नैतिक उत्थान के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना है। उनकी वाणी नैतिक शिक्षा का एक आदर्श स्रोत है, जो शिक्षार्थियों को आदर्शवादी, सहिष्णु और समाज के प्रति उत्तरदायी नागरिक बनने की प्रेरणा देती है। इस प्रकार संत गरीबदास का साहित्य न केवल भारतीय शिक्षा पद्धति में नैतिकता को पुनर्जीवित करने का माध्यम है, बल्कि यह समाज और राष्ट्र को एकता, समरसता, और मानवीय मूल्यों के आधार पर सुदृढ़ करने का भी साधन है। उनकी शिक्षाएँ आज के समय में भी शिक्षा और समाज के लिए एक अमूल्य धरोहर हैं।

मुख्य शब्द :- संत गरीब दास, नैतिक शिक्षा, वैश्विक परिप्रेक्ष्य, हिंदी भाषा, संत वाणी।

प्रस्तावना :-

भारतीय शिक्षा पद्धति का इतिहास गहराई और विविधता से भरा हुआ है। इसमें नैतिक उत्थान और मानवता के मूल्यों का संवर्धन हमेशा से केंद्रीय उद्देश्य रहा है। शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है; इसका लक्ष्य व्यक्ति के चरित्र निर्माण, आदर्शों की स्थापना और समाज में मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करना भी है। भारतीय परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगारोन्मुखी ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि एक ऐसा समाज निर्मित करना है जो नैतिकता, सहिष्णुता और परस्पर सहयोग पर आधारित हो।

संतों और समाज सुधारकों ने इस उद्देश्य को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संत गरीबदास,

जो भारतीय संत साहित्य के एक अद्वितीय स्तंभ हैं, ने अपनी वाणी और शिक्षाओं के माध्यम से नैतिकता और मानवता की गहरी समझ प्रस्तुत की। उनकी वाणी में न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक संदेश थे, बल्कि सामाजिक सुधार और शिक्षा के माध्यम से मानवता के कल्याण की प्रेरणा भी थी। उनकी शिक्षाओं का आधार मानव मात्र को उसकी मूलभूत अच्छाई और नैतिकता की ओर प्रेरित करना था।

संत गरीबदास की वाणी में शिक्षा का महत्व केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं था। उन्होंने शिक्षा को एक व्यापक दृष्टिकोण से देखा, जिसमें व्यक्ति का आत्मिक विकास और समाज की नैतिक उन्नति सम्मिलित हो। उनका मानना था कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मानव को उसकी कमजोरियों से ऊपर उठाकर उसे अपने जीवन के उच्चतम आदर्शों तक पहुँचाना है। उनकी वाणी आज भी भारतीय शिक्षा पद्धति के लिए प्रेरणास्रोत है, क्योंकि यह नैतिकता और मानवीय मूल्यों पर आधारित है।

आज के समय में, जब शिक्षा का व्यावसायीकरण हो चुका है और नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है, संत गरीबदास की शिक्षाएँ और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती हैं। उनकी वाणी हमें यह समझने में मदद करती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि जीवन को सार्थक बनाना और समाज को एक दिशा प्रदान करना है।

संत गरीबदास का जीवन और वाणी :-

संत गरीबदास जी का जन्म रोहतक जिले के छुड़ानी नामक ग्राम में संवत् 1774 की वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को हुआ था। संत जैतराम ने गरीबदास की जन्म तिथि के बारे में कहा है :-

"संवत संतरासी चौइतर, शुभ मुहुर्त अवीद्द नक्षत्र।
बसाख मास की पूर्णमासी, ऐसे सतगुरू उतरे आंही।।"

यहां उन्होंने अपने समय की सामाजिक और धार्मिक बुराइयों को समझा और उनके समाधान के लिए अपने जीवन को समर्पित किया। उनका साहित्य 'श्री ग्रंथ साहिब' के नाम से प्रसिद्ध है, जिसमें 7000 से अधिक वाणी संकलित हैं। उनकी वाणी निर्गुण भक्ति पर आधारित है और नैतिक उत्थान, मानवता, और आध्यात्मिक चेतना को प्रमुखता देती है। भारतीय शिक्षा पद्धति का विकास गहरे सांस्कृतिक, धार्मिक, और नैतिक सिद्धांतों पर आधारित रहा है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास और समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना भी रहा है। भारतीय परंपरा में शिक्षा को केवल एक व्यावसायिक साधन के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि इसे जीवन के उच्च आदर्शों और मानवता के कल्याण के लिए आवश्यक माना गया। गुरुकुल प्रणाली से लेकर आधुनिक शिक्षा पद्धति तक नैतिकता का स्थान केंद्रीय रहा है। जिसमें संत गरीबदास जैसे समाज सुधारकों और संतों ने शिक्षा के नैतिक पहलुओं को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी वाणी केवल धार्मिक संदेश नहीं देती, बल्कि यह समाज सुधार, नैतिकता, और मानवता के आदर्शों की स्थापना का एक महत्वपूर्ण साधन है। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को सत्य, प्रेम, और दया जैसे मानवीय मूल्यों से जोड़ना है।

संत गरीबदास की वाणी में नैतिकता का विशेष महत्व है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से ईश्वर भक्ति और मानवीय मूल्यों का संदेश दिया। उनकी वाणी समाज में समरसता और समानता को प्रोत्साहित करती है। वे कहते हैं कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आत्मिक और नैतिक विकास है, न कि केवल भौतिक सफलता। उनके

अनुसार, शिक्षा वह है जो मनुष्य को अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक करे और उसे समाज के लिए उपयोगी बनाए।

पारिवारिक जीवन में नैतिक मूल्यों की स्थापना :-

पारिवारिक जीवन भारतीय समाज की नींव है, जहाँ नैतिकता और जीवन के आदर्शों का सृजन होता है। परिवार केवल रक्त संबंधों का नाम नहीं, बल्कि यह एक ऐसी संस्था है, जो मानवीय मूल्यों, परस्पर स्नेह, और नैतिकता को आत्मसात् कर समाज को सुदृढ़ बनाती है। संत गरीबदास ने अपनी वाणी में पारिवारिक जीवन के नैतिक पक्ष को बड़े सुंदर और गहन तरीके से प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि यदि परिवार में स्थापित मूल्य सुदृढ़ होंगे, तो समाज और राष्ट्र का नैतिक उत्थान सुनिश्चित होगा। उनकी वाणी में पारिवारिक जीवन की क्षणभंगुरता और मानव जीवन की नश्वरता का वर्णन इस उद्देश्य से किया गया है कि मनुष्य अपने पारिवारिक दायित्वों और नैतिक मूल्यों के प्रति सचेत रहे। उनकी प्रसिद्ध पंक्ति :-

"राजा न रैयत रहेगा न कोय,
रहेगा चिदानन्द उपज्या न सोय।"

इसमें उन्होंने स्पष्ट किया है कि संसार में सब कुछ अस्थायी है। न कोई राजा रहता है और न प्रजा, लेकिन जो शाश्वत है, वह है मनुष्य का नैतिक आचरण और उसके परिवार में स्थापित मूल्य।

पति-पत्नी के संबंधों में संतुलन और सम्मान :-

संत गरीबदास के विचारों में पति–पत्नी के संबंधों में पारस्परिक सम्मान और संतुलन को विशेष महत्व दिया गया है। उन्होंने इन संबंधों को केवल सामाजिक अनुबंध नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक संबंध के रूप में देखा। उनका मानना था कि जब पति और पत्नी एक–दूसरे के प्रति प्रेम और सम्मान का भाव रखते हैं, तभी परिवार में स्थिरता और स्नेह का वातावरण बनता है। उन्होंने कहा :-

"संत समागम सार कि ब्रह्मा रची।
शून्य मंडल सतलोक पीय मेरे चौरी रची।"

यह पंक्ति पारिवारिक जीवन में प्रेम और विश्वास की महत्ता को रेखांकित करती है। उन्होंने पति–पत्नी के संबंधों को आत्मा और परमात्मा के मिलन जैसा पवित्र बताया।

संत गरीबदास के नैतिक दृष्टिकोण का प्रभाव :-

संत गरीबदास ने अपने साहित्य के माध्यम से यह संदेश दिया कि पारिवारिक जीवन में स्नेह, सहनशीलता, और नैतिकता का पालन करना अत्यंत आवश्यक है। उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं, क्योंकि आधुनिक समाज में पारिवारिक संरचनाओं में आए बदलावों और नैतिक मूल्यों के ह्रास ने अनेक समस्याओं को जन्म दिया है। उनके संदेश हमें यह सिखाते हैं कि परिवार के सदस्यों के बीच सम्मान और समझ का भाव बनाए रखना समाज की उन्नति और स्थिरता के लिए अनिवार्य है। उनकी वाणी आधुनिक जीवनशैली के लिए भी एक मार्गदर्शक है, जहाँ परिवारों में सामंजस्य और नैतिकता के पुनर्स्थापन की आवश्यकता है। उनका मानना था कि परिवार की मजबूती से समाज मजबूत होगा और समाज की मजबूती से राष्ट्र का विकास संभव होगा।

जाति और वर्ग भेदभाव का विरोध :-

संत गरीबदास का समाज सुधारक दृष्टिकोण जाति और वर्ग भेदभाव के उन्मूलन पर आधारित था।

उनका मानना था कि समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव और वर्गीय असमानता मानवता के लिए सबसे बड़ी बाधाएँ हैं। उनकी वाणी में स्पष्ट रूप से समरसता और समानता की झलक मिलती है। वे सभी को समान दृष्टि से देखते थे और समाज में व्याप्त अन्यायपूर्ण प्रथाओं का विरोध करते थे।

"हिन्दु सो जो हद कुं तोरे,
परमधाम सो चश्में जोरे।"

यह संदेश इस बात को रेखांकित करता है कि मनुष्य को अपनी धार्मिक और जातिगत सीमाओं से ऊपर उठकर मानवता की सेवा करनी चाहिए। गरीबदास जी ने स्पष्ट किया कि जातिगत भेदभाव न केवल समाज में फूट डालता है, बल्कि इसे नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से कमजोर भी करता है।

धार्मिक आडंबर और अंधविश्वासों का खंडन :-

संत गरीबदास ने धार्मिक आडंबर और अंधविश्वास को समाज की नैतिक प्रगति में सबसे बड़ी बाधा बताया। उनका मानना था कि ईश्वर की प्राप्ति बाहरी कर्मकांडों, मूर्ति पूजा, और दिखावटी भक्ति से नहीं हो सकती। उन्होंने लोगों को आडंबर और अंधविश्वास से दूर रहने की सलाह दी और आत्मचिंतन, सच्ची भक्ति, और नैतिक आचरण पर बल दिया।

उनकी वाणी में मूर्ति पूजा पर व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण मिलता है :

"जाके अहरन लगे हथौडे घडयां,
टांकी चित बनाया।"

उन्होंने यह संदेश दिया कि ईश्वर की आराधना के लिए बाहरी साधनों की आवश्यकता नहीं है; यह केवल आत्मा की पवित्रता और सच्चे मन की भक्ति से ही संभव है। उनकी वाणी ने समाज को सच्चे मार्ग पर चलने और आत्मचिंतन के माध्यम से ईश्वर प्राप्ति की प्रेरणा दी।

नारी का सम्मान :-

संत गरीबदास ने नारी को समाज का आधार माना और उसकी गरिमा को उच्च स्थान दिया। उन्होंने नारी के पतिव्रता स्वरूप की महिमा का गुणगान किया, जबकि कामिनी स्वरूप की निंदा की। उनके अनुसार, पतिव्रता नारी केवल परिवार का नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति का भी आधार है। उनकी वाणी में नारी के प्रति सम्मान स्पष्ट रूप से झलकता है।

"गरीब पतिव्रता के चरण की शिर पर रजले डार,
अठसठ तीरथ सब कीये, गंगान्हान कि दार।"

यह पंक्ति पतिव्रता नारी की महत्ता और उसकी पवित्रता को दर्शाती है। संत गरीबदास ने कहा कि नारी, यदि अपने आदर्शों और कर्तव्यों का पालन करे, तो वह समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकती है। संत गरीबदास की वाणी में जातिगत भेदभाव, धार्मिक आडंबर, और नारी सम्मान जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों का समाधान प्रस्तुत किया गया है। उनकी शिक्षाएँ आज भी समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं और नैतिकता, समानता, और मानवता की स्थापना के लिए मार्गदर्शक हैं। उनकी वाणी केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार का अद्भुत माध्यम है, जो सभी को एकजुट होकर समाज को बेहतर बनाने की प्रेरणा देती है।

नैतिक शिक्षा का महत्व :–

संत गरीबदास ने नैतिक शिक्षा को मानव जीवन का आधार बताया। उनका मानना था कि नैतिकता के बिना शिक्षा अधूरी है। उन्होंने कहा कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति को सच्चाई, दया, सहनशीलता, और प्रेम जैसे मूल्यों से जोड़ना है। उनकी वाणी हमें यह सिखाती है कि शिक्षा केवल बाहरी आडंबरों और प्रमाणपत्रों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह आत्मा की गहराई में उतरकर जीवन को सही दिशा प्रदान करने का साधन होनी चाहिए।

संत गरीबदास की शिक्षाओं का मुख्य उद्देश्य मानवीय मूल्यों का संवर्धन था। उनकी वाणी में सहिष्णुता, समानता, और परस्पर सम्मान की शिक्षा स्पष्ट रूप से झलकती है। वे मानते थे कि समाज में फैली असमानता, जातिवाद, और सांप्रदायिकता जैसे दोष शिक्षा के माध्यम से ही दूर किए जा सकते हैं। उन्होंने कहा :–

"गरीब साधु-साधु एक है इनमें कुछ न भ्रांति।
निरबैरी निर्भय सदा, एक जाति एक पांति।।"

इस पंक्ति में उन्होंने समानता और सामाजिक समरसता के महत्व को रेखांकित किया। उनका मानना था कि शिक्षा का कार्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि समाज को एकजुट करना और मानवता के मूल्यों को पुनर्स्थापित करना है।

आधुनिक शिक्षा में संत गरीबदास की शिक्षाओं की प्रासंगिकता :–

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में, जहाँ व्यावसायिकता और प्रतिस्पर्धा ने नैतिक मूल्यों को पीछे छोड़ दिया है, संत गरीबदास की वाणी अत्यंत प्रासंगिक है। उनकी शिक्षाएँ इस बात की याद दिलाती हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल आर्थिक समृद्धि नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक विकास है। उन्होंने अपनी वाणी के माध्यम से शिक्षा को मानवता के कल्याण के लिए एक साधन बताया। आज, जब समाज में नैतिकता का ह्रास हो रहा है, संत गरीबदास की शिक्षाएँ एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर सकती हैं। उनका साहित्य न केवल विद्यार्थियों को नैतिकता और आदर्शों की शिक्षा देता है, बल्कि उन्हें समाज के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए भी प्रेरित करता है।

निष्कर्ष :–

संत गरीबदास की वाणी नैतिक शिक्षा और समाज सुधार के लिए एक अनमोल धरोहर है। उनके विचार हमें यह सिखाते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि समाज को एक बेहतर स्थान बनाना है। उनकी शिक्षाओं को भारतीय शिक्षा प्रणाली में शामिल करके नैतिकता, सहिष्णुता, और मानवता के मूल्यों को पुनर्जीवित किया जा सकता है। उनका साहित्य न केवल शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक है, बल्कि यह समाज को एकजुट और समृद्ध बनाने में भी सहायक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. कुमारी, विनिता। हिंदी संत साहित्य के स्रोत। वाराणसी : चौखंबा प्रकाशन, 2005
2. गरीबदास। श्री ग्रंथ साहिब। हरियाणा : गरीबदास संस्थान, 1757
3. गुरु ग्रन्थ साहेब, डॉ० मनमोहन सहगल, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ, 1978, 1980, क्रमशः

(पहली, दूसरी सैंची)
4. चेतनदास, स्वामी। ग्रंथ साहिब की व्याख्या। हरिद्वार : संत साहित्य प्रकाशन, 1980
5. जैतराम ग्रंथ साहब, जैतराम की वाणी, पृ० 35
6. शर्मा, रामविलास। भाषा साहित्य और संस्कृति। नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1998
7. संत काव्य संग्रह, परशुराम चतुर्वेदी, द्वितीय संस्करण, किताब महल, इलाहाबाद, 1961
8. सिंह, राजदेव। संत साहित्य–पुनर्मूल्यांकन। पटना : साहित्य अकादमी, 2003

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 160-166

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Hindi Language and Indian Commerce Education System in Global Perspective : In Context of Yesterday, Today and Tomorrow

Prof. Dr. Sujata Chandrakant Patil

Associate Professor, HOD (Department of Business Administration)

Commerce Department, Appasaheb Raghunathrao Bhaurao Garud Arts,

Commerce & Science College, Shendurni, Tal.Jamner, Distt. Jalgaon MS 424204

Abstract :

The Hindi language and Indian commerce education system have undergone tremendous transformations, and their future looks promising. Hindi, once confined to specific regions, now plays an integral role in India's national identity and is making strides globally. Similarly, India's commerce education system has emerged as a global contender, with an increasing number of students, both domestic and international, opting for programs that reflect global trends and innovations.

Both the Hindi language and Indian commerce education system have evolved significantly in the modern era. Hindi has transitioned from a regional dialect to a language of national unity, culture, and global presence, while India's commerce education system has grown into a globally recognized entity that plays a key role in training professionals for a globalized economy.

Introduction :-

The role of the Hindi language and the Indian commerce educational system in the global context has undergone significant transformation over the years. This transformation can be understood by examining three key periods: yesterday (the historical context), today (the present state), and tomorrow (the future outlook). This journey reflects both the rise of India as an emerging global power and the increasing influence of Indian culture, language, and commerce education on the world stage.

Indian Commerce Education and Hindi Language :

The Indian commerce education system and the Hindi language are two significant elements

that play a pivotal role in India's development, identity, and global outreach. While they are from different areas—one being a field of study and the other a language—together they reflect the cultural, economic, and educational progress of India.

Interconnection between Commerce Education and Hindi Language

1. Language as a Medium of Instruction :

- Commerce education in India is predominantly taught in English, but there is a growing interest in offering courses in Hindi and other regional languages to make education more accessible to students from diverse linguistic backgrounds. Institutions in states like Uttar Pradesh**,** Madhya Pradesh**,** and Bihar offer business courses in Hindi, to meet the needs of local population.

2. Role of Hindi in Business Communication :

- As Hindi is widely spoken across India, it plays an essential role in business communication, especially in sectors like retail**,** hospitality, and customer service. Businesses that operate at the national level often rely on Hindi for marketing, customer outreach, and advertising.

3. Future Trends :

- In the future, commerce education programs may adapt to cater to the multilingual needs of India, offering bilingual or Hindi-medium programs to ensure greater inclusivity.

As per above discussion the Hindi language and Indian commerce education system both play crucial roles in shaping India's economic, cultural, and educational landscape. In this paper researcher includes evolution and importance of the Hindi language and commerce education evolution system in India in different era and in various context.

Different era / period :

- **Pre-independence period :** Indian commerce education during the colonial period was limited and primarily influenced by the British model, which focused on trade, accounting, and administration. It was more suited to maintaining the colonial economy rather than fostering indigenous entrepreneurship or economic development.
- **Post-Independence changes :** After gaining independence, India's economy was largely underdeveloped. The government focused on building a self-reliant economy, and commerce education started to reflect this shift. However, the system was still relatively underdeveloped and lagged behind Western models.
- **Early commerce education :** The establishment of Indian Institutes of Management (IIMs) and other professional institutions in the late 1950s and 1960s started to shape the modern commerce education system in India. However, these institutions remained limited in their scope, and most students pursued traditional commerce education at the undergraduate and postgraduate levels.

To understand the evolution of Hindi Language and Indian Commercial Education System, it's also important to study the contents in the context of Yesterday, Today, and Tomorrow in India, focusing on their transformation, challenges, and the future possibilities.

Yesterday: The Historical Context

Hindi Language :

- **Historical roots and development :** Hindi, as one of the major languages of India, has its roots in ancient languages like Sanskrit and Prakrit. It evolved as a prominent language during the Medieval Period in northern India, influenced by Persian, Arabic, and other regional dialects during the Mughal era / Empire (16th-18th century) where Urdu and Hindi began to blend in the northern regions of India eventually leading to modern Hindi.
- **Colonial era :** During the British colonial era Under British rule (19th and early 20th centuries),, English became the dominant language in administration, education, commerce and business. This sidelined vernacular languages, including Hindi, which became more of a regional language rather than a national or official one. This sidelined Hindi and other regional languages.
- **Post-Independence and the rise of Hindi :** After India's independence in 1947, there was a concerted effort to make Hindi the national language of the newly formed republic. The Constitution of India recognized Hindi as the official language, aiming for national integration and unity among the diverse linguistic regions of India.

Indian Commerce Education System :

- In pre-independence India, commerce education was largely influenced by British systems. The focus was more on traditional forms of trade, banking, and business, which were mostly regional and not globally oriented.
- Post-independence, India's education system, including commerce education, underwent significant changes with a focus on self-reliance and economic development. However, it still remained largely insular with limited exposure to global standards of business education.
- The Indian Institutes of Management (IIMs) and Indian Institutes of Technology (IITs) were established during the mid-20th century, but the growth of modern commerce education was slow compared to Western models.

Today : The Current State

Hindi Language :

- **Prevalence in India :** Today Hindi is spoken by so many people. Hindi is now the most widely spoken language in India, with over millions of speakers. It is recognized as the official language of the Indian government and its usage is prevalent in various aspects of Indian life, including business,

entertainment, media, and literature. Now it is used in a wide range of government documents, media, education, and daily communication in many states.

- **Global recognition :** The global spread of Hindi through social media and Bollywood has made it one of the fastest-growing languages worldwide. With globalization, Hindi has gained traction beyond India's borders, especially in regions with large Indian communities. The rise of Indian film industry (Bollywood) and media has made Hindi a prominent cultural and linguistic force globally. Hindi is now recognized as a subject of interest in many universities worldwide, especially in South Asia, Southeast Asia, and increasingly in the West, as part of Indology or South Asian Studies.
- **Media and Entertainment :** Hindi's significance has grown exponentially with the rise of the Bollywood film industry, television channels, and digital platforms. Hindi content dominates platforms like YouTube, Netflix, and social media, making it a key cultural and linguistic influence in India
- **Regional language vs. National language :** Hindi's position as a national language has strengthened, it still faces resistance in non-Hindi-speaking states like Tamil Nadu, where local languages like Tamil and Telugu are prioritized. However, there is a growing consensus to bridge this gap, and Hindi is increasingly being taught as a second language across Indian schools.

Indian Commerce Education System :

- **Growth and expansion :** India's commerce education system has seen massive growth, with an increasing number of institutions offering degrees in business, commerce, and economics. Institutions like the IIMs, ISB, etc. have grown and they now compete globally in terms of quality of education.
- **Globalization of commerce education :** Globalization and India's economic liberalization since the early 1990s have led to a significant transformation and establishment of world-class educational programs in the Indian commerce education system. Indian institutions have increasingly aligned themselves with global standards. More multinational companies entering India and Indian companies expanding abroad, there has been a growing demand for skilled professionals with expertise in global markets, finance, marketing, and management.
- **Accessibility and variety :** There is now a wide variety of commerce programs available, ranging from traditional undergraduate courses in B.Com, BBA, to more specialized fields like business analytics, digital marketing, and international business. The rise of online education and distance learning platforms like Coursera, Udemy, and edX has also made commerce education more accessible to students across India.
- **Entrepreneurship and innovation :** India is witnessing a significant rise in entrepreneurship,

and the education system has adapted to this by emphasizing practical knowledge and startup culture. Many commerce students today pursue entrepreneurial ventures or work in emerging sectors like technology, e-commerce, and fintech.

- Indian commerce education is also being recognized internationally, with increasing numbers of foreign students attending Indian institutions, especially those focusing on finance, economics, and management.
- Distance learning and online education platforms have further democratized access to commerce education, making it accessible to students worldwide.

Tomorrow: The Future Outlook

Hindi Language :

The future of Hindi is bright, especially in the context of digitalization. Hindi is increasingly becoming a dominant language in the digital space, with platforms like YouTube, Google, and social media seeing significant content in Hindi.

Global expansion :

Hindi is expected to continue growing as a global language due to the increasing influence of India in the global economy, politics, and culture. With the growing presence of Indian companies in abroad, the need for Hindi speakers will likely increase, particularly in fields such as international business, diplomacy, and global media. The expansion of Hindi-speaking communities worldwide will increase the demand for Hindi language education. Furthermore, the language's importance in global business will grow as Indian companies expand globally.

Digital and technological influence :

The increasing use of digital technologies will continue to booster the global presence of Hindi. Platforms like Google, YouTube, and Facebook have already contributed significantly to the spread of Hindi. Moreover, the growing focus on Artificial Intelligence (AI) and machine learning in Indian tech companies will likely make Hindi more prominent in the digital and technological sectors.

- **Hindi as a bridge language :** In the future, Hindi could emerge as a bridge language connecting India's diverse linguistic communities. This could enhance its role in national integration and internal migration, as more people from non-Hindi-speaking states may adopt Hindi for professional and personal communication.
- **Cultural significance :** The global success of Bollywood and Indian media will further solidify Hindi's position in the cultural landscape. Indian movies, music, and television shows in Hindi will continue to influence the global entertainment industry.
- With India's increasing influence in global economics, the importance of Hindi will likely

grow, becoming a critical language in international diplomacy, business, and technology.

- Efforts to standardize and promote Hindi in the global market through media, content creation, and educational institutions will shape its future.

Indian Commerce Education System :

The future of Indian commerce education is poised for further growth. India's emphasis on innovation, entrepreneurship, and the digital economy will drive the need for a modernized, globalized education system.

Emphasis on global competencies :

In the future, Indian commerce education is likely to place more emphasis on global competencies and skills relevant to an increasingly interconnected world. This will include expertise in areas like international trade, global finance, and sustainable business practices.

- **International collaborations and exchange programs :** With India becoming a key player in the global economy, Indian commerce institutions will form more international partnerships, bringing in global perspectives and facilitating student and faculty exchanges. This will help students gain exposure to global business practices and networks. International collaborations will increase, with Indian institutions forming alliances with top business schools worldwide, facilitating knowledge exchange and joint programs.
- The rise of AI, data science, and digital finance as major fields of study in commerce education will require Indian institutions to adapt and offer cutting-edge curriculum that aligns with global trends.
- **India's emerging role as a global economic powerhouse** will make its commerce education system a reference point for many countries, as India's business landscape becomes increasingly important in the global economy.
- The expansion of online learning platforms like Coursera, edX, and UpGrad will enable Indian commerce education to reach students worldwide, creating a new era of global students learning Indian commerce education at their own pace.
- **Technology and innovation :** The increasing role of technology in business means that commerce education will evolve to include subjects related to digital finance, fintech, AI, and data analytics. Edtech platforms will continue to play an essential role in making these courses more accessible and affordable.
- **Integration of entrepreneurship :** As India's startup ecosystem continues to grow, there will be more focus on entrepreneurship within the commerce education system. Universities and institutions will likely offer more practical, hands-on training to help students to start their businesses

or join startups.

Conclusion :

As per Global Perspective the Hindi language and the Indian commerce educational system are increasingly significant. Historically constrained by colonialism and a lack of global connectivity, both have evolved into powerful forces that influence not only India but also the world at large.

- **Hindi** is no longer just a regional language but has global reach, influencing cultures, media, and business.
- **Indian commerce education** is increasingly recognized as world-class, with institutions that contribute to the global workforce and economy.

Looking ahead, both the Hindi language and India's commerce education system will continue to grow in importance, shaping global communication, culture, and economic systems.

References :-

1. Chaise Ladousa, Hindi Is Our Ground, English Is Our Sky, Education, Language, and Social Class in Contemporary India , January 2014.
2. Dr Lid King , The Impact of Multilingualism on Global Education and Language Learning.
3. www.wikipedia.com
4. www.google.com

Mobile No.9763946971

Email: patilsujatac1@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 167-169

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा का योगदान

सुमन छोपाला

शोधार्थी, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए बहुत सी जिम्मेदारी व आवश्यकताओं का निर्वाह करना पड़ता है। मनुष्य ही धरती पर ऐसा प्राणी है जो अपने भावों व विचारों को भाषा के माध्यम से व्यक्त कर पाता है। भाषा के संबंध एक विद्वान ने क्या खूब कहा है कि यह मानव को मानवता प्रदान करती है। मनुष्य को यदि भाषा रुपी वरदान न मिला होता तो वह समाज में अपना अस्तित्व कभी न बना पाता। अतः भाषा के द्वारा ही मनुष्य अपना सर्वांगीण विकास कर पाया है। भाषा अंधकारमय रास्तों में ज्योति का कार्य करती है और यह ज्योति उस प्रकाश पुंज के समान है जो भारत में बोली जाने वाली भाषाओं का मार्गदर्शन करती है। भारत देश में कई भाषाएं बोली व पढी जाती है। मगर हिन्दी भाषा ने अपनी अलग पहचान बनाई हुई। यह हमारे देश की आत्मा है। हिन्दी भाषा सम्पूर्ण विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। हिन्दी विश्व जगत की सबसे सरल, समृद्ध व प्रभावशाली भाषा है। हिन्दी विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में तीसरे स्थान पर है। यह हमारे देश के स्वाभिमान और गौरव का प्रतीक है।

अपनी मातृभाषा हिंदी की प्रशंसा करते हुए – रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने लिखा है कि "मैं अपनी प्यारी मातृभाषा की तरफ से अपने ही देश में विश्वविद्यालय के द्वार पर खड़ा चातक की तरह उत्कंठित वेदना के साथ प्रार्थना करता हूँ तुम्हारे अभ्रभेदी शिखर को घेरे हुये जो पुंज के पुंज श्यामल मेघ घूम रहे है, उनका प्रसाद आज फलों और शस्यों पर बरसने दो, पुष्प और पल्लवो से पृथ्वी सुंदर हो उठे, मातृभाषा का अपमान दूर हो युग शिक्षा की उमड़ती हुई धारा हमारी चिंता की सूखी नदी के रीते मार्ग से बाढ की तरह बह निकले, दोनों तट पूर्ण चेतना से जाग उठे, घाट–घाट पर आनन्द ध्वनि मुखरित हो उठे।"

भारतीय संस्कृति व संस्कारों की परिचायक हिन्दी है। आधुनिक युग में सम्पूर्ण विश्व हम भारतवासियों की संस्कृति व सभ्यता को जानने के लिए हमारे देश भारत की ओर आकर्षित हो रहे है। विगत वर्षो में जिस प्रकार तकनीकी विकास में बढौतरी हुई हैं जिसके कारण निरन्तर नये क्षितिज हमारे सामने खुलने लगे है। ठीक इसी प्रकार हिन्दी भाषा ने अपने पंखों को खोलकर 21वीं सदी के प्रवेश द्वार में हिन्दी की वैश्विक बाजार में अपनी क्षमता व भव्यता भरी उड़ान को भरा है। वैश्विक बाजार रूपी आसमान में हिन्दी भाषा ने अपना परचम लहराया है। विश्व स्तर पर भारतीय भाषा हिन्दी और संस्कृति के प्रति आकर्षण व लगाव संस्कृत के अध्ययन द्वारा प्रारम्भ

हुआ। जिससे धीरे–धीरे हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रति विश्व भर के लोगों में रुचि जाग्रत हुई। पिछले वर्षों में जितना हिन्दी शब्दों का विस्तार हुआ है उतना विश्व की अन्य भाषाओं का नहीं हुआ है।

आज अगर हिंदी को शब्द संख्या की दृष्टि से देखा जाए तो हिन्दी संसार की सबसे समृद्ध भाषाओं में से एक मानी गई है। राष्ट्रीय भाषा का गौरव प्राप्त अंग्रेजी भाषा में मूल शब्द केवल दस हजार ही है और वही हिन्दी में लगभग दो लाख पचास हजार से भी अधिक है। दूसरे देशों में भी हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने के लिए सरकार की तरफ से भी कुछ महत्त्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे है जैसे फिजी, त्रिनिडाड और मॉरिशस स्थित हमारे दूतावासो में, राजभाषा अधिकारी एवं आत्तासे नियुक्त किये जाते है जिससे हिन्दी के प्रचार को बढ़ावा दिया जा सके। इन हिन्दी अधिकारियों की मद्द से हिन्दी पाठ्यक्रम का निर्माण और टेलीविजन के प्रसारण में मानस चतुःशती जैसे अवसरों पर भव्य सांस्कृतिक आयोजन किया जा सके। इन सबका संचालन विदेश मंत्रालय और हमारे दूतावास सार्थक कड़ी का काम करते है।

भाषा विकास में समाज के प्रत्येक व्यक्ति का योगदान है। इस सन्दर्भ में इमरसन का कथन है कि "भाषा वह नगर है जिसे खड़ा करने में हर व्यक्ति ने कोई ना कोई पत्थर लगाया है।" अर्थात् कहने का भाव है कि वैश्विक बाजार में हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने में प्रत्येक व्यक्ति का योगदान महत्तवपूर्ण है। जिस प्रकार बूंद–बूंद से घड़ा भरता है। ठीक उसी प्रकार थोड़े–थोड़े प्रयासों से विश्व में उस भाषा को बढावा मिलेगा जो व्याकरण बद्ध हो और जिसकी लिपि कम्प्यूटर पर आधारित हो। इसी आधार पर हिन्दी को यह मान्यता मिली क्योंकि यह देवताओं की भाषा संस्कृत की पुत्री है। हिन्दी को विश्व भाषा बनने की ज्यादा सम्भावना इसलिए है क्योंकि हिन्दी भाषा अपने आप में सम्पूर्ण जगत को समेटे हुए है और अन्य भाषाओं से उच्च स्थान मिला है। हिन्दी भाषा में आर्य, द्रविड़, पुर्तगाली, फारसी, अरबी, स्पेनिस, चीनी, जापानी आदि अनेक शब्दों को अपने में समाहित किये हुए है। इसलिए यह वैश्विक बाजार में अपना अस्तित्व बनाने में सफलता हासिल की है।

वैश्विक बाजार में हिन्दी भाषा की महत्वता को देखते हुए हिन्दी भाषी क्षेत्र को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। भाषा के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समन्वय स्थापित करना सरल हो जाता है। जिस तरह देश में दो राज्यों के बीच आपसी तालमेल स्थापित करने में भाषा अपनी अलग भूमिका निभाती है। ठीक उसी प्रकार वैश्विक बाजार में एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र को जोड़ने में भाषा का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहता है। विश्व स्तर पर हिन्दी भाषा का विस्तार करने के लिए यह आवश्यक है कि वहां बसे प्रवासी लेखकों को हिन्दी भाषा के साहित्य का सर्जन करना चाहिए और साहित्य पत्रिकाओं को भी प्रकाशित करवानी चाहिए। वैश्विक बाजार में हिन्दी की भूमिका देखते हुए विश्व के देशों में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिन्दी भाषा का प्रयोग अधिक मात्रा में होना चाहिए। भारत देश के विभिन्न प्रांतो के लोंगो को विदेशों में एकजुट होकर साथ होने के लिए अपनी सुव्यवस्थित एवं सुदृढ़ सम्पर्कित भाषा हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए। साहित्यिक कार्यक्रमों एवं काव्य गोष्ठियों का भी आयोजन करना चाहिए जिससे ज्यादा से ज्यादा हिन्दी भाषा का प्रचार प्रसार होगा।

निष्कर्ष :-

विश्व स्तर पर हिंदी की भूमिका को बढ़ावा देने के साथ–साथ अपने हिंदी साहित्य व साहित्यिक पत्रिकाओं में निरंतर गतिशीलता लानी होगी। जिससे सम्पूर्ण विश्व में हिंदी की भाषा दिन दौगुनी और रात चौगुनी उन्नत्ति की ओर अग्रसर रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1. विश्व भाषा हिन्दी हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ संख्या (01)
2. विश्व बाजार में हिन्दी (महिपाल सिंह, देवेन्द्र मिश्र) पृष्ठ संख्या (127–128)

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 170-174

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा : कल, आज और कल

सुमेधा शर्मा

शोधार्थी, पीएच०डी० (हिन्दी विभाग), बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।

भाषा अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम माध्यम है। यदि कहें कि मनुष्य का इस धरती पर सबसे बड़ा आविष्कार 'भाषा' का आविष्कार है, तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। भाषा के द्वारा ही एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति तक अपने विचार, अपनी अनुभूति, अपनी संवेदनाएँ तथा अपना ज्ञान–विज्ञान संप्रेषित कर सकता है। एक व्यक्ति का ज्ञान अनेक व्यक्तियों का विचार बन जाता है। ठीक इसी तरह अनेक व्यक्तियों के जीवनोपयोगी विचार 'ज्ञान' की संज्ञा प्राप्त कर पूरी मानवता के लिए सुखकर बन जाते हैं क्योंकि – **'नास्ति ज्ञानात् परमसुखम्।'** यही 'ज्ञान' लिपि के द्वारा लिखित स्वरूप प्राप्त कर मानवता की धरोहर बन जाता है। पर्वतीय कन्दराओं से जीवन प्रारम्भ करने वाले आदिमानव से आज की पाँच सितारा संस्कृति तक की यात्रा तय करने वाली मानवता ने इसी ज्ञान के संरक्षित एवं उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त 'विज्ञान' द्वारा अकल्पनीय उन्नति की है।

मानक हिन्दी कोश में राष्ट्र का अर्थ है – 'किसी एक निश्चित और विशिष्ट क्षेत्र में रहने वाले लोग, जिनकी एक भाषा, एक–से रीति–रिवाज तथा एक–सी विचारधारा होती है।'[1] अर्थात् प्रत्येक राष्ट्र के लिए अपनी एक भाषा होना अनिवार्य है। भारत की राष्ट्र–भाषा हिन्दी है। भले ही राजनैतिक अथवा वैधानिक कारणों से हिन्दी को राष्ट्र–भाषा बनने में अनेक बाधाएँ उपस्थित हुई, पर उन सभी को पार कर अन्ततः हिन्दी राष्ट्र–भाषा के सिंहासन पर विराजमान होने में सफल रही। आज सभी देशवासियों का आदर व प्यार उसे प्राप्त है। सर्वविदित ही है कि तकनीकी दृष्टि से हिन्दी अन्य सभी भाषाओं में श्रेष्ठ है। इसकी वर्णमाला में इतनी स्पष्टता और सामर्थ्य है कि जो बोली जाती है, वही लिखी जा सकती है। इसकी ध्वनियों में सूक्ष्म–से–सूक्ष्म अभिव्यक्ति की सामर्थ्य विद्यमान है। अन्य भाषाओं की लिपि में इतनी शुद्धि और सम्पूर्णता नहीं, उनमें बोला कुछ जाता है, लिखा कुछ और ही जाता है।

परिवर्तनशीलता भाषा की स्वाभाविक विशेषता है। कहा भी है – 'कोस, कोस पै पाणी बदले, चार कोस पै वाणी।' सभी भाषाएँ जब–जब नए लोगों और नई संस्कृतियों के सम्पर्क में आती है तो उनसे कुछ ग्रहण करती हैं, कुछ उन्हें देती हैं। निरन्तर आदान–प्रदान की यही प्रक्रिया भाषायी परिवर्तन और संवर्धन का कारण बनती है। हिन्दी ने भी आज तक बहुत लम्बी यात्रा तय की है। प्राचीन काल में भारत में बोल–चाल और साहित्य की भाषा संस्कृत थी। हमारा प्राचीन साहित्य, वेद, उपनिषद्, पुराण तथा अन्य ज्ञान–विज्ञान आज भी संस्कृत में ही उपलब्ध हैं। समय के बदलाव से संस्कृत भाषा, पालि और प्राकृत की यात्रा तय करते हुए अपभ्रंश तक पहुँची।

इस अपभ्रंश से ही खड़ी बोली अर्थात् हिन्दी का निकास हुआ, ऐसा भाषा वैज्ञानिकों का मत है। जैन,

बौद्ध और नाथ–साहित्य को हिन्दी की नींव के रूप में स्वीकार किया जाता है। नाथ–सम्प्रदाय के गोरखनाथ की 'गोरखवाणी' हिन्दी के बहुत समीप है :–

'पंथि चलै चलि पवना तूटै, नाद बिंदु अरुझाई।
घट के भीतर अरसठ तीरथ, कहाँ भ्रमै रे भाई।
हबकि न बोलिबो, ठबकि न चलिबो, धीरै धरिबा पाँव।
गरव न करिबा, सहज रहिबा, भणत गोरख राँव।।'

डॉ० मैथिलीप्रसाद भारद्वाज का मानना है – 'गोरखनाथ की वाणियों से यह निर्दिष्ट होता है कि दसवीं शताब्दी में ही हिन्दी सार्वदेशिक रूप ग्रहण कर चुकी थी। जयदेव, ज्ञानदेव, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम और केशवस्वामी जैसे अहिन्दी क्षेत्रों में हिन्दी लेखकों की हिन्दी रचनाएँ यह निर्दिष्ट करती हैं कि हिन्दी सामान्य भारतीय जनसम्पर्क की भाषा का दायित्व निभा रही थी।'[2] जैन–मुनियों ने अपने उपदेशों को आमजन तक पहुँचाने के लिए हिन्दी को ही माध्यम बनाया। इसमें ही 'पृथ्वीराज रासो' जैसे महाकाव्य की रचना हुई, जिसे हिन्दी का पहला महाकाव्य होने का गौरव प्राप्त है। हिन्दी की बढ़ती हुई लोकप्रियता के विषय में बाबू शिवनन्दन सहाय लिखते हैं :–

'हिन्दी भाषा जैसी पुरानी हे, वैसे ही इसके वृत्त का भी बहुत विस्तार है। बिहार की पूर्वी सीमा से लेकर सुलेमानी पर्वत की श्रेणी–पर्यप्त एवं विंध से लेकर तराई–पर्यन्त इसका प्रचार है। गोरख लोगों ने इसे कुमाऊँ और नयपाल तक पहुँचाया है। पेशावर के पर्वतों से आसाम तक एवं कश्मीर से कन्याकुमारी अंतरीप तक यह भाषा सर्वत्र समझी जाती है और काम देती है। यह इसका अपूर्व गुण है और यही इसे राष्ट्रभाषा बनने योग्य बनाता है।'[3]

हिन्दी की संप्रेषणीयता में धर्म कभी आड़े नहीं आया। सभी धर्मावलंबियों ने इसे पूरा सम्मान दिया, अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। मुसलमान कवि अमीर खुसरो को खड़ी बोली का सबसे पहला कवि माना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की मान्यता है – 'जिस ढंग के दोहे, तुकबन्दियाँ और पहेलियाँ आदि साधारण जनता की बोलचाल में इन्हें प्रचलित मिली, उसी ढंग के पद्य, पहेलियाँ आदि कहने की उत्कण्ठा इन्हें भी हुई।'[4] इनकी अभिव्यक्ति की सरसता एवं सरलता बेजोड़ है :–

'खुसरो रैनि सोहाग की जागी पी के संग,
तन मेरो मन पीउ को दोऊ भए इक रंग।
गौरी सोवै सेज पर मुख पर डारे केस,
चल खुसरो घर आपने रैनि भई चहुँ देस।'

हिन्दी की विकास–यात्रा के पहले पड़ाव आदिकाल में रासो ग्रन्थों में वीररस की अद्‌भुत छटा देखने को मिलती है। तत्पश्चात् – 'भक्तिकाल में पदार्पण करके तो हिन्दी धन्य हो गई। कबीर, रैदास, मलूकदास आदि सन्त–कवियों की मार्मिक साखियों और दोहों की धूम भारत के कोने–कोने में सुनाई पड़ने लगी। अष्टछाप कवियों ने समस्त भारत को राधा और कृष्ण के रंग में रंग दिया। सूरदास की बाललीला के मधुर पद जन–जन का कण्ठहार बन गए। उनकी गोपियों के भक्तिसिक्त तर्क प्रवण प्रहारों ने उद्धव के ब्रह्म–ज्ञान का गरूर छलनी–छलनी कर दिया, जिससे उत्फुल्ल होकर भक्तों के मनमोर हर्षातिरेक से नाच उठे। सूरसागर की

भक्तिसिक्त भावोर्मियों ने समस्त भारत के लोकमानस को कृतकृत्य कर दिया।'[5] भक्तिकाल में ही 'पद्मावत' तथा 'रामचरितमानस' जैसे अमर महाकाव्यों की रचना हुई। 'रामचरितमानस' तो हिन्दुओं का ऐसा धर्मग्रन्थ बना कि उसका अखण्ड पाठ आज भी इष्टसिद्धि अथवा मंगलकर्म–सम्पन्नता का पर्याय बन गया है। मीरा के भक्ति–पद्यों ने हिन्दी को अमृतरस से सींच दिया। भक्त कवि रहीम और रसखान ने अपनी वाणी से जो अमृत वर्षा की उससे गद्गद होकर नवजागरण के पुरोधा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कह उठे :–

'इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिंदून वारिये।'[6]

भक्ति की धारा अभी मन्द पड़ने लगी ही थी, तभी राष्ट्रीय अस्मिता के उद्घोषक कवि भूषण का ओज सामने आ गया। रीतिकालीन श्रृंगारी कवि बिहारी, पद्माकर, देव, घनानन्द आदि ने हिन्दी का 'नख–शिख' श्रृंगार किया। गिरधर की कुण्डलियों ने नीति–वर्णन में चमत्कार दिखलाया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के आगमन के साथ ही उन्नीसवीं शताब्दी में नवजागरण का शंखनाद हुआ। हिन्दी में कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि नई–नई विधाओं का जन्म हुआ। हिन्दी भारतीय स्वतन्त्रता–संग्राम में अमोघ–अस्त्र बन कर सामने आई। रूढ़ियों और कुरीतियों से जड़ भारतीय समाज के मुक्ति–आन्दोलन के साथ–साथ निज भाषा–प्रेम उमड़ पड़ा :–

'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल।।'

देश के बड़े–बड़े विचारक, विद्वान, नेता व स्वतन्त्रता–सेनानी हिन्दी के रंग में रंग गए। राजर्षि टंडन ने उद्घोष किया – 'मैं हिन्दी का और हिन्दी मेरी है। हिन्दी के लिए मेरे प्राण भी प्रस्तुत हैं।'[7] रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बंगला का कवि होते हुए भी राश्ट्रगान 'जन–गण–मन' हिन्दी में लिखा। भूदान–यज्ञ के पुरोधा विनोबा भावे जी ने हिन्दी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा – 'मैंने हिन्दी का सहारा न लिया होता, तो कश्मीर से कन्याकुमारी और असम से केरल के गाँव–गाँव में जाकर भूदान–ग्रामदान का क्रांतिपूर्ण संदेशा जनता तक न पहुँचा सकता। यदि मैं मराठी भाषा का सहारा लेता तो महाराष्ट्र से बाहर कहीं काम न बनता। इसी तरह अंग्रेजी भाषा लेकर चलता तो कुछ प्रांतों में काम चलता, परन्तु गाँव–गाँव में जाकर क्रांति की बात अंग्रेजी द्वारा न हो सकती थी। इसलिए मैं कहता हूँ कि हिन्दी का मुझ पर बड़ा उपकार है, इसने मेरी बहुत बड़ी सेवा की है।'[8]

राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी हिन्दी–प्रेमी थे। अंग्रेजी के प्रति भारतीयों के आकर्षण को देखकर उन्हें बहुत कष्ट होता था। उनका कहना था – 'अपने देशवासियों पर अंग्रेजी का मुल्लमा चढ़ा हुआ देखकर मुझे जितना दुःख होता है, उतना अन्य किसी वस्तु से नहीं। मैं इंग्लैण्ड में काफी रहा हूँ और मैं जानता हूँ कि वहाँ कोई अंग्रेज किसी दूसरे अंग्रेज से अपनी मातृभाषा को छोड़कर अन्य किसी भाषा में वार्तालाप नहीं करता। जब मैं भारतीयों को अपने भारतीय भाईयों के साथ विदेशी भाषा में बोलते देखता हूँ, तब मुझे बड़ी वेदना होती है।'[9] नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था कि 'देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राजभाषा की अधिकारिणी है।' चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य ने कहा था कि हिन्दी का श्रृंगार राष्ट्र के सब भागों ने किया है, वह हमारी राष्ट्रभाषा है।

वर्तमान में हिन्दी की स्थिति अत्यन्त हर्षित करने वाली है। भारत सरकार हिन्दी के प्रचार–प्रसार तथा सरकारी कार्यालयों में क्रियान्वयन के लिए कटिबद्ध है। मन्त्रालयों, बैंकों तथा जीवन बीमा जैसे बड़े–बडे प्रतिष्ठानों में अंग्रेजी के समानान्तर ही हिन्दी में कार्य करना अनिवार्य कर दिया गया है। गैर सरकारी औद्योगिक

क्षेत्र में भी इसके पालन पर जोर दिया जा रहा है। राजभाषा अधिकारी तथा हिन्दी अनुवादक के नए पद सृजित किए गए हैं, हिन्दी–प्रशिक्षणशालाएँ चल रही हैं।

डॉ० पूर्णचन्द शर्मा के अनुसार – 'रक्षा मन्त्रालय ने तो इसके प्रयोग में नए–नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। यहाँ तक कि सभी सैनिकों को सेना–कमाण्ड हिन्दी में ही दिए जाते हैं। सैन्य स्कूलों एवं अकादमियों में शिक्षण–प्रशिक्षण का कार्य हिन्दी में किया जाता है। सेना के साजो–सामान एवं रक्षा–उपकरणों के नाम भी हिन्दी में ही रखे गए हैं, जैसे – चीता, चेतक, पृथ्वी, आकाश, विक्रांत, कावेरी, नाग, अर्जुन आदि। कौन नहीं जानता कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान लड़े गए सभी युद्धों में हिन्दी–गीतों के माध्यम से ही देश के जवानों में राष्ट्र–प्रेम की भावना कूट–कूट कर भरी गई थी।'[10]

आज शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी भारत के सभी विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में अनिवार्य रूप से पढ़ाई जा रही है। स्नातक, स्नातकोत्तर तथा शोधकार्य भी हिन्दी माध्यम से हो रहे हैं। भारतीय प्रशासनिक एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम का विकल्प निर्धारित किया जा चुका है। दूरदर्शन एवं आकाशवाणी के रोचक कार्यक्रमों ने अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में भी हिन्दी को लोकप्रिय बना दिया है। हिन्दी–फिल्मों, पत्रकारिता एवं मीडिया के क्षेत्र में तो हिन्दी का एक छत्र साम्राज्य स्थापित हो चुका है। बहुत बड़ी संख्या में भारत के नागरिक विश्व के अनेक देशों में व्यापार, नौकरी अथवा अध्ययन के उद्देश्य से गए हैं, उन्होंने हिन्दी को विश्व के कोने–कोने में पहुँचाने का काम किया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच पर स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेयी तथा श्रीमती सुषमा स्वराज ने हिन्दी में जो उद्बोधन किया, उसे सुनकर विश्व के नेता भौंचक्के रह गए। उसी परिपाटी को हमारे जननायक वैश्विक मंचों पर दोहरा रहे हैं। हिन्दी का साम्राज्य दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है।

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा ही नहीं, अपितु विश्व की तीसरी प्रमुख भाषा है, जो विभिन्न देशों के शताधिक विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जा रही है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कुछ ऐसी सामाजिक संस्थाएँ गठित हो चुकी हैं, जो समूचे विश्व में हिन्दी के प्रचार–प्रसार का कार्य कर रही हैं। दूसरे देशों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी पर सेमिनारों का आयोजन इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी वैश्वित स्तर पर अपनी पहचान बना चुकी है।

आने वाले कल में हिन्दी का स्वर्णिम भविष्य स्पष्ट दिखाई दे रहा है। सरकार 'राजभाषा आयोग' तथा 'तकनीकी शब्दावली आयोग' का गठन कर चुकी है, जिसकी देख–रेख में ज्ञान–विज्ञान के अनेक श्रेष्ठ ग्रन्थों का अनुवाद किया जा रहा है। हिन्दी भी अपनी उदारता से विदेशी भाषाओं के यथेष्ट शब्दों को अंगीकार कर अपने शब्द–भण्डार में अपूर्व वृद्धि कर रही है। नई शब्दावली से डॉक्टरी और इंजीनियरिंग के अध्येता विद्यार्थी भी हिन्दी माध्यम से अपनी शिक्षा सम्पन्न कर सकेंगे। जनसंख्या अधिक होने के कारण भारत का बाजार विश्व का सबसे बड़ा बाजार है, इसलिए विदेशी कम्पनियों का ध्यान इस पर केन्द्रित है। भारत इस समय विश्व की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बनने जा रहा है। निःसन्देह आर्थिक सामर्थ्य से यहाँ देशी–विदेशी व्यापार में अपार वृद्धि की संभावना है। भारत में व्यापार बढ़ाने के लिए विदेशी कम्पनियों को भी आमजन तक अपने उत्पाद पहुँचाने के लिए हिन्दी का सहारा लेना ही पड़ेगा। दूसरे देशों में भारतीय प्रवासियों कीं संख्या अकल्पनीय ढंग से बढ़ती जा रही है। कई देशों में तो भारतीय नागरिकों का वहाँ की राजनीति में प्रवेश भी निर्णायक स्थिति में पहुँच चुका है। इन प्रवासी नागरिकों से राजनैतिक सहयोग लेने के लिए, इनसे मधुर सम्बन्ध बनाने के लिए भी हिन्दी को अपनाना उन देशों की अनिवार्यता एवं प्राथमिकता होगी।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि संस्कृत से चलकर पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश के सोपान पार करते हुए राष्ट्र भाषा के सम्मानित मंच पर विराजमान होने के लिए हिन्दी ने संघर्ष पूर्ण यात्रा तय की है। हिन्दी ने परतन्त्र भारतवासियों की आत्मा में स्वतन्त्रता का मन्त्र फूंका, स्वाभिमान व आत्मगौरव का अहसास दिलाया। अपने साहित्य से पूरे देश को एकता के सूत्र में बांधा। भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों का प्रकाश विश्व के कोने–कोने में पहुँचा कर भारत का मस्तक गर्व से ऊँचा किया। हिन्दी का अतीत श्रम सिंचित, वर्तमान देदीप्यमान एवं भविष्य स्वर्णिम है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

सन्दर्भ सूची :–

1. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, पृष्ठ 505
2. हरिगंधा, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, जून 2006, पृष्ठ 23
3. सम्मेलन पत्रिका, अधिवेशन अंक–4, सन् 2005, पृष्ठ 112
4. चौमासा (आचार्य शुक्ल का लेख 'खुसरो'), फरवरी 2000, पृष्ठ 9
5. डॉ० पूर्णचन्द्र शर्मा, विश्वगुरु भारत, पृष्ठ 243
6. डॉ० शिवकुमार शर्मा, हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ (1994), पृष्ठ 294
7. हिन्दुस्तान, रविवार, 23 अक्टूबर, 1983, पृष्ठ ख
8. हिन्दुस्तान, रविवार, 23 अक्टूबर, 1983, पृष्ठ ख
9. हिन्दुस्तान, रविवार, 23 अक्टूबर, 1983, पृष्ठ क
10. डॉ० पूर्णचन्द्र शर्मा, विश्वगुरु भारत, पृष्ठ 245

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 175-179

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिन्दी का इतिहास और विकास

सुनैना

शोधार्थी (भाषा विभाग), बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा)

भाषा स्वयं में एक सतत् प्रवहमान प्रक्रिया है। किसी की भाषा के वर्तमान कालिक स्वरूप का मूल उसकी पूर्ववर्ती भाषा अथवा भाषाओं में निहित रहता है। यहाँ तक हिन्दी भाषा के इतिहास और विकास का प्रश्न है, इसकी कहानी काफी लम्बी है। इसकी जड़ें उस जनभाषा में विद्यमान हैं जिसे 'शौरसेनी अपभ्रंश कहा है। हेमचन्द्र ने अपभ्रंश को व्याकरण में निबद्ध करने का प्रयास किया था, वह अपभ्रंश की परिनिष्ठक की प्रवृति का द्योतक माना जाता चाहिए। इसके आस–पास ही अपभ्रंश अपने कई रूपों में बँटने लगी थी। अपभ्रंश के अन्तिम चरण ने प्रारम्भिक हिन्दी की झलक हमे मिलने लगती है। हिन्दी के इस प्रारम्भिक रूप को 'अवहट्ट' भी कहा गया है। वैदिक भाषा की ही धारा लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश और अवहट्ट भाषाओं के रूप में विकसित होती हुई आज हिन्दी के रूप में फल–फूल रही है। इस प्रकार हिन्दी का विकास अविछिन्न रूप से अपने मूल वैदिक संस्कृत से हुआ है। वैदिक संस्कृत से विकसित लौकिक संस्कृत तथा आगे और विकसित अन्य भाषाएँ व्याकरणबद्ध होकर तथा साहित्य का माध्यम बनकर गतिरूद्ध होती गई और नई–नई जनभाषाएँ उनका स्थान ग्रहण करती गई। हिन्दी भी जनभाषा थी। जब अपभ्रंश या अवहट्ट की गति रूद्ध हुई तब हिन्दी आगे बढ़ी। यह लगभग 1000 वर्ष से अपना विकास करती हुई विकास की कई सीढ़ियाँ पार कर चुकी है। हिन्दी साहित्य की बहुमूल्य सम्पत्ति ब्रजभाषा, खड़ी बोली और अवधी में है। जैसे–खड़ी बोली हिंदी शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई उसी प्रकार ब्रजभाषा भी शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई, किन्तु अवधी, अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित हुई है। डॉ0 भोलानाथ तिवारी ने अपने ग्रन्थ 'हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास में' में हिन्दी को पाँच अपभाषाओं अथवा बोली समूहों 'पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी तथा बिहारी' का सामूहिक नाम बताया है।

हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना गया है। सामान्यतः प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव स्वीकार किया जाता है। उस समय अपभ्रंश के कई रूप थे और उनमें सातवीं–आठवीं शताब्दी से ही 'पद्य' रचना प्रारम्भ हो गयी थी। हिन्दी भाषा व साहित्य के जानकार अपभ्रंश की अन्तिम अवस्था 'अवहट्ट' से हिन्दी का उद्भव स्वीकार करते है चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने इसी अवहट्ट को पुरानी हिन्दी कहा है।

मानव भाषा के माध्यम से अपने विचारों का आदान–प्रदान करते है। भाषा मनुष्य मात्र की विशेषता है। भारत में हम कई भाषाएँ बोलते हैं – हिन्दी, तमिल, बंगला, मणिपुरी, आसामी आदि। ये भाषाएँ किस रूप में

एक–दूसरे से सम्बद्ध है यह जानने के लिए इसके प्राचीन इतिहास को जानने की आवश्यकता है।

भाषा का अध्ययन क्षेत्र अत्यधिक व्यापक हो गया है और इसके आरंभ काल से लेकर आज तक की भाषा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक विद्वानों ने पर्याप्त प्रकाश डाला है, तथापि भाषा के इतिहास की कहानी आज की भाषा–क्षेत्र के लिए रहस्यमयी बनी हुई है। संसार की कौन सी भाषा आदिभाषा थी और उससे किन–किन भाषाओं को किन–किन रूपों में विकास हुआ यह आज भी अनिणीति है।

हिन्दी का इतिहास वस्तुतः वैदिक काल से प्रारंभ होता है उससे पहले आर्यभाषा का स्वरूप क्या था इसका कोई लिखित प्रमाण नहीं मिलता। साथ ही भारत में आर्यों का आगमन किस काल से हुआ इसका भी कोई प्रमाण नहीं मिलता। साधारणतया यह माना जाता है कि 2000 से 1500 ई0 पूर्व भारत के उतर पश्चिम सीमांत प्रदेश में आर्यों के दल आने लगे।[2] यही पहले से बसी हुई अनार्य जातियों को परास्त कर आर्यों ने सप्त सिंधु, जिसे हम आधुनिक पंजाब के नाम से जानते है, देश में आधिपत्य स्थापित कर लिया द्रविड़ कुल की जातियाँ सांस्कृतिक दृष्टि से सबसे अधिक उन्नत रह है। विकास क्रम की दृष्टि से भारतीय आर्य भाषा को तीन कालों में विभाजित किया गया है :–

1. प्राचीन–भारतीय–आर्य–भाषा (वैदिक–संस्कृत–लौकिक–संस्कृत) 1500 ई0 पूर्व से 500 ई0 पूर्व (1000 वर्ष)
2. मध्यकालीन आर्य भाषा (पालि–प्राकृत) 500 ई0 पू0 से 1000 ई0 (1500 वर्ष) यद्यपि इससे पहले भी प्राकृतें थी।
3. आधुनिक भारतीय आर्य भाषा – 1000 से अब तक (हिन्दी और हिंदीतर बंगला, गुजराती, मराठी, सिंधी, पंजाबी आदि)

1.1 प्राचीन भारतीय आर्य भाषा :–

आर्यों के आगमन के समय इनकी भाषा ईरानी से अधिक भिन्न नहीं थी। भारत में आने वाले आर्यों के दल अपने साथ अपनी सुविकसित भाषा और यदू–परायण संस्कृति भी लेकर आए। भारत में प्रवेश करने वाले आर्यो के विभिन्न दलों की भाषा में कुछ–कुछ भिन्नता अवश्य थी परन्तु उनमें साहित्यिक भाषा का एक सर्वमान्य स्वरूप विकसित हो गया था। इसी साहित्यिक भाषा में 'ऋ. संहिता' के समूहों की रचना हुई। सुक्त ग्रंथों के रचनाकाल का समय लगभग 700 ई0 पूर्व है। इसमें भाषा के विकसित रूप के दर्शन होते है। इसी भाषा का उत्तरी रूप अपेक्षाकृत परिनिष्ठित एवं पंडितों में मान्य रूप था। इस रूप पाणिनि ने पाँचवी शताब्दी में नियमबद्ध किया जो हमेशा के लिए लौकिक संस्कृत का सर्वमान्य आदर्श रूप बन गया। "पाणिनि द्वारा संस्कृत भाषा को व्याकरण के नियमों में बाँध दिए जाने पर बोल–चाल की भाषा, प्राकृत तथा आधुनिक भारतीय भाषाओं के रूप में विकास करती चली गई। आगे चलकर संस्कृत भाषा बोलचाल की भाषा न रहने पर भी कुछ परिवर्तित होती रही, जिसकी झलक रामायण, महाभारत, पुराण–साहित्य और कालिदास के काव्यों में मिलती है।"[3] इस प्रकार प्राचीन आर्य भाषा के दो रूप है – वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत।

1.2 वैदिक संस्कृत : (1500 ई. पू. से 800 ई. पू. तक) :–

इसकी काल सीमा 1500 ई0 पू0 से 800 ई0 पू0 है। इसके अन्य नाम है प्राचीन संस्कृत, वैदिकी, वैदिक, संस्कृत तथा छान्दस। इस भाषा का प्रयोग वैदिक साहित्य, संहिताओं, ब्राह्मण ग्रंथों, आख्यानों तथा प्राचीन

उपनिषदों में हुआ है, इन सभी ग्रंथों में भाषा का उत्तरोत विकसित रूप देखने को मिलता है। फिर भी ध्वन्यात्मक और व्याकरणिक समनाताओं इन ग्रंथों की भाषा को एक ही भाषा के रूप देती है। वास्तव में हिन्दी के विद्यार्थी को जिस वर्णमाला से परिचित कराया जाता है वह वास्तव में प्राचीन भाषा की है।

1. प्रथम पर्व – जिसमें लगभग 200 ई0 पूर्व तक के प्रारंभिक – परिवर्तन तथा 200 ई0 पूर्व से 200 ई0 तक का विकास अन्तमुक्ति है।
2. 200 ई0 से 600 ई0 तक द्वितीय पर्व।
3. 600 ई0 से 1000 ई0 तक तृतीय पर्व अथवा अपभ्रंश काल।

विद्वानों ने वैदिक भाषा को बोलचाल की भाषा के अत्यन्त निकट होने का अनुमान लगाया है।

1.3 संस्कृत : (800 ई. पू. से 500 ई. पू. तक)

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा काल की दूसरी प्रमुख भाषा लौकिक संस्कृत थी। 'संस्कृत' का अर्थ है जिसका संस्कार (परिमार्जन) कर दिया गया है। वैदिक संस्कृत में जिन तीन रूपों – पश्मिोत्तरी, मध्यवर्ती एवं पूर्वी का उल्लेख किया जाता है उनमें से लौकिक संस्कृत का मूल आधार पश्मिोत्तरी बोली थी। क्योंकि वही प्रामणिक भाषा मानी जाती थी। 'पाणिनि' ने इसी भाषा को व्याकरण बद्ध कर 'अष्टाध्यायी' की रचना की। लौकिक संस्कृत साहित्यिक भाषा है। संस्कृत भाषा में उपलब्ध साहित्यिक ग्रन्थ इसी भाषा में लिखे गये हैं। संस्कृत का प्राचीनतम काव्यग्रन्थ 'रामायण' माना जाता है जिसकी रचना आदिकवि 'वाल्मीकि' ने की। 'पाणिनि' ने जिस भाषा को व्याकरणबद्ध किया वह क्रिया लय बोलचाल की भाषा अवश्य थी।"[4] काव्यायन द्वारा 'वार्तिको' की रचना से भी प्रमाणित होता है कि संस्कृत कभी बोलचाल की भाषा अवश्य थी। इसके विरोध में भी जो विचार पाश्चात्य भाषा वैज्ञानिकों ग्रिससने, हार्नले, वेवर ने प्रस्तुत किए वे निराधार हैं।

2.1 मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा :-

तथागत भगवान बुद्ध के जन्म (500 ई0 पू0) तक भारतीय आर्य भाषा विकास के मध्यकाल में प्रवेश कर चुकी थी। ईसा से 1000–600 वर्ष पूर्व तक का काल उत्तरापथ में आर्यों के प्रसार तथा जनपदों के निर्माण का काल था। इस समय तक उत्तर–पश्चिम में गांधार प्रदेश से लेकर पूर्व में विदेह (उत्तर–बिहार) एवं मगध (दक्षिण–बिहार) पर्यन्त आर्य राज्य स्थापित हो चुके थे और स्थानीय अनार्य जातियों में आर्य भाषा प्रतिष्ठित हो चुकी थी। जनपदीय भाषाओं का स्वरूप निरन्तर परिवर्तित–विचर्लित होता रहा। "600 ई0 पू0 से 1000 ई0 तक के 1600 वर्षों तक भारतीय–आर्य भाषा विभिन्न प्राकृतों तथा तत्पश्चात 'अपभ्रंश' के रूप में विकसित होती हुई भारतीय आर्य भाषा की जननी बनी।"[5] 1600 वर्षों के इस काल को निम्न पर्वो में बाँटा जा सकता है।

2.2 प्रथम पर्व - पालि :-

प्रथम पर्व में भाषा के विकास की अध्ययन–सामग्री पालि साहित्य तथा अशोक के अभिलेखों से प्राप्त होती है। बौद्धों विशेषतः दक्षिणी बौद्धों की यह भाषा 'मगध भाषा' अथवा 'देश– भाषा' के नामों से भी प्रसिद्ध है। पालि बौद्ध धर्म की भाषा है जबकि अभिलेखी प्राकृत (शिलालेखी प्राकृत) का प्रयोग सम्राट अशोक के शिलालेखों में तथा अन्य शिलालेखों में किया गया है। अशोक के शिलालेखों से यह पता चलता हे कि 300 ई0 पू0 में भाषा का क्या स्वरूप था। 'पालि' का सम्बन्ध 'पाल' से है, जिसका अर्थ है – रक्षा करना।[6] 'पालि' में बौद्ध धर्म के उपदेश सुरक्षित है उसने इनकी रक्षा की है इसलिए 'पालि' की व्युत्पति हुई – 'या पालेति रक्खतीति'।

पालि साहित्य के अन्तर्गत सम्पूर्ण बौद्ध साहित्य आता है जो मूलतः पिटक साहित्य एवं अनुपिटक साहित्य में विभक्त है। पिटक साहित्य के अन्तर्गत त्रिपिटक ग्रंथ – सुत पिटक, विनय पिटक एवं अभिधम्म पिटक है।

2.3 द्वितीय पर्व–प्राकृत :–

विद्वानों के एक वर्ग यह मानता है कि जनभाषा का संस्कार करके 'संस्कृत' बनाई गई अतः जनभाषा 'प्राकृत' भाषा थी। संस्कृत नाटकों में निम्न श्रेणी के पात्र इसी 'प्राकृत' का प्रयोग करते है जो तत्कालीन जनभाषा रही है। "डॉ0 भोलानाथ तिवारी ने प्राकृत भाषा को संस्कृत – पालि–प्राकत–अपभ्रंश की परम्परा की भाषा मानते हुए इसे पालि और अपभ्रंश के बीच की कड़ी माना है।"[7] प्राकृत भाषा के क्षेत्रीय आधार पर कई भेद किए गए हैं जो इस प्रकार हैं।

1. शौरसेनी प्राकृत 2. पैशाची प्राकृत 3. महाराष्ट्री प्राकृत 4. अर्द्धमागधी प्राकृत 5. मागधी प्राकृत 6. केकय प्राकृत 7. टक्क प्राकृत 8. खस प्राकृत 9. ब्राघड़ प्राकृत।

2.4 तृतीय पर्व–अपभ्रंश :–

अपभ्रंश को तृतीय पर्व या तृतीय प्राकृत भी कहते है। अपभ्रंश का शाब्दिक अर्थ है – बिगड़ा हुआ। प्राकृत की तुलना में भाषा का जो बिगड़ा हुआ रूप व्याकरणिक एवं ध्वन्यात्मक परिवर्तनों के कारण सामने आया उसे अपभ्रंश, अपभ्रष्ट या अवहट्ट नाम दिया गया। वस्तुतः अपभ्रंश प्राकृत और आधुनिक आर्य भाषाओं के बीच की कड़ी है तथा प्रत्येक आधुनिक आर्य भाषा का जन्म किसी न किसी क्षेत्रीय अपभ्रंश से हुआ हैं। 'प्राकृत सर्वस्व' नामक ग्रंथ में अपभ्रंश के 27 भंदों का उल्लेख किया गया हैं। भले ही अपभ्रंश के इतने भेद न हों किन्तु मुख्यतः अपभ्रंश के वही क्षेत्रीय भेद थे।"[8] प्रत्येक आधुनिक भारतीय आर्य भाषा को 'अपभ्रंश' की स्थिति पार करनी पड़ी है। "अपभ्रंश की अन्तिम सीमा अवहट्ठ भाषा है जो अपभ्रंश एवं आधुनिक आर्य भाषाओं के मध्य की कड़ी एवं सन्धिकालीन भाषा है।"[9] ऐसा माना जाता है कि आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का उद्भव अपभ्रंश के किसी न किसी क्षेत्र भेद से हुआ। जैसे शौरसेनी अपभ्रंश से – पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी, गुजराती

केकय अपभ्रंश से – लहंदा
टक्क अपभ्रंश से – पंजाबी
ब्राचड़ अपभ्रंश से – सिंधी
महाराष्ट्री अपभ्रंश से – मराठी
मागधी अपभ्रंश से – बिहारी, बंगाली, उड़िया, असमिया
अर्द्धमागधी अपभ्रंश – पूर्वी हिन्दी विकसित हुई हैं।

3.1 आधुनिक भारतीय आर्य भाषा :–

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का विकास 1000 ई0 के आसपास हुआ। ये सभी आर्य भाषाएँ किसी न किसी क्षेत्रीय अपभ्रंश से विकसित हुई। "कोई की भाषा जन्म लेते ही साहित्यिक भाषा नहीं बनती अपितु साहित्य रचना के लिए उसका स्वरूप निश्चित होने में कुछ समय लगता है।"[10] आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में प्रमुख है – सिंधी, लहंदा, पंजाबी, हिन्दी, गुजराती, मराठी, बंगला, उड़िया, असमिया। इनका परिचय इस प्रकार हैं –

1. **सिंधी** – सिन्धु नदी के आसपास का प्रदेश सिंध कहलाता है तथा वहाँ बोली जाने वाली भाषा को

'सिंधी' कहा जाता है। सिंधी बोलने वाले अधिकांश लोग अब पाकिस्तान में है।

2. **लहंदा** – पश्चिमी पंजाब में बोली जाने वाली इस बोली के नाम 'लहंदा' का शाब्दिक अर्थ 'पश्चिम' ही है। पहले यह 'लंडा' लिपि में लिखी जाती थी किन्तु अब फारसी लिपि का प्रयोग इस लिखने के लिए होने लगा है।
3. **पंजाबी** – पंजाबी भाषी लोग भारत के पंजाब प्रान्त के साथ–साथ देश के अन्य भागों में भी फैले है। अब पंजाबी गुरुमुखी लिपि में लिखी जाती है पंजाबी की मुख्य बोलियाँ है – माझी, डोगरी, दोआबी, रावी।
4. **हिन्दी** – 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग 'हिन्द' की भाषा के लिए होता है। इसका विकास संस्कृत के 'सिन्धु' शब्द से हुआ। हिन्दी के अन्तर्गत पांच उपभाषाएं एवं अठारह बोलियाँ हैं।
5. **गुजराती** – 'गुजराती' गुजरात की भाषा है जहाँ कभी 'गुर्जरों' का प्रभुत्व था। गुजराती भाषा की प्रमुख बोलियां है – काठियावाड़ी पट्टनी, सुखी आदि।
6. **मराठी** – 'मराठी' भाषा महाराष्ट्र में बोली जाती है इसका विकास 'महाराष्ट्र' में हुआ है इसकी लिपि देवनागरी है इसकी प्रमुख बोलियाँ हैं – नागपुरी कोंकड़ी, माहारी, कीष्टी।
7. **बंगला** – यह पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश में बोली जाती है इसका एक अन्य नाम बंगाली भाषा भी है।
8. **असमी** – इसे असमिया भाव के नाम से भी जाना जाता है। यह असम और उसके पार्श्ववर्ती प्रान्तों में बोली समझी जाती है।
9. **उड़िया** – उड़ीसा प्रान्त की भाषा उड़िया है। उड़िया भाषा की कुछ प्रमुख बोलियाँ है – गंजामी, संभलपुरी, मत्री आदि।

निष्कर्ष :–

सामान्यतः प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव स्वीकार किया जाता है। उस समय अपभ्रंश के कई रूप थे और उनमें सातवीं–आठवीं शताब्दी से ही 'पद्य' रचना प्रारम्भ हो गयी थी। हिन्दी भाषा व साहित्य के जानकर अपभ्रंश की अंतिम अवस्था 'अवहट्ट' से हिन्दी का उद्भव स्वीकार करते हैं।

संदर्भ पुस्तकें :–

1. 'समालोचक' – चन्द्रधर शर्मा गुलेरी।
2. 'हिन्दी : उद्भव विकास और रूप – हरदेव बाहरी।
3. 'अष्टाध्यायी' – पाणिनि।
4. उपरिवत्।
5. 'हिन्दी भाषा का इतिहास' – धीरेन्द्र वर्मा।
6. 'हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास' – उदय नारायण तिवारी।
7. 'हिन्दी भाषा' – भोलानाथ तिवारी।
8. 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' – सं0 डॉ0 नगेन्द्र।
9. 'हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास' – रामस्वरूप चतुर्वेदी।
10. 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 180-184

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा एवं भारतीय शिक्षा पद्धति : कल, आज और कल के संदर्भ

सुनीता

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।

भूमिका :-

भाशा मानवीय जीवन का आधार है। भाषा के बिना मानवीय जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। हिन्ही भाषा भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। हिन्दी से ही हम भारतीयों की पहचान और स्वरूप बना है। आज हिन्दी भारतीय स्तर पर ही नहीं विश्व स्तर पर अपनी जगह बना चुकी है। आज हिन्दी वैश्विक स्तर (अंतर्राष्ट्रीय) भाषाओं में अपना स्थान बना चुकी है। आज हिन्दी को विश्व परिप्रेक्ष्य में जो मान–सम्मान एवं स्नेह मिल रहा है। इसका श्रेय हिन्दी साहित्यकारों, हिन्दी विद् एवं उन प्रवासियों को जाता है जो विश्व के अलग–अलग स्थानों पर जाकर वहाँ रह रहे हैं और भारतीय संस्कृति, मानवीय मूल्यों व हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार कर रहे हैं। एक समय था जब भारत विश्व में शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र हुआ करता था किन्तु धीरे–धीरे भारत अपनी पहचान खोता गया। कुछ समय उपरान्त भारत ने फिर अपनी जड़ें मजबूत की और आज विश्व स्तर पर हिन्दी भाषा अपनी एक अलग पहचान बना चुकी है।

आज हिन्दी और भारतीय शिक्षा को जो उच्चतम स्थान प्राप्त हुआ है उसका श्रेय कहीं न कहीं माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को जाता है जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हिन्दी, शिक्षा और भारतीय संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं। हम अक्सर देखते भी हैं कि वे देश–विदेशों में दौरे पर जाते रहते हैं और वहाँ के लोगों से हिन्दी भाषा में बात करना, उचित सांमजस्य, तारतम्य बनाना भी इसका एक कारण है। दौरे के दौरान उनका अभिवादन भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों और पारंपरिक तरीके वे राष्ट्रीय गान के साथ किया जाता है जो अपने आप में (किसी भी देश के लिए) बड़ी बात है।

यदि हम बात करें वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा एवं भारतीय शिक्षा पद्धति की तो इसका स्वरूप धीरे–धीरे बदल रहा है। बदलाव जीवन का एक हिस्सा है और समय के साथ बदलना ही गतिशीलता कहलाता है।

शोध परिचय :-

भारतीय शिक्षा पद्धति आज से नहीं अपितु वैदिक काल से ही अपना पंचम लहरा रही है। यह बात अलग है कि समय के साथ–साथ शिक्षा के नियम, उद्देश्य, तरीके और सिद्धांतों में बदलाव आता रहा। शिक्षा का मूल

उद्देश्य मनुष्य में ऐसे संस्कार एवं ज्ञान को भरना, जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास हो सके; वह अपने परिवार व समाज का पालन–पोषण एवं कल्याण कर सके। आज हिन्दी अंतर्राष्ट्रीय भाषा है। यह विश्व के विभिन्न देशों में बोली और समझी जाती है जिससे देश के व्यापार को बढ़ाने में मदद मिली है। आज सूचना–प्रौद्योगिकी में भी हिन्दी क्षेत्र को बढ़ावा मिल रहा है।

भाषा के संदर्भ में हिन्दी के माननीय साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र का कथन है, ''चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर वाणी'' आज भी चरितार्थ है। आज हिन्दी के प्रसार से बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपना माल बेचने के लिए हिन्दी का सहारा ले रही है। जिसका बड़ा फायदा हिन्दी क्षेत्र में देखने को मिल रहा है। आज न केवल भारतीय साहित्यकार बल्कि प्रवासीय साहित्यकारों ने भी हिन्दी के क्षेत्र में बढ़–चढ़कर योगदान दिया है।

चित्र सं. 01

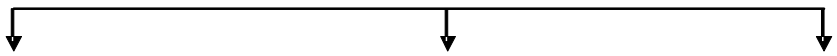

प्राचीन संदर्भ में शिक्षा पद्धति	वर्तमान संदर्भ में शिक्षा पद्धति	भविष्य के संदर्भ में शिक्षा
(अतीत काल में शिक्षा)	(आज)	(आगामी कल)

भारतीय शिक्षा पद्धति : कल, आज और कल :–

शिक्षा का स्वरूप समयानुसार बदल रहा है अगर हम बात करें प्राचीन काल (बीते हुए कल) की तो शिक्षा गुरुकुल केंद्रित होती थी। शिक्षा गुरुओं द्वारा शिष्यों को दी जाती थी। महाभारत कालीन युग में पांडव और कौरवों की शिक्षा गुरु–द्रोणाचार्य द्वारा दी गई। लम्बे समय तक भारत में गुरुकुल प्रथा चलती रही। परन्तु मैकाले के आवागमन से भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली (गुरुकुल) का अंत हो गया और पब्लिक स्कूलों को खोला गया।

प्राचीन संदर्भ में भारतीय शिक्षा (कल) :–

प्राचीन काल में शिक्षा आध्यात्मिकता पर आधारित थी। तब शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व के साथ–साथ धर्म के लिए होती थी। शिक्षा का उस समय भी उतना ही महत्व था जितना वर्तमान समय में है। प्राचीन काल में भारत को शिक्षा के क्षेत्र में विश्व गुरु कहा जाता था।

शिक्षा प्रकाश का स्त्रोत है जिस प्रकार अंधकार को दूर करने का साधन (माध्यम) प्रकाश है और इसी प्रकार अज्ञान को दूर करने का एकमात्र साधन शिक्षा है।

शिक्षा का प्रारंभिक रूप हमें ऋग्वेद में मिलता है। उस समय विद्यालय को गुरुकुल, शिक्षक को गुरु (आचार्य) और छात्र को शिष्य के नाम से जाना जाता था। ब्रह्मचारी व्रतधारी विद्यार्थी शंडग वेद का अध्ययन करते थे, गुरु के उपदेश का पालन करते, मंत्रों का उच्चारण करते हुए उन्हें कंठस्थ करते थे। इस समय आचार्यों का स्थान सर्वोश्रेष्ठ होता था। शिष्य हमेशा आचार्यों का सम्मान करते और आचार्य भी शिष्यों के कल्याण के लिए हमेशा कटिबद्ध (तैयार) रहते थे। वे शिष्यों के चरित्र निर्माण, उनके वस्त्रों, उनकी चिकित्सा का ध्यान रखते थे। विद्यार्थी भी ब्रह्ममूर्त में उठकर प्रातःकाल कृत्यों से निवृत होकर स्नान कर सम्पूर्ण दिन गुरुओं की सेवा करते थे। प्राचीन काल में वेदों के अतिरिक्त साहित्य दर्शन, ज्योतिष शास्त्र, व्याकरण, चिकित्सा शास्त्र, अर्थ शास्त्र आदि विषयों का अध्ययन किया जाता था। शिक्षा मठों और विहारों में दी जाती थी।

प्राचीन कालीन शिक्षा के प्रमुख स्त्रोत :–

1. वेद (4)
2. पुराण (18)
3. उपनिशद (108)
4. शास्त्र (6)
5. नीतियाँ (60)

वेद :–

हिंदू धर्म में वेद का सर्वोच्च स्थान है जिसके रचयिता महर्षि वेदव्यास जी हैं। ये चार भागों में वर्णित हैं। वेद का अर्थ है – ज्ञान। वेदों में ब्रह्मांड़, ज्योतिष, तंत्र–मंत्र, संगीत, औषधि और हमारी संस्कृति का व्याख्यान मिलता है। वेदों की रचना हिन्दी की जन्मदात्री संस्कृति में की गई है जिसके अध्ययन मात्र से मानव कल्याण निश्चित है।

चित्र संख्या - 2

वेद (4)

ऋग्वेद :–

ऋग्वेद सबसे पहला, सर्वोश्रेष्ठ वेद है। इसमें 10 अध्याय, 1028 सूक्त में 11,000 मंत्र हैं। इसमें 125 औषधियों का वर्णन मिलता है।

यजुर्वेद :–

इसमें पूजा–पाठ, मंत्र और यज्ञ की विधियों का वर्णन मिलता है। इसमें देवी–देवताओं को दी जाने वाली आहुति की भी व्याख्या की गई है।

अथर्ववेद :–

इससे हमें दैविय चमत्कारी शक्तियों के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है। इससे हमें पाप–कष्ट को दूर करने व मानवीय जीवन सुखमय बनाने के उपाय मिलते हैं। इसमें 20 अध्याय, 5687 मंत्रों का उल्लेख मिलता है।

सामवेद :–

सामवेद अपने–आप में श्रेष्ठ वेद है। साम का अर्थ है – गीत–संगीत। इसमें कुल मिलाकर 1875 श्लोक हैं। इसका दूसरा नाम सामगान है। इस वेद में हमें इंद्र और अग्नि का वर्णन मिलता है।

शास्त्र :–

शास्त्र का अर्थ है – अनुशासन। शिक्षा हमें अनुशासन का पाठ पढ़ाती है, हमारा मार्गदर्शन करती है, हमें अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाती है। वेदों के बाद यदि हमें कहीं से ज्ञान अर्जित होता है तो वह है शास्त्र। शास्त्र छः प्रकार के हैं।

चित्र संख्या - 3

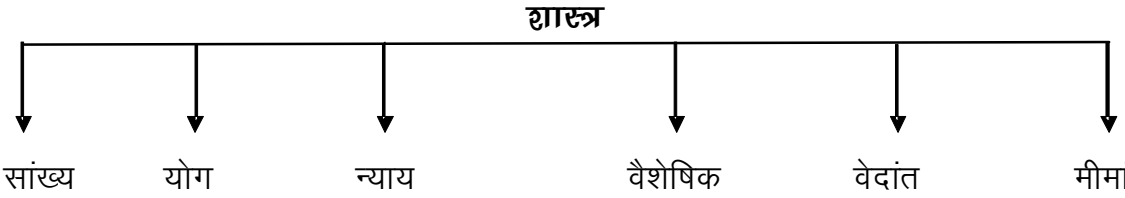

योग शास्त्र के रचयिता पतंजलि ने अपनी रचना योगदर्शन में 8 अष्टयांग की जानकारी दी है। इससे मनुष्य का जीवन सुंदर और नीरोग बनता है।

पुराण :-

नारद पुराण के अनुसार प्राचीन काल में एक ही पुराण था। समयानुसार संसार में पुराणों को ग्रहण न करता देख व्यास ने इसे 18 भागों में विभाजित किया।

नीतियाँ :-

नीति सिद्धान्तों की ऐसी प्रणाली है जो हमारा मार्गदर्शन करती है। ये अनेक प्रकार की हैं, जैसे :- सामाजिक नीति, मानव संसाधन नीति, शिक्षा नीति और विज्ञान नीति इत्यादि। इन नीतियों से हम बहुत कुछ सीखते हैं। इन नीतियों के द्वारा मानव जीवन व्यतीत करना बहुत सरल एवं सुलभ हो गया है।

उपनिषद :-

भारत की समग्र दार्शनिक चिंतन धारा का मूल स्त्रोत उपनिषद ही है। उपनिषद भारतीय संस्कृति सभ्यता की अमूल्य धरोहर है। इससे हमें प्रेरणादायक कथाओं की जानकारी मिलती है। ब्रह्म, जीव और जगत का ज्ञान उपनिषदों की ही देन है।

वर्तमान संदर्भ में शिक्षा पद्धति (आज) :-

हम जानते है कि शिक्षा का क्षेत्र आरम्भ से ही बहुत व्यापक रहा है। वर्तमान समय में शिक्षा संस्कारों को बहुत पीछे छोड़कर परीक्षाओं, डिग्रियों और नौकरी तक ही सीमित रह गई है। प्रारम्भ में तो इसमें कुछ फायदा दिखाई दे रहा था किंतु धीरे-धीरे इसका स्वरूप पूरी तरह से बदल गया। कुछ लालची प्रवृति के लोगों ने इसका फायदा उठाना प्रारंभ कर दिया और झूठी डिग्रियाँ, प्रमाण-पत्र लेकर अपने जीवन में आगे बढ़ने लगे जो पूरी तरह से गलत है। इसका परिणाम यह निकला कि आज जो अपनी मेहनत से एम.बी.एस., पीएच.डी. डिग्री धारक हैं, वो बेरोजगार घूम रहे हैं जबकि पैसे के बल पर प्राप्त डिग्री धारक आज ऊँचे-ऊँचे पदों पर कार्यरत हैं। आज शिक्षा का स्वरूप ऐसा हो गया है कि हर व्यक्ति के लिए पढ़ना (कागजी डिग्री) अनिवार्य है। लोगों की धारणा ऐसी बन गई है कि वही व्यक्ति शिक्षित और सफल समझा जाता है जो नौकरी प्राप्त कर लेता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति में नैतिकता, मूल्यों, चरित्र व मानवता का कोई पाठ नहीं पढ़ाया जाता, शायद यही कारण है कि आज अधिकतर युवा चरित्र-हीनता का शिकार हो रहे हैं।

शिक्षा का उद्देश्य समयानुसार धीरे-धीरे बदल रहा है। जहाँ प्राचीन काल में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य धर्म, संस्कार और मानवीय मूल्यों को चरितार्थ करना था, वहीं आज लोगों ने शिक्षा को रोजगार से जोड़ दिया है। हम देखते भी हैं मुख्यः अच्छे रोजगार उन्हीं व्यक्तियों को मिलते हैं जिसने उच्च शिक्षा ग्रहण की है। हाँ, कुछ ऐसे बड़े-बड़े उद्योगपति भी हैं जिन्होंने अपनी मेहनत और काबलियत के बलबूते पर ऊँचा मुकाम हासिल किया

है लेकिन उन बड़े–बड़े उद्योगों, कम्पनियों और कारखानों के अंदर काम करने के लिए कर्मचारी के रूप में उन्हीं लोगों को अवसर दिया जाता है जिनके पास अच्छी डिग्री है अर्थात् उन्हें वहाँ काम करने के लिए अपनी काबलियत का प्रमाण देना पड़ता है। आज शिक्षा कृत्रिम रूप लेती जा रही है जो हमें वास्तविकता से दूर ले जा रही है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में परिवर्तन (नई शिक्षा नीति 2020) :–

उपरोक्त शिक्षा स्तर की कमियों को देखते हुए माननीय कस्तूरीरंगन जी की अध्यक्षता में नई शिक्षा नीति 2020 को लाया गया जो कई स्थानों पर तो लागू हो चुकी है और बाकी स्थानों पर भी 2025 तक इसे पूर्णतः लागू कर दिया जाएगा। इसमें शिक्षा के क्षेत्र में प्रचलित कमियों को दूर करने का प्रयास किया गया। इसमें शिक्षा का एक नया पैमाना लाया गया, यदि इसे पूर्ण रूप से लागू कर दिया जाएगा तो सच में ही शिक्षा का स्वरूप बदल जाएगा। इसमें शिक्षा पुस्तकीय, चित्रिय न होकर वास्तविक ज्ञान पर आधारित होगी।

यदि अब बच्चों को खेलना है तो खेलने से पहले उन्हें मैदान की लम्बाई, चौड़ाई और क्षेत्रफल का वर्गीकरण मापना इत्यादि सिखाया जाएगा। बच्चों को उनके विषयों की पूर्णः जानकारी दी जाएगी। शिक्षा मातृभाषा में होगी, विदेशी भाषाओं का ज्ञान भी छात्रों को दिया जाएगा, टैक्नोलॉजी के क्षेत्र को बढ़ावा मिलेगा, इससे शिक्षा के गिरते स्तर को ऊपर उठाने में काफी सहायता मिलेगी। मानव कौशल–हुनर पर जोर दिया जाएगा ताकि हर व्यक्ति अपनी आमदनी के लिए दूसरों का मोहताज न हो।

भविष्यत के संदर्भ में शिक्षा पद्धति (आगामी कल) :–

हम सभी जानते हैं कि शिक्षा मानवीय जीवन का एक अभिन्न अंग है, शिक्षा के बिना जीवन निरर्थक है। शिक्षा, ज्ञान, उन्नति, सम्मान, प्रसिद्धि का द्वार है। शिक्षा एक ऐसा धन है जिसे कोई चुरा नहीं सकता और इसे जितना बाँटो उतनी ही बढ़ता जाता है। हमारी सरकार शिक्षा के क्षेत्र में बहुत प्रयास कर रही है जिससे शिक्षा का स्तर ऊपर उठ सके और एक बार फिर से भारत को विश्व में शिक्षा के क्षेत्र में पहला स्थान प्राप्त हो सके। बहुत सारे बदलाव तो नई शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से हो ही जाएंगे लेकिन और भी बहुत से प्रयास ऐसे हैं जिनके द्वारा इसमें पूर्णः सफलता प्राप्त की जा सकती है। आने वाले समय में शिक्षा में निम्न सुधार किए जा सकते हैं।

- शिक्षा को फिर से संस्कारों के साथ जोड़ना।
- पाठ्यक्रम से अधिक माता–पिता और गुरुओं को महत्त्व देना।
- रामायण, गीता व अन्य धार्मिक ग्रन्थ को पाठ्यक्रम से जोड़ना।
- शिक्षा का मूल उद्देश्य मानवीय सेवा होना।
- शिक्षा को प्रकृति से जोड़कर सीखाना।

संदर्भ सूची :–

1. https://www.hamami.gov.in
2. म्हारा हरियाणा सामान्य ज्ञान लेखक :– N.S. Panghal
3. hi.m.wikipedia.org :– नीरज कुमार।

पता : सी. आई. ए. स्टाफ गली, नरवाना (126116), जिला – जीन्द, हरियाणा। ईमेल– sunitasaini91286@gmail.com, मो. 9541820057

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 185-189

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्विक परिपेक्ष्य में हिंदी

डॉ. सुनीता

एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग), राजकीय कन्या महाविद्यालय, रेवाड़ी (हरियाणा)

वैश्विक का अर्थ है विश्व संबंधी या विश्वव्यापी। जब कोई भी वस्तु, घटना आदि की विश्व स्तर पर पहचान हो जाती है तो उसे वैश्विकरण की स्थिति में मान लिया जाता है। विकिपिड़िया के अनुसार वैश्विकरण की परिभाषा कुछ इस प्रकार है – 'वैश्विकरण का शाब्दिक अर्थ है स्थानीय या क्षेत्रिय वस्तुओं या घटनाओं विश्वस्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया' इसे एक ऐसी प्रकिया का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का संयोजन है। बेलिज तथा स्मिथ के अनुसार 'वैश्विक एक ऐसी ऐतिहासिक प्रक्रिया है जो मानवीय सामाजिक संगठन के स्थानीय सोपानों के रूपांतरण में मौलिक बदलाव है, जो दूर–दराज के समुदायों को जोड़ता है तथा शक्ति संबंधों की पहुँच को क्षेत्रों तथा उप महाद्वीपों के आर–पार फैला देता है।' अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोश (IMF) के अनुसार वैश्विकरण का अर्थ विश्वस्तर पर वस्तुओं एवं सेवाओं के लेन–देन की मात्रा एवं भिन्नता में बढ़ौतरी अर्थात् जब कोई वस्तु या घटना एक छोटी परिधि में न बंधकर पूरे विश्व के लिए जान–मानी बन जाती है तो वह वैश्विकरण की अवस्था में आ जाती है। शुरूआती दौर में यह एक आर्थिक अवधारणा थी जो आज एक सांस्कृतिक और बहुत कुछ अर्थो में भाषाई संस्कार से भी जुड़ चुकी है। वैश्विकरण आधुनिक विश्व का वह स्तम्भ है जिस पर खड़े होकर दुनियां के हर समाज को देखा, समझा और महसूस किया जा सकता है। वैश्विकरण आधुनिकता का वह मापदण्ड है जो किसी भी व्यक्ति, समाज, राष्ट्र को उसकी भौगौलिक सीमाओं से परे हटाकर एक ऐसा धरातल उपलब्ध करता है जहां पर वह अपनी पहचान के साथ अपने स्थान को पुष्ट करता है।

भारत एक वृहद लोकतांत्रिक देश है। यहां की संस्कृति वैश्विक क्षितिज पर अनेक बार अपना परचम फहरा चुकी है। भारतीय संस्कृति आध्यात्म, वैदिक मूल्यों व परम्पराओं से अनुप्राणित होने के कारण वैशिष्ट्यपूर्ण है। विश्वगुरू भारत सदैव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के उदात एवं उदार मूल्यों की प्रतिष्ठापना करते हुए समय–समय पर आयी राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय आपदाओं का सामना करते हुए अपनी संस्कृति की रक्षा करता रहा है। कोविड–19 जैसी महामारी के बीच भी भारतीय मेघा ने अपने सांस्कृतिक वैशिष्ट्य के साथ वैश्विक स्तर पर अपनी अस्मिता को गौरवान्वित किया है। आज भारत की विश्व स्तर पर अपनी एक अलग ही पहचान है।

डॉ. मंजू रानी के अनुसार – 'वैश्वीकरण एक ऐसी विचारधारा है जिससे सामाजिक संबंधों का विकास होता है। वैश्विकरण की नयी अर्थव्यवस्था विकसित देशों की देन है। वैश्विकरण को आज सांस्कृतिक

साम्राज्यवाद के रूप में देखा जा रहा है। इंटरनेट, साइबर स्पेस, साइबर कैफे, सभ्यता का इतिहास, सूचना प्रौद्योगिकी और सूचना क्रान्ति का इस पर गहरा असर पड़ा है। ज्ञान की अर्थव्यवस्था विदेशी प्रत्यक्ष निवेश व पूंजी प्रवाह की यह देन है।'[1]

वैश्विकरण के प्रवाह से आज कोई भी भाषा और साहित्य अछूता नहीं रह गया है। वह भी अपनी सरहदों को पार कर विश्वभर के पाठकों तक अपनी पहचान बना चुका है। असल में जब किसी वस्तु या घटना का वैश्विकरण होता है तो ऐसी अवस्था में प्राथमिकता से भाषाई वैश्विकरण भी होता है, क्योंकि ऐसी अवस्था में भाषाओं के बीच आदान–प्रदान बढ़ता है। भाषाई वैश्विकरण की इस प्रक्रिया में किसी भी भाषा की स्थिति में अनेक बदलावों का होना सहज है। जैसे भाषा में बहुभाषिक शब्दों का आगमन व प्रयोग, भाषाई आदान–प्रदान के साथ ही संस्कृतियों का आदान–प्रदान, अल्पसंख्यकों की भाषाओं का विलुप्तिकरण, व्याकरणिक कौशल की कमी आदि।

भारतीय संविधान के अनुसार देवनागरी लिपी में लिखी गई हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। सरकारी प्रयोजनों के लिए भारतीय अंको के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप को मान्यता प्रदान की गई है। साथ ही 1965 ई. तक अंग्रेजी भाषा का प्रावधान रखा गया लेकिन बाद में संशोधन कर इसे आगे के लिए बढ़ा दिया गया आज हिंदी भारत के अलावा कई अन्य देशों में भी प्रयोग में लाई जा रही है। दुनियां के कई छोटे बड़े देशों में प्रवासी भारतीयों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। दुनियां के अनेक देशों के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य में भारतीय मूल के नागरिकों और हिन्दी भाषा की उपस्थिति अब प्रभावी मानी जा रही है। आंकड़े बताते है कि देश में हिंदी को मातृभाषा के रूप में प्रयोग करने वाले भारतीयों का प्रतिशत 43 है। यदि हम संपर्क व द्वितीय भाषा के रूप में प्रयोग करने वालो भारतीयों की संख्या भी इसमें जोड़ दे तो इसका प्रतिशत बहुत अधिक बढ़ जाता है। हिन्दी के अतिरिक्त कोई और भाषा इस देश की संपर्क भाषा हो भी नहीं सकती है। इस संदर्भ में हम यह रेखांकित कर सकते हैं कि अंग्रेजी तो बिल्कुल भी देश की संपर्क भाषा नहीं बन सकती क्योंकि यह देश की जनसंख्या के एक प्रतिशत से भी कम लोगों की मातृभाषा है। स्वतत्रंता आंदोलन के दौरान गांधी जी ने इस स्थिति को पहचानते हुए ही कहा था कि – ''कांग्रेस अधिवेशन की कार्यवाही केवल हिन्दी में होगी, क्योंकि संपूर्ण राष्ट्र तक यदि हमें कांग्रेस का संदेश पहुंचाना है तो यह केवल हिन्दी के माध्यम से ही संभव हो सकता है।''[2]

यदि हम वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी का प्रयोग करने वालों की स्थिति का अवलोकन करें तो पाते हैं कि वर्ष 1952 ई. में हिन्दी विश्व में पांचवें स्थान पर थी जबकि 1980 ई. के आस–पास वह चीनी और अंग्रेजी के बाद तीसरे स्थान पर आ गयी। वर्ष 1991 की जनगणना में हिन्दी को मातृभाषा घोषित करने वालों की संख्या के आधार पर पाया गया कि इसकी संख्या पूरे विश्व में अंग्रेजी भाषियों की संख्या से कहीं अधिक है। इसी सम्बंध में भाषाविद जंयती प्रसाद नौटियाल, जिन्होंने लगातार 20 वर्ष तक भारत और विश्व में भाषाओं सम्बन्धी विभिन्न अध्ययन प्रस्तुत किये हैं, का कहना है – ''विश्व में हिन्दी प्रयोग करने वालों की संख्या चीनी से भी अधिक है और हिन्दी अब प्रथम स्थान पर है। उसने अंग्रेजी समते विश्व की अन्य सभी भाषाओं को पीछे छोड़ दिया है।''[3]

हिंदी की वैश्विक स्वीकार्यता के पीछे भारत में हिंदी भाषा के क्रियान्वयन एवं विकास के लिए स्थापित

संस्थाओं, समितियों जैसे केन्द्रिय हिंदी निदेशालय, आगरा, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा आदि की महती भूमिका है। इसी कड़ी में भारत सरकार द्वारा स्थापित सांस्कृतिक संबंध परिषद, दिल्ली के पिछले 70 वर्षो के योगदान की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् अपने विश्वभर में स्थापित 38 सांस्कृतिक केन्द्रों तथा भारत के विभिन्न राज्यों में स्थापित 19 केन्द्रों के माध्यम से भारतीय भाषाओं और संस्कृति के वैश्विक प्रचार प्रसार में संलग्न है।

हिन्दी के विकास और विस्तार की कहानी बड़ी रोचक और उतार–चढ़ाव से भरपूर है। मध्यकाल की शैरसेनी अपभ्रंश से विकसित पश्चिमी हिन्दी से निःसृत खड़ी बोली का विकास आधुनिक काल में हुआ। स्वतत्रंता आंदोलन के दौरान हिन्दी ने देश को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य किया। भारत के स्वाधीनता आंदोलन ने पूरे देश को जोड़ने में हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ''स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी और लोकभाषाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वाधीनता की बलिवेदी पर न्यौछावर होने की लौ जो देशवासियों के भीतर जगाई गई, वह हिन्दी भाषा के माध्यम से ही जगाई गई थी। क्योंकि इस संग्राम में हर तबके, हर मजहब, हर भाषा और विभिन्न सस्कृतियों के जानने वाले लोग थे, जिनके मध्य संचार और व्यवहार का कार्य हिन्दी ही करती थी। स्वाधीनता संग्राम में सामान्य जन की भागीदारी महत्वपूर्ण रही है। विशिष्ट लोगों का कार्य दिशा–निर्देशन करना एवं उन्हें सही व गलत राह की पहचान कराना था। भारत में स्वाधीनता की जो लौ जलाई गयी, वह मात्र राजनैतिक स्वतत्रंता के लिए ही नहीं थी वरन् सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा के लिए भी प्रमुख थी। भारत में साहित्य, संस्कृति और हिन्दी एक दूसरे के पर्याय रहे हैं, ऐसा कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।''[4]

हिन्दी के विकास का श्रेय जितना हिन्दी भाषी क्षत्रों के विद्वानों का रहा है उससे कम अहिंदी भाषी विद्वानों का नहीं रहा है। इन विद्वानों में से कईयों ने तो हिन्दी को देश की प्रमुख भाषा के रूप में स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बहुत सारे अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के विद्वानों ने न कवेल हिन्दी को अपनाया वरन् उन्होंने हिन्दी को राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित भी कराना चाहा और सभी जगह घूम–घूमकर हिन्दी का बिगुल बजाया। साथ ही विदेशों में भी जाकर हिन्दी की पुरजोर वकालत की और अतंर्राष्ट्रीय परिदृश्य में हिन्दी का परचम लहराया। इस सम्बंध में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का योगदान महत्वपूर्ण है। गुजराती भाषी महात्मा गाँधी ने कहा था – ''हिन्दी ही देश को एक सूत्र में बाँध सकती है। मुझे अंग्रेजी बोलने में शर्म आती है और मेरी दिली इच्छा है कि देश का हर नागरिक हिन्दी सीख ले व देश की हर भाषा देवनागरी में लिखी जाए'' गाँधी जी का मानना था कि हर भारतवासी को हिन्दी सीखना चाहिए और उसका व्यवहार करना चाहिए। ठीक इसी तरह मराठी भाषी लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने एक अवसर पर कहा था – ''हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी।'' स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, सुभाषचंद्र बोस, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, केशवचन्द्र सेन आदि अनेक अहिंदी भाषी विद्वानों ने हिन्दी भाषा का प्रबल समर्थन किया और हिन्दी को भारतवर्ष का भविष्य माना। स्वामी विवेकानंद ने तो सन् 1893 ई. में शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में 'पार्लियामेंट आफ रिलीजंस' में अपने भाषण की शुरूआत भाइयों और बहनों से करके सब को मंत्र–मुग्ध कर दिया था।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसा क्रांतिकारी ग्रंथ हिन्दी में रचकर हिन्दी को एक प्रतिष्ठा प्रदान की। कवि राजनेता और भारत के पूर्व प्रधानमत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने जनता सरकार के तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिन्दी में पहला भाषण देकर इसके अतंर्राष्ट्रीय स्वरूप और महत्व

में अत्यंत वृद्धि की।

14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को भारतीय संघ की राजभाषा घोषित किया। तब से लेकर अब तक हिन्दी के स्वरूप में उत्तरोत्तर विकास और परिवर्तन हुआ है। आज हिन्दी भी वैश्वीकरण की बयार से अछूति नहीं है। हम कह सकते हैं कि हिन्दी भाषा एक बार फिर नई चाल में ढ़ल रही है। बीसवीं सदी के अंतिम दशको एवं इक्कीसवीं सदी के पहले दशक में हिन्दी भाषा में जो परिवर्तन हुए हैं वे साधारण नहीं है। हिन्दी का स्वरूप ग्लोबल हो चला है। भाषा और व्याकरण में नए प्रयोग किये जा रहे हैं। साथ ही आज हिन्दी का महत्व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बढ़ रहा है। आज दुनियां की कोई ऐसी जगह नहीं है जहाँ भारतीय न हों। अप्रवासी भारतीय पूरे विश्व में फैले हुए हैं, यदि हम आंकड़ों पर गौर करें तो पाते हैं कि विश्व में फैले इन अप्रवासी भारतीयों की संख्या लगभग 2 करोड़ है जिनके मध्य हिन्दी का पर्याप्त प्रचार प्रसार है। ''आज हिन्दी भाषा का अध्ययन विश्व के अनेक देशों में प्राथमिक स्तर पर, माध्यमिक स्तर पर, तो कहीं विश्वविद्यालय स्तर पर हो रहा है। कहीं यह अपनी मातृभूमि भारत से जुड़े रहने का भावात्मक माध्यम लगता है तो कहीं इसका उद्देश्य आधुनिक भारत के अंतर्मन को समझना है। विश्व में हिन्दी शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए निजी संस्थाएँ, धार्मिक सस्थाएँ और सामाजिक सस्थाएं तो आगे आ ही रही हैं। सरकारी स्तर पर विद्यालय एवं विश्वविद्यालयों द्वारा भी हिन्दी शिक्षण का बखूबी संचालन किया जा रहा है। उच्च अध्ययन सस्थानों में भी अध्ययन–अध्यापन एवं अनुसंधान की अच्छी व्यवस्था है।''[5] इस सम्बंध में अमेरिकी विद्वान डॉ. शोमर का कहना है ''अमेरिका में ही 113 विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में हिन्दी अध्ययन की सुविधाएं उपलब्ध हैं, जिनमें से 13 तो शोध स्तर के केन्द्र बने हुए हैं।''[6]

भारत के बाहर जिन देशों में हिन्दी का बोलने, लिखने–पढ़ने तथा अध्ययन और अध्यापन की दृष्टि से प्रयोग होता है, उनको अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से निम्न वर्गों में बांटा जा सकता है :–

1. जहाँ भारतीय मूल के लोग अधिक संख्या में रहते हैं, जैसे–पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बंगलादेश, म्यामांर, श्रीलंका व मालदीव आदि।
2. भारतीय सस्कृति से प्रभावित दक्षिण पूर्वी एशियाई देश, जैसे इंडोनेशिया, मलेशिया, थाइलैंड, चीन, मंगोलिया, कोरिया तथा कनाडा।
3. जहाँ हिन्दी को विश्व की आधुनिक भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है, जैसे– अमेरिका, आस्ट्रेलिया, कनाडा और यूरोप के देश।
4. अरब तथा अन्य इस्लामी देश जैसे संयुक्त अरब अमीरात (दुबई), अफगानिस्तान, कतर, मिश्र, उजबेकिस्तान, कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान आदि।[7]

निश्चित रूप से आज हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी पहचान की मोहताज नहीं है वरन् उसने विश्व परिदृश्य में एक नया मुकाम हासिल किया है। अमेरिका जो कि आज उन्नत टेक्नोलाजी, बेहतर शिक्षा, दूर संचार के क्षेत्र में दुनियां में अग्रणी है वहाँ भी हिन्दी भाषा का प्रयोग बढ़ा है और इसके प्रचार–प्रसार की पुरजोर वकालत की जा रही है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जार्ज बुश ने तो राष्ट्रीय सुरक्षा भाषा कार्यक्रम के तहत अपने देशवासियों से हिंदी, फारसी, अरबी, चीनी व रूसी भाषाएँ सीखने को कहा था। अमेरिका जो कि अपनी भाषा और पहचान को लेकर दुनिया में श्रेष्ठता का दावा करता है, हिन्दी सीखने में उसकी रूचि का प्रदर्शन निश्चित

ही भारत के लिए गौरव की बात है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने स्पष्टतया घोषणा की कि ''हिन्दी ऐसी विदेशी भाषा है, जिसे 21वीं सदी में राष्ट्रीय सुरक्षा और समृद्धि के लिए अमेरिका के नागरिकों को सीखना चाहिए।''[8]

उपसंहार :–

निःसंदेह आज हिन्दी का फलक विस्तृत हुआ है। भारत के साथ–साथ आज हिन्दी विश्व भाषा बनने को तैयार है। आज हिन्दी में वह सामर्थ्य है जो पूरे देश को एक सूत्र में पिरोकर रख सकती है। आज हिंदी बाजार और व्यापार की प्रमुख भाषा बनकर उभरी है। हिन्दी आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने पैर जमाने में कामयाब हुई है। अब वह संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनने के लिए प्रयत्नशील है। हिन्दी के प्रचार–प्रसार और विकास में सभी भाषा–भाषियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वैश्विक फलक पर हिन्दी को स्थापित करने के लिए जहाँ एक ओर साहित्यकारों, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं ने इसकी पृष्ठभूमि तैयार की तो वहीं दूसरी तरफ हिन्दी फिल्मों, गीतों, विज्ञापनों, बाजार, कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि ने इसे विस्तीर्ण किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. डॉ. मंजू रानी, हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य, पृष्ठ–5.
2. विमलेश कांति वर्मा, फीजी में हिंदी स्वरूप और विकास पृ. 1–2, 2000
3. साहित्य अमृत, सितंबर 2010, पृ. 39
4. पूर्वोक्त, पृ. 38
5. पूर्वोक्त, पृ. 40
6. विमलेश कांति वर्मा, फीजी में हिंदी स्वरूप और विकास पृ. 1–2, 2000
7. राकेश शर्मा निशीथ, विदेशों में हिंदी का बढ़ता प्रभाव, अक्टूबर 2006, सृजनगाथा।
8. कृष्ण कुमार यादव, भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी, साहित्य कुंज 17, जनवरी 2009

Email:- sunitayadavrewari97@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 190-195

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

The Role of Hindi in India's Education System: A Cultural and Educational Perspective

Tanu Manglani

Research Scholar, Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth (Deemed-to-be University)

Chapter 1 : Introduction : The Historical Significance of Hindi and Its Cultural Role

1.1 The Origins and Development of Hindi :

The roots of Hindi date back to the 7th century CE, originating from the Indo-Aryan branch of the Indo-European language family. This development includes but is not limited to the succession of Vedic Sanskrit, Prakrit languages, Apabhramsha modern Hindi dialects. Medieval history suggests dialects of Hindi in Braj Bhasha, Awadhi and Magahi. From these dialects, standard Hindi began to emerge by the 19th century (Guha, 2024).

However, British colonial rule established English as the 2nd language of education, and the status of many Indian languages was lowered. Nevertheless, Hindi continued to flourish as a spoken language, in literature and in regional media. Hindi was given prominence as a national integration language early in the 20th century, especially post-Independence in 1947. As an official language of the Republic of India (along with English), it cemented its place as a language of government, education and culture.

1.2 Key Milestones in the Evolution of Hindi Language and Indian Education System

Year	Milestone	Impact
7th Century	Emergence of early forms of Hindi from Prakrit	Development of Hindi as a regional spoken language
16th Century	Rise of Hindi literature (Tulsidas, Surdas, etc.)	Establishment of Hindi as a literary and cultural language
19th Century	Standardization of Hindi (Bhartendu Harishchandra)	Promotion of Hindi as a national language
1947	Independence and declaration of Hindi as an official language	Institutionalization of Hindi in education and governance
2000s	Hindi's global growth via Bollywood and digital media	Expansion of Hindi as a global language

1.3 Hindi's Role in India's Medium of Communication and Cultural Identity

Hindi is not just any language to communicate, but a vehicle of Indian heritage. The traditions of India, of course, run very deep, which is why Hindi literature of all kinds, as well as songs and scenes from Hindi films, and other Hindi art gradually evolved. However, in a country as linguistically diverse as India, where over 120 major languages are spoken, Hindi remains the link language between the north and south, the urban and rural, and across different linguistic communities (Punathambekar and Mohan, 2021).

Hindi establishes an emotional relationship with its speakers probably more than any language does. Hindi is not only a language of a proud identity for millions of Indians, it is also a language they otherwise get by with in filling in around social and cultural spaces, from rural towns to urban towns.

Chapter 2 : The Role of Hindi in India's Education System

2.1 Hindi as a Medium of Instruction :

In India, Hindi plays an important role in the education system, especially in Northern and Central parts of the country. According to the District Information System for Education, 2018-19, around 35 per cent of the schools in India use Hindi as the medium of instruction at the primary level.

The Hindi curriculum has an extensive scope, covering everything from literature or poetry to history or social studies. Hindi writers of high repute such as Premchand, Harivansh Rai Bachchan, Mahadevi Verma have guided the education syllabi and this is why the Hindi language is at the center stage of cultural and intellectual educations (Gill, 2022).

2.2 Hindi's Role in Promoting Cultural Identity :

The identity of Hindi in the educational structure is not just limited to the use of language in teaching, but yet it is also a means for preserving culture and a symbol of the nation. Government of India initiated Central Hindi Institute (funded in 1960) for the promotion of Hindi language in India as well as abroad (Agnihotri, 2022).

Against all odds, the importance of Hindi is contributing to the survival of rich Indian culture in a globalised world. To illustrate this, the World Hindi Secretariat (founded 2008) promotes Hindi by organizing events and initiatives to raise global awareness (beyond the Indian diaspora) about Hindi.

2.2 The National Education Policy (NEP) 2020 and Its Impact on Hindi :

The National Education Policy (NEP) 2020 constitutes a landmark reform to this effect. There is a strong emphasis on multilingualism in the NEP and the new policy provides for the Three-

Language Policy, where the students are to learn three languages; the mother tongue or regional language, Hindi and English. This policy acknowledges the benefits of multilingualism — cognitive, cultural, and social- and advocates that mother tongue as language of instruction has to be promoted (Sangeet, 2024).

The NEP emphasizes on importance of language in making a child understand the cognitive development at a young age. Studies reveal that children grasp better when they are taught in any language that they are comfortable with. NEP proposes that schools should teach subjects like mathematics and science in the mother tongue until at least grade 5. Not only does the government intend academic integration by making Hindi a compulsory language under this policy, but also national integration by mandating students belonging to different linguistic backgrounds to interact with one another in a common language (Sangeet, 2024).

It has also mentioned the significance of Hindi regarding national integration and social harmony in the NEP. The Hindi language serves as an important bridge between several linguistic communities owing to its widespread nature.

2.3 The Need for a Strong Hindi Curriculum :

To bring the NEP recommendation into practice, there is an immediate need of stronger and wider Hindi syllabus in India. This should transcend conventional teaching of grammar and vocabulary to introduce linguistic and literary richness. The curriculum should be designed to help students connect with Hindi in literature, history and the arts, where Hindi should be appreciated as a language of thought and feeling (Sangeet, 2024).

Moreover, Hindi as a Foreign Language programs need to be made available at all levels based on student skill level. Focus ensuring that students from regions where Hindi is not prevalent do not lag behind in the national integration process. An inclusive model of teaching Hindi can help local communities in bridging the distance between the linguistic region of the country.

Chapter 3 : The Global Importance of Hindi and Its Future Prospects

3.1 Hindi's Global Reach and Its Increasing Relevance :

Though English remained the king of the world communication but gradually Hindi is being recognized as an official language in the countries across the globe. Hindi is the 4th most speaking language in the world, with over 600 million speakers worldwide. The global reach of Hindi is expected to grow further. Thanks to the growing economic and political clout of India on the world stage.

The digital world has also seen the increasing dominance of Hindi. Over 3 billion views of Hindi content on YouTube was registered in 2021, indicating there is more global Hindi media consumption. Digital platforms such as Netflix, Amazon Prime and YouTube have boosted the reach

of Hindi, bringing Hindi movies, television and music to global audiences (Punathambekar and Mohan, 2021).

And in the local markets of business and the economy, Hindi solves the problem of communication in the largest developing market in the world known as India. Foreign firms doing business in India are once again becoming aware of the utility of Hindi as a means of connecting with a wider clientele. Companies like Amazon, Google and Facebook are also investing in content in Hindi-land to cater to the various sections of consumers here in India.

3.2 Hindi as a Tool for Soft Power and Cultural Diplomacy :

With India emerging as a global economic and political superpower its identity is also getting space in international diplomacy with Hindi. In line with it, as India goes global for strengthening its place in the world, definitely Hindi will gain presence in global discussion, economic negotiation and cultural exchange. The rise of India's global diaspora has contributed to spreading the language across borders, and Hindi is considered a significant instrument of India's cultural diplomacy (Mahapatra, 2016).

However, this is neither the first time nor the only language - the Indian government has been pushing Hindi out of the country for quite some time (via the Indian Council for Cultural Relations (ICCR) and has even been establishing centers for Hindi language in nations with sizeable Indian diaspora including the US, the UK and the Middle East). In response to global demand for Hindi, many universities and educational institutions around the world are offering Hindi language courses or programs, solidifying the language's role in global communications (Ghosh, 2024).

3.3 The Future of Hindi in Education : A Global Outlook :

Going ahead Hindi would have a larger bearing on schooling, inside or outside India. Hindi will also be a critical language for a stronger cultural exchange and economic alliance between India and the world, as India grows to becoming a global superpower. The Indian education system awaits a revolution due to technology and globalization. The online education ecosystem is growing at an exponential pace with the Indian online education market expected to reach US$7.57bn in 2025.

Revenue is expected to show an annual growth rate (CAGR 2025-2029) of 25.77%, resulting in a projected market volume of US$18.94bn by 2029 (). While digital learning tools, implement virtual classrooms and artificial intelligence will change the delivery of education in India (Agnihotri, 2022).

Improvement in quality and access is also being catered by initiatives like NIRF and Swachh Vidyalaya Abhiyan etc. The fate of Hindi in the education system hinges on the balance between modernisation of the educational space and preservation of the linguistic heritage of India.

Chapter 4 : Addressing Challenges : The Global Influence of Hindi and Future Prospects

4.1 Hindi in Global Communication :

Hindi's future in global communication appears promising, especially with the increasing use of digital platforms. The 2019 Digital Report by We Are Social showed that 4.6 billion people worldwide are now active internet users, with increasing numbers of users from non-English-speaking regions. This presents opportunities for Hindi, which is gaining traction in online spaces, from social media to online education platforms.

For example, platforms like Duolingo and Rosetta Stone have incorporated Hindi language courses, indicating its growing demand for language learning.

4.2 Overcoming the Challenges in Hindi Language Learning :

Even with the increased global attention on Hindi, it remains difficult to learn. Indian schools at least hindi medium have two major issues, one being availability of quality hindi teaching material and the second being scarcity of trained teachers. Hindi is always in the periphery and is therefore, deprived of due place in the curriculum. Furthermore, many teachers are poorly trained in effective modern teaching method for language acquisition, which leads to ineffective learning for students (Subramanian and Rajkumar, 2016).

To address these challenges, LEAD Group developed the Sampoorna Hindi Program, providing a scientific framework for Hindi language learning and integrating modern pedagogical techniques. Over the years the program has worked on the pre-identified core language skills: reading, writing, grammar, phonics and speaking. Hindi Language Centre ensures that children get their foundation of Hindi right.

4.3 The Future of the Indian Education System :

The Indian education system is poised for rapid transformation, driven by technology and globalization. Online education is growing rapidly, with the market for online education in India projected to reach $30 billion by 2025 (Research and Markets, 2021). The introduction of digital learning tools, virtual classrooms, and the integration of artificial intelligence will revolutionize how education is delivered in India (SWARGIARY, 2024).

Additionally, initiatives such as the National Institutional Ranking Framework (NIRF) and Swachh Vidyalaya Abhiyan focus on improving quality and accessibility. The future of Hindi in the education system depends on the integration of modern educational technologies with the preservation of India's linguistic heritage.

Conclusion :

Hindi is a part and parcel of the entire Indian education and culture. The National Education

Policy 2020 has a wealth of ideas about the promotion of Hindi, alongside English and regional languages, as a medium of education, although considerable distance lies ahead in its adoption as a language of instruction. The renewed urgency to promote Hindi globally is not driven solely by geopolitics; the dynamics of India's economy and changing consumption patterns that prioritize Hindi content worldwide, present an unparalleled opportunity.

With These kinds of initiatives such as Sampoorna Hindi by LEAD Group, the efforts to modern students, to learn the fundamentals of Hindi, will lay the foundation for well-versed Hindi speakers in the future. India needs to not just solve all of the headaches faced in language learning, but also do a lot to promote Hindi as a rich language that has thousands of years of cultural heritage, so that its natural diversity remains lighter on its feet and walking on center stage in the world.

References :-

1. Agnihotri, R. K. (2022). *Hindi: An essential grammar*. Routledge.
2. Ghosh, S. (2024). India's Cultural Diplomacy: Decoding India's Soft Power Potential in the 21st Century. In *75 Years of India's Foreign Policy: Bilateral, Conventional and Emerging Trends* (pp. 413-435). Singapore: Springer Nature Singapore.
3. Gill, V. (2022). *Here and Hereafter: Nirmal Verma's Life in Literature*. Penguin Random House India Private Limited.
4. Guha, S. (2024). Empires, Languages, and Scripts in the Perso-Indian World. *Comparative Studies in Society and History*, *66*(2), 443-469.
5. Kemp S (2025) *Digital in 2019: Global Internet Use Accelerates*, https://wearesocial.com/uk/blog/2019/01/digital-in-2019-global-internet-use-accelerates/
6. Mahapatra, D. A. (2016). From a latent to a 'strong'soft power? The evolution of India's cultural diplomacy. *Palgrave Communications*, *2*(1), 1-11.
7. Punathambekar, A., & Mohan, S. (2021). Language, Culture, and Streaming Video in India. *Digital media distribution: Portals, platforms, pipelines*, 164-177.
8. Sangeet, B. (2024). *National Education Policy (Nep) 2020*. Academic Guru Publishing House.
9. Statista (2024) Online Education – India, https://www.statista.com/outlook/emo/online-education/india#:~:text=Revenue%20in%20the%20Online%20Education,US%2418.94bn%20by%202029.
10. Subramanian, V., & Rajkumar, R. (2016). Investigation on adaptive context-aware m-learning system for teaching and learning basic Hindi language. *Indian Journal of Science and Technology*, *9*(3).
11. SWARGIARY, K. (2024). *The Future of Education in India: A Vision for NEP 2030*. ERA, US.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 196-200

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय शिक्षा पद्धति : कल, आज और कल

डॉ० ऊषा रानी

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, (CDOE), हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला 171005।

सारांश :-

भारत एक सांस्कृतिक–सामाजिक विविधता से परिपूर्ण बहुभाषिक देश है। भारतीय शिक्षा पद्धति प्राचीन काल में अत्यंत समुन्नत व उत्कृष्ट थी। अतएव प्राचीन काल में भारत को विश्व गुरु कहा जाता था। वस्तुतः यह शिक्षा मनुष्य को न केवल जीवन के यथार्थ का दर्शन कराती थी, वरन् यह शिष्य को इस योग्य बनाती थी कि वह भवसागर की बाधाओं को पार करके अंत में मोक्ष को प्राप्त कर सके। प्राचीन शिक्षा वस्तुतः गुरुकुल शिक्षा पद्धति थी। विद्यार्थी अपने घर से दूर अपने गुरु या गुरुओं के आश्रम अर्थात् गुरुकुल में रहकर विद्याध्ययन करते थे। शिक्षक को आचार्य एवं गुरु कहा जाता था तथा छात्र को अंतेवासी, ब्रह्मचारी कहा जाता था। गुरु–शिष्य परंपरा हिंदू धर्म में ही नहीं, वरन जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म आदि में भी है।

गुरु शिष्य से अध्यापन का कोई शुल्क प्राप्त नहीं करते थे। यह शिक्षा निःशुल्क थी। छात्र गुरु से सीखते थे और अपने दैनिक जीवन के कार्यों में गुरु की सहायता करते थे। ये शिक्षक स्वालंबन तथा व्यावहारिक जीवन की शिक्षा देते थे। शिष्य वेद अध्ययन करते थे। वेदमन्त्र कंठस्थ किए जाते थे। साथ ही साहित्य, दर्शन, ज्योतिष, व्याकरण, तर्कशास्त्र, नक्षत्र विज्ञान, गणित, शस्त्र विद्या, चिकित्साशास्त्र, सामान्य ज्ञान, कला–कौशल आदि का भी अध्ययन किया जाता था।

शिष्य ब्रह्मचर्य का पालन करते थे। ब्रह्मचारी अध्ययन–अध्यापन में संलग्न रहते थे तथा वाद–विवाद, विचार विमर्श तथा शास्त्रार्थ में सम्मिलित होकर अपनी योग्यता का परिचय देते थे। इस युग में मौखिक उच्चारण, आगमन–निगमन पद्धति, आत्मदर्शन, कहानी कहना, याद करना, समालोचनात्मक विश्लेषण, व्यावहारिक ज्ञान तथा सम्मेलन आदि शिक्षण प्रविधियों का प्रयोग किया जाता था। भिन्न–भिन्न अवस्था के विद्यार्थियों के अध्यापन हेतु समकेंद्रीय विधि का भी प्रयोग होता था, जिसमे सूत्र, वृत्ति, भाष्य, वार्तिक सम्मिलित थे। विषयों को स्मरण रखने के लिए सूत्र कारिका एवं सारणी विधि का प्रयोग किया जाता था। इस शिक्षा में शारीरिक श्रम का विशेष स्थान था। इस युग की शिक्षा में संस्कृत की सूत्र पद्धति का प्रयोग किया जाता था। इस युग की शिक्षा पद्धति में आधुनिक काल में प्रचलित आगमन व निगमन पद्धति का प्रयोग किया जाता था। इस काल में अग्र पद्धति का प्रयोग होता है जिसमे बड़ी कक्षाओं के विद्यार्थी छोटी कक्षाओं के विद्यार्थियों का अध्यापन करते थे।

इस शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण, आत्म अनुशासन तथा आध्यात्मिकता की ओर मोड़ना भी था तथा अंतिम उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति भी था। नैतिक मूल्य, चारित्रिक उत्थान, संस्कृति एवं परंपरा के तत्व इस शिक्षा पद्धति

के मुख्य गुण थे। सामान्यतया गुरु तथा शिष्य के रिश्ते को बहुत पवित्र माना जाता था। किसी की शिक्षा के अंत में, एक शिष्य गुरुकुल छोड़ने से पहले गुरु दक्षिणा प्रदान करता था। गुरु दक्षिणा एक पारंपरिक रीति थी जो गुरु की स्वीकृति, सम्मान और धन्यवाद ज्ञापित करने के लिए दीजाती थी। आधुनिक काल में स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी गुरुकुल परंपरा में शिक्षण किया था जबकि बेल्जियम में कुछ शिक्षा केन्द्र आज भी वेदिक गणित, कला, संगीत, नक्षत्र विज्ञान, संस्कृत तथा योग की शिक्षा प्रदान करने के लिए 8 वर्ष से 16 वर्ष की आयु के बालकों को गुरुकुल व्यवस्था में शिक्षा प्रदान करते हैं।

स्त्रियों को भी शिक्षा प्रदान की जाती थी। जो स्त्रियाँ केवल विवाह तक ही शिक्षा ग्रहण करती थीं, उन्हें 'सदयोदवास' कहा जाता था जबकि जो आजीवन शिक्षा ग्रहण करती थीं उन्हें 'ब्रम्हवदिनीज' कहा जाता था। उन्हें वेद तथा वेदांगो की शिक्षा दी जाती थी। इस युग की महान स्त्रियों में अपाला, घोषा, इंद्राणी, लोपामुद्रा, गार्गी तथा मैत्रेयी पुष्पा आदि थीं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु सरकार निरन्तर नयी नीतियाँ, पाठयक्रम तथा एक्ट पारित कर व लागू कर शिक्षा में सुधार के प्रयास कर रही है। शिक्षक अब वेतनभोगी हैं उन्हें न केवल अध्यापन की विधियों के साथ पाठ्यक्रम पूरा करने शत–प्रतिशत परिणाम देने का दबाव निरंतर रहता है। शिक्षार्थी केवल शिक्षार्थी है उसे जो पाठ्यक्रम मिलता है तथा जिस प्रकार की व्यवस्था शिक्षा प्रलाणी प्राप्त होती है वह उसका अंग बन जाता है।

वस्तुतः इसका कारण हम सब हैं, क्योंकि आज शिक्षा की सफलता एक IAS, IPS, चिकित्सक व अभियंता के सांख्यिकी आकड़े से निर्धारित करते हैं। अक्सर हम पूछते हैं कि इस विद्यालय से कितने IAS, IPS, चिकित्सक व अभियंता बने हैं। परन्तु ये नहीं पूछते कि कितने शिक्षार्थी अच्छे नागरिक बने, कितने अपने जीवन में सफल हुये? विज्ञान स्ट्रीम सब लेना चाहते हैं। मानविकी स्ट्रीम कोई नहीं। क्यों? वे चिकित्सक या अभियंता बनाना चाहते हैं। विवाह के लिए कन्या ऐसे अधिकतम तथा ऊपरी आय वाले वर को चुनती है। वह अच्छे सुचरित्र व सुसंस्कारित पति नहीं ढूंढती है। विद्यार्थी वह पद चुनता है जिसमे अधिक आय हो। न कि वह पद जो उसके व्यक्तित्व व क्षमता के अनुसार हो। अभिभावक वह शिक्षा प्रदान करना चाहता है जो कैरियर बनाए। वह इस विषय में परामर्शदाता या केरियर परामर्शदाता का परामर्श या किसी शिक्षक की राय भी नहीं लेना चाहता है। समाज में हम उसे सफल मानते है जो अधिक वैभवशाली जीवन जी रहा हो, अधिक भौतिक संपदा अर्जित कर चुका हो।

फिर भी हम नए प्रयास कर रहे हैं। CBSE ने CCT & Critical Creative Thinking जैसे नई तकनीक, नए शिक्षण प्रविधि का प्रयोग की अनुशंसा की जिसे केंद्रीय विद्यालय जैसे उत्कृष्ट संस्थानों ने अपनाया है। इसके अंतर्गत अध्यापन में इस प्रकार की परिस्थिति उत्पन्न की जाती है कि विद्यार्थी पेश की गई घटना, चित्र, कहानी को अपनी दृष्टि से देखता है तथा स्वयं के विचारों का सृजन करता है। पेश की गई समस्या का हल स्वयं खोजता है।

Brain storming तथा Symposium की नयी तकनीक का प्रयोग कर विद्यार्थी में विश्लेषण करने की क्षमता, सोचने की क्षमता, समस्या का हल निकालने की क्षमता, परिस्थिति का उचित आकलन करने के क्षमता का विकास करने के लिए किया जा रहा है। 'सामाजिक विज्ञान प्रदर्शनी एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत ललित कलाएं यथा संगीत व कला, प्रश्नोत्तरी, वाद विवाद प्रतियोगिता जैसे खुली प्रतियोगिताएं तथा हिन्दी,

संस्कृत व अंग्रेजी भाषा के काव्य पाठ, वाद विवाद आदि की राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता आयोजित की जाती हैं ताकि शिक्षार्थी में ज्ञान अर्जित करने के साथ उसका विश्लेषण करने की क्षमता आए। उनमें अपने देश की संस्कृति का ज्ञान संगीत, नाटक तथा प्रतिदर्श के माध्यम से हो सके।

न्यायसम्मत समाज और देश के विकास एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को अंगीकार किया गया। भारत सरकार ने 2015 ई. में स्वीकृत वैश्विक शिक्षा विकास एजेंडा 2030 के अनुसार भारत में 2030 तक सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन पर्यन्त शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिए जाने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यह मानती है कि छोटे बच्चे अपने घर की भाषा/मातृभाषा में सार्थक अवधारणाओं को अधिक तेजी से सीखते हैं और समझ लेते है। इसलिए जहां तक संभव हो, कम से कम ग्रेड 5 तक लेकिन यह बेहतर होगा कि यह ग्रेड 8 और उससे आगे तक भी शिक्षा का माध्यम, घर की भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होगी।' यह सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रयास जल्दी किए जाएंगे कि बच्चे द्वारा बोली जाने वाली भाषा और शिक्षण के माध्यम के बीच यदि कोई अंतराल मौजूद हो तो उसे समाप्त किया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रावधान किया गया है कि बच्चों द्वारा सीखी जाने वाली तीन भाषाओं के विकल्प राज्यों, क्षेत्रों और निश्चित रूप से छात्रों के स्वयं के होगे, जिनमें से कम से कम तीन में से दो भाषाएँ भारतीय भाषाएँ हो। राज्य न केवल त्रिभाषा फार्मूले को अपनाएं अपितु देश भर में भारतीय भाषाओं के अध्ययन को प्रोत्साहित करने के लिए बड़ी संख्या में शिक्षकों को नियुक्त करने के लिए द्वि–पक्षीय समझौते करें।

भारतीय भाषाओं की उल्लेखनीय एकता के साथ उनकी सामान्य व्याकरणिक संरचनाओं इन भाषाओं की शब्दावली के स्त्रोत एवं उदभव को ढूंढने और अंतरों को जानने के लिए 6 से 8 ग्रेड के विद्यार्थियों को द लैंग्वेज ऑफ इंडिया जैसे प्रोजेक्ट गतिविधि में भाग लेना होगा जिससे वे यह जान सकेंगे कि भारत के किस भौगोलिक भाग में कौन सी भाषा बोली जाती है। इससे वे न केवल आदिवासी भाषाओं की प्रकृति और संरचना को जानने–समझने के साथ अपितु भारत की हर प्रमुख भाषा के समृद्ध और उभरते साहित्य के बारे में भी अपनी जानकारी में विस्तार कर पायेंगे। यह गतिविधि उन्हें भारतीय एकता और विविधता का अहसास कराने के साथ सुन्दर सांस्कृतिक विरासत से रूबरू करवायेगी। स्कूली बच्चों में बहुभाषिकता को प्रोत्साहित करने के लिए त्रिभाषा फॉर्मूला का जल्द कियान्वयन करने के साथ जब भी संभव हो मातृभाषा/स्थानीय भाषा में शिक्षण तथा अधिक अनुभव आधारित भाषा शिक्षण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

किसी भी देश की पहचान का माध्यम उसकी कला और सांस्कृतिक विरासत होती है। भाषा का संबंध कला और संस्कृति से अटूट है। अतः संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार के लिए, हमें उस संस्कृति की भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन करना होगा। भाषाएँ दुनिया को देखने का तरीका प्रस्तुत करती हैं। मूल रूप से किसी भाषा को बोलने वाला व्यक्ति अपने अनुभवों को कैसे समझता है या उसे किस प्रकार ग्रहण करता है, यह उस भाषा की संरचना से तय होता है। लहजा अनुभव की समझ, और एक ही भाषा बोलने वाले व्यक्तियों की बातचीत का अपनापन आदि उस भाषिक संस्कृति का प्रतिबिंबन और दस्तावेज है। कहा जा सकता है कि संस्कृति का दायरा हमारी भाषाओं तक फैला हुआ है। साहित्य, नाटक, फिल्म आदि कलारूपों की सराहना या आलोचना बिन

भाषा के संभव नहीं है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कई प्रयास किए गए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 रेखांकित करती है कि भारतीय भाषाओं के शिक्षण और अधिगम को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता है। भाषाएँ प्रासंगिक और जीवंत बनी रहेंइसके लिए इन भाषाओं में उच्चतर गुणवत्तापूर्ण अधिगम और प्रिंट सामग्री का प्रवाह बने रहना चाहिए जिसमें पाठ्य पुस्तकें, अभ्यास पुस्तकें, वीडियो, नाटक, कविताएँ, उपन्यास, पत्रिकाएं आदि शामिल हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में द्विभाषी शिक्षण अधिगम सामग्री सहित द्विभाषी एप्रोच का उपयोग करने, बच्चों को फाउंडेशनल स्टेज में मातृभाषा के साथ बहुभाषिक एक्सपोजर देने, केन्द्र और प्रान्तीय सरकारों द्वारा क्षेत्रीय और संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्णित भाषा शिक्षकों हेतु भारी निवेश करने पर बल दिया गया है। स्कूली शिक्षा के अंतर्गत शत–प्रतिशत नामांकन दर को हासिल करने, वंचित क्षेत्रों में साक्षरता दर बढ़ाने के लिए शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच भाषाई बाधाओं को दूर करने, सभी भारतीय और स्थानीय भाषाओं में बाल साहित्य उपलब्ध करवाने, स्कूल और स्थानीय पुस्तकालयों में पर्याप्त मात्रा में मौलिक और अनूदित पुस्तक उपलब्ध करवाने के साथ राष्ट्रीय पुस्तक संबर्धन नीति तैयार करना जरूरी समझा गया है। सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचित समूहों में ड्रापआउट बच्चों की संख्या में कमी हेतु न केवल ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग कार्यक्रमों के विस्तार पर जोर दिया गया है अपितु उन्हें क्षेत्रीय भाषाओं में उपरोक्त कार्यकम चलाने के लिए निर्देशित करने की व्यवस्था भी दी है। माध्यमिक स्तर पर भारतीय भाषाओं के साथ विदेशी भाषाओं के वैकल्पिक अध्ययन पर भी जोर दिया गया है। ज्यादातर उच्चतर शिक्षण संस्थानों और उच्चतर शिक्षा के कार्यकमों में मातृभाषा/स्थानीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग किया जाएगा ताकि पहुंच और सकल नामांकन अनुपात दोनों में बढ़ोतरी हो सके। सभी भारतीय भाषाओं की मजबूती, उपयोग एवं जीवन्तता को प्रोत्साहन मिल सके, मातृभाषाध्स्थानीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में इस्तेमाल करने या कार्यक्रमों को द्विभाषित रूप में चलाने के लिए निजी प्रशिक्षण संस्थानों को प्रोत्साहित किया जाएगा। चार वर्षीय डिग्री कार्यक्रमों को भी दो भाषाओं में चलाया जाएगा। देशभर के विज्ञान शिक्षकों को दो भाषाओं में पढ़ाने का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

भाषा संगम कार्यक्रम के अंतर्गत सम्पूर्ण भारत की भाषाओं का उच्चारण करवाकर विद्यार्थियों में पूर भारत का नागरिक बनाया जा रहा है। उनको भाषा ज्ञान का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। हिन्दी राजभाषा के प्रति विद्यार्थियों में आस्था में वृद्धि तथा उनके हिन्दी ज्ञान का संवर्धन करने हेतु 'हिन्दी राजभाषा पखवाड़ा' (14 दिन) तथा संस्कृत भाषा के संवर्धन हेतु जीवन में स्वच्छता की महत्ता को समझाने हेतु मानया जाने वाला 'स्वच्छता पखवाड़ा' विद्यार्थियों को श्रम की महत्ता भी समझाते है। राष्ट्रीय सामाजिक सेवा (NSS), स्काउट एवं गाइड हमारे विद्यार्थियों को समाज सेवा, राष्ट्र–भक्ति, वसुधैव कुटुंबकम् की भावना विकसित कराते हैं। यही विद्यार्थी आपदा के वक्त आपदा पीड़ितों की रक्षा करते हैं। NCC हमारे विद्यार्थियों में सेना में चुने जाने के लिए एक द्वार खोलता है। राष्ट्रीय एकता पखवाड़ा व युवा संसद, विद्यार्थियों में संविधान के प्रति न केवल आस्था में वृद्धि करता है, वरन उनमें राष्ट्रीय चरित्र का विकास करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शायद पहला राष्ट्रीय प्रयास है जिसमें भारतीय भाषाओं के बारे में समग्रता के साथ चिंतन किया है। यह नीति एक ओर भारतीय भाषाओं के अध्ययन अध्यापन और अनुसंधान का स्वभाविक मार्ग बताने की ठोस कार्य योजना प्रस्तुत करती है। वहीं दूसरी ओर मातृभाषा को शिक्षण अधिगम का माध्यम बनाने का साहसिक निर्णय लेती है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है सरकार, विद्यालय, CBSE, UGC जैसे नियामक संस्थान निरंतर शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए प्रयासरत हैं। कोई भी शिक्षा व्यवस्था आदर्श शिक्षा व्यवस्था नहीं होती है। हमें निरंतर प्रयास करना होगा उन दोषों को न्यून करने का तथा विद्यार्थियों का अधिकतम विकास करने का। हमारे यही प्रयास वैश्विक शक्ति बनने में सफलीभूत हुये हैं। आगे भी हम विश्व की सभी चुनौतियों का सामना करते हुए भारतीय शिक्षा पद्धति को विश्व की महानतम शिक्षा व्यवस्था के अनुरूप स्थापित कर देंगे।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. रमेश प्रसाद पाठक, तमन्ना कौशल, प्राचीन भारतीय समाज में शिक्षा।
2. ध्रूव कुमार पाण्डेय, वर्षा तिवारी, कल्पना उप्रेती, प्राचीन शिक्षा प्रणाली तथा संस्कार।
3. डॉ० कोमल यादव, भारतीय शिक्षा पद्धति तथा विकास।
4. मंजु मिश्रा, भारतीय शिक्षा पद्धति और उसकी समस्याएं।
5. डॉ० सुविता कुमारी, भारतीय शिक्षा प्रणाली।

ईमेल– drraniusha@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 201-204

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

साहित्यकालीन शिक्षा पद्धति

विष्णु भगवान

शोध छात्र, ओम स्टर्लिंग ग्लोबल युनिवर्सिटी, हिसार, हरियाणा।

आप स्तम्ब, बौद्धायन तथा कात्यायन की कृतियों में त्रिकोण, चतुर्भुज, वर्ग आदि के विवरण है, किन्तु ज्यामिति के क्षेत्र में भारतीयों की अपेक्षा यूनानी वैज्ञानिक आगे बढ़ गए। गणित तथा बीजगणित में भारतीय उतरोतर प्रगतिशील होते गए। आर्यभट्ट (5वीं इसवीं शती), ब्रह्मगुप्त (628 ई०), भास्कर (1114 ई०) गणित तथा ज्योतिष शास्त्र के ज्वलंत रत्न हैं। भारत से ही गणित सम्बन्धित ज्ञान अरब तथा अरब से होकर समस्त यूरोप में प्रसारित हुआ। भारतीय संख्याएं अरबी भाषा में 'हिन्दसा' के नाम से प्रसिद्ध हुई, जो कि 'हिन्द' की पर्यायवाची हैं। भारतीय विद्यालयों में शिक्षित पाणिनी तथा कौटिल्य की विद्वता तथा प्रतिभा का कायल आज समस्त विश्व है। पाणिनी का व्याकरण 'मानव मस्तिष्क की श्रेष्ठतम कृतियों में से एक है।' तक्षशिला के एक ब्राह्मण विद्यार्थी ने न केवल एक अपूर्व अर्थशास्त्र की रचना की, बल्कि वह एक सफल राजनीतिज्ञ हुआ, जिसने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। औषधि–शास्त्र में भारतीय चिकित्सकों ने अपूर्व क्षमता उपलब्ध की थी।

परिवर्तन प्रकृति का प्रथम व अनिवार्य नियम है। परिवर्तन में ही प्रगति या विकास की जड़ समाहित है। आज मनुष्य की प्रगति, समस्त सामाजिक एवं भौतिक विकास एक दिन में नहीं हुआ है। सृष्टि के आरम्भ से आज के दिन तक विकास के अनेक सोपानों को पार करती हुई हमारी सभ्यता एवं संस्कृति इस स्तर पर पहुंचती है। हमने अतीत में जो अनुभव प्राप्त किये, उससे समय समय पर लाभ उठाने की आवश्यकता है। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछुता नहीं है। आज भी शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीन भारतीय पद्धति कहीं ना कहीं अपनी छाप छोड़ रखी है, जिसे हम बिना किसी संशोधन के ही स्वीकार करते हैं, किन्तु वहीं पर आधुनिक शिक्षा में प्राचीन पद्धति से काफी परिवर्तन दिखाई पड़ता है।

प्राचीन काल की शिक्षा वर्ग व्यवस्था पर आधारित थी, वर्णों के अनुसार शिक्षा का प्रावधान किया गया था। नारी शिक्षा के सम्बन्ध में प्राचीन काल की शिक्षा की उपादेयता अपेक्षाकृत कम थी। प्रायः उच्च वर्ग या कुलीन वर्ग के सम्पन्न विद्यार्थी ही शिक्षा ग्रहण कर पाते थे। सामान्य एवं निम्न वर्ग के लोग प्रायः शिक्षा से वंचित ही रहते थे।

वैदिक शिक्षा से तात्पर्य सिर मुड़ाने, लंगोटी बांधने, स्त्रियों से बचने, श्लोकों का रटन्त स्मरण करने, भिक्षा मांगने आदि से नहीं है। उच्च विचारों, स्वानुशासन, स्नेह व श्रद्धा पर आधारित अध्यापक–छात्र सम्बन्ध, नगरों के कोलाहल से दूर शान्त व प्राकृतिक परिसर, छोटी कक्षायें, व्यस्त दिनचर्या, अच्छी आदतों का निर्माण, मानवता एवं विश्वबंधुत्व के भाव से परिपूर्ण पाठ्यवस्तु, प्रश्नोत्तर व वाद–विवाद विधियों का प्रयोग, सादा, संयमित एवं

दुर्व्यसनों से रहित जीवन आदि अनेक ऐसी बातें हैं जो आज भी शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है।

प्रत्येक समाज के कुछ सर्वमान्य सिद्धांत और आदर्श होते हैं जो शिक्षा को लक्ष्य मानकर अग्रसर होते है। वैदिक कालीन शिक्षा में जो आदर्शवादिता, नैतिकता, विश्वबंधुत्व और सहिष्णुता तथा ज्ञान की ऊचाइयों को पाने की जो झलक दिखलाई पड़ती है वह आधुनिक भारत के नवजीवन और समाज के लिए नितांत प्रासंगिक प्रतीत होती है। आज भी भारतीय समाज में अध्यात्म, नैतिकता, सहिष्णुता, सदाचारिता, सत्य, अहिंसा, और त्याग तथा चारित्रिक उत्थान को महत्त्व दिया जाता है। हम आज भी धर्म, ईश्वर और निष्काम कर्म को महत्त्व देते हैं। हम धन की अपेक्षा चरित्र को, भौतिकता की अपेक्षा आध्यात्मिकता को एवं विज्ञान की अपेक्षा दर्शन को श्रेष्ठतर समझते हैं। जब आज सम्पूर्ण विश्व धन शक्ति, हिंसा और कूटनीति में आस्था रखता है – हम प्रेम, सत्य, अहिंसा और तपस्या के समक्ष श्रद्धा से नतमस्तक हो जाते हैं। आज के घुटन भरे अशान्त और हिंसक समाज को वैदिक शिक्षा के आदर्शों का अनुसरण करने पर ही शान्ति एवं सुरक्षा प्राप्त हो सकती है।

प्राचीन शिक्षा प्रणाली में गुरु शिष्य सम्बन्धों की मधुरता और घनिष्ठता की मिसाल विश्वविख्यात है। गुरु के उच्च आदर्शों और ज्ञान की छाप शिष्यों पर पड़ती थी। विद्या दान गुरु का धार्मिक एवं सामाजिक कर्तव्य था। इसके मूल में कोई स्वार्थ भावना नहीं थी। फलस्वरूप शिष्य भी उतनी ही तत्परता से ज्ञानार्जन करते थे और गुरु के आदर्शों का अनुसरण करते थे। गुरु और शिष्य के सम्बन्ध परस्पर प्रेम और श्रद्धा से आबद्ध थे, परिणामस्वरूप शैक्षिक वातावरण पूरी तरह से शान्त था। आज इन बातों पर विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है क्योंकि शैक्षिक वातावरण अत्यन्त विषम हो चुका है और अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है। छात्रों में अनुशासन की भावना का विकास और वैदिक कालीन गुरु–शिष्य सम्बन्धों की पुर्नस्थापना करके ही इन दोषों से मुक्ति पाने की आशा की जा सकती है। यद्यपि यह सत्य है कि छात्र और शिक्षक प्राचीन वैदिक युग के आदर्श पर नहीं पहुंच सकते फिर भी दृढ निश्चय से उसकी ओर अग्रसर हो कर अवश्य ही कुछ सफलता पाई जा सकती है। यह सब तभी संभव हो सकता है जब छात्र गुरु–शिष्य सम्बन्धी वैदिक आदर्श के प्रति निष्ठावान बने और शिक्षक उस आदर्श के अनुसार सरस्वती साधना में लीन होकर सरल जीवन व्यतीत करे। इससे गुरु और शिष्य के सम्बन्धों में वही श्रद्धा और स्नेह का वातावरण उत्पन्न होगा।

वैदिक काल में शिक्षण संस्थायें प्रायः बस्ती और नगरों से दूर शान्त वातावरण में स्थित होती थी। बस्ती के कोलाहल का शिक्षा संस्थाओं पर कोई असर नहीं पड़ता था। विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण और सर्वांगीण विकास में गुरुकुलों का महत्वपूर्ण योगदान था। प्रकृति के सुरम्य वातावरण में विद्यार्थी अपना शारीरिक एवं मानसिक विकास करने में सक्षम होते थे। विद्यार्थियों का सादा और नियमित संयमित तपस्यापूर्ण जीवन उन्हें ज्ञान की उंचाइयों तक ले जाता है। समाज के गुटनपूर्ण वातावरण से वैदिक काल के विद्यार्थी सदैव दूर रहते थे। भौतिक सुख साधनों और आमोद–प्रमोद का उन पर कोई प्रभाव नहीं था। परिणामस्वरूप वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहे। आधुनिक युग में नगरीकरण के प्रभाव के कारण सभी व्यक्तियों में नगर में निवास करने की प्रवृति सबल हो गई है। ऐसी दशा में आज की शिक्षा संस्थाओं की नगरों से पृथकता संभव नहीं है, परन्तु फिर भी उनका निर्माण नगरों के कोलाहल और गंदगी से दूर किसी शान्त स्वच्छ, स्वास्थ्यकर एवं प्राकृतिक वातावरण में किया जा सकता है।

इस प्रकार की शिक्षा संस्थायें न केवल छात्रों के शारीरिक और मानसिक विकास में योगदान देगी वरन् उनकी नगरों के प्रतिदिन के झगड़ों, राजनैतिक कुचक्रों और अवान्छनीय प्रवृत्तियों से रक्षा भी करेगी। शिक्षा संस्थाओं की स्थापना बस्ती से दूर की जा सकती है। वैदिक कालीन भारत के छात्र सदा, सरल और संयमी जीवन व्यतीत करते थे। आधुनिक भारत में उनका जीवन भले में अक्षरशः अनुकरणीय न हो पर ग्रहणीय अवश्य है। आज के छात्रों के जीवन में आमल परिवर्तन हो गया है। उनके जीवन का मुख्य लक्ष्य शिक्षा ग्रहण करना नहीं वरन् मनोरंजन के विभिन्न साधनों का प्रयोग करना जिससे उनका जीवन ऐश्वर्यपूर्ण हो गया है। ऐसी परिस्थिति में प्राचीन काल के छात्रों के उदाहरण को आज के छात्रों के समक्ष रखकर उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन किया जाना आवश्यक है।

आधुनिक भारतीय शिक्षा का स्वरूप धर्म निरपेक्ष और लोकतान्त्रिक है। आधुनिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में विविध पाठ्य विषय सम्मिलित किये गये, जो व्यवसायपरक और व्यवहारिक है। आधुनिक दृष्टि से आज का पाठ्यक्रम भले ही उपयोगी कहा जाये परन्तु कई विषयों की उपेक्षा यहाँ साफ–साफ दिखाई देती है। जैसे वैदिक साहित्य शाश्वत साहित्य है जिसमें मानवता, विश्वबन्धुत्व और मानव शान्ति के तत्त्व सम्मिलित हैं। आधुनिक पाठ्यचर्या में इन्हें सम्मिलित किया जाना चाहिए। वैदिक पाठ्यक्रम में ऐसे बहुत सारे प्रकरण है जिन्हें आज की शिक्षा में समाविष्ट किया जा सकता है। ये आधुनिक भारत में सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास तथा विश्व शान्ति की स्थापना में सहायक हो सकते हैं। इसी प्रकार संस्कृत भाषा, सम्पूर्ण भारतीय भाषाओं की जननी है। उसकी उपेक्षा करना न्याय संगत नहीं है। संस्कृत भाषा और साहित्य में शान्ति, मानवता और विश्वबन्धुत्व भ्रातृत्व की ऐसी अमूल्य निधियाँ है जिनको न केवल भारत के पाठ्यक्रम में वरन् सब देशों के पाठ्यक्रमों का अभिन्न अंग होना चाहिए। वैदिक पाठ्यक्रम से ऐसे अनेक तत्त्व ग्रहण किये जा सकते है जो आधुनिक भारत के नैतिक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक उत्कर्ष में अद्वितीय योगदान दे सकते है। आधुनिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में उपर्युक्त तत्वों को सम्मिलित करने से पाठ्यक्रम में मौलिकता की झलक दिखाई देगी अन्यथा हमारा पाठ्यक्रम पश्चिम से आयातित विचारों का पुलिंदा बनकर रह जायेगा। वैदिक शिक्षण विधियों में श्रवण, मनन, चिन्तन, स्मरण, प्रवचन, प्रश्नोतर, व्याख्यान, वादविवाद जैसी शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता था। वैदिक काल में श्रवण, मनन और शुद्ध उच्चारण पर विशेष बल दिया जाता था, शिष्य अपने गुरु का अनुकरण करते थे। ये शिक्षण विधियाँ आज भी विभिन्न विषयों के पठन–पाठन में प्रयोग की जाये तो उपयोगी सिद्ध हो सकती है। प्राचीन शिक्षण पद्धति के कतिपय सिद्धांत आज भी उपयोगी है। जैसे– छोटी कक्षायें, व्यक्तिगत ध्यान और अच्छी आदतों का निर्माण आदि।

सारांशतः कहा जा सकता है कि वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली उस समय की संसार की श्रेष्ठतम शिक्षा प्रणाली थी, परन्तु आज के सामाजिक समाज के स्वरूप और उसकी भावी आवश्यकताओं की दृष्टि से कुछ तत्त्व ग्रहणीय है और कुछ त्याज्य है। ग्रहणीय तत्वों को हम गुण कहते हैं और त्याज्य तत्वों को दोष। वैदिक शिक्षा पद्धति के प्रमुख ग्रहणीय तत्त्व हैं – निशुल्क शिक्षा, व्यापक उद्देश्य, व्यापक पाठ्यचर्या, गुरु–शिष्यों का अनुशासित जीवन, गुरु–शिष्यों के मधुर सम्बन्ध और शिक्षण संस्थाओं की संस्कार प्रधान पद्धति और न ग्रहण करने योग्य तत्त्व है – शिक्षा की व्यवस्था में राज्य का उत्तरदायित्व न होना, आय के अनिश्चित स्रोत, भिक्षाटन, रटने पर अधिक बल और कठोर अनुशासन। हम वैदिक शिक्षा पद्धति के ग्रहणीय तत्वों को ग्रहण कर वर्तमान शिक्षा प्रणाली

को प्रभावी बना सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. आपस्तम्ब गृहसूत्र : सुदर्शनाचार्य की टीका सहित मैसूर गवर्मेंट संस्कृत लाइब्रेरी सीरिज।
2. अथर्ववेद संहिता : सं. डब्लू.डी. ह्वीटने, हारवर्ड विश्वविद्यालय, 1905
3. ऋग्वेद : सायण भाष्य संहित, सं. एफ. मैक्समूलर, 1890–92, 5 भाग, वैदिक संशोधन मण्डल, पूना, 1933–5
4. कल्याण : हिन्दू संस्कृति अंक, 1996
5. अल्तेकर, अ.सं. : प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, वाराणसी, 1980
6. अल्बेरुनी : तहकीक–मा लिल हिन्द, सचाउ का अनुवाद : अलवरुनीज इण्डिया हिन्दी अनुवाद : अलबेरूनी का भारज।
7. ईश्वरी प्रसाद : प्राचीन भारतीय संस्कृति, मिनू पब्लिकेशन इलाहाबाद, 1984
8. जयशंकर प्रसाद मिश्र : प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, वाराणसी, 1968
9. आर.के. मुखर्जी : एजुकेशन इन एन्शियंट इण्डिया, वाराणसी, 1969
10. Mudaliar A. Lakshmanshwami : Education of India – Bombay, Asia Publishing House, 1960.
11. Mukherji Radhakumud : Ancient Indian Education & Motilal Banarasidas. Delhi, 1951.
12. Naik, J.P. : The Role of Government of India in Education New Delhi, Ministry of Education, 1963.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Feb. 2025 Page No. : 205-209

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में सावित्री वशिष्ठ के साहित्य का योगदान

ज्योति, शोधार्थी, पीएच.डी. भाषा विभाग (हिंदी),
डॉ० राजेन्द्र सिंह, शोध निर्देशक, प्रोफेसर,
भाषा विभाग (हिंदी), बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा) – 124021

सारांश :-

डॉ० सावित्री वशिष्ठ का साहित्य हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में एक अनमोल धरोहर है। उनके लेखन में न केवल साहित्यिक उत्कृष्टता है, बल्कि सामाजिक, नैतिक, और सांस्कृतिक मूल्यों को भी गहराई से अभिव्यक्ति मिली है। उनका साहित्य नारी सशक्तिकरण, शिक्षा के महत्व, और समाज सुधार जैसे विषयों पर केंद्रित है, जो आज भी प्रासंगिक हैं। डॉ० वशिष्ठ ने हिंदी भाषा को एक सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम बनाते हुए इसे जनमानस तक पहुँचाने का प्रयास किया। उनकी भाषा शैली सरल, प्रवाहमयी और प्रभावशाली है, जिसमें हरियाणवी बोली का सुंदर समन्वय मिलता है। उनकी प्रमुख कृतियाँ, जैसे ''हजार बरस की नींव" और "हरियाणा की गीत बांकली", ''हरियाणवी कहानियां'' हिंदी साहित्य के साथ–साथ समाज के नैतिक और सांस्कृतिक उत्थान में भी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। डॉ० सावित्री वशिष्ठ का साहित्य हिंदी साहित्य में एक मील का पत्थर है। यह न केवल साहित्यिक दृष्टि से बल्कि समाज सुधार और नारी सशक्तिकरण के संदर्भ में भी प्रेरणादायक है। उनका योगदान आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

मुख्य शब्द :- हिंदी साहित्य, नारीवाद, समाज सुधार, शिक्षा, सांस्कृतिक उत्थान, डॉ० सावित्री वशिष्ठ।

प्रस्तावना :-

हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में अनेक साहित्यकारों का योगदान सराहनीय रहा है। इन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से न केवल हिंदी भाषा को समृद्ध किया, बल्कि समाज की चेतना को भी जागृत किया। ऐसे ही विशिष्ट साहित्यकारों में डॉ० सावित्री वशिष्ठ का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उनके साहित्य ने हिंदी भाषा को नई दिशा और आयाम प्रदान किए। डॉ० वशिष्ठ का साहित्य केवल साहित्यिक उत्कृष्टता तक सीमित नहीं है; यह समाज के हर वर्ग तक अपनी गहरी पहुँच बनाता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में समाज की समस्याओं, नारी सशक्तिकरण, और शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। यह उनकी साहित्यिक दृष्टि की व्यापकता और उनकी सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति उनके गहन दृष्टिकोण को दर्शाता है। डॉ० सावित्री वशिष्ठ के साहित्य में सामाजिक चेतना और नैतिकता के तत्व गहरे रूप में समाहित हैं। उनके

लेखन की शैली सरल और प्रवाहमयी है, जो पाठकों के मन–मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव छोड़ती है। उनका साहित्य केवल यथार्थवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि इसमें भावनात्मक और दार्शनिक गहराई भी देखने को मिलती है। उनकी रचनाएँ यह संदेश देती हैं कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज सुधार और मानवीय मूल्यों की स्थापना का माध्यम भी हो सकता है। उनकी कृति हजार बरस की नींव" इस बात का प्रमाण है, में उन्होंने बताया की "सच्ची शिक्षा वही है, जो मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाए और उसे समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध कराए।"

उनके साहित्य की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उन्होंने भाषा को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाने का कार्य किया। उनके लेखन में न केवल प्रांजल हिंदी भाषा की सरलता है, बल्कि वह भाषा को एक सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम बनाती हैं। उनकी लेखनी में नारीवाद, सामाजिक असमानता, और नैतिकता जैसे मुद्दों पर एक स्पष्ट और सशक्त दृष्टिकोण देखने को मिलता है। डॉ० वशिष्ठ का यह दृष्टिकोण न केवल साहित्य को समृद्ध करता है, बल्कि समाज के उत्थान में भी सहायक है। उनकी रचनाएँ इस बात को रेखांकित करती हैं कि हिंदी साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज की बेहतरी और सुधार के लिए मार्गदर्शन करना भी है।

डॉ० सावित्री वशिष्ठ का जीवन और साहित्यिक योगदान :–

डॉ० सावित्री वशिष्ठ का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ, लेकिन उनकी शिक्षा और साहित्यिक यात्रा असाधारण रही। उनका प्रारंभिक जीवन साधारण परिवेश में बीता, जहां हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति उनका झुकाव बचपन से ही स्पष्ट था। उन्होंने अपनी शिक्षा को माध्यम बनाकर न केवल व्यक्तिगत विकास किया, बल्कि हिंदी साहित्य के विकास में भी अभूतपूर्व योगदान दिया। उनकी शिक्षा की गहराई और उनके विचारों की परिपक्वता उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से झलकती है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात, उन्होंने साहित्यिक और अकादमिक क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई। उनकी रचनाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध हैं, बल्कि वे समाज और मानवता के गहन मुद्दों को भी संबोधित करती हैं। डॉ० वशिष्ठ का साहित्य समाज के हर वर्ग को संबोधित करता है, जिसमें नारीवादी दृष्टिकोण, सामाजिक असमानता, और मानवीय मूल्यों का अद्‌भुत समन्वय देखने को मिलता है। डॉ० सावित्री वशिष्ठ ने हिंदी भाषा में अनेक पुस्तकें, लेख और आलेख लिखें हैं, जो न केवल ज्ञानवर्धक हैं, बल्कि प्रेरणादायक भी हैं। उनकी लेखनी सरल, सजीव और प्रभावशाली है जो पाठकों को गहराई से प्रभावित करती है। उनकी प्रमुख कृति "हजार बरस की नींव़" और 'ऐतिहासिक नगर तरावड़ी' जैसी पुस्तकों के माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया है। इन कृतियों ने समाज कोनैतिकता, प्रेरणा और सकारात्मक सोच का संदेश दिया है।

शैक्षिक क्षेत्र में योगदान :–

हिंदी भाषा को नई पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए डॉ० वशिष्ठ ने शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। साहित्य के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि जनजीवन में भी एक सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। उनकी भाषा शैली सरल, प्रवाहमयी और प्रभावशाली है, जो पाठकों को सहज ही आकर्षित करती है। हिंदी भाषा की समृद्धि और उसकी व्यापकता को समझाने के लिए उन्होंने न केवल सैद्धांतिक दृष्टिकोण अपनाया, बल्कि अपनी रचनाओं के माध्यम से इसे व्यावहारिक रूप भी दिया। उनकी रचनाओं में हिंदी भाषा के विभिन्न स्वरूपों, जैसे

हरियाणवी, खड़ी बोली, और अन्य क्षेत्रीय बोलियों का सुंदर मिश्रण देखने को मिलता है। यह उनकी भाषा में विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाता है। उन्होंने न केवल हिंदी भाषा के व्याकरणिक पक्ष को सुदृढ़ किया, बल्कि इसे जनमानस की भाषा बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी लेखनी ने हिंदी भाषा को एक नए रूप में प्रस्तुत किया, जो न केवल साहित्यिक, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी प्रासंगिक है।

दिल्ली (नरेला) में सर्वोदय कन्या विद्यालय में उन्होंने प्रिंसिपल के पद पर कार्य करते हुए छात्राओं को हिंदी भाषा पढ़ने और समझने के लिए प्रेरित किया। 1992 में दिल्ली सरकार द्वारा इनके विद्यालय को सांस्कृतिक कार्यक्रम में उच्च कोटि के प्रदर्शन के लिए प्रथम स्थान से सम्मानित किया गया।

डॉ० वशिष्ठ की पुस्तक ''हरियाणा की लोक संस्कृति" में भाषा के महत्व को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया गया है। वे बताती हैं, "हिंदी भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक भी है। इसे जन–जन तक पहुँचाना हमारा कर्तव्य है।" यह कथन हिंदी भाषा के प्रति उनके गहरे समर्पण और इसके व्यापक प्रचार–प्रसार की दिशा में उनके प्रयासों को दर्शाता है।

हिंदी को वैश्विक पहचान दिलाने का प्रयास :–

डॉ० वशिष्ठ ने हिंदी को केवल भारत तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे अंतर्राष्ट्रीय मंच पर ले जाने का कार्य किया। उन्होंने विदेशों में रहने वाले हिंदी भाषी समुदायों के साथ जुड़कर हिंदी के प्रचार–प्रसार में योगदान दिया। विदेशों में चलाई जाने वाली हिंदी संस्थाओं की मिशन के तौर पर सहायता की। सिंगापुर में हिंदी पढ़ाने में सहायक सामग्री को समय–समय पर उन तक पहुँचाती रही है। 2009 में मस्कट में सावित्री वशिष्ठ ने पाठाकों को हिंदी दिवस पर हिंदी भाषा के प्रति प्रेरित किया और भारत के राजूदत द्वारा सम्मान प्राप्त किया।

सामाजिक यथार्थ और संघर्ष :–

डॉ० वशिष्ठ के उपन्यास "हजार बरस की नींव" में सामाजिक यथार्थ का सजीव चित्रण मिलता है। यह उपन्यास एक सामान्य व्यक्ति की संघर्षमय यात्रा की कहानी है, जिसमें वह समाज की कठिनाईयों और असमानताओं से जूझते हुए अपनी पहचान बनाता है। इस उपन्यास में उन्होंने यह दिखाने का प्रयास किया है कि समाज के हाशिए पर खड़े लोगों को संघर्ष और मेहनत से सफलता प्राप्त करने का अधिकार है। उपन्यास का मुख्य पात्र अपने संघर्ष के माध्यम से यह सिद्ध करता है कि समर्पण और आत्मविश्वास के बल पर हर बाधा को पार किया जा सकता है।

शिक्षा और नैतिक उत्थान :–

डॉ० वशिष्ठ ने शिक्षा को समाज और व्यक्ति के नैतिक उत्थान का एक सशक्त माध्यम माना है। उनकी पुस्तक "हरियाणा की संस्कृति" में उन्होंने स्पष्ट किया है कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज और व्यक्ति के नैतिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक विकास का आधार है। इस पुस्तक में वे बताती हैं, "शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्ति नहीं, बल्कि यह समाज और व्यक्ति के नैतिक उत्थान का माध्यम भी है।" यह कथन उनके शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है। उन्होंने शिक्षा को एक ऐसा माध्यम माना जो समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकता है और व्यक्तियों को उनके जीवन के उद्देश्यों की पहचान कराने में सहायता करता है। डॉ० सावित्री वशिष्ठ की रचनाओं में मानवीय भावनाओं का गहन चित्रण मिलता है। उनके पात्र न केवल समाज के यथार्थ का प्रतिनिधित्व करते हैं, बल्कि वे पाठकों के दिलों को भी छूते हैं। उनकी लेखनी

मानवीय संवेदनाओं को उभारने में सक्षम है और पाठकों को उनके विचारों और भावनाओं से जोड़ती है।

समीक्षात्मक दृष्टि का महत्व :-

डॉ० वशिष्ठ के साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह पाठकों को सोचने और समाज में बदलाव के लिए प्रेरित करता है। उनके साहित्य को पढ़ते समय यह महसूस होता है कि वे केवल मनोरंजन के लिए नहीं लिखतीं, बल्कि उनके लेखन का उद्देश्य समाज को जागरूक करना और उसमें सुधार लाना भी है। उनके लेखन में यथार्थ और आदर्श का संतुलन देखने को मिलता है, जो उन्हें हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अद्वितीय बनाता है। डॉ० सावित्री वशिष्ठ का साहित्य केवल साहित्यिक दृष्टि से नहीं, बल्कि समाजशास्त्रीय और नैतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी रचनाएँ न केवल समाज की समस्याओं को उजागर करती हैं, बल्कि उनके समाधान का मार्ग भी दिखाती हैं।

सामाजिक सुधार और शिक्षा में योगदान :-

डॉ० सावित्री वशिष्ठ का साहित्य शिक्षा और सामाजिक सुधार के आदर्शों का जीवंत दस्तावेज है। उन्होंने शिक्षा को समाज सुधार का सबसे प्रभावी साधन माना और इसे केवल ज्ञान प्राप्ति तक सीमित न रखते हुए नैतिकता और सामाजिक समरसता का माध्यम बताया। उनकी रचनाओं में शिक्षा के माध्यम से समाज में व्याप्त असमानताओं को समाप्त करने और सामाजिक चेतना को जाग्रत करने का आह्वान स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उनकी पुस्तक ''हरियाणवी कहानियां" व ''आगे बढ़ता हरियाणा'' नाटक में उन्होंने बताया की शिक्षा वह दीपक है, जो न केवल अज्ञान के अंधकार को दूर करता है, बल्कि यह समाज को नई दिशा और उद्देश्य भी प्रदान करता है। यह उनके शिक्षा–दर्शन को रेखांकित करता है, जिसमें शिक्षा को समाज की प्रगति और व्यक्तित्व के विकास के लिए अनिवार्य माना गया है। उन्होंने नारी शिक्षा को विशेष प्राथमिकता दी और इसे समाज की उन्नति के लिए अपरिहार्य बताया। उनके विचार में, शिक्षा न केवल एक साधन है, बल्कि यह समाज में जागरूकता, समता और नैतिकता का आधार भी है।

नारीवाद और उनका दृष्टिकोण :-

डॉ० सावित्री वशिष्ठ का साहित्य नारीवाद के प्रति उनके गहरे विचारों को उजागर करता है। उन्होंने नारीवाद को अपने साहित्य का केंद्र बिंदु बनाया और नारी के संघर्ष, उसकी शक्तियों, और समाज में उसकी भूमिका को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। उनके उपन्यास "हजार वर्ष की नींव'' इस दृष्टिकोण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इस उपन्यास में उन्होंने नारी के संघर्षमय जीवन और उसकी अदम्य शक्ति को मार्मिक रूप से चित्रित किया है। इसमें वे बताती है कि "नारी को केवल एक परिवार की देखभाल करने वाली नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की धरोहर मानना चाहिए। जब तक नारी को सम्मान नहीं मिलेगा, तब तक समाज की प्रगति संभव नहीं है।" यह उद्धरण नारी के प्रति उनके आदर और समाज में उसकी गरिमा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने नारी को समाज और राष्ट्र की आधारशिला मानते हुए उसके अधिकारों और सम्मान के लिए आवाज उठाई। उनकी रचनाओं में नारीवाद केवल एक विचार नहीं, बल्कि एक आंदोलन के रूप में उभरता है। डॉ० वशिष्ठ ने यह संदेश दिया कि नारी को समाज में समान अधिकार, सम्मान, और स्वतंत्रता प्रदान करना न केवल एक सामाजिक आवश्यकता है, बल्कि यह समाज की प्रगति और विकास के लिए अनिवार्य है।

निष्कर्ष :-

डॉ० सावित्री वशिष्ठ का साहित्य हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में अद्वितीय योगदान प्रदान करता है। उनकी रचनाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से प्रभावशाली हैं, बल्कि उनमें समाज सुधार, नारी सशक्तिकरण और शिक्षा जैसे मुद्दों पर गहन विचार किया गया है। डॉ० वशिष्ठ ने साहित्य के माध्यम से समाज की समस्याओं को उजागर करने और उन्हें हल करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए। उनका साहित्य समाज में नैतिकता और मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास करता है। ''हजार बरस की नींव" और "हरियाणा की गीत बांकली", ''हरियाणवी कहानिंया'' जैसी कृतियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि डॉ० वशिष्ठ का लेखन केवल मनोरंजन का साधन नहीं था, बल्कि यह समाज को जागरूक करने और नई दिशा देने का एक माध्यम भी था। वे नारी सशक्तिकरण की प्रबल समर्थक थीं और उन्होंने अपने साहित्य में नारी की गरिमा और महत्व को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। उनके अनुसार,"नारी को केवल परिवार की देखभाल करने वाली नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की धरोहर मानना चाहिए,"यह दर्शाती है कि वे नारी को समाज और राष्ट्र निर्माण की अनिवार्य कड़ी मानती थीं।

उनकी भाषा शैली सरल, प्रवाहमयी और प्रभावशाली है, जिससे हर वर्ग का पाठक उनके साहित्य को समझ सकता है। उन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार और साहित्य को समृद्ध बनाने में अप्रतिम योगदान दिया। उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा। डॉ० सावित्री वशिष्ठ का साहित्य यह सिद्ध करता है कि साहित्य केवल कल्पना की उड़ान नहीं, बल्कि समाज को मार्गदर्शन देने और मानवता को प्रगति की ओर अग्रसर करने का साधन है। हिंदी भाशा को समृद्ध और सशक्त बनाने के लिए उनके योगदान को हिंदी साहित्य में हमेशा सम्मान के साथ स्मरण किया जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. आगे बढ़ता हरियाणा, नाटक, हरियाणवी भाषा, मनीषा प्रकाशन, 57–बी, पाकेट ए, फेंज–2, अशोक विहार, दिल्ली, 1994
2. चतुर्वेदी, परशुराम, हिंदी भाषा और संस्कृति, लोकभारती प्रकाशन, 1975, पृ. 110–125।
3. त्रिपाठी, विद्या निवास, आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, साहित्य भवन, 1990, पृ. 60–65।
4. भारत के राष्ट्रपति खण्ड–3, गद्य, हिन्दी भाषा, प्रशांत पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली–74, 2008
5. मेरे गीत, पद्य, हिन्दी भाषा, मनीषा प्रकाशन, 57–बी, पाकेट ए, फेंज–2, अशोक विहार, दिल्ली, 2006
6. शर्मा, रामविलास, हिंदी साहित्य का इतिहास, साहित्य भारती, 1980, पृ. 65–75।
7. हरियाणवी कहानियां, गद्य, हरियाणवी भाषा (हरियाणा साहित्य अकादमी के अनुदान से प्रकाशित), ज्ञान गंगा प्रकाशन, शहादरी, दिल्ली, 1990
8. हरियाणा की लोक संस्कृति, हिन्दी भाषा, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला, संस्करण 2010
9. हरियाणा के गीत बांकली, गद्य, हरियाणवी भाषा, मनीषा प्रकाशन, 57–बी, पाकेट ए, फेंज–2, अशोक विहार, दिल्ली, 2007
10. हरियाणा के तीज त्यौहार, गद्य, हिन्दी भाषा, ज्ञानोदय प्रकाशन, दिल्ली, 1985
11. हरियाणा धर्म–गीत, गद्य, हिन्दी और हरियाणवी भाषा, मनीषा प्रकाशन, 57–बी, पाकेट ए, फेंज–2, अशोक विहार, दिल्ली, 1954

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
द्वारा भिवानी (हरियाणा), काठमाण्डू (नेपाल) से प्रकाशित

ISSN : 2395-7115
Impact Factor 8.642

बोहल शोध मंजूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY, MULTIPLE LANGUAGES
PEER REVIEWED, REFREED RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Website :
www.bohalshodhmanjusha.com
Email : grsbohal@gmail.com

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Advocate
HOD Hindi, Tantia University
M. : 8708822674, 9466532152

गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा श्रीगंगानगर, (राजस्थान), पटियाला (पंजाब) व नेपाल से प्रकाशित

ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834

Gina Shodh SANGAM

A Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Website : www.ginajournal.com
Email : grngobwn@gmail.com
Office : 8708822674

Editor :
Dr. Rekha Soni, Vice Principal
Education, Tantia University
M. 9828531975

गिरधारीलाल घासीराम शोधपीठ
द्वारा नई दिल्ली, आगरा, गाजियाबाद एवं नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2348-5639
Impact Factor 6.521

SHODH SAMALOCHAN

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Website : https://ginajournal.com/shodh-samalochan/
Executive Editor : Dr. Varsha Rani M. 9671904323
Managing Editor : Dr. Mukesh Verma M. 9627912535

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Advocate
M. 8708822674

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुगनराम सोसायटी रजि. के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज, भिवानी से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड भिवानी-127021 (हरि.) से वितरित की।

ISSN 2395:7115